॥ अनुक्रमणिका ॥

	पृष्ठ (पन्ना)

पृष्ठ (पन्ना)

पृष्ठ (पन्ना)

बेटा, चेइ शब्दके १०८ नाम किनावरे शेष पन्ना (पत्र) में ।

॥ पाठन्तर ॥

॥ अनुक्रमणिका ॥

पृष्ठ (पन्ना)

पृष्ठ (पन्ना)

पृष्ठ (पन्ना)

सबला दोष किणने कहीजे, जैसा निबला आदमीके उपर सबला बोझ आय पड़े तो उण आदमीका नाश हो जाता है इणं दृष्टांते साधु मुनीराज यह ईकिस बोल सेवे

पथ्या पथ्यके विषय किताबके शेषके पन्ने में ।

॥ श्री ॥

॥ शुद्धिपत्र ॥

हेडींग छोड़कर पंक्ति (ओली) गिणीजें ।

कीतनेक भूल उपयोगमें आई सो
अनुक्रमणिकामें जणाथदि है सो
शुद्धिपत्रमें नहीं लिखी है ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
झ	१५	ढफके	डॅफके
ट	१	उपना	उतना
ध	४	मुंझावे	मुझावे
ल	१	सुघना	सूंघना
व	६	काणोंसे	कानोंसे
श	३	मिश्र	मिश्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
ज्ञ	१३	सम्यक्त	सम्यक्त
ज्ञ	१७	च्यूं	ज्यु (ज्युं)
ई	७	घणो	घणो
ई	७ बाद हेडींगमें	छतीसा	छतीसी
डे	११	जाणो	जाण
धे	३	मास	मांस
ने	४	आगे	आगे
फे	२	पानीमें	पाणीमें
बे	२	वीज	बीज
हे	१५	उपाड़ाने	उपाडीने
त्रे	१२	(विसोहीकरणेणे)	(विसोहीकरणेणं)
जु	४	मडिक्कमामि	पडिक्कमामि
डु	११	मांटे	माटे
डु	१५	नामधयं	नामधेयं
भु	३	गोचरादिकमें	गोचारादिकमें
८	७	बोले	दूजे बोले

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	३	कोध	क्रोध
१३	५	उद्धम	उद्यम
१४	४	१०८	१०६
१५	६	दीजै	कीजै
१६	६	दशमा	१२ में
१६	७	बारमा देवलोक	नव नवग्रीवेक
१६	६	मुक्ति	५ अनुतर विमाण
२३	५	लीलड़में	लीलाड़में
२३	७	परायं	पराये
२४	१६	नोचो	नीचो
४०	१६-१७	कुंड	कांड
५४	७	भव्य जीवने,	भव्य जीवने
५८	१२	दुसरेने बेदावा,	दुसरो वेंचावा (वेंटावां) समर्थ नहीं
६०	६	जाने	जाणे
६३	८	धम	धर्म

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६६	७	त्त्रीने	वाणीयेरे (वैश्यरे)
६८	१	जवारी	जुवारी
६९	४	वीसरो	विषरो
७३	५	नारेलरो	नाचते भोपेरो
७३	१३	घर्म	धर्म
७५	२	ठवा	ठाव
७७	८	विध्न	विघ्न
७७	११	उठा भी	उठाय
७९	१६	धातर्क	धातकी
८०	३	पुष्करार्थ	पुष्करार्द्ध
८०	५	”	”
८०	१०	शिष्यनी	नये दिक्षित
८२	८	दांनवंत	दानवंत
८७	११	पुत्रक	पुत्रका
९०	५	अंधक विश्नु	अंधक विष्णु
९०	८	गजसूकुमारजी	गजसुकमालजी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९६	१६-१७	स्पाई	स्याई (स्याही)
९७	१, २, ४	,,	,,
१०२	४	पुरखारो	पुरषारो
१०२	५	गधामें	वृषभ (वलदमें)
१०२	८	५००	२०००
१०२	९	दश	दश लाख
११३	१२	तमोगुण	सतोगुण
११६	२	नडी	नाडी
११६	१७	माठरे	माठेरे
१२२	१६	उसति	उत्पत्ति
१२७	५	संभोग	संमोग
१३७	११	वतलावो	वतलायो
१३८	१३	अच्युल	अच्युत
१३९	२	द्वोष	द्वेष
१४१	५	रत्नावनी	रत्नावली
१४३	१	श्रीनन्दजी	श्रीनन्दीजी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४७	७	र्याप्ता	पर्याप्ता
१४८	७	जीवनैं	जीत्रमें
१४६	८	सम्पक्तं	सम्यक्त
१५२	५	उधम	उद्यम
१५२	१३	वक्तना	वक्ता
१५८	३	गुणागणा	गुणठाणा
१५६	१७	संसर	संसार
१६२	२	छड़े	छेड़े
१६२	८	देशनैं	देशसे
१६५	७	सम्पक्तं	सम्यक्तं
१६६	१३	सम्पक्ति	सम्यक्ति
१६७	३	प्रमादियों	प्रमादि
१७६	१३	संनिग्ध	सनिग्ध
१७६	१४	हले चले	हालैं चाले
१७७	१४	विन्यवंन	विनयवंत
१८३	११	शुश्रता	शुश्रषा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०४	१०	कालथकी	कालमें
२०४	११	भावथकी	भावमें
२०४	११	पुनः द्रव्यथकी,	द्रव्यथकी
२०६	१४	यर्थात्	अर्थात्
२०७	६	विनयवानका	विनयवानकी
२०८	११	आवो	आवे
२१६	६	अहता दान थी	अदत्तादान थी
२१६	८	चक्षुधेनिद्रय	चक्षुइन्द्रिय
२१७	४	भरण	मरण
२१७	१२	मनसमाधेणिया	मनसमाधारणीया
२१७	१४	कायसमाधरणिया	कायसमाधारणिया
२१८	१६	चिंतावना	चिंतवना
२२०	६	असाझाई	असझाई
२२०	१७	सपन्न	संपन्न
२२१	१४	चरित्रयुक्त	चारित्रयुक्त
२२८	८	प्रमाणसे	प्रणामसे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२६	१	बांघे	बांधे
२३०	१४	गीलायाकी	गीलायीकी
२३५	४	हणो	हणे
२३५	८	घणा	घणा
२४६	५	हीते	होते
२४८	१६	शत्र	शत्रु
२५२	३	साघु	साधु
२५२	६	लकड	लक्कड
२५३	१	झांझ	जहाज (Steamer)
२५४	१	बीजने	विजेने
२५४	७	कुणानी	कुलनी
२५५	११	भरण	मरण
२५५	१४	लीघु	लीधु
२५६	१३	चड़ते	चढ़ते
२५८	७	राखे	राखकर
२५९	११	कपटपणो	कपटपणो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६२	३	जग्रत	जाग्रत
२७०	४	चलीय	चलीये
२८२	५	बड	बडे
२८५	५	घ्रधान	प्रधान
३१०		स्वोटा	खोटा
३१२	हेडींग	बाल	बोल
३७८	११	गुणआशि	गुणयाशिये
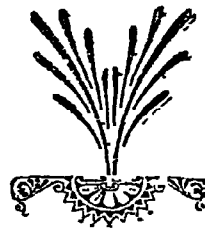
॥ श्रीगौतमाय नमः ॥

यह पुस्तक यत्नसे रक्खे । शुद्धिपत्रसे अशुद्धि निकालकर आदिसे अन्त तकबाचे ।

इसका प्रथम भाग छपाहुवा बंटगया है, त्यार नहीं है, कितनेक बोल प्रथम भागका इसमें छपा है ।

उघाड़े मूख तथा चिरागके चानणोमें नहीं बाचै; पद, अक्षर, ओछो, अधिको, आगो, पाछो, तथा कानो, मात, मिंडी, ह्रस्व, दीर्घ, अशुद्ध, टूटी भाषामें लिख्यो हुयो विद्वान कृपाकर शुधार लेवें संग्रह-कर्ताकी यही नम्र विनती है ।

॥ श्री ॥

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥
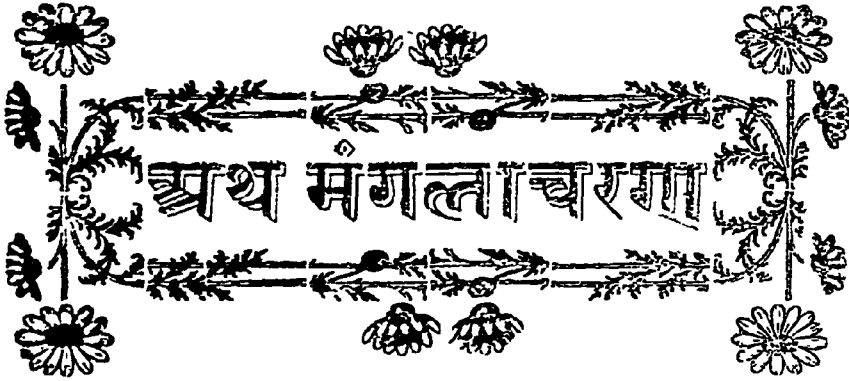
नाभेया जितवासुपूज्य सुविधि श्रेयांसपद्म-प्रभात् श्री शांतिशशी संभवार सुमती न्नेमिंनमिंशीतलं धर्मपार्श्व सुपार्श्व बीर विमला-नंतांस्तथासुव्रतं कुंथुंमल्ल्यभिनंदनौनुत जिना-नेतांश्चतुर्विंशतिं ।

॥ दोहा ॥

आदि देव अरिहंतजी, भवभंजन भगवन्त ।
केवल कमला धारजे, पायो भवजल अन्त ॥१॥

A

तास चरणमें शिर धरी, प्रणमुं पर्म उल्लास ।
गुरु गिरवा ज्ञान निधि, सफल करो मम आस ॥२॥
कई ग्रंथ कई नीति में, कई सूत्र अर्थमें जोय ।
कई सज्जनसे धारिया, बोल छत्तीस होय ॥३॥
स्थिर चित्त विवेकसे, वांचे तो फल होय ।
नहीं पूर्णता यहां की, दोष न दीजो कोय ॥४॥

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अथ मतीज्ञानके २८ भेद लिखते हैं ॥
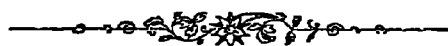
(१) उत्पातीया बुद्धि—तत्काल बात उपजे (२) विनया बुद्धि—विनयसे आवे (३) कम्मया बुद्धि—काम करते २ सुधरे (४) प्रणामिया बुद्धि—त्रय प्रमाणे बुद्धि होवे यह चार बुद्धि—और श्रोतेन्द्रीकी अवग्रह सो शब्दको ग्रहण करना, श्रोतेन्द्रीकी इहा सो सुणे हुये शब्दका बिचार श्रोतेन्द्रीकी अवाय सो सुणे शब्दका

निश्चय करना, श्रोतेन्द्रीकी धारणा सो बहुतकाल तक धार याद रखना जैसे १ श्रोतेन्द्री पर ४ बोल कहें ऐसे ही २ चक्षुइन्द्रीसे देखनेका, ३ घ्राणेन्द्रीसे सूंघनेका, ४ रसेन्द्रीसे स्वाद लेनेका, ५ स्पर्श इन्द्रीसे स्पर्शका, ६ मनसे विचारका यों ६ पर चार २ बोल कहनेसे ६ × ४ = २४ बोल हुवे, और ४ बुद्धि मिलकर मतीज्ञानके अठावीस भेद हुवे, यह २८ मतिज्ञानके भेद है। इनमेंसे ऐकेक के बारे २ भेद होते हैं, जैसे—अनेक जीव अनेक वाजिंतरोंके शब्द सुनते हैं, उनमें मतिज्ञानकी क्षयोपशमतासे १ कोई एक वख्तमें बहुत शब्दोंको ग्रहण करते हैं सो बहु, २ कोई थोड़े शब्द ग्रहण करते हैं सो अबहु, ३ कोई भेद भाव सहित ग्रहण करे सो बहुविध, ४ कोई भेद भाव नहीं समझे या थोड़ा समझे सो अबहुविध, ५ कोई शीघ्र समझ जाय सो क्षिप्र, ६ कोई विलंब (देर) से समझे सो अक्षिप्र, ७

कोई अनुमानसे समझे सो सलिंग, ८ कोई विना अनुमान से समझे सो अलिंग, ९ कोई शंकायुक्त अच्छे सो संदिग्ध, १० कोई शंकारहित अच्छे सो असंदिग्ध, ११ कोई एकही वक्तमें सब समझ जाय सो ध्रुव और १२ कोई वारंवार जाननेसे समझे सो अध्रुव; इन १२ भेदोंसे पूर्वोक्त २८ भेदोंको गुणा करनेसे २८ × १२ = ३३६ मतिज्ञानके भेद होते हैं ।

॥ श्रुतज्ञानके १४ भेद ॥

१ अक्षर श्रुत—क, ख प्रमुख अक्षर तथा संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, इंग्लिश, फारसी आदिक से जाणे सो, २ अनक्षर श्रुत—अक्षर उच्चार विना खांसी, छींक प्रमुखसे ज्ञान होवे सो, ३ सन्नीश्रुत—विचारना, निर्णय करणा, समुचय अर्थ करना, विशेष अर्थ करना, चिंतवना और निश्चय करना यह छव बोल सन्नीमें मिलते हैं ।

इन छव बोलसे सूत्रधार रखे सो सन्नीश्रुत, ४ असन्नीश्रुत—यह छव बोल रहित होवे तथा भावार्थशून्य, उपयोगशून्य, पूर्वापर आलोच्च निर्णय रहित पढे, पढावे, सुणे सो अशन्नीश्रुत, ५ सम्यत्कश्रुत, अरिहंतदेवके परुपे, गणधरदेवके गूंथे तथा कम तो दश पूर्वधारीके फरमाये सूत्र सो सम्यक्तश्रुत, दश पूर्वसे कमीज्ञानवालेका निश्चय नहीं उनके रचे ग्रंथ सम० श्रुत भी होवे और मिथ्याश्रुत भी होवे इसलिये दश पूर्वधारीके कीये हुये ग्रंथ ही सम्यक्तश्रुत है, ६ मिथ्याश्रुत अपनी इच्छासे कल्पित रचे हुये ग्रंथ जिसमें हिंसादिक पंचाश्रवका उपदेश होवे, वैदिक, ज्योतिष, कामशास्त्र इत्यादि मिथ्याश्रुत, ७ सादिश्रुत—आदिसहित, ८ अनादिश्रुत—आदिरहित, ९ सपज्जवश्रुत अन्तसहित, १० अपज्जवश्रुत—अन्तरहित, १ सआदि, २ अनादि, ३ सपज्जव, ४ अपज्जव, इन ४ का

खुलाशा द्रव्यसे एक जीवआश्री आदि अन्त सहित पढने बैठा सो पूराकरे, बहुत जीवआश्री आदि अन्त रहित बहुत पढे है और पढेंगे, २ क्षेत्रसे भरत ऐरवर्त आदि—अन्त सहित और महाविदेह आश्री आदि अन्तरहित, ३ कालसे उत्सर्पिणी उवसर्पिणी आश्री आदि अन्त सहित और नोउत्सर्पिणी उवसर्पिणी आश्री आदिअन्त रहित, ४ भावसे तीर्थंकर भाव प्रकाशे सो, आदि अन्त सहित और क्षयोपशम भाव आश्री आदि अन्त रहित, ११ गमिक श्रुत दृष्टिवाद १२ मां अंग, १२ अगमिक श्रुत आचारांगादिक कालिक सूत्र, १३ अंगप्रविठ सूत्र जिनभाषित द्वादशांगोवाणी, १४ अंगवाहिर बारे अंगके बाहिरके सूत्रके दो भेद—१ आवश्यक सामायिकादि छे और २ आवश्यक वितिरिक्त सो कालिक उत्कालिकादिक जानना, यह मतीश्रुत ज्ञानका आपशमें

खीरनीर जैसा संयोग है, इन दोनों ज्ञान विना कोई जीव नहीं है, सम्यक दृष्टिके ज्ञानको ज्ञान कहते हैं और मिथ्यादृष्टिके ज्ञानको अ-ज्ञान कहते हैं, उत्कृष्ट मतीश्रुत ज्ञानवाले केवलीकी तरह सर्व द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावकी बात जान सकते हैं, इसलिये श्रुतकेवली कहे हैं। जातिस्मरण ज्ञान भी श्रुत ज्ञानके पेटमें है जातिस्मरणसे ९०० भव पिछले किये हुये जान सकते हैं। जो लगोलग सन्नीके किये हुये तो नर्कके जीव जातिस्मरण ज्ञानसे पूर्वभवकी बात जान सकते हैं; परंतु देख सकते नहीं हैं; क्योंकि यह परोक्ष ज्ञान है। महाबेदनाके अनु-भवसे और परमाधामियोंके कहनेसे जाति-स्मरण ज्ञान हो जाता है ।

॥ अवधिज्ञानके ८ भेद ॥

१ भेद—दो तरह अवधी ज्ञान होते हैं, १

भव जन्मसे सो नारकी, देवता और तीर्थंकरको होवे, २ क्षयोपशम करणी करनेसे सो मनुष्य तिर्यंचको होवे, २ विषय सातमी नरकवाले जघन्य आधा कोस उत्कृष्ट एक कोस, छठीवाले जघन्य एक कोस उत्कृष्ट १॥ कोस, पंचमीवाले जघन्य देढ कोस उत्कृष्ट दो कोस, चोथीवाले जघन्य दो कोस उत्कृष्ट २॥ कोस, तीसरीवाले जघन्य २॥ कोस उत्कृष्ट तीन कोस, दूसरीवाले जघन्य ३ कोस उत्कृष्ट ३॥ कोस, और पहली- वाले जघन्य ३॥ कोस, उत्कृष्ट ४ कोस अवधी ज्ञानसे देखते हैं। असुरकुमारदेव जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट असंख्याते द्वीप समुद्र, बाकीके नवनीकायदेव और वाणव्यंतरदेव जघन्य २५ योजन ऊत्कृष्ट संख्याते द्वीप समुद्र, ज्योतिषीदेव जघन्य उत्कृष्ट संख्याते द्वीप समुद्र, ऊपरके सब- देव ऊंचा अपने २ देवलोककी धजातक देखे और तिरछा पहिले दूसरे देवलोकमें पल्यके

आयुष्य है वो नीछा असंख्याते द्वीप समुद्र देखते हैं और सब असंख्याता द्वीप समुद्र देखते हैं नीचे १-२ देवलोकवाले पहिली नर्क, ३-४ वाले दूसरी नर्क, ५-६ वाले तीसरी नर्क, ७-८ चौथी नर्क, ९-१०-११-१२ वाले पांचमी नर्क, नव ग्रीवकवाले छठी नर्क, चार अनुत्तर विमानवासी देव सातमी नर्क, सर्वार्थ सिद्ध विमानवासी संपूर्ण लोकसें कुछ कमी संज्ञी तिर्यंच पचेंद्री जघन्य अंगुलके असंख्यातमें भाग उत्कृष्ट असंख्याते द्वीप समुद्र सज्ञी मनुष्य जघन्य अंगुलके असंख्यातमें भाग उत्कृष्ट संपूर्णलोक और लोक जैसे अलोकमें असंख्याते खंड देखे संठाण अवधि ज्ञानसे नर्कके जीव त्रिपाइके आकार देखे, भवनपती वाला टोपलेके आकार देखे, व्यंतर पड़ा ढफके आकार, ज्योतिषी झालर घंटाके आकार, बारह देवलोकके देव मृदंगके आकार, ग्रेवेकके देव

फुलचंगेरीके आकार, अनुत्तर विमानके देव कुमारीके कंचुके कांचलीके आकार देखे, मनुष्य तिर्यंच जालीके आकारसे अनेक प्रकारसे देखे, ४ वाह्याभ्यंतर नर्कके जीव और देवताके जीवको आभ्यंतरिक ज्ञान तिर्यंच वाह्य प्रगट ज्ञान और मनुष्य वाह्य अभ्यंतर दोनों होवें, ५ अणुगामी अणाणुगामी, अणुगामी उसे कहते है एक वस्तुसे दूसरी तीसरी यों सर्व अनुक्रमें देखे और सर्व ठिकाणे साथ रहै देख सके, अणाणुगामी जहां उपज्या वहां देखे दूसरे ठिकाणे न देख सके, नारकी देवताके अणुगामी अवधिज्ञान और मनुष्य. तिर्यंचके अणुगामी अणाणुगामी दोनुं, ६ देशसे सर्वसे नारकी देवता तिर्यंचको देशसे थोड़ा ज्ञान होय और मनुष्य को देशसे व संपूर्ण दोनों अवधि ज्ञान होय, ७ हायमान वर्द्धमान अवुठीए हायमान उपजे पीछे कमी होता जाय, वृद्धिमान वृद्धि

ज्यादा होता जाय, अवस्थित उपजा उपना ही घना रहै, नारकी देवको अवस्थित और मनुष्य तिर्यंचको तीन ही तरहका होता है, ८ पडवाइ, अपढ़वाइ; आकर चला जाय सो पढ़वाइ ज्ञान और आकर नहीं जाय सो अपढ़वाइ ज्ञान नर्क देवको अपढ़वाइ और मनुष्य तिर्यंचको पढ़वाइ अपढ़ाइ दोनों अवधि ज्ञान होते हैं।

मन पर्यव ज्ञानके दो भेद।

१ ऋजुमती और २ विपुलमती मनपर्यव ज्ञानी द्रव्यसे रूपी पदार्थ देख क्षेत्रसे नीचे १ हजार योजन ऊंचा नवसो योजन तिरछा, अढाइ द्वीप ऋजुमतीवाला अढाइ अंगुल कमी देखे तथा खुला खुला नहीं देखे, विपुल-मतीवाला अढाइ द्वीप पूरा देखे और खुला देखे कालसे पल्यके असंख्यातमें भाग गये कालकी और आवते कालकी बात देखे, भावसे

सर्वसन्नीके मनकी बात जाणे, देखे, यह मन-पर्यव ज्ञान मनुष्य सन्नी कर्मभूमी संख्यात वर्षके आयुष्यवाले पर्याप्ता सम्यग्दृष्टी संजती अप्रमादी लब्धिवंत इतने गुणयुक्त होवे उन मनुष्यको उपजता है। दृष्टांत, जैसे—किसीने अपने मनमें घड़ा धारण किया तो ऋजुमतिवाले तो फक्त घड़ाही देखेंगे और विपूल मतिवाले विशेष देख सकते हैं कि इसने मृत्तिका (मट्टी) या धातुका घड़ा घृत या दुग्धादि अर्थ धारण किया वगैरा, ऋजुमतिवाले पडिवाइ हो जाते हैं, अर्थात् ज्ञान चला जाता है और विपुलमति मन-पर्यव ज्ञान हुये बाद केवलज्ञान जरूर ही उत्पन्न होता है, अवधी ज्ञानसे मन-पर्यवज्ञानके १ क्षेत्र थोडा है, परन्तु विशुद्धता निर्मलता अधिक है, २ अवधिज्ञान चार ही गतीके जीवोंको होता है और मनः-पर्यवज्ञान फक्त मनुष्यगतिमें साधुको ही होता है, ३ अवधिज्ञान तो अंगुलके

असंख्यातमें भाग क्षेत्र देखे वा अधिक भी होता है और मनःपर्यवज्ञान एकही वख्तमें अढाई द्वीप देखे जितना ऊपजता है, ४ और अवधिज्ञानसे भी जो रूपी सुक्ष्म द्रव्य दृष्टि नहीं आवे वो मनःपर्यववाले देख सकते हैं यह चार विशेषत्व है, यह देशसे नो इन्द्रि प्रत्यक्ष मतिज्ञानके भेद हुये।

॥ ५ केवलज्ञान ॥

सर्व द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावको जाने, अपडवाइ संपूर्ण होता है। यह ऊपरके गुणयुक्त मनुष्य अवेदी अकषाइ तेरमे गुणठाणवर्त्तिको होता है। यह आये पिछै निश्चय मोक्ष जावे।

इति ज्ञानभेद संपूर्णम्।

॥ अहिंसा परमो धर्मः ॥

श्री धर्म परीक्षा संक्षेप हितकारण लिखिए छै ।

कोई भलो शिष्य श्री गुरुने पुछे छै, श्री गुरु म्हारो वचन सांभलो, जे संसार मध्ये जितना जीव छै ते सर्व जीवने धर्म एहवो शब्द घणु वाहलो लागे छै, हवे गुरु कहे एह बातनो शुं अचरज तीहारे वले श्री गुरुने शिष्य पुछे हे स्वामी हुं एटले माटे पुछुं छुं के जो सर्व जीव जेहवो धर्म छै तेहवो जानता नथी अने धर्म शब्द तो वाहलो घणु लागे छै, तिहारे श्री गुरु उत्तर दहे छै के जे धर्म छै ते जीवरो स्वरूप छै, जीवरो निज लक्षण छै, ते माटे शब्द पण घणु वाहलो लागे छै, तेहनो दृष्टांत देखाडे छे जिमके नागनो मंत्र कहता नाग घणु खुसी थाय छै अने विषपण पाछु वाले छै ते नागना मंत्र

मध्ये नागनों कुल नामो वखांणे छै ते माटे नागनु मन घणो खुसी थाय छै, तिम इण दृष्टांते जीव पण धर्म शब्द सांभल्यां थी खुसी थाय छै, तिवारे फिर शिष्य बोल्योके हे स्वामी संसार मध्ये तो सहुलोग कहे छै के देहथी नीपजे ते धर्म छै अने श्री गुरुजी तमे तो जीवनो निज लक्षण ने धर्म कह्यो छै तेहनो प्रकाश करो, तिहारे श्री गुरु कहे जे जीवने चेतना छै ते जीवनो धर्म छै ते चेतना मध्ये गुण अनंता छै ते मध्ये गुण तीन मुख्य छै तेहना नाम— ज्ञान गुण (१) दर्शन गुण (२) चारित्र गुण (३) ये तीन गुणने आददेइ अनंता गुण छै ते सर्व चेतना धर्म छै ते चेतना धर्म जीवने पासे छै ते जीव निगोद मांहे गयां पण चेतना धर्म टले नहीं पण ते मध्ये एटलो विशेष छै के धर्म पोताने पासे छै पण विसर गयो छै, ते संभाल तो नथी ; तेहनो दृष्टांत लिखिए छै—

जिम कोइ बालकने बाल अवस्था मध्ये तेने तेहना माता पिताए चिन्तामण रतन ते बालक ने गले बांध्यो ते (बालक) कालांतर मोटो थयो तेने दालिद्र अवस्था आवी छै पण पोताने गले चिन्तामण रतन छै ते जाणतो नथी, तेहने कोई कहे तुझ पासे भली वस्तु छै ते माने नहीं क्युं माने नहीं के ते पुरुषने दालिद्र रेहण हार छै (अंतराय तुटी नहीं) तिण वास्ते माने नहीं ज्युं जीव पण पोताने बहुल संसार ने उदय चेतना धर्म विसर गयो छै बीजो दृष्टांत जे कोईके घरमें भुंय (भवरे) मांहे निधांन छै पण ते जाणतो नथी तेहने कोई एक जाण पुरुष कहे के थारे घर मांहे निधान छै तेहनी दालिद्र दिसा मिटन हार छै ते कह्यो वचन मान्यो, निधांन काढ्यो संतोष ऊपन्यो इम बहु दृष्टांते जीव जिन भाख्यो धर्म जाणे पोतानो धर्म पोताने पास छै चेतना

धर्म टले नहीं, तेवारे वले शिष्य बोल्यो हे स्वामी पोतानी वस्तु पोताने पासे छै बिसारी गयो ते सुं कारण, तिहारे श्रीगुरू कहे छै जे अनादि कालनो जीव छै ते राग द्वेष रूप फेरोदीयोछै ते ऊपर दृष्टांत लिखिए छै, जिसके एक पाणीनो द्रह भरीयो छै ते पाणी मध्ये गुण घणा छै ते मध्ये गुण तीन मुख्य छै ते किसा गुणः—(१) पहिलो निर्मलताइ (२) बीजो रस, मधुरताइ (३) तीजो शीतलताइ ए तीनों गुण आदि देइने पाणी मांहे गुण घणा छै ते पाणीरा द्रह मध्ये कालंतर किसी ही जोगवाइ करीने पाणी मांहे सेवाल ऊपनो ते पाणी मध्ये गुण तीन (३) निकमा थया शीतलताइ तेहवी नथी, रस मधुरताइ पण तेहवी नथी, अने वले निर्मलताइ तो पूरी गई ए दृष्टांते जीव नो स्वरूप जाणवो, जिम पाणी थी सेवाल ऊपनो छै तिणहीज पाणी अवस्था फेरी दिछै जिम

पुद्गलने निमित्त करी ते राग द्वेषरूप परिणाम ते जीवथीज ऊपना छै तेणेहीज जीवनो स्वरूप फेरी दियो छै ते जीव मध्ये अने पाणी ना दृष्टांत मध्ये एटलो विशेषछै के जीवने राग द्वेष प्रणाम अने पुद्गल नो निमत्त अनादि कालना लागा खाण संपन्न छै अने पाणी मध्ये सेवाल ऊपना कहे छै एहवो दृष्टांत श्रीगुरूना मुख थकी सांभलीने शिष्य खुश थयो ।

॥ शुभं भवतु ॥

॥ सेवं भंते सेवं भंते । तमेव सच्चम् ॥

॥ सम्यक्त का ५ लक्षण ॥

१ सम कहता—शत्रु, मित्र ऊपर सरीषा भाव रखे ।

२ समवेग कहता— बैराग्य भाव रखे ।

३ निरवेग कहता—आरंभ परिग्रह से निवर्ते ।

४ अनुकंपा कहता—परजीवने दुखी देखने करूणा (अनुकंपा) करे ।

५ आसता कहता—जीवादिक द्रव्यना सुक्ष्म भाव सुणकर मुंझावे नहीं श्रीजिन बचन ऊपर आसना रखे ।

॥ विस्तार ॥

॥ अथ संवेग स्वरूप लिख्यते ॥

सम्यक्त सद्दा अन्तःकरणमें संवेग---वैराग्य भाव रखे ।

श्लोक—शरीर मनसागंतु वेदना प्रभवाद्भवात् ।
स्वप्नेंद्रजालसंकल्पाद्भीतिः संवेगमुच्यते ॥

अर्थात् संवेगी ऐसा विचारेकि "संसारमी दुःखपउरय" यह संसार शारीरिक देह संबन्धी रोगादिक और मानसिक मन संबन्धि चिंता इन दोनों दुःखो करके प्रतिपूर्ण भरा है, किंचित

ही खाली नहीं है, इसमें तूं सुखकी अभिलाषा करे सो तेरेको सुख कहांसे प्राप्त होवे तथा जो पुद्गलोंका संयोग मिला है, सो भी कैसा है कि यथा दृष्टान्त किसी क्षुधापीड़ित भिक्षुक बजारमें हलवाईकी दुकानपर अनेक पक्वान देख विचार करता २ रसोई बनाने कंडे छाणे लाया था उसको सिर नीचे दे सो गया। उसे स्वप्न आया कि इस ग्रामका राजा मरनेसे मैं राजा बन ऊँचा सिंहासन पर बैठ छतर चमर धराने लगा और मिजवानीमें घेवर प्रमुख अत्युत्तम पक्वान जीम शयन किया इतनेमें ही कुछ आवाज होनेसे जाग्रत हो देख २ रोने लगा ग्रामके लोग पूछनेसे उत्तर दिया कि मेरा राज परिवार सुखसाहबी कहां गया और अभी मैंने इच्छित भोजन किये थे सो भी कहां गये यह कंडेही रह गये, लोग कहने लगे यह दिवाना हो गया सो बकता है। ऐसेही यह मनुष्यजन्म-

रूप सायभी स्वप्नके सम्पत्ति मिली है। इसको गमादेनेसे दिवानाकी तरह रोना पड़ता है, मतलब यह सम्पत्ति सब स्वप्न या इन्द्रजाल गारुडीके ख्याल जैसी प्रत्यक्ष दीखती है ऐसे दुःखसागर अथिर संसामें लुब्ध न होवै। सदा कर्म वंधके कारणोंसे डरता है संसारको छोडनेकी सदा अभिलाषा रखे सो संवेगी जाणना। इतिसंवेग सरूपम्।

अथ अनुकम्पा संक्षेप स्वरूप लिख्यते।

सम्यक्ती प्राणी दुःखी जीवोंको देख अनुकम्पा करे।

श्लोक

सत्व सर्वत्र चित्तस्य दयार्द्रत्वं दया नघः।
धर्मस्य परमंमूलमनुकम्पा प्रवक्षते ॥३

अर्थात्—जगतवासी सर्व जीव सुखसे जीवितव्यके अभिलाषी हैं, दुःख प्राप्त होनेसे घबराते हैं और दुःख प्राप्त हुए उस दुःखमेंसे कोई छुड़ानेवाला मिल जाय तो वो हर्ष मानते हैं। इसलिये समदृष्टि प्राणी दुःखी जीवोंकी अनुकम्पा लाकर उनको उस दुःखसे अवश्य छुडावे यह अनुकम्पा ही धर्म का मूल है।

॥ दोहा ॥

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जबलग घटमें प्राण॥

॥ अथ आस्ता स्वरूप लिख्यते ॥

श्री जिनेश्वरके मार्गपर या बचन पर पक्की आस्ता रखे, एक जिनेश्वरके मार्गको सच्चा जानना, दृढ़ श्रद्धा रखना, देवादिक कोई धर्मसे

चलाय मान करे तो चलायमान न होवे, अरणीकजी कामदेवजी की तरह दृढ़ता रखे, देहका विनाश होते भी धर्मको सुठाण जाने क्योंकि देहादिक अनंत वख्त मिली है ।

॥ दोहा ॥

धन देकर तन राखिये, तन दे रखिये लाज ।
धन दे, तन दे, लाज दे, एक धर्मके काज ॥

परन्तु धर्म मिलना मुशकिल है इसीलिये शरीरसे ज्यादा धर्मका यत्न करना बोलते हैं ।

"आसता सुख सासता"

आस्तासे ही मंत्र जंत्र औषध फलीभूत होते हैं, इस वख्त दान-धर्म-क्रिया-कष्ट करनेवाले बहुत हैं ; परन्तु दृढ़ आसतावाले बहुत थोड़े हैं, जिससे ही महा प्रभाविक नवकार तथा क्रिया का प्रत्यक्ष फल किंचित दृष्टी आता है । बहुत धर्मीजन तो गोबरके खिले जैसे जिधर नमावे उधर नम जाते हैं और नरबदाके गोटे जैसे

जिधर गुड़ावे उधर गुड़ जाते है ऐसे बहुत है, इस लिये धर्मी होकर दुःख पाते हैं। बहुत धर्मकर यथा तथा फल प्राप्त नहीं कर सकते हैं; ऐसा जान समदृष्टी प्राणी यथा शक्ति करणी करे; परन्तु पूर्ण आसता रखकर पूर्ण फल लेवे। इति आसता स्वरूप ॥

॥ इन्द्रियोंके विषय स्वरूप लिख्यते ॥

॥ श्रोतेन्द्री ॥

१ श्रोतेंद्री—कानके तीन विषय, १ जीव शब्द जीव बोले सो, २ अजीव शब्द भींतादिक पड़नेसे शब्द होवे सो, ३ मिश्र शब्द वाजिंत्र बांसरी प्रमुख अजीव, बजानेवाला जीव दोनों मिलकर शब्द होवे सो मिश्र शब्द; इसके बारह बिकार पहिले तीन विषय कही उसको दो गुणा करना शुभ-अशुभ जैसे पुण्यवान प्राणी बोले तो अच्छा लगे और पापी बोले तो

खोटा लगे यह जीव शब्द हुये, रुपये पड़े तो उसका शब्द अच्छा लगे, भींत पड़े तो उसका शब्द खोटा लगे ये अजीव शब्द हुये, उत्सवका वाजिन्त्र अच्छा लगे और मृत्युका और संग्राम का वाजिन्त्र खराब लगे यह मिश्र शब्द हुये, यों तीनके दो भेद करनेसे छव भेद हुये। इन छव पर कभी राग प्रेम और कभो द्वेष उत्पन्न होता है, अच्छे शब्द पर भी किसी समय द्वेष आ जाता है, जैसे लग्न होता है तब कहे कि "रामनाम सत्य है" तो खोटा लगे और कभी खोटा शब्द अच्छा लगता है जैसे सासरे में गालियों, यों छव के दो गुणा करनेसे श्रोतेन्द्रीके बारह विकार हुये। इस इन्द्रीके वशमें होकर मृग, सर्प इत्यादि पशु मारे जाते हैं, ऐसा जान कभी राग द्वेष उत्पन्न होवे ऐसा शब्द सुनना नहीं और कभी कानमें आय जाय तो उसपर राग द्वेष करना नहीं, क्योंकि

राग द्वेष ही कर्मके बंधका मुख्य कारण है। इस भवमें या आगेके जन्ममें वहिरापणा या कानके अनेक रोग प्राप्त होते हैं और इसको वशमें करता है, वह श्रोतेन्द्रीकी निरोगता पाता है और अनुक्रमे मोक्षमें जाता है।

॥ चक्षुइन्द्री ॥
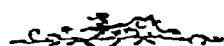
२ चक्षुइन्द्री—आंखकी पांच विषय १ काला, २ नीला, ३ लाल, ४ पीला, ५ श्वेत, इनके साठ विकार, पांच वर्णोंकी वस्तुमें कितनी सचित (सजीव) कितनी अचित (निर्जीव) और कितनी मिश्र (सचित अचित दोनों भेली) होती हैं, यों ५×३=१५ होये, यह १५ कभी शुभ होता है और कभी अशुभ होता है, यों १५×२=३० हुये, इन तीस पर कभी राग और द्वेष पैदा होता है, यों ३०×२=६० चक्षु इन्द्रीके विकार हुये। इस इन्द्रीके

वशमें पड़कर पतंगिया दीवेमें झंपापात ले मरण पाता है। ऐसा जान राग द्वेष उत्पन्न होवे ऐसा रूप देखना नहीं और देखनेमें आवे ता राग द्वेष करना नहीं। जो राग द्वेष करता है वह इस भव परभवमें चक्षु इन्द्रीकी हीनता पाता है और वशमें करता है सो चक्षु इन्द्री निरोगी पाकर अनुक्रमे मोक्ष पाता है।

॥ घ्राणेन्द्री ॥

३ घ्राणेन्द्री—नाक इसकी दो विषय, १ (पहलो) सुर्भीगन्ध सुगन्ध और २ (दुजो) दुर्भीगन्ध दुर्गन्ध। इसके बारह विकार, यह दो सचित और दो अचित और दो मिश्र यों ६, इन छव पर राग और छव पर द्वेष यों बारह विकार हुये, इस इन्द्रीके वशमें पड़कर भ्रमर (भमरे) फुलमें मारा जाता है। ऐसा जाणकर

राग पैदा होवे ऐसा सुगन्ध सुघना नहीं और दुर्गन्ध आजावे तो द्वेष करणा नहीं क्योंकि राग द्वेष करनेसे घ्राणेन्द्री की हीनता पाता है और वशमें करनेसे घ्राणेन्द्री निरोगी पाकर अनुक्रमें मोक्ष पाता है।

॥ रसेन्द्री ॥

४ रसेन्द्री—जीभकी पांच विषय, १ खट्टा, २ मीठा, ३ तीखा, ४ कडुवा, ५ कसायला। इसका साठ विकार, यह पांच सचित, पांच अचित और ५ मिश्र यों तिन गुणे करनेसे १५ हुये, ये १५ शुभ और १५ अशुभ यों ३० हुये, यह ३० पर राग और ३० पर द्वेष यों साठ विकार हुये। इसके बशमें पड़कर मच्छी मारी जाती है। ऐसा जान कर किसी रस पर राग द्वेष करना नहीं, क्योंकि राग द्वेषसे रसेन्द्रीकी हीनता प्राप्त होती है और

वशमें करनेसे निरोगीपणा पाकर अनुक्रमें मोक्ष प्राप्त होता है। यह रसेन्द्री वशमें करनेसे पांचही इन्द्री सहजमें वशमें हो जाती है। कहा है कि "एक धापी तो चार भूखि एक भूखि तो चार धापी" जो रसेन्द्री पेट भरा हुवे तो काणोंसे राग रागिणी सुनने की, आंखोंसे रूप देखनेकी, नाकसे सुगन्ध लेनेकी और शरीरसें भोग भोगनेकी इच्छा उत्पन्न होती है और जो रसेन्द्री भूखी होवे तो कुछ भी इच्छा होती नहीं है। उल्टा चार ही कामोंका तिरष्कार होता है। शान्त आत्मा रहती है। इसलिये आत्मा वशमें करनेका एक यहही उपाय है कि वस्तु खानेका नियम रखना।

॥ स्पर्शेन्द्री ॥

५ स्पर्शेन्द्री शरीर इसकी आठ विषय—१ हल्का, २ भारी, ३ ठण्डा, ४ उष्ण (गरम) ५

लुखा, ६ चोपड़ा, ७ सुहाला और ८ खर-खरा। इसके ६६ विकार, आठ सचित, ८ अचित और ८ मिश्र यों ८×३=२४ हुये, २४ शुभ २४ अशुभ, यों २४×२=४८ हुये और ४८ पर राग ४८ पर द्वेष, यों ४८×२=६६ विषय हुये। इस इन्द्रीके वशमें पड़कर हाथी (गज) हथणीके लिये खाडेमें पड़कर मारा जाता है, इस लिये राग द्वेष उत्पन्न होवे तो राग द्वेष करना नहीं, क्योंकि राग द्वेषसे अनेक कष्ट भोगने पड़ते हैं और वशमें करनेसे शास्वता मोक्ष सुख मिलते हैं।

श्लोक।

तुरंग-मातङ्ग-पतङ्ग-भृङ्ग-मीनःहता पञ्चभीरेवपञ्चः
एकः प्रमादी कथं न हन्यते सेवते पञ्चभोरेवपञ्चः
(नाशकेत पूराण अध्याय ६ श्लोक ३६)

अर्थ—मृग, पतङ्गीया, भ्रमर, मच्छी और हाथी यह पांचही एकएक इन्द्रीके वशमें पड़कर

मारे गये तो पांचों इन्द्रीके वशमें पड़ेहे उसके क्या हाल ?

॥ इति इन्द्रिय विषय विकार सम्पूर्णम् ॥

नोट—गमति वस्तुपर राग और अनगमति वस्तुपर द्वेष, आता है। अपने और अपने मित्रके पास अच्छी वस्तु होनेपर राग आता है। परन्तु वही अच्छी वस्तु शत्रु के पास होनेसे द्वेष आ जाता है, इसी तरह भूंडी वस्तु अपने और अपने सज्जनके पास रहनेसे द्वेप आता है और वही वस्तु शत्रु के पास रहनेसे राग आ जाता है सो समभाव रखे राग द्वेषको घटानेको उद्यम करे।

॥ अथ सिखामणरा बोल ॥

१ छते धन खावण पीवणरी न्युन्यता न कीजै, २ राजाकी, चोरकी, स्त्रीकी बात न कीजै, ३ राजा योगीको आसंगो न कीजै, आस कीजै, ४ आपरो कुल धर्म छोडीजै नहीं, धर्म कीजै, ५ गांवके छेड़े वसीजै नहीं, विचमें वसीजै, ६ गई वस्तुरो सोच न कीजै, नवे वस्तुरो संग्रह कीजै, ७ कुटुंबसूं प्रीति राखीजै, सर्वसुं मिलाप

राखीजै, ८ राजा डंडेजिका, चोरकी वस्तु मोल न लीजै, ६ राजाडंडे लोकभंडे एसा काम न कीजै, १० पराई वस्तु दिये विना न लीजै, चोरी लागे, ११ अनीतीसे धन भेलो न करीजै, १२ अक्कलसे काम नीकलता होय तो धन न खरचिजै, १३ गुरुके पास राज सभामें तथा मोटी सभामें झुठ न बोलीजै, १४ घर सारुं दान दीजै, झूठी साख न भरीजै, १५ गुणवान पंडितासुं प्रीत राखीजै, जो बुद्धि बधै, १६ कीणरी जामनीमें न आईजो, १७ किसीका दिल दुखे एसा कड़वा बचन न बोलीजै, १८ अजाणी वस्तु न खाइजै, नंदी फलवत्, १६ बिना आकब कीणीरी बातमें हुकारो न दीजै, २० घररी दुखरी बात चोवड़ें किणहीने न कहीजै, २१ सूति गायने, सर्पने, नाहारने न जगाइजै, २२ आपरा मित्रने पूछकर काम कीजै, २३ बिना पिछाण्यां किणरोही साथ न कीजै,

२४ पांच आदमी मिलके कहवे सो मान लीजै, २५ चाकरसुं कपट दगो न कीजै, २६ वही खातामें, खत पात्रमें झूठो नामो न लिखीजै, २७ बड़ा मनुष्यने ओछो आखर न कहीजै, २८ घणो लोभ हाणी जाणीजै, २९ विद्यावंतसुं, पंडितसुं वाद न कीजै, ३० द्रव्य फजुल न खरचीजै, ३१ खर्च आमदानी रोज सभालीजै, ३२ भोजन तैयार हुवा पाछै जिमणरी जेज न कीजै, ३३ औषध खाइजे तो पथ्य राखीजै, छाने लीजै, ३४ मसकरीमें किणरी वस्तु न उठाइजे, ३५ तोला मापा घटता बढ़ता न राखीजै, ३६ नामो ठामो तैयार राखीजे, ३७ पुंजी सारू काम करीजे, ३८ भोजन वेला झगडो नहीं कीजे, ३९ माथे कर उधार न दीजै, ४० अण भावतो भोजन न कीजे, अजीर्ण होय, ४१ गलि विचे एकली लुगाईसुं बात न कीजे, ४२ खाति लोहार

सिलावटेरे सामो न वेसीजे, ४३ जुवे सट्टे फाटकेका काम न कीजै, करेतो प्रतीत घटे, ४४ चोर, कसाई, बेश्या, नीच, दूष्ट मनुष्यके साथ लेन देन बेपार न करीजै, ४५ जावते बिछु सर्पने छेडणो नहीं, ४६ बात करतां गाल काढणी नहीं, ४७ बात करतां आपने हसणो नहीं, मूर्ख दीसे, ४८ वरजतां चालिजे नहीं, अगाड़ी काम सिद्ध होवे नहीं, ४९ संगतासुं राड न कीजे, लोकमें भुंडो दीसे, ५० टाबररो लाड बरस सात तांई राखीजे, पाछे विद्या पढ़ाईजे, ५१ पशुरे चोट न दीजे, मर्मरी लागे जीवसुं जावे, ५२ लिखतां बात न कीजे, बात करे तो खोट आवे, ५३ सर्व जीव, सतव, प्राण, भूत, न हणीजै, दया राखीजै, ५४ स्त्रीसुं रोस न कीजै, करे तो मूर्ख वाजे, ५५ वेला बिना घरबारे न जाइजे, ५६ पढ़तां, गावतां, नाचतां, व्यवहारमें लाज न राखिजे, ५७ बिना विचार्‍यां

मुंढाबाहरे बात न काढीजे, ५८ दोय जगा बात करता हुवे जठे न जाइजे, ५९ हालतां फिरतां उभां न खाइजै, ६० कुवा ऊपर न वेसीजे, ६१ दान देईने न पोमाइजै, ६२ गांवरा धणीसुं वैर भाव न राखीजै, ६३ मित्रता होये जठे कर्ज न मांगीजै, मांग्यां-लियां न दरीज्यां रंज होवै प्रीति टुटे, ६४ लेने देने में साहुकारी राखीजे, जो साख सोभा इजत आबरु बधे, ६५ सदा निशंक पणै न रहीजै, संसारको भय राखीजै, ६६ मोटो देख किणरी खुसामदी न करीजै।

॥ इति शिखा वाक्य ॥

॥ शिखावनरा बोल ॥

१ सदहणा शुद्धहुवै तिणरो उपदेश सुणीजै, २ व्रत मर्यादा किधा होय तिणसुं प्यार कीजै, ३ सज्जन दुश्मन जोइनै परखीजै, ४ एकली

स्त्री कनै उभा न रहीजै, ५ कांइ लाल पालकीयां न पतीजै, ६ भलो चावै तिणारी सीख मानीजै, ७ बोल्यां बंध नहीं होय तिणारो संघ न कीजै, ८ परबश पड्या सील दृढ राखीजै, ९ सटल. विटलसुं प्रेम न कीजै, १० सज्जन मित्रने छेह न दीजै, ११ कुमती हिंसा कारक संग न कीजै, १२ चुकानै बार बार न पूछीजै १३ उलटी बुद्धिवालेने बारबार सीख न दीजै, १४ घणोमान बधायो तोही विनो न छोडीजै, १५ सुखदुखमें पिण भली मर्यादा न छोडीजै, १६ आपणां गुण आपईज न बखाणीजै, १७ आपना औगुण पराये पर मत डालीजै १८ पूठ पाछै ओगुण न बोलीजे, १९ सम्यक्त शील दृढ़ राखीजै, २० बुरीगारनै न छेड़ीजै, २१ हीयारी बात जिणतिणनै न कहीजै, २२ रीस चढ़ै तो क्षमा कीजै, २३ विण विच्यारां दाय आवै च्यूं न बोलीजै, २४ धर्म आचार्यरे

हुकममें रहीजै, २५ पर उपगार भूलीजै नहीं, २६ निर्गुण देवगुरु धर्म सेवीजै नहीं, २७ गुणवंत देवगुरु धर्म सेवीजै २८ निश्चय व्यवहारनां जांण हुइजै, २९ चतुर्विध संघरा निंदकनै दुर्लभ बोधी जाणीजै, ३० चतुर्विध संघनै बखांणै ते सुलभ बोधी जाणीजै, ३१ आवशक उपयोग सहित कीजै, ३२ भणाने गुणानेमें बाद न कीजै, ३३ संशय उपजै तो सदगुरुने पुछीजै, ३४ दोष आलोयने निशल हुईजै, ३५ गुरुके, बड़ाके सामो न बोलीजै, ३६ गुरुनो काज हित सुं कीजै, ३७ किसी की आत्मा न दुखाइजै, ३८ धर्मरे ठिकाणे विकथा न कीजै, ३९ धर्मरे ठिकाणे झूठ न बोलीजै, ४० छव काय बंचै जठे धर्म जाणीजै, ४१ गुण उपजै तिणने भणाईजै, ४२ निर्गुण, सुगुणारी परीक्षा कीजै, ४३ कूड़ांरी पख न खांचीजै, ४४ सत्यवादीरी प्रतीत आणीजै,

४५ कृतघ्नने अगुणग्राही जाणीजै, ४६ कपटीरो विश्वास न कीजै, ४७ पाप कर्मसे डरता रहीजै, ४८ किणही वस्तुरो गर्व न कीजै, ४६ धर्म कार्यपर ततूपर रहीजै, ५० अति लोभ तृष्णा न कीजै, ५१ किणहीसुं डंस राखने दुख न दीजै, ५२ पारकी चाड़ी न कीजै, ५३ पर उपकार करता ढील न कीजै, ५४ कड़वा, कठोर, निर्लज्ज न बोलीजै, ५५ मीठो अमृत, सत्य, निरवद् बोलीजै, ५६ धर्मरी बात उगाड़े मुंढे न कहीजै, ५७ अविनीतरी बुद्धि गुण नासती जाणीजै, ५८ विनैवंतरी बुद्धि गुण वधती जाणीजै, ५६ पांच सुमती तिन गुप्ती चोखी पालीजै, ६० लीधा व्रत पच्चखाण में दोष न लगाइजै, ६१ घणे कारणे पिण अधीरा न हुइजै, ६२ रोग कष्ट पड़्या धर्म न छोड़ीजै, ६३ पांच इन्द्रीरी विषयरे वश न पड़ीजै, ६४ खांण भोग, कर्म

रोग जाणीजै, ६५ संसाररो सगपण काचो जाणीजै, ६६ धर्म रो सगपण साचो जाणीजै, ६७ पाषंडी, लोभी, कुगुरुरो संग न कीजै, ६८ निर्लोभी सदगुरुनी संगत कीजै, ६९ सात विसन न सेवीजै, ७० पाप अठारह पर हरीजै, ७१ कोई वांको वर्ते तो ही द्वेष न कीजै, ७२ खोटे हाण, खरै बरकत जाणीजै ७३ पापसुं दुखफल धर्मसुं सुखफल जाणीजै, ७४ गुरुसुं वांको वहै सो बड़ो अभाग्यो जाणीजै, ७५ गुरुसुं सन्मुख वहै तो बडो भाग्य खुल्या जाणीजै, ७६ सीख उंधीमानै तो हीन पुण्यो जाणीजै, ७७ जो झूठ न बोले और सच बोले सो साहूकार कहीजै, ७८ घणी बोली हांसी करीने गुण न खोईजै, ७९ ओछो बचन न काढ़े ते गंभीर आदमी जाणीजै, ८० ओछो बचन काढ़े ते हलको आदमी जाणीजै, ८१ न्याय पक्ष स्वीकार कीजै, अन्याय पक्षमें

कभी न जाईजै, ८२ सुदेव, सुगुरु धर्मकी विनय भगती कीजै, ८३ देव गुरु धर्मकी असातना न कीजै, ८४ पराइ स्त्री वडी है, सो माता छोटी है, सो वेहन भाणजी सामान जानीजै, ८५ संपत, विपत, सुख, दुख, मुढ, चतुर, कर्मारा नाटक जाणीजै, ८६ आरंभ, परिग्रह, विषय कषाय थोड़ो अने घणो दुखरो कारण जाणीजै ।

इति छयासी बोल समाप्त ।

॥ श्रीरस्तु कल्याण मस्तु ॥

॥ अथ कर्म छतीसा लिख्यते ॥

परम निरंजण परम गुरु परम पुरुष परधान । वंदो परम समाधि गत भयभंजण भगवान ।१। जिनवांन करि सुगुरु शिष मनि आनि । किछुक जीव अरु कर्म्मको निरने कहु वखानि ।२। अगम अनंत अलोक नभ तामें

लोक आकाश । सदा काल ताके उदर जीव अजीव निवाश ।३। जीव दरबकी द्वै दसा संसारी अरु सिद्ध । पांच विकल्प अजीवके अषै अनादि अकिद्ध ।४। गगन काल पुद्गल धरम अरु अधर्म अभिधान । अब किछु पुद्गल दरबको कहुं विशेष वखान ।५। धरम दृष्टी सो प्रगट है पुद्गल दरब अनंत । जड़ लक्षण निरजीव दलरूपी मूरतिवंत ।६। जो त्रिभुवन थिति देखिये थिर जंगम आकार । सो पुद्गल करवानको है अनाद विस्तार ।७। अब पुद्गलके वीश गुण कहो प्रगट समझाय । गरभित और अनंत गुण अरु अनंत परजाय ।८। श्याम, पीत उज्जल अरुन हरित मिश्र बहु भांति । विविध वरण जो देखिये सो पुद्गलकी कांति ।९। आमल तिक्त कषाय कटुखार मधुर रस भोग । ए पुद्गलके पांच गुण षटमां नहिं सब लोग ।१०। तातो शिरो चीकनो रुखो नरम

कठोर। हरवो अरु भारी सहज आठ फरस गुण जोर ।११। जो सुगन्ध दुरगन्ध गुण सो पुद्गलको रूप । अब पुद्गल परजायकी महिमा कहो अनूप ।१२। सबदंबंध सूछिम सरल लंब वक्र लघू थूल । विथरनि भेद निउद्दोत तम दुहुको पुद्गल मूल ।१३। छाया आकृति तेज दुति इत्यादिक बहु भेद । ए पुद्गल परजाय सब प्रगट हो हिउछेद ।१४। केइ शुभ केइ अशुभ रुचिर भयानक भेष। सहज सुभाउ विभाउ गति आरू सामान विशेष ।१५। गरभित पुद्गल पिंडमें अलस अमूरति देव। फिरै सहज भव चक्रमें यह अनादिकी टेव ।१६। पुद्गलकी संगत करै पुद्गल ही सो प्रीति । पुद्गलको आपागनैं यह भरमकी रीति ।१७। जेजे पुद्गलकी दशा ते निज मांने हंस। यही भरम विभाऊसो बढ़े करमको वंश ।१८। ज्यो ज्यो कर्म्म विपाक

वसिवाने भ्रमकी मोज। त्योंत्यों निज संपति दूरे जरे परिग्रह फोज।१६। ज्यो वानर मदिरा पीवै विछु डंकत गात। भूत लगै कोतु करै त्यां भ्रमको उतपात।२०। भ्रम संसैकी भूलसौ लखेन सहज सूकीऊ। करम रोग समझे नहीं यह संसारी जीऊ।२१। करम रोगके द्वै चरण विषम दुहुकी चाल। कम्प परकिती लिये एक अेवी असराल।२२। कम्प रोग है पापपद अकर रोगहै पुत्रत्र। ज्ञान रूप हे आतमा दुहु रोग सो सूत्र।२३। मूरख मिथ्या दृष्टि सो निरखै जगकी रोस। डरहि जीव सब पापसो करही पुण्यकी होस।२४। उपजे पाप विकारसो भयतापादिक रोग। चिन्ता खेद वृथा बढ़ै दुख माने सुख माने सब लोग।२५। उपजे पुत्र विकारसो विषे रोग विस्तार। आरति रूद्र वृथा बढ़े सुख-माने संसार।२६। दोउ रोग समान हैं मूढ़ न जाने रीति। कंप रोगसे भय करे अकर रोगसों

प्रीति ।२७। भिन्न भिन्न लच्छण लखै प्रगट दुहु की भांति । एक लहै उद्वेगता एक लहै उपशांति ।२८। कब पकी सीसकुच है वक्र तुरङ्गकी चाल । अन्धकारकी सांसमें कंप रोगके भाल।२६। बकर कूदसी उमंग हेऊ कर बंद की चाल । मकर चांदनीसी दियै अकर रोगके माल ।३०। तम ऊद्योत दोऊं प्रकृति पुद्गलकी परजाई । भेद ज्ञान विउभूड मूमि भटक भटक भरमाई ।३१। दुहु रोगको एक पद दुहु सो मोच्छ न हो । बिना सिक दुहुकी दशा बिरला बूजे कोई ।३२। कोउ गिरी पहार चढ़ कोउ बूजे कूप । मारन दोहुको एक सोक सो कहिवै को द्वै रूप ।३३। भाववासि दुबिधा धरे ताते लखे न एक । रूप न जाणे जलधिको कूपा कोसो भेष ।३४। माता दुहुकी वेदनी पिता दुहु को मोह । दुहु बेडी सो ए बंधि रहे कहवती कंचन लोह ।३५। जाति दुहूकी

एक है दोय इक है जो कोई। गहे आचरे सत्त है सुखल्लभ है सोई ।३६। जाके चित जैसी दशा ताको तैसी दृष्टी। पंडित भव खंडन करै मुड बधावे सृष्टी ।

॥ इति कर्म्म छतीसी समाप्त ॥

॥ चाणक्य नीतिसार दोहावली ॥

शुभ तरुवर ज्यों एक ही,
फूल्यो फल्यो सुवास ।
सब वन आमोदित करे,
त्यों सपूत गुणरास । १ ।

जिस प्रकार फूला फला तथा सुगन्धित एक ही वृक्ष सब बनको सुगन्धित कर देता है, इसी प्रकार गुणोंसे युक्त एक भी सपूत लड़का पैदा होकर कुलकी शोभाको बढ़ा देता है । १ ।

जिन के सुत पण्डित नहीं,
नहीं भक्त निकलङ्क ।

अन्धकार कुल जानिये,
जिमि निशि बिना मयङ्क । २ ।

जिसका पुत्र न तो पण्डित है, न भक्ति करनेवाला है और न निष्कलङ्क (कलङ्क रहित) ही है, उसके कुलमें अन्धेरा ही जानना चाहिये, जैसे चन्द्रमाके बिना रात्रिमें अन्धेरा रहता है । २ ।

निशि दीपक शशि जानिये,
रवि दिन दीपक जान ।
तीन भुवन दीपक धरम,
कुल दीपक सुत मान । ३ ।

रात्रिका दीपक चन्द्रमा है, दिनका दीपक सूर्य है, तीनों लोकोंका दीपक धर्म है और कुलका दीपक सपूत लड़का है । ३ ।

एकहि अच्छर शिष्य कों,
जो गुरु देत बताय ।
धरती पर वह द्रव्य नहिँ,
जिहिँ दै ऋण उतराय । ४ ।

गुरु कृपा करके चाहें एक ही अच्छर शिष्यको सिखलावे, तो भी उसके उपकारका बदला उतारनेके लिये कोई धन संसारमें नहीं है, अर्थात् गुरुके उपकारके बदलेमें शिष्य किसी भी वस्तुको देकर उऋण नहीं हो सकता है । ४ ।

पुस्तक पर आप हि पढ्यो,
गुरु समीप नहिँ जाय ।
सभा न शोभै जार सें,
ज्यों तिय गर्भ धराय । ५ ।

जिस पुरुषने गुरुके पास जाकर विद्याका अभ्यास नहीं किया, किन्तु अपनी ही बुद्धिसे पुस्तक पर आप ही अभ्यास किया है, वह पुरुष सभा में शोभाको नहीं पा सकता है, जैसे—जार पुरुषसे उत्पन्न हुआ लड़का शोभाको नहीं पाता है, क्योंकि जारसे गर्भ धारण की हुई स्त्री तथा उसका लड़का अपनी जातिवालोंकी सभामें शोभा नहीं पाते हैं, क्योंकि—लज्जाके कारण बापका नाम नहीं बतला सकते हैं । ५ ।

वन में सुख सें हरिण जिमि,
तृण भोजन भल जान ।
देहु हमैं यह दीन वच,
भाषण नहिँ मन आन । ६ ।

जङ्गलमें जाकर हिरणके समान सुख पूर्वक घास खाना अच्छा है परन्तु दीनताके साथ किसी सूम (कंजूस) से यह कहना कि "हमको देओ" अच्छा नहीं है । ६ ।

नहीं मान जिस देश में,
वृत्ति न बान्धव होय ।

नहिँ विद्या प्रापति तहाँ,

वसिय न सज्जन कोय । ७ ।

जिस देशमें न तो मान हो, न जीविका हो, न भाई बन्धु हों और न विद्याकी ही प्राप्ति हो, उस देशमें सज्जनोंको कभी नहीं रहना चाहिये । ७ ।

पण्डित राजा अरु नदी,

वैद्यराज धनवान ।

पांच नहीं जिस देश में,

वसिये नाहिँ सुजान । ८ ।

सब विद्याओंका जाननेवाला पण्डित, राजा, नदी (कुआ आदि जलका स्थान), रोगोंको मिटानेवाला उत्तम वैद्य और धनवान्, वे पांच जिस देशमें न हो उसमें बुद्धिमान् पुरुषको नहीं रहना चाहिये । ८ ।

भय लज्जा अरु लोकगति,

चतुराई दातार ।

जिसमें नहिँ ये पांच गुण,

संग न कीजै यार । ६ ।

हे मित्र ! जिस मनुष्यमें भय, लज्जा, लौकिक व्यवहार अर्थात् चालचलन, चतुराई और दानशीनलता, ये पांच गुण न हों, उसको संगति नहीं करनी चाहिये । ९ ।

काम भेज चाकर परख,

बन्धु दुःख में काम ।

मित्र परख आपद पड़े,

विभव छीन लख वाम ।१०।

कामकाज करनेके लिये भेजने पर नौकर चाकरोंकी परीक्षा हो जाती है, अपने पर दुःख पड़ने पर भाइयोंकी परीक्षा हो जाती है, आपत्ति आने पर मित्रकी परीक्षा हो जाती है और पासमें धन न रहने पर स्त्रीकी परीक्षा हो जाती है । १० ।

पीछे काज नसावहीं,

मुख पर मीठी बात ।

परिहरु ऐसे मित्र को,

मुख पय विष घट जात ।११।

पीछे निन्दा करे और काम को बिगाड दे तथा सामने मीठी २ बातें बनावे, ऐसे मित्र का अन्दर विष भरे हुए तथा मुख पर दूध से भरे हुए घड़े के समान छोड़ देना चाहिये । ११ ।

रुप भयो यौवन भयो,

कुल हू में अनुकूल ।

बिना विद्या शोभै नहीं,

गन्धहीन ज्यों फूल ।१२।

रूप तथा यौवनवाला हो और बड़े कुल में उत्पन्न भी हुआ हो तथापि विचारहित पुरुष शोभा नहीं पाता है, जैसे—गन्ध से हीन होने से टेसू (केसूले) का फूल । १२ ।

कौन काल को मित्र है,
देश खरच क्या आय ।
को मैं मेरी शक्ति क्या,
नित उठि नर चित ध्याय ।१३।

यह कौन सा काल है, कौन मेरा मित्र है, कौन सा देश है, मेरे आमदनी कितनी है और खर्च कितना है, मैं कौन जाति का हूँ और क्या मेरी शक्ति है, इन बातों को मनुष्य को प्रतिदिन विचारते रहना चाहिये. क्योंकि जो मनुष्य इन बातों को विचार कर चलेगा वह अपने जीवन में कभी दुःख नहीं पावेगा । १३ ।

तीन थान सन्तोष कर,
धन भोजन अरु दार ।
तीन सँतोष न कीजिये,
दान पठन तपचार ।१४।

मनुष्य को तीन स्थानों में सन्तोष रखना चाहिये—अपनी स्त्री में, भोजन में और धन में, किन्तु तीन स्थानों में सन्तोष नहीं रखना चाहिये—सुपात्रों को दान देने में, विद्याध्ययन करने में और तप करने में । १४ ।

मित्र दार सुत सुहृद हू,
निरधन को तज देत ।
पुनि धन लखि आश्रित हुवैं,
धन बान्धव करि देत ।१५।

जिस के पास धन नहीं है उस पुरुष को मित्र, स्त्री, पुत्र और भाई बन्धु भी छोड़ देते हैं और धन होने पर वे ही सब आकर इकट्ठे होकर उस के आश्रित हो जाते हैं, इस से सिद्ध है कि—जगत् में धन ही सब को बान्धव बना देता है । १५ ।

नेत्र कुटिल जो नारि है,
कष्ट कलह से प्यार ।
वचन भड़कि उत्तर करै,
जरा वहै निरधार ।१६।

खराब नेत्रवाली, पापिनी, कलह करने वाली और क्रोध में भर कर पीछा जवाब देने वाली जो स्त्री है—उसी को जरा अर्थात् बुढ़ापा समझना चाहिये किन्तु बुढ़ापे की अवस्था को बुढ़ापा नहीं समझना चाहिये । १६ ।

जो नारी शुचि चातुर अरु,
स्वामी के अनुसार ।

नित्य मधुर बोलै सरस,
लक्ष्मी सोइ निहार ।१७।

जो स्त्री पवित्र, चतुर, पति की आज्ञा में चलने वाली और नित्य रसीले मीठे वचन बोलने वाली है, वही लक्ष्मी है, दूसरी कोई लक्ष्मी नहीं है । १७ ।

लिखी पढ़ी अरु धर्मवित,
पतिसेवा में लीन ।
अल्प सँतोषिनि यश सहित,
नारिहिँ लक्ष्मी चीन ।१८।

विद्या पढ़ी हुई, धर्म के तत्व को समझने वाली, पति की सेवा में तत्पर रहने वाली, जैसा अन्न वस्त्र मिल जाय उसी में सन्तोष रखने वाली तथा संसार में जिस का यश प्रसिद्ध हो, उसी स्त्री को लक्ष्मी जानना चाहिये, दूसरी को नहीं । १८ ।

॥ शुद्धि पत्र ॥

१०६ आहार रा दोष।

१६ उदगमनराः—

१ आहार कम्मे कहता—समचे साधुरे अर्थे करे ते दोष।

२ उदेसिय कहता---एक साधुरो नाम ले कर बनावै--ते दोष।

३ पुईकमं कहता---आधाकर्म्मी आहार १००० घर आंतरे तांइ लै ते दोष।

१६ उत्पातराः—

११ कुफ तुछा संथियं।

१० एषणाराः—

४ पेईए।

६ मीसे कहता---मिश्र मोरण अत्यादि।

७ अपरणीत कहता---शस्त्र प्रगम्यो नहीं होवे (थोड़े कालरो) तो नहीं लेवै लेवै तो दोष।

८ डायबा कहता--- आंधो, लुलो, लंगड़ो अजीणा करतो वेहरावे ते दोष ।

९ लंते कहता---तुरंतरी जागा लिप्योड़ी होवे उपर कर उलंघ (डाक) कर आहार ले ते दोष ।

१० छंदे कहता--दुध, दही, रावरा छांटा पड़ता होवे तो लेवै नहीं लेवै तो दोष ।

५ आवशकराः---

५ वो परिठावणीया कहता--परठण निमत ले तो दोष ।

२३ दशमी कालकराः---

१ दानठा कहता---कीरती रो दान ।

१० उजाए (बहु अभ्कोधम्म) अपसीय भवणीभ्का ।

११ पडिकुटं कुलंग कहता---निषेद कुलरो

१३ अचित कुलंग ।

१५ सुईं चे (सुरा)

६ आचारंगजीरा।

१२ भगवतीजी सुत्ररा।

५ प्रश्न व्याकरणारा।

६ नसीत सुत्र रा।

२ उत्तराध्ययन रा।

२ दश श्रुत स्कंद रा।

२ ठाणांगजी रा।

१ वेद्कल्प रो।

१ प्रिहासीयेकपे कहता---वांसी राखीने
खावे तो दोष।

१०६

१०८ आहाररा दोष, साधुने कल्पे नहीं

याने

अण कल्पनिक लेवै तो दोष ।

१६ दोष उत्पातरा ।

१ धाए कहता—धायरो काम करके आहार लेवे नहीं ।

२ दुए कहता—दूतीरो काम करके आहार लेवे नहीं ।

३ निमित्त कहता—निमित्त भाषण करके आहार लेवे नहीं ।

४ अजीए कहता—जाती प्रकाश कर आहर लेवे नहीं ।

५ वणीमग्गे कहता—रांक भिखारीकी परे आहार मांग कर लेवे नहीं ।

६ तिगंछे कहता—चिकित्सा अर्थात् वैद्यकी करके दवाई प्रमुख देयकर आहार लेवे नहीं ।

७ कोहे कहता—क्रोध करके आहार लेवे नहीं ।

८ माने कहत—मान करके आहार लेवे नहीं ।

९ माए कहता—कपटाई करके आहार लेवे नहीं ।

१० लोभे कहता—लोभ करके आहार लेवे नहीं ।

११ संथिये कहता—पहिले या पीछे दातारके गुणके प्रसंशा करके आहार लेवे नहीं ।

१२ विद्या कहता---विद्या पढ़ाय कर आहार लेवे नहीं ।

१३ मंत्र कहता---मंत्र जंत्रादिक करके आहार लेवे नहीं ।

१४ चूर्ण कहता---चूर्ण गोली इत्यादि बताय कर आहार लेवे नहीं ।

१५ जोगे कहता-- वशीकरणादि करके आहार लेवे नहीं ।

१६ मूलकरण दोष कहता—गर्भपातन आदि कर्म करके आहार लेवे नहीं ।

———

१६ दोष उदगमनरा ।

दातारसुं लागे अर्थात् श्रावक लगावे ।

१ आहार कम्मे कहता---साधुरे अर्थ भाव भेलायकर आहार बणावे ते आधा कर्मी दोष ।

२ उदेसियं कहता---सगलो आहार दर्शणी निमित्त बनायो हो तो उदेसियं दोष किंचित ठामरे लागो भी लेणो कल्पे नहीं ।

३ सुजता आहार मांही आधा कम्मी अंश मात्र भी भेल करे तो दोष ।

४ मिसीजाय कहता---आपरे वास्ते तथा साधुरे वास्ते भेला रांधे तो दोष ।

५ ठवणा कहता---साधु निमित्त थापणा राखे तो दोष ।

६ पाहुडियाए कहता---साधु अर्थे पावना आगा पाछा करने आहार देवे तो दोष ।

७ पाऊरे कहता---अंधारे मांहि सुं उजास करके देवे तो दोष ।

८ कीय कहता---साधु निमित्त आहार तथा वस्त्र मोल लायकर देवे तो दोष ।

९ पामिचे कहता---उधार लायकर देवे तो दोष ।

१० परियठे कहता---साधु निमित्त आपनी वस्तु दे कर बदलेमें दूजी वस्तु लायकर वेहरावे तो दोष ।

११ अभिहय कहता---आपणे घरसे जो साधुके पास साम्हा जायके देवे तो दोष ।

१२ भिन्न कहता---लेपनादिक छांदो खोलके देवे तो दोष ।

१३ मालोहय कहता---ऊंचासे उतार कर देवे तो दोष ।

१४ अछिजे कहता---दूजेके पाससे खोसकर देवे तो दोष ।

१५ अणिसट्ठेय कहता---दोयके सीरकी वस्तु (एक दूसरेकी बिना रजावंदी) देवे तो दोष ।

१६ अजोयरे कहता---आगाड़ी आधण मांहि साधु आया जाणी इधको ऊरी देवे तो दोष ।

---

१० दोष एषणारा ।

गृहस्थ तथा साधु दोनुं सुं लागे ।

१ शंकीए कहता---गृहस्थीने तथा साधुने

शंका पड़जाय तो साधु आहार लेवे नहीं।

२ मंखीए कहता---हाथरी रेखा तथा मूंछ रा बाल भीना हुवे तो आहार लेवे नहीं।

३ निखिते कहता---असुजती वस्तु ऊपर सुजती वस्तु हुवे तो आहार लेवे नहीं।

४ सुजती वस्तु ऊपर असुजती वस्तु हुवे तो आहार लेवे नहीं।

५ सायरे कहता---अप्रतीतकारी घरमें तथा अनेरा भाजनमें घालकर देवे तो आहार लेवे नहीं।

६ मीसे कहता---मिश्र चीज सुजती असुजती लेवे नहीं।

७ अपरणीते कहता---शस्त्र प्रणम्यो नहीं हुवे तो लेवे नहीं।

८ अंधेसे आहार लेवे नहीं।

९ लंते कहता—तुरंत री जागा लिप्योड़ी हुवे तो वहां लेवे नहीं।

१० छंदे कहता—छींटा पड़ता हुवे तो लेवे नहीं।

दशमी कालमें आहारका २३ दोष।

१ दानठा कहता—दानरे अर्थे किनो हुयो जैसे—डाकोत विगेरहके वास्ते किनो हुयो आहार लेवणो कल्पे नहीं।

२ पुण्यठा कहता—पुण्यरे अर्थे किनो हुयो, दूकानमें धरमादे रो निकालो हुयो तथा मुंवे रे लारे पुण्य रो कियो हुयो कल्पे नहीं।

३ वांणीमगठा कहता—रांक भिखारीरे अर्थे कीन्यो हुयो आहार लेनो कल्पे नहीं।

४ समणठा—बाबा, योगी, सन्यासीके अर्थे कियो लेनो कल्पे नहीं।

५ नियागं कहता—नित्य प्रत्य एक घर रो आहार कल्पे नहीं।

६ सभ्भाएपिंड कहता—सभ्भातर रो आहर लेनो कल्पे नहीं ।

७ रायपिंड कहता—राजपिंड आहर न कल्पे, जैसे—राजारे विवाहरो भोजन, राजारे थाल रो भोजन ।

८ किमछिये कहता—बताय बताय नामसे मांग मांग आहर लेवो तो दोष ।

९ संगट (संगटिये) कहता—सचितरे संगटेरो आहर लेवे तो दोष ।

१० बहु उजाए (बहु अभोधम्म) कहता—थोडो खाणीमें आवे घणो नाखणीमें आवे ऐसो आहार लेवे ते दोष ।

११ पडिकुटं कुलंग कहता—नीच कुल रे घर रो, जैसे-धोबी विगेरह अणकल्पनिक घररो आहर लेवे तो दोष।

१२ मामगं कहता—वर्ज्यों हुये घर रो आहर लेवे तो दोष; जैसे--कोई कहे म्हारे घर

मत आवो तो उस घर जाणो कल्पे नहीं उसको वर्ज्यो घर जाणीजे।

१३ अचियत कहता—अप्रतीतकारी कुल रो आहर लेवे तो दोष।

१४ पूव्वकम्मे, पच्छाकम्मे कहता—पहिला दोष लगावे तथा पीछे दोष लगावे सो आहर कल्पे नहीं; जैसे--आहर वेहराया पहले आगा पाछा साधु आया जाणके करदे तथा वेहराया पाछे फिर बणायले या काचे पानीसुं ठांव या हाथ धोवे तो दोष।

१५ सुर (सुरा) कहता—नशे रो आहर तथा कलाल (सूड़ी) रे घर रो आहार लेवणो कल्पे नहीं।

१६ अलंग कहता—बकरो घर आगे बैठो होवे तो उल्लंघ कर (डाककर) आहार लेवणो कल्पे नहीं।

१७ दारगं कहता—बालक रमतो हुवे या आडो

बैठो हुवे तो उल्लंघ कर आहर लेवणो कल्पे नहीं।

१८ साणगं कहता—सवान (कुत्तो) बैठो होय तो उल्लंघ कर (डाककर) आहार लेवणो कल्पे नहीं ।

१९ बच्छगं कहता—गाय रो बाछड़ो बारने आगे बैठो होय तो उल्लंघ कर आहार लेवणो कल्पे नहीं ।

२० अगाईता चलाईता कहता—आगो पाछो होयजाय जैसे---काचे पानीको लोटो हाथमें है, साधु, साधवी पधारयां देख, जाव तो पाछो घीर जाय या कोई सचित्त वस्तु हाथमें है साधु आया देख रख दे तो आहार लेणो कल्पे नहीं ।

२१ गोबणीकाल मासणी कहता—गर्भवती स्त्रीसे सातमें महीने पीछे आहार लेवे नहीं ।

२२ थाणं पेजमाणी कहता—बालक चुंघते जैसे---बालक चुंघरहा है उस वक्त चुंघते छोड़ाय कर आहार वेहरावे तो लेवे नहीं ।

२३ नीयेद्वार तमसं कहता—कोठी ओबरी जो नीचो बारणो भीतर अंधेरो पड़तो होय तो ऐसे जागारो आहार लेवणो कल्पे नहीं ।

। श्री भगवती सूत्र मांहे १२ दोष अहार का ।

१ खेताइकंते—जो खेत्रमें रहे वहां सूर्य्य उगे (उदे) सुं पहले अहार लेवे तो दोष ।

२ कालाइकंते—पहले पोहरको लियो अहार चौथे पोहरमें भोगे तो दोष ।

३ मगाइकंते—दोय कोस उपरांत अहार
लेय जाय भोगे तो दोष।

४ पमाणाइकंते—प्रमाणसुं अधिक आहार
लेवे तो दोष।

५ आउए—गृहस्थ आयने नेत जाय, नेतियां
आहार लेवे तो दोष।

६ कंतारभत्तं—अटवीमें पो वगेरह होवे उठे
चीणा वगेरह बेंटता हुवे सो लेवे तो दोष।

७ दुभिखभत्तं---दुकालके समय दानशाला
कीनी होय वहां आहार लेवे तो दोष।

८ वद्लीयाभत्तं---बरसाद आया कोई दातार
भिखारीने कोई जागा आहार बांटतो होय
वहां आहार धामे और लेवे तो दोष।

९ गिलाणभत्तं---रोगी गिलाणीरे अर्थे कियो
हुयो आहार लेवे तो दोष।

१० सजोयणा---संयोग मिलाय कर आहार
लेवे तो दोष।

११ अंगारेयं--- सराइ सराइ आहार लेवे तो दोष राग सहित लेवे तो चारित्रका कोयला हो जाय ।

१२ धुमे---मस्तक (माथो) धुणी धुणी कुस-राय कुसराय आहार भोगे तो दोष, द्वेष सहित आहार करे तो चारित्रको धुंवो होय ।

श्री आवशाकमें पांच दोष आहारका ।

१ ऊघाड़ किवाड़ उघाड़नीया कहता—किवाड़ उघड़ाय कर आहार लेवे तो दोष ।

२ मंडी पाहुडीया—शेष निकाल कर रखा है वह शेष लेवे तो दोष ।

३ वलीपाहुडीया----बल बाकुलादिक आहार लेवे तो दोष ।

४ अदिठराए----देखनेमें ना आवे याने अण दीसतो आहार लेवे तो दोष ।

५ परिठावणियां---नरम आहार आयां परठावे तो दोष तथा नाखे जैसो अन्न लेवे नहीं ।

श्रीअचारंग सूत्रमें आहाररा ६ दोष ।

१ नीएपिंड—नित्य आहार बेंटणों साहु त्यार करे मापसे तोलसे बेंटे वह आहर लेवे तो दोष ।

२ सखंडीयं कहता--न्यात जिमणवारमें सेर सारणी आदिकमें आहार लेणो कल्पे नहीं ।

३ बाघायं (बागरणां) कहता--जाचकरे अंतराय देके आहार लेणो कल्पे नहीं ।

४ सघारवेणो कहता--गमना कथाबार्त्ता कह कर रिंझाय कर आहार लेणो कल्पे नहीं।

५ फमेझवा वीएजवा कहता--फुंक देतां पंखीसुं ठारतां ठारकर देता आहार लेणो कल्पे नहीं।

६ भुमालुहडं कहता----भवरेंसें तथा भूमीमें नीची जागासे काढ़कर आहार देवे तो लेणो कल्पे नहीं।

श्री पर्शन व्याकरणरा ५ दोष।

१ रहगं कहता---चुरमेरो त्याग है और लाडु बांधकर बेंहरावे तो लेणो कल्पे नहीं।

२ पजुजायं कहता---दहीरा त्याग होवे और

दहीमें चडुआ मिलाय कर देवे तो लेवें नहीं याने पर्याय पलटाय कर देवे तो लेवे नहीं ।

३ सहयागयं कहता—साधु आपरे हाथसुं औषध पाणी अलावे आहार लेवे तो दोष ।

४ अनुत्तर बाहसमणाठा कहता---भीतर सुं तीन बारना उपरांत को या अण दीसतो आहार लेवे तो दोष ।

५ मोहरंच कहता---चारन, भाटरी तरह वरदावली करके आहार लेवे तो दोष ।

श्री नसीयत सूत्रमें आहाररा ६ दोष ।

१ पुजासियं कहता---बहुतसे मनुष्योंमें से पुकार करके कहे कि "कोई यहां

दातार है" ऐसो कह कर आहार लेणो कल्पे नहीं।

२ अड़वीभतं (अटवीभतं) कहता---"ए ठाम में कांई, ए ठाममें कांई" ऐसो पुछ पुछ आहार लेणो कल्पे नहीं या मजुरादिक रे भाते रो आहार लेणो कल्पे नहीं ।

३ पासंठाभतं कहता---ढीला पासंथा क्रिया रहित ऐसेका आहार लेणो कल्पे नहीं।

४ दुरगछा कुलंग कहता—नखेध कुल लोग दुरगंछा करे ऐसे निंदनीक (ढेढ चम्मरादि) कुल रो आहार लेणो कल्पे नहीं ।

५ सझाए निसीए कहता—सिझातररो नेस-राय रो तथा दलाली रो आहार लेणो कल्पे नहीं ।

६ अनोथीयाभंते कहता—अतिथी रोटी

टुकड़ा मांग कर लावे वह आहार लेणो कल्पे नहीं ।

श्री उत्तराध्ययनजीमें आहाररा दोय दोष ।

१ समणपिंड कहता---नातीला गौतीला रो समणपिंड दोष ।

२ मकारण (अकारण) कहता---बिनाकारण चीज मांगकर लावे तो दोष ।

श्री ठणांगजीमें आहाररा दोय दोष ।

१ पावणा कहता---पावणांरे अर्थ कियो पावणा जीम्या पहिला लेवै तो दोष तथा

पावणा आगा पाछा किया आहार लेवै तो दोष ।

२ मसारे कहता---अभक्ष मांस आहार इत्यादि लेणो कल्पे नहीं ।

श्री दशाश्रुतस्कंधमें आहाररा दोय दोष ।

१ बलअठा कहता---बालकरे अर्थे कियो हुयो आहार बालक जीम्या पहिला लेवे तो दोष ।

२ गोवणठा कहता---गर्भवती स्त्रीके अर्थे कियो गर्भवती स्त्री जीमणे पहिला आहार लेवै तो दोष ।

श्री वेदकल्पमें आहाररो एक दोष ।

१ प्रासिया कहता---काल प्रमाण ऊपरको बासी आहार तथा अति स्निग्ध चीकना झरझरता आहार लेनो कल्पे नहीं ।

॥ इति शुभम् ॥

अधिको ओछो आगे पाछो लिख्यो होय तो मिच्छामि दुक्कडं ।

नोट—धारया हुवा उपयोगमें रहा सो लिख दिया है । आगम प्रमाणे श्री गुरु पासे धार शुद्ध करीजो ।

अथ साधुको बावन अणाचार लिख्यते ।

(अण आचरण कहता आचरवा योग नहीं)

१ उदेशिक आहार भोगवे तो अणाचार, २ मोलरो लियो भोगवे तो अणाचार, ३ नित्य पिंड आहार भोगवे तो अणा० ४ साहमो लायो भोगवे तो अणाचार, ५ रात्रि भोजन करे तो अणाचार, ६ स्नान करे तो अणाचार, ७ गन्ध कपुरादिक भोगवे तो अणाचार, ८ फूलारी माला भोगवे तो अणाचार, ९ विजणासुं वायरो लेवे तो अणाचार, १० स्निग्ध-वासि राखे तो अणाचार, ११ गृहस्थीरा भाजन में जीमे तो अणाचार, १२ राजपिंड भोगवे तो अणा०, १३ सत्रूकार (दान साला) रो भोगवे तो अणा०, १४ मरदन करे तो अणा०, १५ दांत पखाले मसी लगावे तो अणाचार, १६

गृहस्थीरी साता पूछै तो अरणा०, १७ काच, पानीसें मूंढो देखेतो अरणा०, १८ सत्रंजादिक रमत रमे तो अरणा०, १९ जूवे रमे तो अरणा०, २० छत्र माथे धारे तो अरणा०, २१ सावद्य औषध तथा वेदगी करे तो अरणा०, २२ पगरखी मोजा आदि पहरे तो अरणा०, २३ अग्नि रो आरंभ करे तो अरणा०, २४ पल्यंग मांचे ढोलिये पर बैठे तो अरणा०, २५ गृहस्थरे घरे बैठे तो अरणा०, २६ पिठी उगटरणो करे तो अरणा०, २७ गृहस्थ कनेसुं वयावच्च करावे तो अरणा०, २८ जात जरणायने आहार भोगवे तो अरणा०, २९ मिश्र पारणी भोगवे तो अरणा०, ३० गृहस्थरो सररणो बांछे तो अरणा०, ३१ मूलो काचो भोगवे तो अरणा०, ३२ आदो काचो भोगवे तो अरणा०, ३३ सेलड़ी रा खंड भोगवे तो अरणा०, ३४ कंदमूलादिक भोगवे तो अरणा०, ३५ मूल वृक्षादिक भोगवे तो अरणा०,

३६ सभ्यातरपिंड भोगवे तो अणा०, ३७ फल दाडिमादि भोगवे तो अणा०, ३८ बीजतिलादि भोगवे तो अणा०, ३६ सचित्तलूण भोगवे तो अणा०, ४० सिंधो लूण भोगवे तो अणा०, ४१ समुद्रनो लूण काचो भोगवे तो अणा०, ४२ आगरनो लूण काचो भोगवे तो अणा०, ४३ खारी लूण काचो भोगवे तो अणा०, ४४ कालो लूण काचो भोगवे तो अणा०, ४५ वस्त्रने धूप देवे तो अणा०, ४६ वमन करे तो अणा०, ४७ गला हेठला केश लेवे तो अणा०, ४८ विरेचन करे (खाय पीय कर उलटी करे) तो अणा०, ४६ आंखमें अंजन घाले तो अणा०, ५० दांतण करे तो अणाचार, ५१ शरीरमें तेलादि चोपड़े तो अणाचार, ५२ शरीरकी विभूषा करे तो अणाचार ।

॥ इति बावन अणाचार संपूर्णम् ॥

॥ दसवीकाल अध्यायने ३ में आणो ॥

७० गुण करण सित्तरीके ।

गाथा--पिंड विसोही समिइ भावणा पडि-माय इन्द्रिय निरोहो पड़िलेहणागुत्तीओ अभिग्गाहचेव करणातु १ ।

पिंडविशुद्धिके ४ भेद—१ आहार पाणी सुंखड़ी सोपारी आदि फासुक निर्जीव विधि-युक्त लेवे, २ वस्त्र सूत ऊनके सफेद रंगके मानोपेत (साधुको ७२ हाथ और साध्वीको ९६ हाथ) निर्दोष ग्रहण करे, ३ काष्ठ, तुम्बे प्रमुखका पात्र यथा विधि लेवे, ४ अठारे प्रकारके निर्दोष स्थानक मालिककी आज्ञासे लेवे यह चार शुद्धि साचवे ।

५ सुमति युक्त सदा रहे, १२ भावना भावे, १२ पड़िमा धारे, ५ इन्द्री वसमें करे, २५ पड़िलेहणा, ३ गुप्ती, ४ अभिग्रह

द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव सब मिलके ७० गुण करण सित्तरीके हुये।

---

७० गुण चरण सित्तरीके।

गाथा---वयसमण धम्मसंयम वेयावच्चं च बंभ गुत्तीओ नाणाइ नीयंतव कोहोनिग्गहाइं चरणमेयं १।

५ महाव्रत १० प्रकारका साधु धर्म १७ संयम, १० वेयावच्चकरे, ९ वाड शुद्ध ब्रह्मचर्य पाले, ३ ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रयी आराधे, १२ भेदे तप करे, ४ कषाय निग्रह करे यह सर्व ७० चरण सित्तरीके गुण जाणना।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

अथ सामाईककी पाटीयां तथा अर्थ ।

॥ अथ श्री नवकार मंत्र प्रारंभ ॥

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं। एसो पंच णमुक्कारो; सव्व पावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ इति नमस्कारः ॥ १ ॥

अर्थः---(अरिहंताणं) अरि एटले कर्म-रूप शत्रु, तेने हंताणं एटले हणनार, अर्थात् जेणें चार घनघाती कर्मरूप शत्रुनो नाश करयो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोभित तथा वाणीना पांत्रीस गुणोयें करी बिराजमान एहवा विहरमान श्रीअरिहंतने

म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (सिद्धाणं) जेणें सकल कार्य साध्यां, अने जे आठ कर्म खपावी मोक्ष नगरें पहोता अने एकत्रीश गुणोयें करी सहित एवा श्रीसिद्ध भगवाननें म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (आयरियाणं) जे पोते पांच आचार पाले अने बीजाने पलावे छत्रीश गुणें करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीनें म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (उवज्झायाणं) जे शुद्ध सूत्राक्षर पोते भणे, अणे बीजाने भणावे तथा पच्चिश गुणें करी सहित एहवा श्री उपाध्याय-जीने म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (लोए) अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सव्वसा-हूणं) थिविर कल्पादिक भेदोवाला सर्व साधु जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपना साधनार तथा जे सत्तावीश गुणें करीने सहित छे तेहवोंने म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (एसो) ए जे अरिहंतादिक संबंधी, (पंच णमुक्कारो)

पांच प्रकारनो नमस्कार छे ते केह्वो छे? तो के (सव्वपाव) ज्ञानावरणादिक सर्व पाप तेह्नो, (प्पणासणो) प्रकर्षे करी विनाशनो करणाहार छे, वली ते केह्वो छे? तो के (मंगलाणांच सव्वेसिं) सर्व मंगलमांहे (पढमं) प्रथम एटले मुख्य, (मंगलं) मंगल (हवइ) छे ॥ १ ॥

॥ अथ तिख्खुत्तारी पाटी प्रारंभः ॥

॥ श्री मुनिराजको वंदना करनेका पाठ ॥

तिख्खुत्तो, आयाहिणं, पयाहिणं करेमी, वंदामि, णमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासामि, मत्थएण वंदामि ।

अर्थ—(तिख्खुत्तो) त्रण वार, (आयाहिणं) आदक्षिणतः, एटले बे हाथ जोडीने जीमणा-

पासा थकी प्रारंभीने, (पयाहिणं करेमी) प्रदक्षिणा प्रत्ये करुं छुं, (वंदामि) वांदुं छुं, पगे लागुं छूं, (नमंसामि) मस्तक नमाड़ीने नमस्कार करुं छुं, (सक्कारेमि) सत्कार देवुं छुं, (सम्माणेमि) सन्मान देउं छुं, (कल्याणं) कल्याणकारी, (मंगलं) मंगलकारी, (देवयं) धर्मदेव समान, (चेइयं) छकायका जीवने सुखदायक एवा ज्ञानवंत प्रत्ये, (पज्जुवासामि) पर्युपासुं छुं एटले मन बचन कायाए करीने सेवा करुं छुं, (मत्थएण वंदामि) मस्तके करी वांदुं छुं ॥ २ ॥

॥ इति तिक्खुत्तारो अर्थ समाप्तम् ॥

सूचना—पूर्व तथा उत्तर दिशाकी तर्फ मुंह करके तिक्खुत्ताके पाठसे पंचांग नमाय ३ वखत् विधियुक्त वंदना नमस्कार करके श्रीमहावीर स्वामीजीकी तथा अपने धर्माचार्य (गुरुदेव) की तथा वखत्पर जो कोई मुनिराज होवे उनके पाससे सामाईकका चोविसत्थव करनेकी आज्ञा लेना, फिर निम्नोक्त (नीचे लिखा) पाठ बोलना।

———

॥ अथ इरियावहीयानी पाटी प्रारंभ ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं, इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग, पणग दग, मट्टीमक्कडा, संताणासंकमणे, जेमे जीवा, विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाउठाणं, संकामिया, जीवियाउं, ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

अर्थ—(इच्छाकारेण) तुमारी इच्छा-पूर्वक, (संदिसह) आज्ञा करो तो, (भगवन्) हे महाभाग्य ज्ञानवंत ! (इरियावहियं) चालवानो जे मार्ग तेमांहे थइ एवी जे जीवबाधादिक

सपाप क्रिया ते थकी हुं (पडिक्कमामि) पडिक्कमुं निवर्तुं ? इहां गुरु कहे, (पडिक्कमह) पडिक्कमो निवर्त्तो, पाप टालो, तेवारे शिष्य कहे, (इच्छं) प्रमाण छे, हुं पण (इच्छामि) इच्छुं छुं, (पडिक्कमिउं) पाप कर्मसुं निवर्तवा वास्ते, (इरियावहियाए) गमन छे प्रधान मुख्य जेमा एवो जे मार्ग तेने विषे थती एवी जे (विराहणाए) जंतुओनी विराधना ते थकी, (गमणागमणे) जातांने आवतां, (पाण) प्राणीने, (कमणे) पगे करी चांप्या थकी, (वीय) बीजने, (कमणे) पगे करी चांप्या थकी, (हरिय) नीलवर्णवाली बनस्पति तेने, (कमणे) पगे करी चांप्या थकी, (ओसा) ठार ओस एटले सूक्ष्म अपकाय आकाशथकी पडे ते, (उत्तिङ्ग) कीडीयोंनां नागरां कहता कीडी नगरा (पणग) पांचवर्णी नीलण फूलण, (दग) पाणी, (मट्टी) काची माटी, (मक्कडा) मर्कट, एटले कोलिआवडाना (संताणा) संतान,

ए सत्त्वने (संकमणे) पगे करी पीड्याथकी अथवा मसल्याथकी, घणुं सुं कहुं ? (जे) जे कोई, (मे) मैं (जीवा) जीवो, (विराहिया) विराध्या होय दुःखमांहे पाड्या होय,(एगिंदिया) जेहने शरीर रूप एकज इन्द्री होय ते, पृथ्वी, पाणी, अग्नि,वायु,वनस्पतिना जीव, (बेइन्द्रिया) शरीर तथा मुख ए दोय इन्द्रीवाला जे शंख, शीप,गंडोला,अलसीया,एहवा जेहने पग न होय ते बेन्द्रि, (तेइंदिया) तीन इन्द्रीवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक होय ते, कुंथुवा, जु, लीख, मांकड़, कीड़ी प्रमुख जेहना मुख ऊपरे शिंग होय ते, (चउरिंदिया) चार इन्द्रीवाला ते जेने शरीर, मुख, नाकने आंख होय ते, माखी, मच्छर, डांस, वींछी, भमरी, टीडी जे उड़णे रा, जीव जेने आठ पग तथा मस्तके शिंग होय ते, (पंचिन्दिया) पांच इन्द्रीवाला जेने शरीर, मुख, नाक, आंख अने कान

होय ते जलचर, खेचर, ए सर्वतिर्यंच जाणवा तथा मनुष्य, देव, नारकी ए सर्व पंचेन्द्रिय जीव कहिये, हवे ए सर्व जीवोने केवी रीते विराध्या होय? तेना प्रकार कहे छे, (अभिहया) सामा आवतां हण्या, (वत्तिया) एक ढिगले करया तथा धुलें करी ढांक्या, (लेसिया) भूमीमें घस्या तथा लगारेक मसल्या, (संघाइया) मांहोमांहे शरीरने मेलववे करी एकठा कीधा, (संघट्टिया) थोडो स्पर्श करवे करी दुहव्या (परियाविया) समस्त प्रकारे परिताप पमाड्या पाड्या, (किलामिया) गाढी किलामणा उपजावीने मारया नहीं, पण मृतप्राय कीधा, (उद्दविया) त्रास पमाडीने हाली चाली शके नहीं एहवा कीधा, (ठाणाओ) एक स्थानक थकी उपाड़ाने, (ठाणं) बिजे ठेकाणें, (संकामिया) संक्रमाव्या मूक्या, (जीवियाओ) जीवित थकी, (विवरोविया) चूकाव्या, मार्या,

नाश कीधा. (तस्स) ते संबन्धी जे अतीचार लाग्या ते, (मिच्छामि) म्हारुं मिथ्या पाप कहीये ते, (दुक्कडं) दुष्कृत एटले निष्फल थाओ ॥ ३ ॥

॥ इति इरियावहियाकी पाटी समाप्तम् ॥

॥ अथ तस्सउत्तरीनी पाटी प्रारंभ ॥

तस्सउत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं, अन्नत्थ, ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचा-

लेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्जमेकाउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, णमुक्कारेणं, नपारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४ ॥

अर्थ—(तस्स) ते पापनीज, (उत्तरीकरणेणं) वली विशेष करी शुद्ध करवुं अर्थात् जे अतिचारोनुं आलोयण प्रमुख पूर्वे कीधुं छे, तेनी वली विशेष शुद्धिने अर्थे कायोत्सर्ग करुं छुं, ते कायोत्सर्गनो (पायच्छित करणेणं) शुद्ध प्रायश्चित्त ते पापनी आलोयणा, करवा थकी, (विसोहीकरणेणं) विशुद्ध, निर्मलता करवासारुं, (विसल्लीकरणेणं) माया शल्य, नियाणा शल्य, मिथ्यात्व शल्य, ए तीन शल्य टालवा थकी, (पावाणंकम्माणं) संसार हेतुरूप जे पाप कर्म तेने, (निग्घायणंट्ठाए) निर्घातन एटले उच्छेदन करवाने अर्थे,

(ठामि) कायाने एक ठामे करूं छुं, (काउस्सग्गं) कायाने हलाववी नहीं ते रूप काउस्सग्गप्रत्ये करुं छुं, हवे इहां काया हलाववी नहीं, एवी प्रतिज्ञा करी छै, माटे शरीरनुं कांइ पण हालवुं थवाथी प्रतिज्ञानो भंग थाय तेथी कउस्सग्गमा वार आगार मोकला राख्या छे, (अन्नत्थ) उच्छ्वासादिक जे आगारो कहता अगार कहेसे, ते आगारो वर्जीने बीजे स्थानके कायाने हलाववानो नियम करुं छुं, तेना नाम कहे छे, (उससिएणं) ऊंचो श्वास लेवाथी, (निससिएणं) नीचो श्वास मूकवाथी, (खासिएणं) खासी आवे एटले खोखलो आव्या थकी, (छीएणं) छींक आया थकी, (जंभाइएणं) जाभली ते बगासू लेवा थकी, (उड्डुएणं) ओडकार आया थकां, (वायनिसग्गेणं) वायु निकलतां थकां, (भमलिए) भ्रमरी चक्री आववाथी, (पित्तमुंच्छाए)

पित्तरा कोपसूं मूर्छा आया थकां, (सुहुमेहिं) सूक्ष्म थोड़ोक, (अंगसंचालेहिं) शरीर हलाववाथी, (सुहुमेहिं) थोड़ो, (खेलसंचालेहिं) श्लेष्म तथा मुखना थूंकनुं चालवदुं करवा थकी, कफ गिलवा थकी, (सुहुमेहिं) सूक्ष्म थोड़ी, (दिट्ठि संचालेहिं) चक्षु दृष्टी हलाववा थकी, (एवमाइएहिं) ए आदि करीने बीजा, (आगारेहिं) आगार लेता थकां, (अभग्गो) भांगे नहीं, खंडित हुवे नहीं, (अविराहिओ) हानी पहोंचे नहीं, (हुज्ज) होजो, (मे) म्हारो, (काउस्सग्गो) काया स्थिर राखवी, (जाव) ज्यां सुधी, (अरिहंताणं भगवंताणं) अरिहंत भगवानने, (नमुक्कारेणं) नमस्कार करूं त्यांसुधी, (नपारेमि) पाडु नहीं ध्यान संपूर्ण न करूं, (ताव) त्यांसुधी, (कायं) म्हारी कायानें, शरीरने, (ठाणेणं) एक ठिकाणें स्थीरपणे राखीने, (मोणेणं) अबोला-रहीने, (झाणेणं)

एकाग्र ध्यान तेणों करीने, (अप्पाणं) म्हारी काया ते प्रत्ये, (वोसिरामि) हुं तजुं छुं, ।

॥ इति तस्सउत्तरीकी पाटी संपूर्णम् ॥

सूचना—इतना बोलके कायोत्सर्ग (काउसग) करणा, काउ-स्सगमें हाथ पैर मुंह शरीर वगेरे हलन चलन करणा नहीं, अपने शरीरको स्थिर रखना, काउस्सग्गमें इरियावहियाएकी पाटी, जीवियाउ ववरोविया तक मनमें गुणना फिर नमोअरिहंताणं, ऐसा प्रगट मुंढेसे बोलके काउस्सग्ग पाड़णा, फिर निचेकी पाटीयां प्रकट बोलना ।

अथ चार ध्यानकी पाटी ।

काउस्सग्गमें आर्तध्यान, रूद्रध्यान ध्यायो होय, धर्मध्यान, शुक्लध्यान नहीं ध्यायो होय तथा काउस्सग्गमें मन चल्यो होय, वचन चल्यो होय काया चली होय तो तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

अथ लोगस्सकी पाटी।
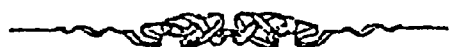
लोगस्सउज्जोयगरे, धम्मतित्थयरेजिणे, अरिहंते, कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली।१। उसभ १ मजिय २ च वंदे, संभव ३ अभिनंदणं ४ च सुमइं च ५। पउमप्पहं ६ सूपासं ७ जिणंच चंदप्पहं ८ वंदे।२। सुविहिंच ९ पुप्फदंतं, सीयल १०, सिज्जंस ११, वासुपुज्जं च १२। विमल १३ मणंतं १४, च जिणं धम्मं १५ संतिं १६ च वंदामि।३। कुंथुं १७ अरं १८ च मल्लिं १९, वंदेमुणि सुव्वयं २० नमिजिणं च। २१ वंदामि रिट्ठनेमिं २२, पासं तह २३ वद्धमाणं च २४।४। एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला, पहीण जरमरणा, चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा में पसीयंतु।५। कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं समा-

हिअर मुत्तमं दिंतु । ६ । चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु । ७ ।

अर्थ—(लोगस्स) पंचास्तिकायात्मक लोकने विषे, (उज्जोयगरे) उद्योतना करणहार, (धम्म) धर्म (तित्थयरे) तीर्थना करनार, (जिणे) रागद्वेषना जितनार एहवा, (अरिहंते) अरिहंतने, (कित्तइस्सं) कीर्ति करुं छुं, (चउवीसंपि) ऋषभादिक चोवीस परमेश्वर तथा अन्यनी, (केवली) केवलज्ञानी तीर्थंकरना नाम कहे छे, (उसभ) श्रीऋषभदेव स्वामी, (मजियंच) श्री अजितनाथ प्रत्ये, (वंदे) वांदु छुं, (संभव) श्री संभवनाथ प्रत्ये, (मभिणंदणं) श्री अभिनंदन नाथ प्रत्ये, (च) वली, (सुमइं) श्री सुमतिनाथने, (च) वली (पउमप्पहं) श्री पद्मप्रभू स्वामी प्रत्ये, (सुपासं) श्री सुपार्श्वनाथजीने, (जिणं) रागद्वेषना

जितनार, (च) वली, (चंदप्पहं) श्री चन्द्र-प्रभजीने, (वंदे) वांदु छुं, (सुविहिं) श्री सुविधिनाथजीने, (च) वली, (पुप्फदंतं) श्री पुष्पदंतजी प्रत्ये, (सीयल) श्री शीतल नाथजीने, (सिज्जंस) श्री श्रेयांसनाथजीने, (वासुपुज्जं) श्री वासुपूज्य स्वामी प्रत्ये, (च) वली, (विमल) श्रीविमलनाथजीने, (मणंतं) श्री अनंतनाथजीने, (च) वली, (जिणं) रागद्वेषना जीतनार, एहवा (धम्मं) श्री धर्म-नाथजीने, (संतिं) श्री शांतिनाथजीने (च) वली, (वंदामि) वांदु छुं, (कुंथुं) श्री कुंथू-नाथजीने, (अरं) श्री अरनाथजीने, (च) वली, (मल्लिं) श्री मल्लिनाथजीने, (वंदे) वांदु छुं, (मुणिसुव्वयं) श्री मुणीसुव्रतस्वामी प्रत्ये, (नमिजिणं) श्री नमिजिणने (च) वली, (वंदामि) नमस्कार करुं छुं, (रिट्ठनेमिं) श्री अरिष्टनेमिजी प्रत्ये, (पासं) श्री पार्श्व-

नाथस्वामी प्रत्ये, (तह) तथा, (वद्धमाणं) श्री वर्द्धमान स्वामी प्रत्ये, हुं वांदु छुं, (च) वली, (एवं) ए प्रकारे, (मए) म्हारे जीवे जे, (अभिथुआ) नामपूर्वकस्तव्या छे ते चोवीस परमेश्वर कहवा छे? तो के (विहुय) टाल्या छे, (रयमला) कर्मरूपी रज तथा मैल, (पहीन) अतिशय करीने, (जरमरणा) जरा तथा मरणने जेणे क्षय कर्या छे, (चउवीसंपि) चोवीस तीर्थंकर तथा अन्य, (जिणवरा) जिनवर, (तित्थयरा) तर्थंकर ते, (मे) म्हारा ऊपर, (पसीयंतु) प्रसन्न होवो, (कित्तिय) कीर्तित छे, (वंदिय) वंदित छे, (महिय) पुज्य छे, इन्द्रादिक पूजे छे एहवा, (जे) जे तीर्थंकर, (ए) ए प्रत्यक्ष (लोगस्स) लोकने विषे, (उत्तमा) उत्तम एहवा, (सिद्धा) सिद्ध भगवन्त! तमे मुझने, (आरुग्ग) द्रव्य तथा भाव रोग रहित, (वोहिलाभं) श्री

जिनधर्मनी प्राप्तिनो लाभ थवानें अर्थे, (समाहिवर) प्रधान समाधि, उत्तमं उत्कृष्ट ऊंची एहवी, (दिंतु) देत्रो, (चंदेसु) चंद्रमा थी अधिक, (निम्मलयरा) अत्यंत निर्मल, (आइच्चेसु) सूर्यसमुदाय थकी पण (अहियं) अधिक, (पयासयरा) प्रकाशना करणहार (सागरवर) प्रधान, छेल्लो स्वयंभुरमण नामा समुद्र तेनी परे (गंभीरा) गुणे करी गंभीर, (सिद्धा) एहवा जे सिद्धो ते, (सिद्धिं) मुक्ति ते, (मम) मुझने, (दिसंतु) देवों।

॥ इति लोगस्सकी पाटी संपूर्णम् ॥

सूचनाः— तिख्खुत्ताके पाठसे विद्धियुक्त वंदना करके गुरु माहाराजके पाससे सामाईक पच्चख्खणकी आज्ञा मागना, फेर निचेका पाठ बोलना।

॥ अथ सामायिक लेवानी पाटी प्रारंभ ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं, *मोहूर्त, पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

अर्थ—(करेमि) हुं करूं छुं (भंते) हे पूज्य! (सामाइयं) समता परिणामरूप सामायिकने, (सावज्जं) सावद्य काम, पाप, तेने (जोगं) मन वचन कायाना योग, करी (पच्चक्खामि) हुं निषेध करूं छुं, (जाव) ज्यां सुधी, (नियमं) सामायिक व्रतना नियमने (पज्जुवासामि) हूं

---

* महुर्त्त जितना करना होवे उतना बोलना, १ महुर्त्त ४८ मिनिटका समझना, ज्यादा बैठे तो लाभ है, मगर ४८ मिनिटसे कमी तो सामायिक करना नहीं, कमी करनेसे समायिकमें दोष लगता है ।

सेवुं, त्यांसुधी, (दुविहं) दोय करनसुं (तिविहेणं) तीन जोगसूं (नकरेमि) हुं करूं नहीं (नकारवेमि) हुं दुजापासें न करावुं, (मणसा) मने करी, (वयसा) वचने करी, (कायसा) कायाए करीने (तस्स) ते सावद्य व्यापाररूप पापने, (भंते) हे भगवंत! (पडिक्कमामि) निवृतुं छुं, (निंदामि) हुं आत्मानी साखें निंदुं छुं, (गरिहामि) गुरूनी साखें हुं विशेषें निंदुं छुं, (अप्पाणं) म्हारी आत्माने, ते दुष्ट क्रिया थकी (वोसिरामि) वोसिरावुंछुं विशेषे करीने तजुं छुं।

सूचना—यहां डाबा गोडा ऊँचा रखके बैठना और दोनुं हाथ जोड़कर डाबे गोढेपर रखके नमुत्थुणंका पाट दो वक्त बोलना।

अथ श्री नमुत्थुणांनी पाटी प्रारंभः।

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थगराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं,

पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोग-हियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अ-भयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरण-दयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, दिवोत्ताणं सरण-गइपइट्ठाणं, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहियाणं, मुत्ताणं मोय-गाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं, संपत्ताणं, नमो जि-णाणं, जियभयाणं ॥ १ ॥ इति ॥ ७ ॥

अर्थ :—(नमुत्थुणं) नमस्कार होवो, (अरिहंताणं) श्री अरिहंत देवने, (भगवं-ताणं) भगवंतने, (आइ गराणं) धर्मना

आदिना करनारने, (तित्थगराणं) तीर्थना स्थापणार एटले साधु, साधवी, श्रावक, अने श्राविका, ए चार जातना तीर्थना स्थापनार, (सयंसंबुद्धाणं) पोते सम्यक प्रकारे तत्वना जाण थया, (पुरिसुत्तमाणं) पुरुष मांहे उत्तम, (पुरिससीहाणं) पुरुष माहे सिंह समान, (पुरिसवरपुंडरीयाणं) पुरुष माहे पुंडरीक कमल समान, (पुरिस) पुरुष माहे, (वर) प्रधान, (गंधहत्थीणं) गन्ध हस्ती समान, (लोगुत्तमाणं) लोक मांहे उत्तम, (लोगनाहाणं) लोकना नाथ, (लोगहियाणं) लोकना हितकारी, (लोगपईवाणं) लोकने विषे दीपक समान, (लोगपज्जोयगराणं) लोकमांहे उद्योतना करणार (अभयदयाणं) अभय दानना देणार, (चक्खुदयाणं) ज्ञानरूप चक्षुना देणार, (मग्गदयाणं) मोक्ष मार्गना देणार, (सरणदयाणं) सरणना देणार,

(जीवदयाणं) संयम जितव-जिवतरना देणार, (बोहिदयाणं) सम्कित रूप बोधना देणार, (धम्मदयाणं) धर्मना देणार, (धम्मदेसियाणं) धर्मना उपदेशना देणार, (धम्मनायगाणं) धर्मना नायक, (धम्मसारहीणं) धर्मरूप रथना सारथी, (धम्म) धर्मने विषे, (वर) प्रधान (चाउरंत) चारगतिनो अंत करवा माटे, (चक्कवट्टीणं) चक्रवर्ति समान, (दिवोत्ताणं) संसार समुद्रमा द्वीप समान, दुःखना निवारण करनार, (सरणगइपइट्ठाणं) सरण गतिना स्थानक भूत शरणागत वत्सल, (अप्पडिहय) नहीं हणाय एवु, (वर) प्रधान, (नाण) ज्ञान, (दंसण) दर्शन (धराणं) धरणार, (विअट्टछउमाणं) छद्मस्तपण् गयुं छे, एटले कर्मरूपी आवरण, क्षयकीधा (जिणाणं) राग द्वेषने जीत्या छे, (जावियाणं) बिजाने राग द्वेष थकी जिताव्या छे, (तिन्नाणं)

संसाररूपी समुद्र तर्या छे, (तारयाणं) बिजाने संसार समुद्र थी तारे छे, (वुद्धाणं) पोते तत्व ज्ञानने समज्या, (वोहियाणं) बिजाने तत्वज्ञान समजावणार, (मुत्ताणं) पोते चातुर्गतिक विपाक विचित्र कर्मथकी मुकाणा तथा (मोयगाणं) बीजा भव्य प्राणीने कर्म थकी मुकावणार छे, (सव्वन्नूणं) सर्व ज्ञानी छे, (सव्वदरिसिणं) सर्व पदार्थना देखणार छे, (सिव) सर्व उपद्रव रहित (मयल) अचल (मरुए) रोग रहित, (मणंत) अनंत ज्ञानादि चतुष्टये करी युक्त छे, मांटे अनंत छे, (मक्खय) सर्व काल निश्चल, (मव्वबाह) बाधा पीडारहित, (मपुणराविति) जे गति थकी फरी संसारने विषे अवतार लेवो नथी, एहवी (सिद्धिगई) सिद्ध गति छे, (नामधयं) एवुं नाम, (ठाणं) एवुं स्थानक (संपत्ताणं) मोक्ष नगर प्रत्ये पाम्मा छे, एहवा अरिहंत

भणी (नमो) नमस्कार होजो, (जिणाणं) कर्मरूपी शत्रु ने जीतणार, तथा (जियभयाणं) इहलोकादिक सात भय प्रत्ये जीतणार ने ।

सूचना—इस तरहसे विद्धियुक्त सामायिक करके सामायिकका काल पूरा न होवे जहां तक ज्ञान ध्यान करणा व सिखा हुवा ज्ञान पिछा परियट्टण (याद) करणा व नवीन बोलचाल सीखना व चितारणा और धर्म सबंधी पुस्तक वगेरे पढ़नेका अभ्यास करना, इस तरहसे धर्म सबंधी ज्ञान-ध्यान करके सामायिकका काल पूर्ण करना, सामायिकका काल पूर्ण होनेसे चोविसस्तव करना, चोविस-स्तवमें पहेली-इरियावहियाकी पाटी फिर तस्सउत्तरीकी पाटी गुणके १ लोगस्सकी पाटीका काउस्सग करके १ नमुकारमंत्र बोलके काउस्सग पारना, फेर चार ध्यानकी पाटी बोलना फेर १ प्रगट लोगस्स बोलना, फिर निचे बैठेके ऊपर वताया उस तरहसे दो वखत् नमुत्थुणंका पाठ बोलना, दूसरे नमुत्थुणंका अन्तमें जहां ठाणं संपत्ताणं आवे उस स्थानपर ठाणं संपावियो कामस्स ऐसा बोलना, फेर निचे लिखी हुई पाटी बोलना ।

———

अथ सामायिक पारवानी पाटी प्रारंभः।

नवमा सामायिक व्रतना, पंच अइआरा, जाणियवा, न समायरियव्वा, तंजहा ते आलोउं, मण दुप्पणिहाणो, वय दुप्पणिहाणो, कायदुप्पणिहाणे, सामाइयस्स अकरणयाए, सामाइयस्स अणवुट्ठियस्स करणयाए, तस्स मिच्छामि दुक्कडं; सामायिकने विषे दस मनना, दस वचनना, बार kायाना, ए बत्रीश दोष मांहेलो कोई दोष लाग्यो होय तो मिच्छामि दुक्कडं, आहारसंज्ञा भयसंज्ञा, मिहुणसंज्ञा, परिग्गहसंज्ञा, ए चार संज्ञामांहेली कोई संज्ञा करी होय तो मिच्छामि दुक्कडं; स्त्री कथा, राज कथा, भत्तकथा, देशकथा, ए मांहेली कोई कथा करी होय तो मिच्छामि दुक्कडं, सामायिक समकाएणं; फासियं, पालियं, सोहियं, तिरियं,

कित्तियं, आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥८॥

अर्थः—नवमा सामायक व्रतना, (पंच अइयारा) पांच अतीचार, (जाणियव्वा) जाणवा, (नसमायरियव्वा) आचरवा नहीं, (तंजहा) जेम छे तेम (ते आलोउं) ते कहुं छुं, मणदुप्प-णिहाणे) मनमाठो वर्त्यु होय, (वयदुप्प-णिहाणे) वचन माठुं वर्त्यु होय, (कायदुप्प-णिहाणे) काया माठी प्रवर्तावी होय, (सामा-इयस्स) सामायकने (अकरणयाए) बरा-बर कीधीके नही तेनो बराबर खबर न रही होय, (सामाइयस्स) सामायकने (अणवुट्ठि-यस्सकरणयाए) पुरी थया विना पारी होय, तो (तस्स) तेनुं (मि०) खोटो किधो ते निष्फल थावो (आहारसंज्ञा) खावानी इच्छा, (भयसंज्ञा) भय लागो होय, (मिहुणसंज्ञा) मैथूननी संज्ञा करी होय, (परिग्गहसंज्ञा)

धन द्रव्यनी इच्छा करी होय, ए चार संज्ञा माहेली कोई संज्ञा करी होय, तो (मि०) ए खोटो कीधेलुं निष्फल थावो ; (सामायिक समकाएणं) सामायक कायाए बराबर रीते, (फासियं) स्पर्श करियो, अंगीकार करियो; (पालियं) तेवोज पाल्यो, (सोहियं) शुद्ध कर्यों, (तिरियं) पार उतारियो, (कित्तयं) कीर्ति कीधी, (आराहियं) आराधना किधी (आणाए) वितराग देवनी आज्ञा ले, (अणु-पालीयं) पाली, (नभवइ) न होय, (तस्स मिच्छामि दुक्कडं) खोटा कीधानुं फल निष्फल थावो, इति सामायक संपूर्ण ॥

॥ पाठन्तर ॥

॥ सामायिककी विधि ॥

॥ प्रथम श्री सीमंधर स्वामीजीनी आज्ञा

लेईने एक नवकार गुणीने "इरियावहियानी" पाटी भणवी ; पछी तस्स उत्तरीनी पाटी भणी ने काउस्सग्ग करवो, काउस्सग्गमांहि "इरियावहियाएथी मांडीने जीवियाऊ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं" सुधीनो पाठ मनमां बोलीने एक नवकार मनमां कहीने काउस्सग्ग पारवो, पछी प्रगट "लोगस्सकी" पाटी कहीने सामायिकनी आज्ञा लेईने "करेमि भंतेनी" पाटी "जावनियमं" सुधी कहीने आगल मुहूर्त्त (घालणो हुवे तिके) घालणो, पछी "पज्जुवासामि" थकी "अप्पाणं वोसिरामि" सुधी पाठ कहीने सामायिक पच्चक्खवो, पछी डाबो गोडो उभो करीने दोयवार "नमुत्थुणं" नी पाटी केहवी, दुजा नमुत्थुणंने छेहडे "ठाणं संपाविऊ कामस्स "नमो जिणाणं" एम केहवुं, अने सामायिक पारती वेला "इरियावहीया,तस्स उत्तरी" नी पाटी भणीने काउस्सग्ग करवो,

पछी काउस्सग्गमांहे इरियावहियानी पाटी कहिने एक नवकार गणीने काउस्सग्ग पारवो, पछी "लोगस्स" भणी "नमुत्थु णं" दोय वार ऊपर लिख्या मुजब कहीने नवमा सामायिक-व्रतनी पाटी "अणुपालियं न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं" सुधी कहीने तीन नवकार गणीने सामायिक पारवुं ।

❀ विशेष गुरु गम्यसे धारे ❀

॥ इति श्री सामायिक अर्थ विधि समाप्त ॥

नोट :—पूर्व तथा उत्तर दिशाकी तर्फ मुंह करके सामायिक करै और श्री गुरु महाराजके पास बैठा होय तो मुंह श्री गुरू महाराजकी तर्फ रखे श्री गुरू महाराजकी व्याख्याण (बखाण) वाणी सुणे श्री गुरू महाराज फरमावे उसमें उपयोग रखे और धारे ।

॥ अथ प्रश्नोत्तर वाक्य संग्रह ॥

प्रश्न	उत्तर
१ भणनो कांई ?	गुरु पासे ज्ञान,

२ तजणो कांई ? संसार कार्य,

३ सुणीये कांई ? सदुपदेश,

४ पारनहीं पाय इसो कांई ? स्त्री चरित्र, तृष्णा,

५ लघु छोटी कांई ? याचना करणीसो,

६ निद्रा कांई ? मूढ पणो,

७ चन्द्र तुल्य शीतल कांई ? सुजनरो समागम,

८ सुख कांई ? आत्म विरति, संतोप,

९ सत्य सार कांई ? उपकार, सर्व प्राणीको हित करणोसो,

१० जीवने वलभ कांई ? प्राण,

११ अनर्थ फलदायक कांई ? चंचल मन,

१२ मरण कांई ? अति मूर्खपणो,

१३ अमूल्य कांई ? मोक्षेमें काम आवें सो,

१४ सर्व गुणको मूल कांई ? विनय,

१५ सर्व धर्मको मूल कांई ? दया,

१६ कलहरो मूल कांई ? हासि,
१७ सर्व रोगरो मूल कांई ? अजिर्ण,
१८ सर्व बंधणरो मूल कांई ? स्नेह राग,
१६ सर्व पापरो मूल कांई ? लोभ, परिग्रह,
२० पवित्र जल कोण ? शुद्ध मनवालो,
२१ निन्द्रावान कोण ? अविवेकी, शून्य चित्तजन,
२२ चोर कोण ? पंचेन्द्रिका विषय,
२३ वैरी कोण ? मान, अनुद्योग,
२४ घणो अन्धो कोण ? संसार रागी,
२५ चतुर कोण ? स्त्री चरित्रसें अखंडित रहे सो,
२६ जाग्रण कोण ? विवेकी जन,
२७ मित्र कोण ? पापसे निवृत्तावेसो
२८ आंधो, वहेरो अने मूर्ख कोण ? अकृतकार्य करनेवालो, हित बचन सुणने वालो अने समय अनुकूल न बोलने वालो,

२६ डाह्यो कोण ? — संसार घटावै सो,

३० यौवन, धन, आयु कैसा ? — कमल पत्रपर पाणी री बुंद जैसा,

३१ अप्रीति कहां रखणी ? — पर स्त्रीमें, पर धनमें, कपटमें,

३२ जगत कोण जित्यो छे ? — सत्य तितिक्षावान-वैराग्यवंत पुरुष,

३३ बुद्धिमान कोणसें भय पावे ? — संसार सागरसे,

३४ प्राणी वश केने रहे ? — सत्य, प्रिय वचन तथा विनयवानके,

३५ स्नेह किसका जाणीजे ? — सुधर्ममें स्नेह होय उसका,

३६ सुजनको कहां ऊभो रहेणो ? — पक्षपात टालके न्याय मार्गमें,

पांच व्यवहार श्रीभगवती सूत्रमें कहे सो लिख्यते ।

पंच व्यवहार पणते तंजहा आगमो सुय आणा धारणा जीए ।

(१) पहलो आगमो व्यवहार ।

श्रीतीर्थंकर केवलज्ञानी चौदह पूर्व ज्ञानके धारक जावत् दश पूर्वधारी प्रवर्तते होए उनकी आज्ञामें प्रवर्ते सो आगम व्यवहार ।

(२) दुजो सुय व्यवहार ।

आचारंगादिक सूत्रोंमें कहे मुजब प्रवर्ते सो सूत्र व्यवहार ।

(३) तीजो आणा व्यवहार ।

जिस वक्त जो आचार्य प्रवर्ते होए उनकी आज्ञामें प्रवर्ते चले अथवा आचार्य दूर देशावरमें विचरते होए वह पत्र द्वारा गुढार्थादी कर जो आज्ञा देवे उसमें प्रवर्ते सो आणा व्यवहार ।

(४) चौथो धारणा व्यवहार ।

पूर्व परम्परासे चलता आता आचार गोचरादिकमें प्रवर्तें तथा गुर्वादिकसे धारणा कर रखी होवे उस मुजब प्रायश्चित देवे सो धारणा व्यवहार ।

(५) पांचमो जीए व्यवहार ।

द्रव्यक्षेत्र काल भावमें फरक पड़ा देख या संघयणादिककी हीणता देख आचार्य और चतुर्विध संघ मिलकर जो निर्वद्य मर्यादा बांधे उस मुजब प्रवर्तें—चले सो जीए (जित) व्यवहार। इन पंच प्रकारके व्यवहार मुजब प्रवर्तता हुवा भगवंतकी आज्ञाका उल्लंघन नहीं करता है ।

॥ इति ॥

॥ शुभं भवन्तु ॥

ओछो अधिको आगो पाछो लिख्यो होय तो तस्स-मिच्छामि दुक्कडं ॥

सेवं भंते सेवं भंते ।

ॐ नमस्सिद्धं

॥ श्रीवीतरागदेव ऋषभ जिनेश्वराय नमः ॥

श्री छत्तीस बोल संग्रह

द्वितीय भाग

॥ मङ्गलाचरण ॥

ओंकार उदार अगम्य अपार संसारमें सार पदारथ नामी। सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप भयो सबही सिर भूप सुधामी॥ मन्त्रमें यन्त्रमें ग्रन्थके पन्थमें जाकुं कियो धुर अन्तरजामी। पञ्चहि इष्ट बसै परमिष्ट सदा धमसी करैं ताहि सलामी॥१॥

॥ दोहा ॥

बोल छतीस नाम है, कीना अवि उपकार ।
गुरु मुखसे धारजो, द्वितीय भाग सुजाण ॥१॥
गुरु समीपे जायने, लीजो अर्थ विचार ।
भणीगुणीने सिखजो, जिन आज्ञा अनुसार ॥२॥
भैरोदान अर्ज करे, मत कीजो कोई ताण ।
सूत्रार्थ जाणुं नहीं, केवली भाषित परमाण ॥३॥
बहु ग्रन्थे संचै कीयो, अल्प बुद्धि अनुसार ।
भूल चुक दृष्टि पड़े, लीजो विद्वान सुधार ॥४॥

॥ उपदेशी दोहा ॥

समझ ज्ञान अंकुर है, समझु टाले दोष ।
समझ समझ संसारमें, गया अनंता मोक्ष ॥१॥
समझु संके पापसुं, अण समझु हरखंत ।
वह लुखा वह चिकणा, इण विध कर्मबंधंत॥२॥
ज्ञानी, गरीब, गुरु वचन, नरम वचन निरदोष ।

इतरा कदे न छोडिये, शरधा शील संतोष ॥३॥
खरो मारग वीतरागरो, सूक्षम जेहना भेद ।
सेंठा होयकर शरधजो, मनमें राखी उमेद ॥४॥
जवर चुड़ेनी, जायफल, साधणीने सैण ।
इतरा तो भारी भला, क्लेज सुखरा वैण ॥५॥
जलकी शोभा कमल है, दलकी शोभा पील ।
मनकी शोभा धर्म है,ज्युं कुलकी शोभा शील॥६॥
साध साध सब नाम है, आप आपकी दोड़ ।
पांचु इन्द्री बस करै, तो माथेका मोड़ ॥७॥
कृपा करता साधजी, विचरे देश प्रदेश ।
भवि जीवांने तारता, दे दे धर्म उपदेश ॥८॥
साधु बड़े परमारथी, मोटो जिनको मन ।
भर भर मुट्ठी देत है, धर्मरुपी थो धन ॥ ९ ॥
साधु संगत जब हुवै, जागै पुण्य अंकुर ।
काईक रसायण ऊपजै, तो जाय दलद्र दूर ॥१०॥
साधु सत्तका सुपड़ा सत्ताही सत्त भाषंत ।
छाड़ पछाड़े तुतड़ा, कणाहीं कण राखंत ॥११॥

साधु चन्दन बावना, शीतल जाको अंग ।
लेहर उतारे भुजंकी, दे दे ज्ञानको रंग ॥१२॥
ढील न कीजे धर्मकी, तप जप लिजे लूंट ।
जैसी शीशी काचकी, जाय पलकमें फूट ॥१३॥
जीणकी भवथती पकगई, तिणको लागे उपदेश ।
खरो मारग वीतरागरो, कूड़ नहीं लवलेश ॥१४॥

॥ प्रथम बोल ॥

१ चेतना लक्षण करके सर्व जीव एक प्रकारका है—जैसे कीडी कुंजर सर्वमें चेतन्यता समान है ।

॥ दूजो बोल ॥

२ बंध दोय प्रकारे—रागबन्ध १ द्वेषबन्ध २ ।

२ दोय प्रकारसुं जीव संसारमें भव करे—आरं-भसुं १ परिग्रहसुं २ ।

२ जोतिषीके दो इन्द्र—चन्द्रमा १ सूर्य २ ।

२ दोय प्रकारे धर्म—यतिधर्म १ श्रावकधर्म २ ।

२ सर्वजीव दोय प्रकारे--सिद्धगामि १ संसारी २ ।

२ सर्व जीव दोय प्रकारे--आहारी १ अणाहारी २ ।

२ सर्व जीव दोय प्रकारे--साता वेदी १ असाता वेदी २ ।

२ दोय चन्द्रमा दोय सूर्य जंबुद्वीपमें ।

॥ तीजो बोल ॥

३ तीन तत्व—देवतत्व १ गुरुतत्व २ धर्मतत्व ३ ।

३ पल्योपम तीन भेदे—उद्धार पल्योपम १ अद्धा पल्योपम २ क्षेत्र पल्योपम ३ ।

३ उद्धार पल्योपम केने कहिये ? उत्सेदां गुलेकरी

एक योजन प्रमाण कूवो तेमां बालकना केश एक आंगुलनां बीसलाख सत्ताणुं हजार एकसो बावन खण्ड कीजे तेह संघाते १ योजन लांबो १ योजन चौड़ो कूत्रो भरीजै पाछै एक एक समय प्रत्ये एक एक खण्ड काढीजे ते कूवो खाली हुवे तेतलै कालै संख्यात कोटि वर्ष प्रमाणे एक उद्धार पल्योपम होवे एहवा दश कोडा कोडि पल्योपममें एक उद्धार सागरोपम होवे, अढाई उद्धार सागरोपमना जितना समय होवे तितना हीं द्वीप समुद्र जाणवा ॥ १ ॥ अद्धा पल्योपम केने कहिये? पूर्वोक्त कूवाका बालाग्र एकसो वरसे काढीये इम करतां कूवो खाली होवे तिवारे असंख्याता कोडी वर्ष प्रमाणे अद्धा पल्योपम होवे, दश कोडा कोड़ि अद्धा पल्योपममें एक अद्धा सागरोपम होवै इण पल्योपममें सागरोपममें करी

सर्व जीवनो आऊखो मणीजे (नापीजे) ॥२॥ तीजो क्षेत्र पल्योपम केने कहिये ? पूर्वोक्त कूवाना बालाग्र तेणे स्पर्ष्ठे तथा अस्पर्ष्ठे जे आकाश प्रदेश प्रत्ये समय समय काढीये इम करता करता कूवो खाली हुवै तिवारे असंख्याती अवसर्प्पिणी उत्सर्प्पिणी प्रमाण एक क्षेत्र पल्योपम थाय दश कोडा कोडि क्षेत्र पल्योपममें एक क्षेत्र सागरोपम होवे एणी करी त्रश थावर जीवनी संख्या मिणवी ए तीन प्रकारनो पल्योपम सागरोपमनो बिस्तार सूक्ष्म बादर आदि देई श्रीअनुयोग द्वार मध्ये घणें विस्तारें कह्यो छै ॥ ३ ॥

३ तीन ऊसीगण, (उरण) माता पितासुं बेटा बेटी ऊसीगण न थावें, तिके बेटा तथा बेटी मातापितानु शतपाक, सहस्रपाक तेलें करीने हाथसें मर्दन करे तिको मर्दन हाडने सुखकारी होवे, त्वचाने सुखकारी होवे,

रोमने सुखकारी होवे, इसो मर्दन करे पीछे ऊनो शीतल सुगंधी ए तीन पाणीसुं स्नान करावें, चौसठ तरकारी बत्तीस पक्वान हाथे जीमावे, पीछे कांधे लेइने फिरे, तो पिण भगवंते कह्यो के मातापितासुं ऊरण न थावे, परं केवली परूप्या धर्मने प्रवर्त्तावे तिवारे उसरावण थावे १, बोले गुरुसें शिष्य उसरावण न थावे, अक्षर पिण जिका गुरां पासें शिख्यो हुवै, जिकांरो विनय करे घणी सेवा भक्ति करे उपगार मेटे नहीं। धर्मरे प्रभावे गुरांरे प्रभावे मरी देवता हुवे घणी रिद्धि पामे एक प्रस्तावे तेहीज गुरु विहार करता अटवी उजाडमांहि भूल्याथका देवता आवीने वसतीमांहि मेले, पछे रोग कोढ आय ऊपनाथका दुःखी छे, आपदा भोगवे छे, ते देवता आवीने रोग उपसमावे, सुखसाता करे तो पिण गुरु तथा गुरुणीसुं

उसरावण नहीं थावे, तिवारे गुरुरी तथा गुरु-णीरी धर्म ऊपरसुं आसता ऊतरी जाणीने ते देवता हेतयुक्त करीने केवली परूप्या धर्ममें प्रवर्त्तावे तिवारे ते देवता गुरुसुं तथा गुरुणीसुं उसरावण थावे २, तीजे बोले वाणोतर (गुमास्ता) शेठसुं उसरावण नहीं थावे, शेठने आपदा पडी हुवे वाणोतररी पुण्याइ वधी छे, शेठरी पुण्याइ हीणी छे, तिवारे वाणोतर शेठसुं पाछो उपगार करे, तो पिण उसरावण नहीं थावे, केवली परूप्या धर्ममें प्रवर्त्तावे तिवारे उसरावण थावे "शेठसुं वाणोतर" ३ ।

३ तीन गारव, इड्डिगारव कहता—रिद्धिरो गारव पाना, पुस्तक, शिष्य साखा, भंडोप-गरण, जेहनो अहंकार करे ते इड्डिगारव १, बीजो रसगारव आहार सरस मिले तेहनो अभिमान करे एहवा सरस आहार हमने

मिले छे बीजाने मिले नहीं ते रसगारव २, तीजो सातागारव—सुखसातारो गारव अभिमान करे हमने सुखशाता छे इसी दूजा केहने नहीं ते सातागारव ३ ।

३ तीन शल्य—मायाशल्य १, नियाणाशल्य २, मिथ्यात्वदर्शणशल्य ३ ।

३ तीन विराधना—ज्ञान अकालने विषे भणे, ज्ञानरो विनय न करे, ज्ञानवंतनी असातना करे, ज्ञान भणातां गुणातां आलस मोडे अडषला (ओटो) लेवे, जिणारे पासे ज्ञान भणीयो हुवे तेहनो उपगार मेटे तिणारा अवगुणवाद बोले ते नाणविराधना १, बीजी दर्शन विराधना, समक्त पर शंका कंखा आवे, समक्तीसुं द्वेष करे, मिथ्यात्वीनी प्रशंसा करे, साधुसुं द्वेष करे, तेहनी निंदा करे, दर्शण विराधक सिजै नहीं ते दर्शनविराधना २, तीजी चारित्रविराधना

उत्तरगुणानुं दोष लगावे शरीररी सुश्रूषा करे ते चारित्रविराधना ३ ।

॥ चौथो बोल ॥

४ केवलीने इन्द्रिनो विषय न होय केवलज्ञाने सर्व जाणे, सिद्ध केवलीने दश प्राण हुवै नहीं भाव प्राण च्यार होवै ते अनंतो ज्ञान १, अनंतो दर्शण २, अनंता सुख ३, अनंत शक्ति ४ ।

४ च्यारपात्र—अरिहंत १, साधू २, देशव्रती ३, सम्यगदृष्टी ४ ।

४ च्यार अजीर्ण—तपस्यारो अजीर्ण क्रोध १, भणीयेरो अजीर्ण अहंकार २, कार्यरो अजीर्ण विकथा ३, लोकमें अन्नरो अजीर्ण वमन ४ ।

४ च्यार प्रकारे क्रोध उपजे—क्षेत्र निमित्त

क्रोध उपजे १, वस्त्र निमित्ते क्रोध उपजे २, शरीर निमित्ते क्रोध उपजे ३, उपगरण निमित्ते क्रोध उपजे ४।

४ च्यार बोल जीपतां (जीतणा) घणा दोहीला छे, व्रतमांही शीलव्रत पालनो दोहिलो १, आठ कर्ममांही मोहनी कर्म जीतणो दोहिलो २, पांच इन्द्रियमाहीं रसेन्द्रिय जीतणी दोहिली ३, तीनु योगांमांही मनरो योग जीतणो दोहिलो ४।

४ च्यार बोल पावणा दोहिला छे, पांच ज्ञानमांही केवलज्ञान पावणो दोहिलो छे १, लेश्या छव मांही शुक्ललेश्या पावणी दोहिली छे २, च्यार ध्यानमांही धर्मध्यान शुक्लध्यान पावणां दोहिला छै ३, भरयोवनमांही शील पालनो दोहिलो छे ४।

४ च्यार बोल करवा महादोहिला (दुर्लभ) तरुणावयमें शील पालनो दोहिलो १, छता

भोग छांडीने दिक्षा लेवणी दोहिली २, क्षमाकरणी दोहिली ३, कृपणने दान देवणो दोहिलो ४ ।

४ च्यार वात अकलदारीकी, जागतां तो चोर नासे १, क्षमा करता कलह नासे २, उद्धम करता दारिद्र नासे ३, भगवन्तरी वाणी सुनता पाप नासे ४ ।

॥ अथ पांचमो बोल ॥

५ पांच बोल दुर्लभः—शास्त्रका अर्थ समझणा दुर्लभ १, भेदानुभेदकी शंका निकालनी दुर्लभ २, तत्व सरदहणा दुर्लभ ३, परीसह सहणो दुर्लभ ४, चारित्र पालणो दुर्लभ ५ ।

५ पांच प्रकारके साधू अवंदनीय---पासत्था १, उसन्ना २, कुशीलीया ३, संसता ४, अह-

च्छंदा ५, ॥१॥ पासत्थाके दोय भेद (१) सर्वता पासत्था सो ज्ञान दर्शन चारित्रसे भ्रष्ट, फक्त वेश मात्र, (२) देशवृती पासत्था १०८ दोष युक्त आहारले, लोच नहीं करे, ॥२॥ उसन्नाके दोय भेद (१) सर्व उसन्ना साधुके निमित्त निपजाये हुये स्थानक पाट भोगवे (२) देश उसन्ना दो वख्त प्रतिक्रमण पडिलेहण आदि न करे तथा अस्थान छोड़ घरो-घर फिरता फिरे, अयोग्य ठिकाणे गृहस्थके घरमें विना कारण बैठे, ॥३॥ कुशिलियाके ३ भेद नाणकुशिलिया, (१) ज्ञानके आठ अतिचार, (२) दंशणकुशिलीया सम्मक्तके ८ अतिचार, (३) चारित्र कुशिलीया चारित्र के ८ अतिचार यों २४ अतिचार लगावे, ॥४॥ संसता जैसे गायके वांटेमें अच्छा बुरा सब भेला कर देवे तैसे उसकी आत्मामें गुण अवगुण सड़बड़ होवे उसे अपणे गुण

अवगुणकी कुछ खबर नहीं, इसके दो भेद (१) संक्लिष्ट-क्लेशयुक्त, (२) असंक्लिष्ट क्लेश-रहित, ॥५॥ अहच्छंदा (अपच्छंदा) गुरुकी, तीर्थंकरकी, शास्त्रकी आज्ञाका भंगकर अपनेही इच्छानुसार चलै जैसे ऋद्धिका, रसका, साताका यह तीन ही का गर्व करे, उत्सूत्र मनमाना परुपे सो अपच्छंदा, यह पांच बंदनाके अयोग्य है।

५ पांच ठामै गुरुने बंदना दीजै—प्रसन्नचित्त गुरुको होय तो बंदना कीजै १, आसन बैठा होय तो बंदना कीजै २, उपशांत होय तो बंदना कीजै ३, उठता न होय तो बंदना कीजै ४, आज्ञा होय तो बंदना कीजै ५।

५ पांच प्रकारै सिज्झाय—वाचना १, पृछना २, परिअठना ३, अनुप्रेक्षा ४, धर्म कथा ५।

५ पांच प्रकारे अचित्त वायरो ऊपजै तिण करी सचित्त वायरो हणीजै, पहिले दबके

सुं पग मेहले तिवारे अचित्त वायरो उठे तिणकरी सचित्त वायरो हणीजे १, बीजे लोहाररी धमणसुं अचित्त वायरो उठे तिण सुं सचित्त वायरो हणीजे २, तीजो मुहडारी बाफसुं अचित्त वायरो उठे तिवारे सचित वायरो हणीजे ३, चौथो लुगडो निचोवतां अचित्त वायरो उठे तिवारे सचित्त वायरो हणीजे ४, पांचमो पंखेसुं अचित्त वायरो उठे तिणसुं सचित्त वायरो हणीजे ५ ।

५ पांच प्रकारे जीव धर्म नहीं पावे, अहंकारी धर्म नहीं पावे १, क्रोधी धर्म नहीं पावे २, रोगी धर्म नहीं पावे ३, प्रमादी धर्म नहीं पावे ४, आलसु धर्म नहीं पावे ५ ।

५ भाव पांच---उदय भाव १, उपशम भाव २, क्षायक भाव ३, क्षयोपशम भाव ४, प्रणामिक भाव ५ ।

५ रे जीव धनवंत सुखी जाणे तो अगन शीतल कर जाणजे १, रे जीव विषय सुख कर माने तो तालपूट जहर अमृत कर जाणजे २, रे जीव संसारी माया साची जाणे तो स्वप्नरी माया साची कर जाणजे ३, रे जीव आत्मा स्थिर जाणे तो वीजलीरे पलके रतनारी पारखा कर जाणजे ४, रे जीव हिंसामें धर्मजाणे तो सूईने नाके सिंदरो पोयो जाणजे ५।

५ बोल---एकेन्द्रीमें कमल मोटो १००० योजन रो १, बेइन्द्रीमें शंख मोटो १२ योजन रो २, तेइन्द्रीमें कानखजूरो मोटो तीन गऊ रो ३, चौइन्द्रीमें भमरो मोटो चार गऊ रो ४, पंचेन्द्रीमें माछ मोटो १००० योजन रो ५।

५ पांच बोल धर्मरी परीक्षा, धर्मरी उत्पत्ति कठे सत्य वचन बोले जठे १, धर्मरी थाप-

ना कठे क्षमा करे जठे २, धर्मरी वधोतरी कठे तपस्या करे, दान देवे जठे ३, धर्मरी पुष्टाइ कठे उपसर्ग ऊपजते चढ़ता परिणाम राखे जठे ४, धर्मरो विनाश कठे क्रोध मान माया लोभ व्यापे जठे ५ ।

५ पांच पडिलेहणारी वेदका जाणवी, पहिली गोडारे ऊपरे हाथ राखीने पडिलेहण न करे १, बीजी गोडारे नीचे हाथ राखीने पडि-लेहण न करे २, तीजे गोडारे पाखती हाथ राखीने पडिलेहण न करे ३, चौथे गोडारे विचे हाथ राखीने पडिलेहण न करे ४, पांचमी एक हाथ गोडारे विचाले अने एक हाथ गोडा ऊपरे इसी तरह पडिलेहण न करे ५ ।

५ पांच गुणारा धणीने भणवो आवै, विनीत हुवे ते भणे १, उद्यमवन्त भणे २, निर्मल बुद्धिरो धणी भणे ३, उपयोगवंत भणे ४, आजीविका हुवे तो भणे ५ ।

॥ छठो बोल ॥

६ संघेण छव धरनेवालोंकी गति---छेवट्ठा संघेणको धणी चौथा देवलोक उपरान्त न जावे १, कीलका संघेणवाला छट्ठा देवलोक तक जावे २, अर्द्धनाराच संघयणवाला आठमा देवलोक तक जावे ३, नाराच संघ-यणवाला दशमा देवलोक तक जावे ४, ऋषभनाराच संघयणवाला बारमा देवलोक तक जावे ५, बज्रऋषभनाराच संघयणवाला मुक्ति तक जावे ६।

६ छेवट्ठा संघयणवाला पहिली दूजी नारकी तक जावे १, कीलका संघयणवाला तीजी नारकी तक जावे २, अर्द्धनाराच संघयण-वाला चौथी नारकी तक जावे ३, नाराच संघयणवाला पांचमी नारकी तक जावे ४, ऋषभ नाराच संघयणवाला छट्ठी नारकी

तक जावे ५, वज्रऋषभ नाराच संघयणवाला सातमी नारकी तक जावे ६ ।

६ बोल छत्र, बादर पृथ्वीकाय सात नरक बारह देवलोक नवग्रेवयक पांच अनुत्तर विमान सिद्धसिला लग छै १, बादर अपकाय सात नरक बारह देवलोक लग लाभे २, बादर तेऊकाय अढाई द्वीप सीम लाभे, नदी, मेह, मनुष्यना जन्म मरण प्रमुख अढाई द्वीप माहें हुवे आगल नहीं ३, बादर वायुकाय सगलै लोक माहें लाभै ४, बादर बनस्पति-काय सात नरक बारह देवलोक सीम लाभे ५, बेइन्द्री १, तेइन्द्री २, चौइन्द्री ३, जीव ओछै लोक माहें लाभै, ऊर्द्ध लोके मेरु पर्वतनी बावडी प्रमुषे लाभे, अधोलोके मेरु पर्वतथी पछिम दिसे छेहली दोय विजय अधोभूमी ग्रामने विषे लाभे, त्रस जीव लोकने मध्यवर्त्ती एक राज प्रमाण त्रस नाडि लाभे, सूक्ष्म

प्रथ्वीकाय आदि देइ पंच थावर सगले लोक मांहे लाभै ६, इति षट्काय विचार ।

६ बोल छव, भावं श्रावकके लक्षण---जिन्होंने व्रत आदि किये हैं १, जिनके शीलादि गुण सत्य है २, सत्य न्यायके पक्षी है ३, निष्कपटी सरल व्यवहार साधन करते हैं ४, विधि सहित गुरुकी सेवा करते हैं ५, जिन शासनका अभ्यास करके कुशल है ६ ।

६ बोल छव गुणठाणोंका, चौदह गुणठाणामें १ पहिलो तथा चौदमो छोड कर बाकी १२ गुणठाणा सजोगी नियमा भव्यीमें पावे १, पहिलो दूजो तेरमो चौदमो गुणठाणो छोड कर बाकी १० गुणठाणा नियमा सन्नीमें पावे २, पहिलेसुं तीजो बारहमें सुं चौदमो छोडकर ८ गुणठाणा उपशमसम्यक्तमें पावे ३, पहिलेसुं चौथो इग्यारमेंसुं चौदमो छोडकर छव गुणठाणा सकषाइ व्रतीमें पावे

४, पहिलेसुं पांचमो दसमेंसुं चौदमो छोडकर ४ गुणठाणा सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रमें पावे ५, पहिलेसुं छठो नवमेंसुं चौदमो छोडकर २ गुणठाणा अप्रमादि हास्यादिक नोकषाईमें पावे ६ ।

६ छकायना जीव किहां घणा किहां थोड़ा ते कहै छै---पुढवीकायना जीव पूर्व दिसै घणा ते स्यां माटे ? गौतम द्वीप छै ते माटे १, अप्पकायना जीव उत्तर दिसै घणा ते स्यां माटे ? मान सरोवर छै ते माटे २, तेऊ-कायना जीव पछिम घणा ते स्यां माटे ? मनुष्य घणा छै ते माटे ३, वायुकायना जीव दक्षिण दिशि घणा ते स्यां माटे ? तिहां पोलाड घणी छै ते माटे ४, वनस्पतिना जीव उत्तर घणा छै ते स्यां माटे ? जेमां मानसरोवर मध्ये कमल छे ते माटे ५, मनुष्य उत्तर अने दक्षिणे थोड़ा छै तेहथकी

पूर्वे संख्यात गुणा अधिक तेह थी पश्चिममें पिण घणा ते स्यां माटे ? विजयकुंडी मनुष्य घणा ते माटे ६।

६ छव बोल नटनेरा याने नेकारो करणेरा लच्चंण—लीलड़में सल घाले १, आंख्या मीचले, आधो देखै २, ऊंचो देखै, निची दृष्टि घाले ३, पराय से वात करणे लग-जाय ४, मौन पकड़ले ५, काल विलंव करै ६, ॥ गाथा ॥ भिउड़े आंधा लोचणं ऊँची परंमुहवयणं मौन कालविलंवो नाकारे छवी होय॥ १॥

६ छव प्रकाररा जंबुद्वीवमें खेत्र, हेमवय १, एरणयवय २, हरिवास ३, रम्यकवास ४, देवकुरु ५, उत्तरकुरु ६।

६ छव पलिमथ ते विपरीत फल पावे, कुचेष्टा कुतुहल करे ते संयमरो पलिमंथ १, अलिक झूठ कहे ते संयमनो पलिमंथ २, आघो

पाछो दृष्टि देखे ते इर्यासुमतिरो पलिमंथ ३, तणातणाट गोचरीने विषे करे तो एषणा-सुमतिनो पलिमंथ ४, इच्छारो निरोधन करे तो निर्लोभीपणानो पलिमंथ ५, तप करीने नियाणो करे तो मोक्षनो पलिमंथ ६।

६ छव प्रकारे कुपडिलेहण करता जीव जन्म मरण वधारे, उतावली घणी करे १, अण पडिलेह्यां ऊपरे बेसे २, पडिलेह्यां अणपडि-लेह्यां भेगा करे ३, वारंबार झाटकने जोवे नहीं ४, पडिलेहणा करीने वस्त्र आदि विखेर राखे ५, वेदिका रहित पडिलेहणा करे ६।

६ छव प्रकारे पडिलेहणा करतो जीव जन्म मरण टाले (घटावे), पडिलेहणा करतो शरीर वस्त्र नचावे नहीं १, पडिलेह्यां अणपडिलेह्यां भेला न करे २, ऊंची छातसे लगावे नहीं, नीचो धरतीसुं लगावे नहीं तिरछो भींतसुं वस्त्र लगावे नहीं, मर्यादा सहित पडिलेहणा

करे ३, छव प्रकारनी कुपडिलेहणा कही ते न करे ४, नव अखोडा नव पखोडा करे ५, प्राणी जीवने देखे दयारे निमित्त पडिलेहणा करे ६ ।

॥ सातमो बोल ॥

७ सात नारकीना नाम, गोत्र, आऊखो विस्तार पणे कहै छै, पहली घमा---रत्नप्रभा पृथ्वी नारकीनो आउखो जघन्य १० हजार वर्षनो उकृष्टो १ सागर, दूजी वंशा---शर्कराप्रभा पृथ्वीनु आउखो जघन्य १ सागरोपम उकृष्टो ३ सागर, त्रिजी शैला---वालूका प्रभानो आउखो जघन्य ३ सागर उकृष्टो ७ सागर, चौथी अंजना—पंकप्रभा पृथ्वी नारकी नो आउखो जघन्य ७ सागर उकृष्टो १० सागर, पांचमी अरिष्टा (रिट्ठा)—धूमप्रभा

पृथ्वीना नारकीनो आउखो जघन्य १० सागरनो उत्कृष्टो २२ सागरोपम, छट्ठी मघा—तमःप्रभा नारकीनो आऊखो जघन्य २२ सागर उत्कृष्टो २८ सागर, सातमी माघवती—तमतमानो आऊखो जघन्य २८ सागरोपम उत्कृष्टो ३३ सागरोपम ।

॥ सात नारकीनो स्वरूप ॥

पहली रत्नप्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांबी पहुली (चौड़ी) असंख्याता योजननी सहस्रनी परिधि, एक लाख असीहजार योजन जाडपणौ छै एक हजार योजन ऊपर मेलीजे एक हजार योजन हेठल मेलहीजै बाकी एक लाख अट्ठोत्तर हजार योजन बीच नारकी मांहि भवनपतिना रहवाना ठाम छै तिहां पाथडा

॥ शुद्धिपत्र ॥

नीचे लिखे मुजब शुद्ध जाणजो।

॥ नारकी रो आउखो ॥

पांचमी नारकी रो अउखो जघन्य १० सागरोपम उत्कृष्टो १७ सागरोपम।

छठी नारकी रो आउखो जघन्य १७ सागरोपम उत्कृष्टो २२ सागरोपम।

सातमी नारकी रो आउखो जघन्य २२ सागरोपम उत्कृष्टो ३३ सागरोपम।

सात नारकी रो स्वरूप पत्र २६ से ४५ तक

नारकी नीचे घणोदधि (घणो दधि कहता जम्यो होयो पाणी छे) घणो दधि नीचे घणवाय घणवाय नीचे तणवाय तणवाय नीचे असंख्याता कोड़ान कोड योजन रो आकाश छै ऐसो कहणो पत्र २८ से ३६ तक।

पहली नारकीमें १३ पाथड़ा--पाथड़े पाथड़े

आपतमें आंतरो ११५८३ योजन एक योजन रा तीन भाग तिकेरो १ भाग अधिक जाणीजो पत्र ४० ।

चोथी नारकीमें ७ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े आंतरो १६१६६ योजन रा ३ भाग तीकेरा २ भाग अधिक जाणीजो पत्र ४० ।

पत्र ३० ओली आठवी अवधि ज्ञान जघन्य २॥ गाउ "अवधि ज्ञान कहणो" पत्र ३५

ओली नवमी बेहु पासै छै तिको चहु पासे कहणो पत्र ३८ ।

ओली छठी तथा इग्यारमी मधे बभर छै तिको वज्जर कहणो ।

१३ एक एक पाथडानुं पिंड तीन सहस्र योजन, लांबा पहुला रत्नप्रभा प्रमाण, तेरह पाथडांमें तीस लाख नरकावासा छै कितना एक नरकावासा असंख्याता योजनरा छै और कितनाएक नरकावासा संख्याता योजनना छै, जिहां असंख्याता नरकावासा छै तिहां असंख्याता नारकी छै, जिहां संख्याता नरकवासा छै तिहां संख्याता नारकी छै, तेहनी अवगाहना उत्कृष्टी पूणी आठ धनूष ६ अंगुल, तेहनो आउखो पूर्वोक्त, ते नारकीने कापोत लेश्या छै तिणै (उस) नरकावासै उष्णवेदना छै ते नारकीने अवधि ज्ञान जघन्य ३॥ (साढा तीन) गाऊ उत्कृष्टो चार गाऊं रत्नप्रभा हेठल बीस सहस्र योजन घनोदधिनूं पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननो घणवातनो पिंड छै ते हेठल असंख्यता योजननो तणुंबातनो पिंड छै ए

तिनो लांबा पहुला रत्नप्रभाप्रमाणै छै ते हेठल असंख्याता योजननुं आकाश छै ए रत्नप्रभानो विचार कह्यौ १ ।

दूजी शर्कराप्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांबी पहुली असंख्याता योजनना सहस्र परिधि, जाडपणै एक लाख बत्तीस सहस्र योजन प्रमाण छै, तिहां पाथडां इग्यारे एक एक पाथडानो पिंड जाडपणे तीन सहस्र योजन, लांबा पहुला शर्कराप्रभा प्रमाणै छै तिणै नरके इग्यारे पाथडे पचवीस लाख नरकावासा छै केटला एक नरकावासा संख्याता योजनना छै तिहां संख्याता नारकी छै केटला एक नरकावासा असंख्याता योजनना छै तिहां असंख्याता नारकी छै तेहनो शरीर उत्कृष्टो साढापनर धनुष, अंगुल १२ ते नारकी ने कापोत, लेश्या छै तिणै नरकावासै ऊष्ण वेदना छै ते नारकी ने, अवधि ज्ञान जघन्य

तीन गाऊ उत्कृष्टो साढा तीन गाऊ शर्कराप्रभा, हेठल बीस हजार योजननो घणोदधिनो पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननो घणबात छै ते हेठल असंख्याता योजननुं तनुंबातनुं पिंड छै ए तीने लांबा पहुला शर्करा प्रभा प्रमाणे छै ते हेठल असंख्याता योजननुं आकाश छै इति दूजी शर्कराप्रभा विचार २।

तीजी बालूका प्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना लांबी पहुली असंख्याता योजननी सहस्र परिधि, जाड पणै एक लाख अट्ठाइस सहस्र योजन प्रमांण छै तिहां पाथडा नव एक एक पाथडानो पिंड योजन सहस्र तीन, लांबीपहुली बालूका प्रमाण छै तिहां नव पाथडा पनरे लाख नरकावासा छै, केतला एक नरकावासा संख्याता योजनना छै तिहां संख्याता नारकी छै, केतलाएक

नरकावासा असंख्याता योजनना छै तिहां असंख्याता नारकी छै तेहनो शरीर उत्कृष्टो सवाएकतीस धनुष प्रमाण छै तेहनो आउखो जघन्य तीन सागर उत्कृष्टो सात सागरोपम तिणै (उस) नरके लेश्या २ कापोत लेश्या; नील लेश्या छै कापोत लेश्याना घणी घणा नील लेश्याना घणी थोडा तिणै नरकावासे ऊष्णवेदना छै ते नारकी ने, अवधि जघन्य अढाईगाउं, वालूका प्रभा हेठल बीस हजार योजननुं घनोदधिनो पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननुं घनवातनो पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननो तनुं वातनो पिंड छै, ए तीनुं लांबा पहुला बालूका प्रभाप्रमाण छै ते हेठल असंख्याता योजननो आकाश छै इति त्रीजी पृथ्वी ।

चौथी पंक प्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांबी पहुली असंख्याता

योजननी परिधि, जाडपणे एक लाख बीस हजार योजन प्रमाण छै तिहां पाथडा सात छै एक एक पाथडानो पिंड तीन हजार योजन, लांबा पहुला पंकप्रभा प्रमाण छै तिणै नरके सातेइ पाथडाइं दश लाख नरकावासा छै केतला एक नरकावासा असंख्याता योजनना छै तिहां असंख्याता नारकी छै केई-एक नरकावासा संख्याता योजनना छै तिहां संख्याता नारकी छै वेदना २ वेदे, शीतवेदना, ऊष्ण वेदना तिण माहीं ऊष्ण वेदना घणी छै शीत वेदना थोड़ी छै ते नारकीनें अवधि ज्ञान जघन्य बे गाऊ उत्कृष्टो अढाई गाऊ, पंकप्रभा हेठल बीस हजार यो-जननो घनोदधिनो पिंड छै ते हेठल असं-ख्याता योजननो घनबातनो पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननो तनुंवातनो पिंड छै ए तीनु लांवा पहुला पंकप्रभा प्रमाण छै ते

हेठल असंख्याता योजननो आकाश छै इति पंकप्रभा विचार ४ ।

पांचमो धूमप्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांबी पहुली असंख्याता योजननी परिधि, जाडपणे एक लाख अठारै सहस्र योजन प्रमाण छै तिहां पाथडा पांच, एक एक पाथडानो पिंड योजन सहस्र तीन, लांबा पहुला धूमप्रभा प्रमाण छै तिहां पांचेइ पाथड़े तीन लाख नरकावासा छै कितनाएक नरका वासा संख्याता योजनना छै तिहां संख्याता नारकी केतनाएक नरकावासा असंख्याना योजनना छै तिहां असंख्याता नारकी छै तेहनो शरीर एकसो पचवीस धनूष प्रमाण, ते नारकीने २ लेश्या, नीललेश्या, कृष्णलेश्या, ते मांही नीललेश्याना घणा कृष्णलेश्याना थोड़ा वेदना २, शीतवेदना, ऊष्णवेदना २, ते मांही

शीतवेदना घणी ऊष्णवेदना थोड़ी ते नारकीने अवधि ज्ञान जघन्य दोढगाऊ उत्कृष्ट बे गाउं, धूमप्रभा हेठल वीशहजार योजननुं घणोदधिनुं पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननुं घनवातनुं पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननो तनुवातनुं पिंड छै ए तीनुं लांबा पहुला धूमप्रभा प्रमाणै छै हेठल असंख्याता योजननुं आकाश छै इति पांचमो पृथ्वी धूमप्रभानो विचार ।

छठी तमप्रभा पृथ्वी---असंख्याता योजननुं सहस्र लांबी पहुली असंख्याता योजनना सहस्र परिधि, जाड़पणै, एकलाख सोलै हजार योजन प्रमाण छै तिहां पाथड़ा तीन, एक एक पाथडानुं पिंड तीन हजार योजन, लांबा पहुला तमःप्रभा प्रमाणै छै तिनुं पाथडै, पांच ऊणा एक लाख नरका वासा छै कितना एक नरका वासा संख्याता

योजनरा छै तिहां संख्याता नारकी छै, कितना एक नरका वासा असंख्याता योजनना छै, तिहां असंख्याता नारकी छै, तेहनो शरीर उत्कृष्टो अढाइसौ धनूष प्रमाण छै तेहनो आउखो जघन्य सतरे सागरोपम उत्कृष्टो बावीस सागरोपम, तिहां कृष्णलेश्या छै, ते नरका वासे शीतवेदना छै ते नारकीने अवधिज्ञान जघन्य एक गाऊ उत्कृष्टो दोढ गाऊ, तमःप्रभा हेठल वीस सहस्र योजननु घनोदधिनु पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननु घनुंवात नो पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननूं तनुंवातनो पिंड छै ए तिनुं लांबा पहुला तमःप्रभा प्रमाणै छै ते हेठल असंख्याता योजननु आकाश छै इति तमःप्रभा ६ ।

सातमी तमतमा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांबी पहुली असंख्याता

योजननी परिधि, जाडपणौ एक लाख आठ हजार योजन प्रमाण छै तेमाहीं साढाबावन हजार योजन ऊपर मूकीए, साढा बावन योजन हेठल मूकीए, विचालैं एक पाथड़ो ते पाथड़ानुं पिंड तीन हजार योजन जाड़ पणौ छै लांबा पहुला तमतमा प्रमाणौ छै ते पाथड़े पांच नरका वासा छै काल १ महाकाल २, रूरू ३, महारूरू ४, अपैठान ५, चार नरकावासा बेहुपासै असंख्याता योजनना छै तिणौ असंख्याता नारकी छै तेहनो शरीर उत्कृष्टो पांचसो धनुष प्रमाणो छै तेहनुं अऊखो जघन्य बावीस सागरोपम उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपम अपैठाणौ तेत्रीस सागरोपमनुं आउखो ते नारकी कृष्णलेश्या छे तिणौ नरका वासे शीत वेदना छै ते नारकी ने अवधि ज्ञान जघन्य अर्द्ध गाऊ उत्कृष्टो एक गाऊ, तमतमा हेठल वीस हजार

योजननुं घणोदधिनुं पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननुं घनवातनुं पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननुं तणु वातनुं पिंड छै ए तीनूं लांबा पहुला तमतमा प्रमाण छै ते हेठल असंख्याता योजननुं आकाश छै, सातै नरके शरीर जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणवो ; सात नरक पृथ्वी ए सम्यक दृष्टी, मिथ्या दृष्टी, मिश्रदृष्टी, ए तीन दृष्टी छै रत्नप्रभा पृथ्वी थकी बारै योजने अलोक छै बारह योजन मांहि तीन बलया छै पहिलो वलय घणोदधिनुं छव योजननुं छै वीजो वलय घनवातनुं साढा च्यार योजननुं छै त्रीजो वलय तनुवातनुं दोड योजननुं छै, दूजी शर्करा प्रभा ऐ बारह योजने दोय भाग तीरछो अलोक छै तिण मध्ये त्रिण बलय पूर्वोक्त रीते कुछ जाभेरा २, तीजी बालूका-प्रभाथी तेरह

योजन एकभाग तीरछो अलोक छै ते मध्ये त्रिणवलय ३, चौथी पंक-प्रभाथी चौदे योजन अलोक छै ते मध्ये त्रिण वलय छै ४, पांचमी धूम-प्रभाथी चौदे योजने दो भाग तीरछो अलोक छै ते मांहि त्रिण-वलय ५, छट्ठी तमःप्रभा थी पन्दरह योजने एकभाग तीरछो अलोक छै ते मांहि त्रिण घलय ६, सातमी तमतमाथी सोलै योजने तीरछो अलोक छै तिहां सोलै योजनमांहे आठ योजननुं घनोदधिनुं बलय छै छव योजननुं घन बातनुं वलय छै देढ़ योजन छव भाग तनुबातनुं बलय छै ७।

नारकी नीचे घणो दधि समुद्र आवे घणोदधि नीचे जावे तो घणवाय आवे घणवाय नीचे तणवाय आवे तणवाय नीचे आकाश आवे आकाश थकी तीरछो आलोक छै ते मांहे तीन बला (अलय) छै ।

बला (वलय) कैसो छै ?

आडे लकड़े, लांबे डोरेकी परै झालरीरे आकार छै ।

घणो दधि केने कहीजे ?

असंख्याता योजन लांबी चौड़ो छे २० हजार योजन जाड पणे पाणी छे ते बभर मांही बंधाणो छे ।

घणवाय केने कहीजे ?

असंख्याता योजन लांबी चौड़ी छे असंख्याता योजन जाड पणे छे जाडो वायरो छै वायरो बभर मांही बंधाणो छे ।

———

॥ विशेष विस्तार ॥

नारकी अलोक बीच आंतरा।

बला (वलय)

नारकीसे अलोक	घणो दधि,	घणवाय,	तणवाय,
पहली नारकी १२योजन २ भाग	६ योजन	४॥ योजन	१॥ योजन
दूजी ,, १२ ,, २ ,,	६ ,, २ भाग	४॥। ,,	१॥ ,, १ भाग
तीजी ,, १३ ,, १ ,,	६ ,, २ भाग	५ ,,	१॥ ,, २ भाग
चौथी ,, १४ ,,	७ ,,	५ ,, १ भाग	१॥ ,, ३ भाग
पांचमी ,, १४ ,, २ ,,	७ ,, १ भाग	५ ,, २ भाग	१॥ ,, ४ भाग
छठी ,, १५ ,, १ ,,	७ ,, २ भाग	५ ,, ३ भाग	१॥ ,, ५ भाग
सातमी ,, १६ ,,	८ ,,	६ ,,	१॥ ,, ६ भाग

पहली नारकीमें १३ पाथड़ा—पाथड़े पाथड़े आपतमें आंतरो ११५८३ योजन ।

दूजी नारकीमें ११ पाथड़ा—आपतमां पाथड़े पाथड़े आंतरो ६७०० योजन ।

तीजी नारकीमें ६ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े १२३७५ योजनरो आंतरो ।

चौथी नारकीमें ७ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े आंतरो १६१६६ योजनरो ।

पांचमी नारकीमें ५ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े आंतरो २५२५० योजनरो ।

छठी नारकीमें ३ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े ५२॥ हजार योजनरो आंतरो ।

सातमी नारकीमें एकसे दूजो पाथड़ो नहीं ते भणी आंतरो नथी ।

पहली नारकीमें तीन कुंड उसका नाम रक्त कुंड (१) आउवोहल्ल कुंड (उसभपाणी) (२) पंक-बहल कुंड (उसभ कोचड़) (३) ।

सात नारकीमें ७ घणो दधि, ७ घणवाय, ७ तणवाय, ४६ पाथड़ा, ८४ लाख नरकवासा।

नारकी सासती छै जीव असासता छै।

(१) रत्नप्रभा नारकीमें रत्नकीसी प्रभा छै (भुंडी प्रभा छे) (२) शर्कराप्रभामें कांकरा छे (३) वालूप्रभामें वलवलती बालू छै (४) पंकप्रभामें कादो छै (५) धूमप्रभामें धुंवों छै (६) तमःप्रभामें अन्धारो छै (७) तमतमाप्रभामें माहा अन्धारो छे।

हिवै नारकीनी भूख तृषानी वेदना कहै छै, जितने जगतमें पुद्गल आहार का छै ते सर्व लेईने नारकीना मुख मांहि एकेवारै खेपे तो ही नारकीनी भूख वेदना उपशमें नहीं और सगला समुद्रना पाणी एकेवारै नारकीना मुख माहि खेपे तो ही नारकीनी तृषा नहीं भाजै, नारकी ऊष्ण वेदना केहवी वेदे छै ते कहिये छै, जैसे यहां मनुष्य

लोकमें कोई लोहारनी कलाने विषै चतुर छै ते मासअर्द्ध लगै लोहनो गोलो घड़ी घड़ी तपाय तपाय मोटो करै ते गोलो ऊष्णकरी नरकावासा मांहि मूके ते बलतो बलतो ते नारकी गली जाय एहवी ऊष्ण-वेदना नारकीने तिहां वेदे छै, छट्ठी तथा सातमीमें एक शीत वेदना वेदे छै, एतलो विशेष जाणवो, इम किणही कीधा नहीं करस्यै नहीं, भगवंत केवली भाव देख्या छै. सातुंही नारकी में पांच कोड अड़सट्ठि लाख निनाणु हजार पांचसौ चौरासी एतला रोग सात नारकीना जीवनै सदाई शरीरे होवे छै वर्णकाला, कांतिकाली, ए आदि देइने वर्णकरी गाढा पांडूया छै हिवै नारकी में गन्ध कहे छै जेहवा मनुष्यना मड़ा, गाय ना मड़ा, सर्पना मड़ा, स्वानना मड़ा (कलेवर), मंजार ना मड़ा, महिशना मड़ा, चित्राना मड़ा,

मूंआ कुहिया विणठा घणा कालना सड्या क्रुमी जालेकरी सहित देखतां दुर्गंध साहे महा पांडुआ, गणधर देवे प्रश्न कीधो, स्वामी केवली कह्यो ए गन्ध थकी पिण अनिष्ट पांडुओ गन्ध छै, हिवै फरस कहै छै जेहवी तिक्ष्ण खड़गनी धारा, छुरीनी धारा, जेहवो त्रिशूलनो अग्र, जेहवो वांणनो अग्र शूलनो अग्रभाग, जेहवा किवचना रोम, जेहवो अग्निनो फरस एहथी अधिक वखाणया, गणधर देवे प्रश्न कीधा, भगवंत देवे कह्या कौन कौन जीव, किसी किसी नारकी उपजै, असन्नि सरीसृप पंखी पहली नरके तिर्यंच पंचेंद्री असन्नी आवी उपजै उपरान्त नहीं १, बीजै नारके सरीसृप कहता गोह, गिरोली, खिरोजी विसोरा, बंभणी, उंदरा, नोलीयादिक आवी उपजै उपरान्त न उपजै, तीजी नारके पंखी उडणा जीव सिकरा, सांमली, सिचांण,

चिड़कला, मोर, बुगला, लावा, कुही, बाज, जुररा, आदि देई मांस भक्षी उपजै, उपरान्त न ऊपजे ३ ; चौथे नरके गाय, भैंस, बाघ, सिंह, चित्ता, ससा, स्याल, रोज, रींच, हिरण, स्वान, सूअर, सांभर, बलद, हाथी, घोडा, ऊंठ, महिष, मंजार, वेसरी आदि देई चोपदनी जाती पापी जीव उपजै ४ ; पांचमें नारके उरपरिसर्प आदि देई जे हीएचालै ते उपजै उपरान्त न उपजै ५ ; छट्ठिनारके मनुष्यणी (स्त्री) अने माछली उपजै उपरान्त न उपजै ६ ; सातमी नारके मनुष्य अने माछला उपजै ७ ।

रत्नप्रभा नारकी सबसे छोटी छै तो पण घणी मोटी छे बाहरसुं चोखुणी छे मांहे गोल छे कुंभीरे आकार छे गौतम स्वामीजी पूछ्यो कि देवता नारकीरो पार पामे कि नहीं ? एक देवता चपल गतीरो चालणहार, नरकावासाको

पार पामें? बले गौतम स्वामी बंदणा नमस्कार करीने पुछ्यो, हे भगवान पुज्य! यो देवता छव महीना तांइ चाल्यां नरकावासारो पार पामें? हे गौतम नो इठे समठे, (पार पमवां समर्थ नहीं) वले गौतम स्वामी बंदणा नमस्कार करके पूछ्यो तो स्वामी केतलो एक पारपाम्यो? हे गौतम संख्याता योजनका नरकाबासा जिणारो पारपाम्यो, असंख्याता योजनका नरकावासारो पार न पाम्यो।

गौतम स्वामी पुछ्यो हे भगवान पुज्य भवनपती देवता कठे रहे छै? रत्नप्रभा नारकी मांहे १३ पाथड़ा छै १२ आंतरा छै तेमां एक पहलो एक छैलो=२ आंतरा खाली छै वीचे १० आंतरा छै तिहां भवणपतीरा भवण छै जिहां दस प्रकार भवणपती देवता रहे छै।

ए साते नारकीनु स्वरूप कह्यौ।

७ सात ठामे गुरुवंदणा निषेध—विग्रह चित्त होय १, उपराठा होय २, निद्रा आवती होय ३, निषेध (मना) करता होय ४, आहार करता होय ५, नीहार करता होय ६, काम-काज करता होय ७।

७ सात प्रकृति क्षय कीधां क्षायक सम्यक्त उपजै—अनंतानुबन्धी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, सम्यक्त मोहनी ५, मि-थ्यात्व मोहनी ६, मिश्र मोहनी ७।

७ व्यवहारमें सात प्रकारे सोपकर्मी आउखो घटे (घणो आउखो बांध्यो छे पिण घट जावे) धसको खायने मरे १, कुवा, वावड़ी, तलावमें पड़कर तथा तरवार, कटारी, फांसी सुं मरे २, मंत्रने जोगे आगलो मुंठ बावे तथा डाकिनी साकिनीरे मंत्रथकी (प्राघाते) मरे ३, आहाररे अजीर्णसुं मरे ४, शूलादिक मोटी वेदना उपज्यां मरे ५, सर्प, विछु इत्यादिक

स्पर्श डंक लाग्यां मरे ६, आपणा श्वासोश्वास रोकीने मरे ७।

सात भय, इहलोक भय, ते जातिसुं जातिने भय ऊपजे, मनुष्यसु मनुष्य डरे, देवतासु देवता डरे, तीर्यंचथी तिर्यंच डरे, नारकीथी नारकी डरे, आप आपरी जातिसुं डरे ते इहलोकभय १, परलोकभय, परजातिसु भय उपजे, देवतासु मनुष्यने भय उपजे अथवा तिर्यंचसु मनुष्यने भय उपजे अथवा परलोकना दुःख सुणीने भय उपजे ते पर-लोकभय २, आदान भय ते परिग्रहथी भय उपजे ते धन राखवा निमित्त चोरादिकनो भय उपजे ते आदानभय ३, अकस्मात् भय, अजाण गोली तोपनो शब्द सुणीने भय उपजे ते अकस्मात् भय ४, आजीविका भय ५, मरण भय ते आउखानो भय ६, अपयश भय ते अयश अकीर्त्तिरो भय ७।

७ सात प्रकारे साधुजीनी भाषा, थोडो बोले १, मीठो मधुरो बोले २, विचारीने बोले ३, कार्य पड्या बोले ४, निरवद्य वाणी बोले ५, मायारहित बोले ६, सूत्र सिद्धांतरे अनुसारे बोले ७ ।

७ सात प्रकारे धनने भय, राजारो भय १, चोररो भय २, कुटुंबरो भय ३, अग्निरो भय ४, पाणीरो भय ५, पृथ्वीमें नासण भागणरो भय ६, विनाशरो भय ७ ।

७ सात प्रकारसु ज्ञान घटे, आलस १, निद्रा २, क्लेश ३, शोक ४, सोच ५, रोग ६, कुटुम्बसु मोह करे तो ज्ञान घटे ७ ।

७ सात बैरी, मनबैरी १, शैतान २, भूख ३, धन ४, कुटुम्ब ५, निद्रा ६, काल ७ ।

———

॥ आठमो बोल ॥

८ सिद्धभगवानके आठगुण—ज्ञानावरनीय कर्मके क्षय होणेसे अनंतज्ञानी हुये १, दर्शनावरणीय कर्मके क्षय होणेसे अनंतदर्शणी हुये २, वेदनीय कर्मके क्षय होनेसें अव्याबाध, गुण, वेदना रहित हुये ३, मोहनीय कर्मके क्षय होणेसे क्षायकगुण प्रगटे ४, आयुष्य कर्मक्षय होणेसे अजरामरगुण अर्थात् वृद्धपणो और मृत्यु रहित हुये ५, नाम कर्मके क्षय होणेसे अमूर्त्ति निराकार हुये ६, गोत्र कर्मके क्षय होणेसे अगुरू लघूगुण प्रगटे ७, अंतरायकर्मके क्षय होणेसे अनंत शक्तिवंत स्वामी रहित हुये ८।

८ पुनः अष्टगुणः अनेक वस्तु स्वभाव लिये हुवे सो आस्तित्व कहिये १, अनेक वस्तु स्वभाव सहित हुवे सो वस्तुत्व कहिये २,

अपनी मर्यादलिये हुवे सो प्रमेयत्व कहिये ३, न भारी और न हल्के होय सो अगुरू लघूत्व कहिये ४, अपणो गुणपर्याय लिये हुवे सो द्रव्य कहिये ५, अपनी सत्तामेंही रहे सो प्रदेशी कहिये ६, अपना चैतन्य स्वभाव ज्ञान लिये होवे सो चैतन्य कहिये ७, चैतन्य स्वभाव ज्ञान दर्शण सहित और पुद्गलके वर्ण, गंध, रस, स्पर्श रहित होय सो अमूर्ति कहिये यह ८ गुण निर्मल है और चैतन्य द्रव्यके स्वभाविक है ८ ।

८ आठ जणांको शिक्षा लगे, थोड़ा हंसे १, सदा दमितात्मा २, निरभीमानी ३, परमार्थगवेषी ४, देशसे और सर्वसे चारित्रकी विराधना नहीं करने वाला ५, रसनाका (जीभ) अलोलूपी ६, क्षमावंत ७, सत्यवादी ८ ।

८ आठबोल अचित भूमीके—राजपथ (रस्ता) की जमीन आंगुल ५ अचित १, सेरीकी

जमीन आंगुल ७ अचित २, घरकी भूमी आंगुल १० अचित ३, मल मूत्रकी भूमो आंगुल १५ अचित ४, गाय, भैंस, ऊंठ, बकरी प्रमुष बैठे वह भूमी आंगुल २१ अचित ५, चूल्हाहेठे आंगुल ३२ अचित ६, निवाहकी धरती आंगुल ७२ अचित ७, इंटपजावकी भूमी आंगुल १०१ अचित ८, नीचे संचित होवे ऐसा सूगडांग वृत्तिमांहि कह्यो छै ।

८ उत्तराध्ययणजीका २४ मां अध्ययनमें साधूकुं आठ प्रकाररी भाषा बोलणी वर्जी—कर्कश कारी १, कठोरकारी २, खेदकारी ३, भेद-कारी ४, सावद्यकारी ५, मिश्रकारी ६, मर्म-कारी ७, मोसाकारी ८ ।

८ आठ प्रवचन माताना नाम—इर्यासुमति १, भाषा सुमति २, एषणा सुमति ३, आदान-निक्षेपणा सुमति ४, पारिष्ठापनिका (उच्चार

पाशवण खेल जल संघान परिठावनिया सुमति) ५, मनगुप्ति ६, बचनगुप्ति ७, कायगुप्ति ८ ।

८ आठ आत्माका नाम—द्रव्यआत्मा १, ज्ञानआत्मा २, चारित्र आत्मा ३, योग आत्मा ४, कषाय आत्मा ५, उपयोग आत्मा ६, दर्शन आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८ ।

८ आठ मदना नाम—कुलमद महावीरवत् १, बलमद दुर्योधनवत् २, जातिमद मेतार्य-ऋषीवत् ३, श्रुतमद थूलिभद्रवत् ४, ठकु-राईमद राणांरावणावत् ५, रूपमद सन्त् कुमारवत् ६, तपमद द्रुपदीवत् ७, लब्धिमद अषाढभूतवत् ८ ।

८ आठ योगरा नाम—यम १, नियम २, आसन ३, प्राणायाम ४, प्रत्याहार ५, धारणा ६, ध्यान ७, समाधि ८ ।

८ आठ गण नाम—मगण १, नगण २, भगण

३, सगण ४, यगण ५, रगण ६, तगण ७ जंगण ८ ।

८ भरतना आठ पाट—आरीसाभवन मांहै केवली हुवा आदित्यजसा १, अतिबल २, महाजस ३, बलभद्र ४, बलबीर्य ५, कीर्त्तिवीर्य ६, जलवीर्य ७, डंडवीर्य ८ ।

८ श्री सिंघरूपी नगरको आठ ओपमा—सम्यक्तरूपी नींव १, क्षमारूपी कोट २, ज्ञानसिज्झायरूपी भूजा ३, जयणारूपी कांगरा ४, ध्यानरूपी दरवाजो (पोल) ५, तपरूपी किवाड़ ६, संबररूपी भोगल ७, तीन गुप्तिरूपी खाई ८ ।

८ आठ बोल सीखामण—दान देवे दया पाले ते दानेश्वर १, धर्मरो आचार पाले ते ज्ञानी २, पापसे डरे ते पंडित ३, पांच इन्द्री दमे ते शूरवीर ४, कुलक्षण छोड़े ते चतुर ५, सत्तवचन बोले ते सिंह ६, परउपकार करे ते

धनेश्वर ७, निर्धनसुं नेह करे ते अखंडित (अखी) ८ ।

८ दयाधर्मने आठ ओपमा—पहिले डरताने सरणानो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार १, बीजे चौपद्ने खुंटानुं आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार २, तीजे पंखीने आकाशनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ३, चौथे तरसीयाने (तृषातुरने) पाणीनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ४, पांचमे भूखाने अन्नरो आधार, तिम भव्य जीवने दयानो आधार ५, छट्ठे रोगीने औषधीनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ६, सातमे भूल्याने साथरो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ७ आठमे डुबताने पाटीयानो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार ८ ।

८ आठ प्रकाररी लोकरी स्थिति,—आकाश

प्रतिष्ठित वायु १, वायु प्रतिष्ठित उदही (पाणी) २, उदही प्रतिष्ठित पृथिवी ३, पृथिवी प्रतिष्ठित त्रस थावर प्राणी ४, अजीव प्रतिष्ठित जीव ५, कर्म प्रतिष्ठित जीव ६, अजीव जीव संग्रहीत ७, जीव कर्म संग्रहीत ८।

८ आठ बोले जीव धर्म नहीं पावे, घणो हंसे तिको धर्म नहीं पावे १, इन्द्री नोइन्द्री दमें नहीं तिको धर्म नहीं पावे २, मर्म मोसो बोले तिको धर्म नहीं पावे ३, श्रावकरा व्रत पच्चक्खाण निर्मला नहीं पाले तिको जीव धर्म नहीं पावे ४, साधुरा व्रत पच्चक्खाण निर्मल नहीं पाले तिको जीव धर्म नहीं पावे ५, रसरो लोलूपी हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ६, क्रोधी हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ७, झूठा बोलो हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ८।

८ आठांरे विषे उद्यमरो करवो ते भलो छे—आगला पापकर्म खपावाने अर्थे उद्यम करे १, नया पापकर्म नहीं उपार्जे एहवो उद्यम करे २, आगलो सूत्र भणीयो तेहने चितारवारो उद्यम करे ३, नया सूत्र भणाववाने अर्थे उद्यम करे ४, नया शिष्य साखा करवाने अर्थे उद्यम करे ५, छठे आगला शिष्य साखा भणावाने अर्थे उद्यम करे ६, चतुर्विध संघनो कलह मेटवाने अर्थे उद्यम करे ७, तप संयमने विषे वीर्य फोरवाने अर्थे उद्यम करे ८ ।

८ क्रोध जैसो ज़हर नहीं १, मान जैसो वैरी नहीं २, माया जैसो भय नहीं ३, लोभ जैसो दुःख नहीं ४, संतोष जैसो सुख नहीं ५, पच्चक्खाण जैसो हेतु नहीं ६, दया जैसो अमृत नहीं ७, साच तथा शील जैसो शरणो नहीं ८ ।

८ आठ मित्र—जन्मका मित्र माता पिता १, घरमें मित्र धन तथा स्त्री २, देहका मित्र अन्न ३, आत्माका मित्र कर्म ४, रोगिका मित्र औषध ५, संग्राममें मित्र भुजा ६, परदेशमें मित्र विद्या ७, अंतकाल जीवको मित्र श्री भगवान जिनेश्वरदेवरो धर्म ८।

८ आठ बोल श्रावकरा—थोड़ा बोले १, विचारी ने बोले अथवा काम पाड्यां बोले २, मीठा बोले ३, चतुराइसु बोले ४, मर्मकारी भाषा न बोले ५, अहंकाररहित बोले ६, सूत्रके न्याय बोले ७, सर्व जीवने संतोषकारी बोले ८।

८ आठ बोल प्रस्तावीक, पापसु डरे सो पंडित १, दया पाले सो दानेश्वर २, कुलक्षण छोड़े सो चतुर ३, धर्म करे सो ज्ञानी ४, इन्द्री दमे सो सूरा ५, परउपकार करे सो पूरा ६, सत्य वचन बोले सो सिंह समान ७, निर्धनसुं नेह राखे सो धनवन्त ८।

८ आठ बोल सिखामणका—भगवन्तरो जाप जपीजे १, दया पालीजे २, सत्य वचन बोलीजे ३, शील पालीजे ४, संतोष राखीजे ५, क्षमा कीजे ६, परने दगो न दीजे ७, गुरुके अंकुसमें रहीजे ८ ।

८ जीवरो अजीव करवा समर्थ नहीं १, अजीवरो जीव करवा समर्थ नहीं २, भव्यजीवको अभव्य करवा समर्थ नहीं ३, अभव्यी जीवको भव्यी करवा समर्थ नहीं ४, एक परमाणुका दो खंड करवा समर्थ नहीं ५, उदय आयां कर्म कोई टालवां समर्थ नहीं आपरा किया आपही भोगवे दूसरे ने बेदावा समर्थ नहीं ६, लोकरी वस्तु अलोकमें जावा समर्थ नहीं ७, एक समय दो क्रिया करवा समर्थ नहीं ८ ।

८ आठ बोल जीवने उद्यम करवा—भणवारो उद्यम करनो १, सिखो हुवो चितारनेरो

उद्यम करनो २, पाप कर्म खपावनेरो उद्यम करनो ३, पूर्वला कर्म काटनेरो उद्यम करनो ४, अबुझ जीवने प्रतिबोध देवारो उद्यम करनो ५, नव-दिक्षित साधने सिखावनेरो उद्यम करनो ६, तपस्वी बुढा गरडा ग्लानीरी वयापच्च करनेरो उद्यम करनो ७, चतुर्विध संघमांही क्लेश पड्या मिटानेरो उद्यम करनो ८।

८ आठ बोल धर्मकी शिक्षा—पहले बोले हिंसा न करे, दूजे बोले मर्म छेदन न करे, तीजे बोले पांचों इन्द्रीयाने दमे, चौथे बोले मूल गुण पच्चक्खान मांही दोष न लगावे, पांचमे बोले उत्तरगुण पच्चक्खान मांहे दोष न लगावे, छठे बोले जीभरा रसरो लोलूपी न होवे, सातमे बोले क्रोध न करे, क्षमा करे, आठमे बोले सत्य वचन बोले झूठ न बोले।

८ आठ बोल श्रावकका—पहले बोले श्रावकजी खावे तो गम पीवे भगवंतरी वाणी, दूजे

बोले श्रावकजी मारे तो क्रोध, मेले मान, तीजे बोले श्रावक जी देवे तो दान, लेवे भगवंतरो नाम, चौथे बोले श्रावकजी पहरे तो शील, ओढे लज्जा, पांचमे बोले श्रावकजीने आवणो तो साधपणो, जावणो मोक्ष, छठे बोले श्रावकजी छोड़े तो मिथ्यात्व, आदरे सम्यक्त्व, सातमे बोले श्रावकजी छोड़े तो पाप, लेवे धर्म, आठमे बोले श्रावकजी जाने तो संसारनो स्वरूप आदरे सत्य गुरुरो मार्ग।

८ आठ प्रकारके श्रावक, अम्मापिइ समाणे— साधुओंके सर्वकार्य आहार पाणी वस्त्र पात्र औषधि प्रमुखकी चिंता रख साता उपजावे और कदाचित् प्रमादवश होकर साधु समाचारीसे चूक जाय तो आंखोंसे देखकर भी, स्नेह रहित न होवे यथा उचित विनय सहित हित शिक्षा देवे सो माता पिता

समान श्रावक १, नाय समाणे—हृदयमें तो साधुओं पर बहुत स्नेह रखे परन्तु विनय भक्तिमें आलस करे और संकट समय यथा योग्य प्राण झोंकके साहायता करे सो भाई समान श्रावक २, मित्र समाणे—कोई कारण सर साधुओंसे रूस जावे परन्तु अपने स्वजनोंसे भी साधुओंको अधिक समझे सो मित्र समान श्रावक ३, सब्वति समाणे—अभिमानी, कठिण हृदयी, छिद्र गवेषि, कदास प्रमादवश साधु चूक जाय तो उस दोषको प्रगट करे सो शौक तुल्य श्रावक ४, आय समाणे—साधुओंका प्रकाश्या सूत्रार्थ जिसके हृदयमें यथार्थवन्त होवे भूले नहीं सो आदर्श आरीसे कांच जैसा श्रावक ५, पडाग समाणे—साधुओंके बचनका जिसको निश्चय भरोसा नहीं मूर्खों पाषंडियोंके भर-मानेसे जिसका चित्त पताकाकी (ध्वजा)

तरह फिर जावे सो पताका समान श्रावक ६, खाणु समाणे—साधुओंका सद्बोध श्रवण करके भी अपना असत्य आग्रह पकड़ी हुई बातका त्याग न करे सो खीला समान श्रावक ७, खरंट समाणे—हितशिक्षा देनेवाले साधुओंकी निन्दा करे तथा अयोग्य शब्दोंसे अपमान करे कलंक चढावे सो अशुची विष्टा जैसा श्रावक इन ८ में शौक समान और खरंट समान श्रावक मिथ्या दृष्टि है परन्तु साधुके दर्शनको आते हैं इसलिये श्रावक कहे जाते हैं।

॥ इति आठ प्रकारके श्रावक ॥

८ बोल सर्व गुणरो मूल विनय १, सर्व रसरो मूल पाणी २, सर्व धर्मरो मूल दया ३, सर्व कलहरो मूल हांसी ४, सर्व पापरो मूल लोभ ५, सर्व रोगरो मूल अजीर्ण ६, सर्व बंधणरो मूल स्नेह राग ७, सर्व मरणरो मूल देह ८।

८ बोले वीतरागरो धर्म पामें मिथ्यात्व मोहनी पतलि पाड़े तो धर्म पामें १, पांच इन्द्री वस करे तो धर्म पामें २, कोईने मर्म मोसो न बोले तो धर्म पामें ३, देसथी व्रत न खंडे तो धर्म पामें ४, सर्वथी व्रत न खंडे तो धर्म पामें ५, रसरो लोलूपी न हुवे तो धर्म पामें ६, शत्रु मित्र ऊपर समता (सम) भाव राखे तो धम पामें ७, सत्य वचनको सूर वीर हुवे तो धर्म पामे ८।

८ बोले मुक्तिरी प्राप्ति हुवे बारबार सूत्र भणे तो १, भणियोड़ो भूले नहीं तो २, निरतिचार संजम पाले तो ३, आशा रहित तप करे तो ४, धर्मथी डिगताने थीर करे तो ५, नव-दिक्षितने क्रिया सिखावे तो ६, गरडा बुढारी व्यावच करे तो ७, अगिलाण पणे संघ विषे कलह उपसमावे तो ८।

॥ नवमो बोल ॥

९ नव ब्रह्मचर्यनी वाड़--स्त्री, पशु पिंडक(नपुंसक) सहित थानक न भोगवे, जो भोगवे तो मुसा बिल्लीको दृष्टांत १, स्त्री कथा करे नहीं, करे तो नींबुको दृष्टांत २, स्त्रीके आसण ऊपर वेसे नहीं, जो वेसे तो पेठने आटा काचरीको दृष्टांत ३, स्त्रीना अंगोपांग निरखे नहीं, जो निरखे तो सूर्य्यको दृष्टांत ४, स्त्री पुरुष विषयादि करता होय उस भींत टाटीके पास नहीं रहे, जो रहे तो मोर गाजरो दृष्टांत ५, पूर्वला काम भोग चितारे नहीं, जो चितारे तो बुढीयाकी छाछको दृष्टांत ६, रस प्रणीत पुष्ट आहार करे नहीं, जो करे तो सन्निपात रोगकुं दूध मिसरीको दृष्टांत ७, मर्यादाथी अधिको आहार करे नहीं, जो करे तो बोदिकोथलीको दृष्टांत ८,

शरीरकी विभूषा करे नहीं, जो करे तो रांक हाथे रत्नको दृष्टांत ६।

६ नव प्रकारे रोग ऊपजे--घणो खावे तो रोग ऊपजे १, अजीर्ण ऊपरे खावे तो तथा घणो बैठे तो रोग ऊपजे २, घणो सूवे तो रोग ऊपजे ३, घणो जागे तो रोग ऊपजे ४, घणी वडीनीति बाधा रोके तो रोग ऊपजे ५, छोटीनीतिनी घणी बाधा रोके तो रोग उपजे ६, घणो चाले तो रोग ऊपजे ७, अणागमते आसणे बेसे तो रोग ऊपजे ८, वार वार विषय सेवे तो रोग उपजे ६।

६ बोल—कालरो जाण १, बलरो जाण २, खेदरो जाण ३, जातरा मातरारो जाण (यात्रा कहता---संयमरूपी जातरा, मातरा कहता---आहार परमाण) ४, अवसररो जाण५,विनयरो जाण ६, स्वमतरो जाण ७, परमतरो जाण ८, अभिमतरो तथा अभिप्रायरो जाण ६।

९ बोल---मेरुपर्वतसुं मोटो अभयदान १, स्वयं-भूरमणसमुद्रसुं मोटो सत्यवचन २, मीसरीसुं मीठो धर्म ३, चंद्रमासुं निर्मल तपस्या ४, पवनसुं वत्तो मन ५, अग्निसुं मोटी मोहनी ६, तरवारसुं तीखो कडवो वचन ७, घनसुं मोटो संतोष ८, देवलोकसुं मोटो मोक्ष ९ ।

९ बोल--रजपूतने क्रोध घणो १, क्षत्रीने मान घणुं २, गणिकाने (वेश्याने) माया घणी ३, ब्राह्मणने लोभ घणो ४, मित्रने स्नेह राग तथा हेतु घणो ५, शौकने द्वेष घणो ६, जुवारीने शोक घणो ७, चोरनी माताने चिंता घणी ८, कायरने भय घणो ९ ।

९ नव अनंता सिद्धांत मांहे पहिले अनंते अभव्य १, दूजे अनंते पडिवत्तीया २, तीजै अनंते सिद्धनाजीव ३, चौथे अनंते बादर वनस्पती ४, पांचमें अनंते सूक्ष्मबनस्पती ५ छठै अनंते बादरनिगोद ६, सातमें अनंते

सूक्ष्मनिगोद ७, आठमें अनंते संसारी जीव ८, नवमें अनंते सिद्धिसहित सर्व जीव कर्म ग्रंथे मतांतर प्ररूपणा छै ९।

॥ दशमो बोल ॥

१० दश जातरी नारकी क्षेत्रमें वेदना---अनंती-भूख १, अनंती तृषा २, अनंती शीत ३, अनंती गरमी ४, अनंतो रोग (१६ प्रकार मोटा रोग ५, ६८, ९९, ५८४ छोटे रोग) ५, अनंतो शोग ६, अनंतो भय ७, अनंतो दाघ (दाह ज्वर) ८ अनंती खाज ९, अनंतो परवशपणो १०।

१० दश ठिकाणे दश वाना पाईजे---क्रोध घणो होय स्त्रीना भर्त्तारने गृह मध्ये १, मान घणो रजपूतरे २, माया घणी भेखधारीने ३, कपट घणो वेश्याने ४, लोभ घणो ब्राह्मणने ५,

शोक घणो जुआरीने ६, सोच घणो चोररी मातारे ७, साच घणो सम्यग दृष्टिने ८, निद्रा घणी धर्मथानके ९, संतोष घणो साधुने १०।

१० दश प्रकारे बुद्धि वधे---दीर्घ आउखो निर्मल बुद्धियो तेहनी बुद्धि वधे १, वीनीत पुरुषरी बुद्धिवधे २, उद्यमवंतरी बुद्धि वधे ३, इन्द्रियनो-इन्द्रियरा दमणाहाररी बुद्धि वधे ४, सूत्र ऊपर अंतरंग राग हुवे तेहनी बुद्धि वधे ५, सखरा कार्यमांहि सावधान थावे तेहनी बुद्धि वधे ६, शंकारहित हुवे तेहनी बुद्धि वधे ७, गुरुनी प्रशंसा करे तेहनी बुद्धि वधे ८, बालभावथी मुकावे तेहनी बुद्धि वधे ९, धर्मने ऊपरे दृढ़ रहे तेहनी बुद्धि वधे १०।

१० दश जणासुं वाद नहीं कीजै---राजासे १, धनवन्तसे २, बलवन्तसे ३, पक्षपूरारे धणीसे

४, क्रोधीसे ५, नीचसे ६, तपस्वीसे, ७, कूडाबोलासे ८, माता पितासे ६, गुरु गुरुणी से १०।

१० दश प्रकाररा शस्त्र---अग्निरो शस्त्र १, वीसरो शस्त्र २, लूणरो शस्त्र ३, खटाईरो शस्त्र ४, चीगटरो शस्त्र ५, खाररो शस्त्र ६, मनरो शस्त्र ७, वचनरो शस्त्र ८, कायारो शस्त्र ६, अव्रतीरो शस्त्र १०।

१० दश प्रकारे आगे भवने विषे सातावेदनीय शुभ कर्म बांधे---सम्यक्त शुद्ध मन पाले ते साता शुभ कर्म बांधे १, मन वचन कायाना जोग रोके (रुंधे) तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे २, इन्द्रियां दमे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ३, क्षमा करे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ४, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ५, वेयावच्च करे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ६,

वैराग्भाव आणै तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ७, दान शील तप भावना भावे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ८, सिद्धांत सांभले (सुने) तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ९, समभाव प्रवर्त्तै तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे १० ।

१० दश गुरु भक्ति---गुरु आया उभो थावे १, आसण आमंत्रे २, आसण बिछाय देवे ३, कीर्त्ति गुणग्राम करे ४, हाथ जोड़के खड़ा रहे ५, सत्कार दे ६, सन्मान दे ७, आवतांकुं लेणे जाय ८, रहियांरी सेवा करे ९, जावे तो पोचावण जाय १० ।

१० दस बोल प्रस्ताविक---एक बालके अग्रभाग मांहि आकास्तिकायकी असंख्याती श्रेणी छे १, एकेक श्रेणी मांहि असंख्याती प्रतर २, एकेक प्रतर मांहि असंख्याता गोला ३, एकेक गोलामांहि असंख्याता शरीर ४,

एकेक शरीरमांहि अनंता जीव ५, एकेक जीवमांहि असंख्याता प्रदेश ६, एकेक प्रदेश मांहि अनंती कर्म वर्गणा ७, एकेक कर्म वर्गणामांहि अनंता परमाणु ८, एकेक परमाणु मांहि अनंती वर्ण गंध रस फरसनी पर्याय ९, एकेक पुद्गल पर्यायमें अनंती अनंती केवल ज्ञानकी पर्याय १० ।

१० दश बोल पावणा दुर्लभ—मनुष्य अवतार १, आर्यदेश २, उत्तमकुल ३, पांच इन्द्रिय संपूर्ण ४, निरोगीकाया ५, दीर्घआऊखो ६, साधु साधवीकी जोगवाइ ७, धर्मका सुणणा ८, धर्मकी श्रद्धा ९, उद्यमका करणा १० ।

१० दशोंकी संगती वरजवी—पासंत्थाकी १, उसनाकी २, कुसीलियाकी ३, संसताकी ४, आपच्छंदाकी ५, नीन्नवकी ६, कदाग्रहीकी ७, अन्य मारगीकी ८, अनीतियाकी ९, वमनगाकी १० ।

१० दश बोल महा पापीरा कहीजे--आपरे जीवरी घात करे सो महा पापी कहीजे १, विश्वास दे घात करे सो महा पापी कहीजे २, कीनोड़ा गुण विसरेसो महा पापी कहीजे ३, सुंख लेने कुडी साख भरे सो महा पापी कहीजे ४, हिंसामें धर्म परुपे सो महा पापी कहीजे ५, भरी सभामें झुठ बोले सो महापापी कहीजे ६, रोहीमें दाव लगावे सो महा पापी कहीजे ७, वनस्पती काटे सो महा पापी कहीजे ८, तलावरी पाल काटे सो महा पापी कहीजे ६, गरभ पड़ावे सो महा पापी कहीजे, ए दश मोटा पाप छे १० ।

१० दश बोल वद्धायां वधे घटायां घटे---क्रोध १, हास्य २, रमत ३, खुराक ४, शोग ५, बुध ६, भय ७, निद्रा ८, अहंकार ६, पंचेन्द्रि विषय सेवन १० ।

१० संठाणके दश बोल भाषानो संठाण वज्रा-

कार सरीखो १, ऊर्द्ध लोकको संठाण उभो मादल सरीखो २, त्रीछा लोकनो संठाण झालर सरीखो ३, नीचा लोकनो संठाण त्रापानो ४, आखे लोकनो संठाण नारेलनो ५, अढाई द्वीपनो संठाण कदंब वृक्षना फूलनो आकार ६, अढाई द्वीप मांहि लातावडानो संठाण पाकी इटनो ७, बाहर लातावडानो संठाण सगडनो ऊर्द्ध भागनो ८, दिशिनो तथा विदिशिनो संठाण मोतीनी माला जैसो ९, रात्रिको संठाण मजुसनो १० ।

१० दसे बोले देवतानो आऊखो बांधे---अल्प कषाय होवे १, विनाश्भयाको सोग न करे २, सम्यक्त बंत होवे ३, धर्मनो रागी होवे ब्रतपाले ४, निश्चे दातार होवे ५, महा धर्म-ध्यानी होवे ६, बाल तपस्वी होवे ७, महा कष्ट करे ८, देवगुरुनी भक्तिवंत होवे ९, सदा धर्मवंत होवे १० ।

१० ज्ञानी पुरुषके १० लक्षण---क्रोध रहित १, वैराग्यवान् २, जितेंद्रिय ३, क्षमावान् ४, दयालु ५, सर्वका प्रिय ६, निर्लोभी ७, दातार ८, भय रहित ९, शोक चिंता रहित १० ।

१० दर्शना वरणीय कर्मबंधणके १० कारण---कुदेव १, कुगुरु २, कुधर्म ३, कुशास्त्रकी प्रशंसा करे ४, धर्म निमित्त हिंसा करे ५, मिथ्या बुद्धि रखे ६, चिन्ता अधिक करे ७, सम्यक्तमें दोष लगावें ८, मिथ्याचार धारण करे ९, जानकर अन्यायीकी रक्षा करे १० ।

१० सत्य भाषा १० बोल, १ जणवय सच्चे कहता—जिस देशमें जैसी बोली है वोही सच्च है जैसे पांणीकुं पय किसी देशमें कहैं २, समय सच्चे कहता—अनेक शास्त्रोंमें आचार्योंने कही बात—जैसे कादे तथा जलसे उत्पन्न मैडक सैवाल और कमल

इणोंमें पंकज कमल ही माना है यह समय सच है ३, ठवाना सच्चे कहता—स्थापना सत्यका २ भेद है सत्यभाव थापना, असत्य-भाव थापना, सत्यभाव थापना चार भुजारी मूरती, चार भुजारो आकार हुवे जिसकी चार भुजा मूरती कहे असत्यभाव थापना गोलमाल पत्थरके तेल सिंदूर लगाय भैरुंजी इत्यादि नाम रखे ४, नाम सच्चे कहता—नामादि करके वस्तु जाणनेमें आवे चाहे गुण नहीं हुवे जैसे नाम तो कुलवर्द्धन परं कुलरी वृद्धि करे नहीं ५, रूप सच्चे कहता—रूप है साधूरा परं गुण साधूरा नहीं ६, पाडुचीया सच्चे कहता—अनामीका आंगुलीकी अपेक्षा मध्यमा बड़ी, बेटेकी अपेक्षा बाप बड़ो बाप की अपेक्षा बेटा छोटा ७, व्यवहार सच्चे कहता—जैसे चूवे पाणी और कहे छत चूवे है गिरता है जल कहे पडनाल पड़ती है ८,

भाव सच्चे कहता—कोयल काली है सूवा हरा है बगुला सफेद है परं निश्चयमें वर्ण पांचही होता है ९, जोग सच्चे कहता—हाथीवाला, पखालवाला, खुमचेवाला इत्यादिक है १०, उपमा सच्चे कहता—उपमा सत्यके चार भेद छती बस्तुने छती उपमा (१), छतीने अछती उपमा (२), अछतीने छती उपमा (३), अछतीने अछती उपमा (४), जैसे पद्मनाभ भगवान्, महावीर, भगवान् सरीखा हुवेगा (१), छतेमें अछती उपमा जैसे नारकी देवतारो आउखो छतो है उस तिणकुं पल तथा सागरकी उपमा अछती है (२), अछतीने छती उपमा ॥ दोहा ॥

पान पड़ंतो इम कहे, सुण तरुवर वनराय।
अबके बीछड़े कब मिलेंगे, दूर पड़ेगा जाय ॥
तब तरुवर उत्तर दियो, सुन पत्र एक बात।
इस घर एही रीत है, एक आवत एक जात ॥

कव तरुवर मुख बोलीयो,कब पत्र दियो जबाव।
वीर बखाणी ओपमा, अणुयोग द्वार मझार ॥
अछतेने अछती उपमा घोड़ारा सिंग गधे सरीखा गधेरा सिंग घोड़े सरीखा ।

१० मिश्र भाषारा दश बोल—उपनमिसीया कहता—आज सहरमें १० जन्म्या १, विघ्न-मिसीया कहता—आज सहरमें दश मरया २, ऊपनविघ्नमिसीया कहता---आज सहरमें दश जन्म्या दश मरया ३, जीवमिसीया कहता---लाया तो जीव, उसमांहे अजीव है और कहै कि केवल जीवही जीव उठा भी लाया ४, अजीवमिसीया कहता---लाया तो अजीव उस मांहि जीवभी है और कहै केवल अजीवही अजीव उठा लाया ५, जीवाजीव मिसिया कहता---लाया तो जीव अजीव दोनुंही उसमें एक ज्यादा वा कम है और कहै कि आधो आध उठा लाया ६,

अंतमिसिया कहता---लाया तो अंत उस मांहि पडत भी है कहै कि केवल अंतही अंत उठा लाया ७, पडतमिसीया कहता---लाया तो पडत उस मांहि अंत भी है और कहै कि केवल पड़तही पडत उठा लाया ८, अधा कहता---दिन तो उग्योही है और कहै कि घड़ी दीन आया या दोय घड़ी दिन आया है संझा तो पड़ी है कहै कि दोय घड़ीरात आय गई है ६, अधधा कहता---दिन तो उग्योही है और कहै कि पहर दिन आया दो पहर दिन आया है संझा तो हुई है और कहै कि पहर रात या दो पहर रात आगई है १० ।

१० उत्तराध्ययन सूत्र २४ मां अध्ययनमें उच्चार पासवण खेल जल्ल परिठावणीया सुमतिका दश बोल कहते हैं---उच्चार पासवण कहता द्रव्यथकी जहां कोई आवे नहीं जावे नहीं

शुद्धि पत्र ॥ पाठान्तर ॥

परठाणीया सुमतिरा १० बोल ।

१ कोई आवेइ नहीं कोई देखेइ नहीं उठे परठे ।

२ आपरी आतमा परायेरी आतमा व्याघात नहीं पामे उठे परठे ।

३ ऊंची, नीची, तिरछी, भोमकामें नहीं परठे ।

४ पोली भोमिकामें नहीं परठे ।

५ तुरंतरी अचित भोमकामें परठे ।

६ च्यार अंगुल उन्डी अचित भोमकामें परठे ।

७ एक हाथ लम्बी एक चवड़ी अचित भोमकामें परठे ।

८ उन्द्रादिकरा बिल हुवे उठे नहीं परठे ।

९ शहरके नजीक गृहस्थोने दुगंछा आवे उठे नहीं परठे ।

१० हरा अंकुरा वनास्पति, लीलण, फूलण विगेरह हुवे उठे नहीं परठे ।

देखे नहीं वहां परठे १, अपनी आत्मा और दूजाकी आत्मा दुखे नहीं वहां परठे २, पोली जगामें परठे नहीं ३, उंची नींची जगामें परठे नहीं ४, चार चार आंगुल अचित्त भूमिमें परठे नहीं ५, दो दो हाथ सम-भूमिमें परठे नहीं ६, ऊंदरादिकका बिल होवे वहां परठे नहीं ७, त्रस जीवकी उत्पत्ती होवे वहां परठे नहीं ८, हरि वनस्पती और हरा अंकुरा होवे वहां परठे नहीं ९, पांच प्रकाररी फूलण होवे वहां परठे नहीं १०।

१० उत्कृष्टा १७० तीर्थंकर होवे जिसमें पांच भरत पांच ऐरवत क्षेत्रमें तीर्थंकर १० होवे तिणके नाम---जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रमें श्री अजीतनाथजी १, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीचन्द्र-नाथजी २, धातकी खंडके पहिले भरत क्षेत्रमें श्रीसिद्धांतनाथजी ३, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीजय-

नाथजी ४, धातकी खंडके दूसरे भरत क्षेत्रमें श्रीकर्पठनाथजी ५, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीपुष्प दंतजी ६, पुष्करार्थ द्वीपके पहिले भरत क्षेत्रमें श्रीप्रभासनाथजी ७, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीजयनाथजी ८, पुष्करार्थ द्वीपके दूसरे भरत क्षेत्रमें श्रीप्रभावकनाथजी ९, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीबलभद्रस्वामीजी १० ।

१० बोल वैयावच्चका---आचार्यनी वैयावच्च १, उपाध्यायनी वैयावच्च २, स्थिवरनी वैयावच्च ३, तपस्वीनी वैयावच्च ४, शिष्यनी वैयावच्च ५, गीलार्णानी वैयावच्च ६, कुलनी वैयावच्च ७, गणनी—समुदायनी वैयावच्च ८, चउविध सिंघनी वैयावच्च ९, साधर्म्मिनी वैयावच्च १० ।

१० दश बोल अढाई द्वीप वाहरे नहीं ते कहे छै--तिर्थंकर नहीं १, काल नहीं २, वादर अग्नि नहीं ३, गाज नहीं ४, विजली नहीं

५, मेह (मेघ) नहीं ६, नदी नहीं ७, सोना रूपारा आगर नहीं ८, नव निधान नहीं ९, चन्द्रमा सूर्य्यका ग्रहण नहीं १० ।

१० दशविध यति धर्म, खंति कहता—क्षमा १, मूत्ति कहता---निर्लोभी, लोभका त्यागी २, अज्जव कहता—सरलता, कपटाइ रहित ३, मद्दव कहता—मानका त्याग ४, लाघव कहता---हलका ५, सच्चं कहता---सत्य बोले ६, संयमे कहता—संयम पाले ७, तप कहता--तपस्याकरे ८, चइए कहता—द्रव्यका त्याग ९, बंभच कहता—ब्रह्मचर्य पाले १० ।

१० दश बोल असत्य भाषारा—क्रोधरे वश बोले तो असत्य १, मानरे वश बोले तो असत्य २, मायारे वश बोले तो असत्य ३, लोभरे वश बोले तो असत्य ४, रागरे वश बोले तो असत्य ५, द्वेषरे वश बोले तो असत्य ६, हास्यरे वश बोले तो असत्य ७,

भयरे वश बोले तो असत्य ८, मुखरी वचन बोले तो असत्य ९, विकथाकारी वचन बोले तो असत्य १०।

॥ इग्यारमा बोल ॥

११ मनुष्यका आयुष्य ११ बोले करी बांधे गुरुदेवनी भक्ति करे १, मिथ्यात कर्म न समाचरे २, चाडी चुगली न करे ३, कुकर्मनो उपदेश न देवे ४, जीवनो बंधन न करे ५, दांनवंत होवे ६, घणो आहर न करे ७, सूत्र सिद्धांत भणे भणावै ८, न्याय धर्मेकरी लक्ष्मी मेलवे ९, पर जीवने पीड़ा न करे १०, पर जीवने हित उपगार करे ११।

११ इग्यार बोल प्रस्तावीक, समकितरूपी मूल १, धीरजकंद २, विनय वेदिका (चोकी)

॥ शुद्धि पत्र ॥

दृष्टान्त On Tree.

॥ ११ बोल प्रस्तावीकका ॥

१ समकित रूपी – मुल ।
२ धीर्य रूपी – कंद ।
३ विन्य रूपी – वेदका (चोकी) ।
४ जस (यस) रूपी – खंध (पेड़) ।
५ पांच महाव्रत रूपी – डाला ।
६ भावना रूपी – तचा (छाल) ।
७ अनेक ज्ञान, ध्यान रूपी – कुपल पान ।
८ अनेक गुण रूपी – फुल ।
९ सील रूपी – सुगंध ।
१० अनुना (आश्रव निरोधन) रूपी--फल ।
११ मोक्ष रूपी – बीज ।

———

३, जस ४, खंद पांच महाव्रत ५, डाला भावना ६, त्वचा छाल ज्ञान ध्यान ७, कुपलपान अनेक गुण ८, फूल शील ९, सुगंध उपयोग १०, फल मोक्ष ११, बीज ।

११ इग्यार बोले करी ज्ञान वधे, उद्यम करता १, निद्रा तजे तो २, उणोदरी करे तो ३, अल्प बोले तो ४, पंडितरो संग करे तो ५, विनय करे तो ६, कपटरहित तप करे तो ७, संसार असार जाणे तो ८, चोलणा पचोलणा करे तो ९, ज्ञानवंतने पास भणे तो १०, इन्द्रियोना विषय त्यागे तो ज्ञान वधे ११ ।

॥ बारहमो बोल ॥

१२ बारे अङ्गका वर्णन, १ आचारांगजी—जिसके २ श्रुतस्कंध है, प्रथम श्रुतस्कंधरा आठमां

महा प्रज्ञा नामक अध्ययनका तो साफ विच्छेद हो गया है और बाकीके ८ अध्यायमें छव कायकी हिंसाके कारण और फल लोकका स्वरूप, सम्यक्तका स्वरूप, साधूको परिसह सहन करनेका साहस वगैरा बहुत ही बातों का वर्णन विस्तारसे किया है दूसरे श्रुत-स्कंधमें साधूको आहार, वस्त्र, पात्र, मकान इत्यादि, लेनेकी विधि, बोलनेकी विधि इत्या-दिक साधूका आचार तथा श्रीमान् महावीर स्वामीका जीवन चरित्र है, आचारांगजीके तो १८०० पद थे पदस्वरूप यथा ३२ अक्षर का १ श्लोक, १५०८८६८४० श्लोकका १ पद गिना जाता है अब तो मूलके २५०० श्लोक है; २ सूयगडांगजी—जिसके २ श्रुत-स्कंध है पहिले श्रुतस्कंध १६ अध्ययन है इसमें ३६३ पाखंडियों कुवादियोंका स्वरूप बताकर समाधान किया गया है

श्रीऋषभदेव स्वामीके ६८ पुत्रको उपदेश साधूका आचार नरकके दुःख प्रभूके गुण वगैरा बहुत बातोंका वर्णन है दूसरे श्रुत-स्कंधके ७ अध्ययन है जिसमें पुष्करणीके कमल पुष्पके दृष्टांतसे मोक्ष ग्रहण करणेकी व्याख्या साधूको आहार लेनेकी बोलनेकी रीति आर्द्रकुमार और गोशालेकी चर्चा गौतमस्वामी और उदक पेढाल पुत्रका संवाद इत्यादिक बातें हैं सूयगडांगजीके पहिले तो ३६००० पद थे अब तो २१०० श्लोकही रह गये हैं; ३ ठाणांगजी—जिसमें १ ही श्रुतस्कंध है और १० ठाणे अध्याय है पहिलेमें एकेक बोल अष्टीमें कौन कौनसे हैं और दूसरेमें दो दो यावत् दशमें ठाणेमे दश दश बोलकी व्याख्या है, इसकी चौभंगि-योंको विद्वान जमाते हैं, तब बहुतही ज्ञानरस पैदा होता है ठाणांगजीके पहिले तो ४२०००

पद थे जिसमेंसे अब सिर्फ ३७७० श्लोक रह गया है; ४ समवायांगजी—जिसमें एक ही श्रुतस्कंध है अध्याय नहीं है इसमें सलंग बंध अनुक्रमें एक दो यावत संख्याते असंख्याते अनंते बोलकी व्याख्या है और ५४ उत्तम पुरुष इत्यादिक अधिकार है १६४००० पद्मेंसे अधुना सिर्फ १६६७ श्लोक विद्यमान है; ५ विवहापन्नती भगवतीजी—जिसमें १४० शतक है १००० उद्देशे है इसमें विविध प्रकारके श्रीगौतमस्वामीके पुछे हुवे ३६००० प्रश्न है श्रीगौतमस्वामी स्कंधक सन्यासी ऋषभदत्त मुनि सुदर्शन सेठ शिवराज ऋषि गंगीयाजी, गंगदत्तजी, आनंदजी, कुशलजी, रोहाजी, सुनक्षत्रजी, सर्वानुभूतिजी, सिंहामुनीजी, इत्यादि साधुयोंका और देवानंदाजी, जायवतीजी, सुदर्शनाजी इत्यादि साध्वीयों का, संखजी, पोखलजी, कार्तिकजी सेठ

इत्यादि श्रावकोंका, रेवतीजी, सुलसाजी इत्यादि श्राविकायोंका तामली गोशाला प्रमुख अन्यमतियोंका और सूक्ष्म भंगजाल जीव विचार लब्धि विचार इत्यादि बहुत बावतोंका विवेचन है २२८८००० पदमेंसे अबतो फक्त १५७५६ श्लोक विद्यमान है; ६ ज्ञाताजी— जिसके दो श्रुतस्कंध है पहिले श्रुतस्कंधके १६ अध्ययन है जिसमें मेघकुमारका मोरके- इंडे का धनासार्थवाहका काछवेका कुंबडीका चन्द्रमाका अकिरण देशके घोड़ेका जिन- रक्षित जिनपालका थावच्चा पुत्रक खंधक सन्यासीकी चर्चाका मल्लीनाथ भगवानके छव मित्रोंका अरणक श्रावकका रोहिणीका वृक्षका द्रोपदीका कुंडरीक पुंडरीकका वगैरा दृष्टांतोसे दया सत्य शीलकी पुष्टीकी गई है, दूसरे श्रुतस्कंधके २०६ अध्यायमें पुरुषा दाणी श्रीपार्श्वनाथजीकी २०६ पासच्छी

ढीली साध्वीयोंकी कथा है ५५५६००० पदमें साढे तीनक्रोड़ धर्म कथायों इस सूत्रमें पहिले थी जिसमेंसे अब तो फक्त ५५०० श्लोक विद्यमान है ; ७ उपासक दशांगजी— जिसका १ श्रुतस्कंध और १० अध्ययन है इस सूत्रमें १० श्रावकोंका अधिकार है ये १० ही श्रावक श्रीमहावीरस्वामीके शिष्य थे २० वर्ष श्रावक धर्म पालकर जिसमें ५॥ वर्ष घर छोड़ पोषधशालामें श्रावककी ११ पडिमावही है वहां देवताका महाउपसर्ग सहा परंतु धर्मसे चले नहीं प्रथम देवलोकके अरुण विमानमें ४ पल्योपमका आयुष्य भोगवकर एकभवकर मोक्ष पधारेंगे ।

न०	श्रावकके नाम	गाम	भार्या स्त्री	धन संख्या	गौकुल संख्या
१	श्रानंदजी	वाणीय ग्राम	शिवानंदा	१२ क्रोड़ सोनैया	४००००
२	कामदेवजी	चंपानगरी	भद्रा स्त्री	१८ क्रोड़ सोनैया	६००००
३	चुलणी पोया	बनारसी	सोमा स्त्री	२४ क्रोड़ ,,	८००००
४	सूरदेवजी	बनारसी	धन्ना स्त्री	१८ क्रोड़ ,,	६००००
५	चूलशतकजी	अलंभीया	बहुला स्त्री	१८ क्रोड़ ,,	६००००
६	कुंडकोलिया	कपीलपुरी	पुसा स्त्री	१८ क्रोड़ ,,	६००००
७	सकडालपुत्र	पोलासपुर	अग्गीमित्ता	३ क्रोड़ ,,	१००००
८	महाशतकजी	राजगृही	रेवती आदि १३	२४ क्रोड़ ,,	८००००
९	नदनपीयाजी	सावच्छी	अश्विनी स्त्री	१२ क्रोड़ ,,	४००००
१०	तेतली पीया	सावच्छी	फाल्गुनी स्त्री	१९ क्रोड़ ,,	४००००

इसके प्रथम तो ११७०००० पद थे जिसमें से अब तो फक्त ८१२ श्लोक है ; ८ अंतगडदशांगजी—जिसका एक श्रुतस्कंध ९ वर्गके ६० अध्ययन है, पहले वर्गके १० अध्ययनमें अंधकविश्नुजीके १० पुत्रोंका अधिकार है, दूसरे ८ अध्ययनमें वासुदेवजी अक्षोभादिक ८ का अधिकार है, तीसरे वर्ग के १३ अध्ययनमें वासुदेवजीके गजसूकुमारजी प्रमुख ८ पुत्र पांच वासुदेवजीके पुत्रकायों १३ का अधिकार है, चौथे वर्ग के १० अध्ययनमें वासुदेवजीके मयाली आदि ५ पुत्रोंका अधिकार है, ६ साव ७ प्रद्युम्न कृष्णजीके पुत्रोंका ८ प्रद्युम्नजीके अनुरुद्ध कुमारका और समुद्र विजयजीके ९ सत्यनेमी १० द्रढनेमी पुत्रका अधिकार है, ५ वे वर्ग के १० अध्ययनमें कृष्णजीकी सत्यभामा रुक्मिणी प्रमुख ८१ पट्टराणियोंका अधिकार है और

जंबूकुमारकी मूलश्री मूलदत्ता राणीका अधिकार है, छट्ठे वर्ग के १६ अध्ययनमें मकाइ प्रमुख १२ गाथा पतीयोंका तथा अर्जुनमाली अतिमुक्त एवंता कुमारने गुणरत्न संवच्छर तप किया उनका और अलखराजा का अधिकार है, सातमें वर्ग के १३ अध्ययनमें श्रेणिक राजाकी नन्दाराणी प्रमुख तेरे पट्टराणियोंका अधिकार है, आठमें वर्ग के १० अध्ययनमें श्रेणिक राजाकी कालीराणी ने रत्नावली तप किया, सुकाली राणीने कनकावली तप किया, महाकाली राणीने लघुसिंह क्रिडित तप किया, कृष्णाराणीने वृद्धसिंह क्रीडित तप किया सुकृष्ण राणी इत्यादिक दश राणियोंकी तपस्याका अधिकार है, यों अंतगड सूत्रमें सर्व ६० मोक्षगामी जीवोंका अधिकार है इसके पहिले तो तेइस लाख अट्ठावीस हजार पद थे, जिसमेंसे अब

तो सिर्फ ६०० श्लोक रह गये हैं ६ अनुत्त-रोववाइ जिसके तीन वर्ग हैं, पहले वर्ग के १० अध्ययनमें और दूसरे वर्ग के १३ अध्ययन में श्रेणिक राजाके जालियादिक तेवीस पुत्रोंका अधिकार है, तीसरे वर्गके १० अध्य-यनमें काकंदी नगरीके धनाजी सेठने ३२ स्त्री और ३२ क्रोड सोनेयेका धन छोड़ दिक्षा ले अति दुक्कर तपस्या कर शरीरका दमन किया, ऐसे दश जीवोंका अधिकार है यह तेतीस जणे अनुत्तर विमानमें गये एकभव करके मोक्ष पधारेंगे इस सूत्रके पहले तो चौराणुलक्ष चार हजार पद थे जिसमेंसे अब तो फक्त २९२ श्लोक ही रह गये हैं १० प्रश्न व्याकरणजी जिसके दो श्रुतस्कंध है, प्रथम श्रुतस्कंधमें आश्रव द्वारमें पांच अध्ययनमें हिंसा, झूठ, चौरी, मैथुन, परीग्रह ये पांच आश्रव निपजनेके कारण

और उनके फलका अधिकार है, दूसरे श्रुत-स्कंधके संवर द्वारके ५ अध्ययनमें दयाके ६० नाम सत्य अदत्त ब्रह्मचर्य अममत्व इन पांचोके भेद और गुण बताये हैं इसके पहले तो ६३११६००० पद थे जिसमेंसे १२५० श्लोक ही रह गये हैं ११ विपाकजी जिसके दो श्रुतस्कंध है---पहले श्रुतस्कंध दुःख विपाक जिसमें मृगालोढ़ा प्रमुख दश महापापी जीव पाप कर घोर दुःख पाये जिसका अधिकार है और दूसरा सुख विपाक जिसमें सुबाहू प्रमुख दश जीव दान, पुण्य, तप, संयम, कर आगे अत्यंत सुखपाये जिसका अधिकार है, इसके पहले तो एक क्रोड़ चौरासीलाख पद थे और एकसोदश अध्ययन थे अबतो १२१६ श्लोक ही है यह ११ सूत्र तो यत्किंचित भी विद्यमान है कितनेक ऐसा कहते हैं कि इग्यारे अंग

पहिले थे जितनेही अब है जिस जिस ठिकाण जाव शब्दसे अन्य शास्त्रोंकी भलामणादी है वो समास सब मिलावो तो बराबर हो जावे, १२ दृष्टीवादजो जिसमें पांच वच्छु वस्तु थी पहिली बच्छुके ८८ लाख पद थे दूसरीके एक कोड़ ८१ लाख ५ हजार पद थे तीसरी वच्छुमें चौदह पूर्वकी समावेस होता था, सो चौदह पूर्वका ज्ञान १ उत्पाद पूर्व---इसमें षट् द्रव्यका ज्ञान था इसकी दश बच्छु और ११ लाख पद थे २ अगणीय पूर्व—इसमें द्रव्यगुण पर्यायका वर्णन था इसकी चार वच्छु और बाइस लाख पद थे, ३ वीर्यप्रवाद पूर्व—इसमें सर्व जीवके बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रमका वर्णन था इसके आठ वच्छु और चौवालीस लाख पद थे, ४ आस्ती नास्ती प्रवाद पूर्व---इसमें शास्वती अशास्वती वस्तु का स्वरूप था इसकी सोले वच्छु और अठास

॥ शुद्धि पत्र ॥

१४ पूर्वके ज्ञानकी पद संख्या लिखते ।

१ उत्पाद पूर्व   १ कोड़ पद ।

२ अग्राणीय पूर्व   ९६ लाख पद

३ वीर्य प्रवाद पूर्व   ७० लाख पद

४ अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व ६० लाख पद

५ ज्ञान प्रवाद पूर्व   १ क्रोड पदमें १ पद उणा ।

६ सत्य प्रवाद पूर्व १ कोड़ ६ पद ऊपर

७ आत्म प्रवाद पूर्व २६ क्रोड पद

८ कम प्रवाद पूर्व १ क्रोड ८० हजार पद

९ विद्या प्रवाद पूर्व १ क्रोड १५ हजार पद

१० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व ८४ लाख पद

११ प्राण प्रवाद पूर्व १ क्रोड ५६ लाख पद

१२ अवझाण (अवंध्य) प्रवाद पूर्व २६ क्रोड पद ।

१३ क्रिया विशाल पूर्व   ९ कोड पद

१४ लोक विंदुसार पूर्व १२ कोड ५० लाख पद ।

ओछो अधिको आगो पाछो तत्त्व केवली गम्य ।

लाख पद थे, ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व—इसमें ५ ज्ञानका वर्णन था इसकी बारह वच्छु और १ कोड़ छीअन्तर लाख पद थे, ६ सत्य-प्रवाद्पूर्व इसमें दश प्रकारके सत्यका वर्णन था इसकी बारह बच्छु और दो कोड़ बावन लाख पद थे, ७ आत्म प्रवाद पूर्व—इसमें आठ आत्माका वर्णन था इसकी सोलह वच्छु और तीन कोड़ चार लाख पद थे, ८ कर्म प्रवाद पूर्व—इसमें आठ कर्मोंका वर्णन था इसकी सोलह वच्छू और छव कोड़ आठ लाख पद थे. ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व--- इस दश पच्चखाणके नव कोड़ भेदका वर्णन था इसकी तीस वच्छू और बारह कोड़ सोलह लाख पद थे, १० विद्या प्रवाद पूर्व—इसमें रोहिणी प्रज्ञसी आदि विद्या मंत्र जंत्र तंत्रा-दिक विधि युक्त थे इसका चउदा वच्छू और पचीस कोड़ बीसलाख पद थे, ११ कल्याण

प्रवाद पूर्व—इसमें आत्माके कल्याण होणेकी तप संयमकी बातें थी इसकी दश बच्छू और अडतालीस क्रोड़ चौसठ लाख पद थे, १२ प्राण प्रवाद पूर्व---इसमें चारसे लगाकर दश प्राणके धरणाहार प्राणियोंका वर्णन था इसकी दश बच्छू और सत्ताणु क्रोड़ अठाइस लाख पद थे, १[illegible] क्रियाबिशाल पूर्व—इसमें साधु श्राव[illegible]चार तथा पच्चीस क्रियाका वर्णन है [illegible]के और एक कोड़ा कोड़ी और एक [illegible] स[illegible] थे, १४ लोकबिंदूसार पूर्व---इसमे [illegible]केका सन्नीपात उत्पत्ति और सर्व लोक[illegible]ार पदार्थोंका बर्णन था इसकी १० बच्छू और दो क्रोड़ा कोड तीन क्रोड़ दशलाख पद थे ऐसा कहा जाता है कि पहिला पूर्व एक हाथी डुबे जितनी स्पाईसे दूसरा दो हाथी डुबे जितनी स्पाईसे तीसरा चार हाथी डुबे

जितनी स्पाईसे ग्रों दूणो करते करते चौदवां पूर्व ८१९२ हाथी डुबे जितनी स्पाईसे लिखा जाता था चौदह पूर्व का ज्ञान लिखने में १६३८३ हाथी डुबे जितनी स्पाई लगती है दृष्टिवादांगकी चौथी बच्छूमें छव बातें हैं पहिली बातके ५ हजार पद और दूसरी, तीसरी, चौथी, पांचमी, और छट्ठीके जुदे जुदे बीस क्रोड़ इठाणुलाख नव हजार दोसौ पद थे, दृष्टिवादकी पांचमी वच्छूको चुलका कहते हैं जिसके दशक्रोड़ उगणसठलाख छियालीस हजार पद थे, इतना बड़ा दृष्टि-वाद अंगका विच्छेद होनेसे जैन धर्ममें ज्ञानको बड़ा जबर धक्का लगा है, जिस वक्त ये बारे अंग पूर्ण थे उस वक्त उपाध्यायजी इनके पुर्ण जाण होते थे अब इग्यारह अंग जितने रहे है उणके जाण हुवे उनको उपा-ध्यायजी कहना इति अंगविचार संपूर्णम् ।

१२ साधूजीकी औपमा, गाथा---

उरगगिरी जलनसागर नहतल तरुगण समोय जो होइ, भमरमिय धरणिजलरुह रविपवन समोय तोतसमणो ।

अर्थः—१ उरग कहतां, सर्प जैसा साधू ग्रहस्थने अपने निमित निपजाया स्थानक, स्त्री, पशु, पिंडक रहित होवे उसमें मालिककी आज्ञासे रहै, २ गिरी कहता, पर्वत जैसे साधु हुवे जैसे पर्वत हवाकरके कंपायमान न हुवे तैसे साधु परीसह उपसर्गे कंपायमान न हुवे धूजै नहीं, ३ जलण कहता, अग्नि जैसे साधु होवे जैसे अग्नि इन्धन तृण काष्ठादि करके तृप्त न हुवे तैसे साधु ज्ञानादि गुण ग्रहण करते तृप्त न हुवे, ४ सागर कहता, समुद्र जैसे साधु होवे समुद्र की तरह गंभीर समुद्र मर्यादा उल्लंघे नहीं ऐसे साधु तीर्थंकरकी आज्ञा उल्लंघे नहीं, ५

नहतल कहता, आकाश जैसे साधु होवे आकाशकी तरह निर्मल है जैसे आकाश स्तंभादि आधार रहित तैसे साधु भी गृहस्थादिकका आश्रय रहित हुवे,६ तरुगण कहता, वृक्ष जैसे साधु होवे जैसे वृक्ष शीत तापादि दुःख सहकर आश्रितों (मनुष्य, पशु, पक्षी यादि) को शीतल छायासे आराम सुख देवे तैसे साधु छवकाय जीवको आश्रयभूत सद्बोधादिसे सुख दाता होवे, ७ भ्रमर जैसे साधु होवे जैसे भमरा रस ग्रहण करता हुवा फुलको पीड़ा दुःख न ऊपजावे तैसे साधु आहार आदि ग्रहण करते दातारको पीड़ा कष्ट न देवे, ८ मिय कहता हिरण जैसे साधु होवे जैसे हिरण सिंहसे डरे तैसे साधु पापसे डरे, ६ धरणी कहता, पृथ्वी जैसे साधु होवे जैसे पृथ्वी शीत ताप छेदन भेदनादि स्पर्श समभावसे सहे तैसे साधुजी परिसह उपसर्ग

समभावसे सहे १० जलरुह कहता, कमल पुष्प जैसे साधु होवे जैसे कमल कादवसे उत्पन्न हुवा और पाणी करके वृद्धिपाया परंतु पुनः उसे लेपाय नहीं तैसे साधु काम करके उत्पन्न हुवे और भोग करके बड़े हुये परंतु पीछे काम भोगकर लेपाय नहीं, ११ रवि कहता, सूर्य्य जैसे साधु हुवे जैसे सूर्य्य अपने तेज करके जगतके सर्व पदार्थोंको प्रकाशे, प्रगटकरे तैसे साधु जीवादि नव पदार्थोंका यथार्थ स्वरूप भव्योंके हृदयमें प्रकाश करे, १२ पवन कहता, हवा जैसे साधु होवे हवा माफिक सर्वस्थान गमन है और वायुकी गति खलायमान (खंडन) न होवे तैसे साधु सर्व स्थान विहार करे तथा स्वइच्छाचार विहार करे।

१२ श्रीअरिहंतजीके १२ गुण—१ अनंतज्ञान, २ अनंत दर्शन, ३ अनंत चारित्र, ४ अनंत

तप, ५ अनंत बलवीर्य, ६ अनंत चायक सम्यक्त, ७ वज्र ऋषभ नाराच संघयण, ८ समचो रस संस्थान, ९ चौतीस अतिशय, १० पैंतीस वाणी गुण, ११ एक हजार आठ उत्तम लत्तण, १२ चौसठ इन्द्रके पूज्यनीक।

१२ उपयोग बारे कहां कहां पावे--उपयोग सिद्धा में पावे १, दोय उपयोग तेरमें चवदमें गुण ठाणे पावे २, तीन उपयोग पांच स्थावरमें पावे ३, चार उपयोग चोरेंद्री पर्याप्ता पावे ४, पांच उपयोग वेरेंद्री तेरेंद्रीमें पावे ५, छव उपयोग चोरेन्द्रीमें तथा श्रावकमें पावे ६, सात उपयोग सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्ध सुद्दम संपराय चारित्रमें पावे ७, आठ उपयोग वाहेंवहता सिद्ध गतियांमें नारकी जीवमें अथवा अचर्ममें पावे ८, नव उपयोग देवता यथाख्यात चारित्रमें पावे ९,

दश उपयोग छद्मस्थमें पावे १०, इग्यारे उपयोग संयतीरे अलद्धीयेमें पावे ११, बारे उपयोग समुच्चय जीवमें पावे १२ ।

१२ बोल बलरो प्रमाण—बारह पुरखारो बल एक गधामें १, दश बलदांरो बल एक घोड़ामें २, बारह घोड़ारो बल एक भैंसामें ३, पांचसो भैंसारो बल एक हाथीमें ४, पांचसो हाथीरो बल एक सिंहमें ५, पांचसो सिंहरो बल एक अष्टापदमें ६, दश अष्टापदरो बल एक बलदेवमें ७, दो बलदेवरो बल एक वासुदेवमें ८, दो वासुदेवरो बल एक चक्रवर्त्तीमें ९, एक करोड़ चक्रवर्तिरो बल एक सामानिक देवतामें १०, एक कोरोड़ सामानिक देवतारो बल एक इन्द्रमें ११, अनंता इन्द्रोबल भगवंतनी चिटुली अंगुलीमें १२ ।

॥ अथ बारे भावना भाषामें कहते हैं ॥

पहेली अनित्य भावना ।

राजा राणा छत्रपति, हाथिनके असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार ॥

ऐसा विचार करै कि इस जगतमें ग्राम, नगर, पुर, पैठाण, कोट, खाई, बाग, बगीचे निवांण, महेल, हवेली, दूकान, मनुष्य, कुटुंब, परिवार, न्याती, गोती, पशु, पक्षी, धन, धान्य, आभूषण, इत्यादिक सर्व वस्तु अनित्य असाश्वती है; परन्तु हे जीव ! तुं मुढपणेसे इसको नित्य साश्वती मान बैठा है, पर पुद्गलोसें शरीरकी घरकी शोभा बनाके तुं खुशी मानता है, सो यह शोभा कभी एकसी रहनेवाली नहीं है। (ऐसी अनित्य भावना, श्री भरतेश्वर चक्रवर्त्तीने भाइथी) ॥१॥

दूसरी अशरण भावना।

दल बल देई देवता, मात पिता परिवार ।
मरती बिरियां जीवको, कोइ न राखन हार ॥

ऐसा विचार करै कि, रे जीव ! इस जगत में तेरेको शरण (आधार) का देनेवाला कोई नहीं है, सब स्वजन स्वार्थके सगे हैं, जब तेरे अशुभ कर्म उदय होंगे तेरे पर दुःख आके पड़ेगा तब तुझको सहायकर्त्ता कोई भी नहीं होगा (ऐसी अशरण भावना, अनाथी निग्रंथ ने भाईथी) ॥२॥

तीसरी संसार भावना।

दाम विना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान ।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥

ऐसा विचार करै कि, रे जीव! तुं अनंत जन्म मरण कर सर्व संसारमें फिरा, बालाग्र जितना भी ठिकाणा खाली नहीं रखा, सर्व जीवोंके साथ सगपण (संबंध) कर चुका माता मरके स्त्री, और स्त्री मरके माता पिता के पुत्र, और पुत्रके पिता ऐसे आपसमें अनंत बखत संबंध हो गया, सर्व जगत्‌वासी जीव स्वजन है, परन्तु शत्रु कोई नहीं है, इस लिये सबके साथ तुं मित्रता रख (ऐसी संसार भावना मल्लिनाथजीके ६ मंत्रियोंने तथा धन्ना शाली-भद्रजीने भाई थी) ॥३॥

॥ चौथी एकत्व भावना ॥

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यों कबहूँ या जीव को, साथी सगा न कोय॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव! इस जगतमें

कोई किसीका सोबती नहीं है, अकेला आया और अकेलाही जायगा, जो पाप करके तेने धन कुटुंबका संग्रह किया है, सो मरेगा जब धन धरतिमें, पशु घरमें रह जायगा, स्त्री दरवाजे तक, और कुटुंब श्मशान तक ही आयगा, अत्यंत प्रिय यह शरीर चित्ता (अग्नि) में जलके भस्म हो जायगा, ऐसा जाण तु एकांतपणा धारण कर, (ऐसी एकांतभावना, नमीराय ऋषिने भाई थी) ॥४॥

॥ पांचमी परपंख भावना ॥

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय ।
घर संपति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय ॥

ऐसा विचार करे कि, रे जीव ! इस जगतमें सब स्वार्थी (मुतलबी) है, उनका मुतलब होता है, वहां तक, सब जी जी, खमा

खमा, करते हैं, हुक्म उठाते (मानते) हैं, मुतलब पूरा हुवे बाद सब सज्जन दूर भग जाते हैं, परन्तु कोई किसीका नहीं होता है (ऐसी परपंख भावना मृगापुत्रने भाई थी) ॥५॥

छट्ठी अशुची भावना।

दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगतमें, और नहीं घिन गेह ॥

ऐसा विचार करे कि, रे जीव! तूं तेरे शरीरको स्नान मंज्जनादिकसे शुद्ध करनेको चाहता है, लेकिन यह शरीर कभी शुद्ध नहीं होगा, क्योंकि इसकी उत्पतिका जरा विचार करके देख कि अव्वल माताका रक्त और पिताका शुक्र (वीर्य) का आहार कर यह शरीर बना था, अशुची (विष्टा) के स्थानमें

वृद्धि पाकर रक्तके नालेमेंसे बाहिर पड़ा, और माताका दूध पीकर बड़ा हुआ। सो दूध भी जैसे रक्त (लोही) मास शरीरमें रहता है, तैसाही ये दूध है, और अभी अनाज खाता है सो भी अशुचीके खातेमें पैदा होता है।

अब तेरे शरीरके अन्दरके पदार्थोंका जरा बिचार कर, इस शरीरमें ७ कला हैं :—१ मांस, २ लोही, ३ मेद, इन तीनोंके बीचमें तीन झिली है सो, ४ कृतफिये के बीच एक झिल्ली, ५ आंतोके बीच एक झिली, ६ पेटमें जठराग्नि को धरनेवाली एक झिली, ७ वीर्यको धरनेवाली एक झिली। इस शरीरमें सात आसय (स्थान) हैं। १ हृदयमें कफका स्थान, २ हृदयके नीचे आमका स्थान, ३ नाभी उपर डावी बाजु जठराग्निका स्थान (अग्नि पर तिल है,) ४ नाभीके नीचे पवनका स्थान, ५ पवनके स्थानके नीचे पेडुमें मल (विष्ठा) का स्थान,

६ पेडु के जरासा नीचे मुत्रका स्थान (इसे बस्ती कहते हैं,) ७ हृदयके कुछ उपर जीवका और रक्त (लोही) का स्थान, स्त्रीको ३ स्थान जास्ती है :—१ गर्भस्थान और २ दूधस्थान (स्तन)-३ यों स्त्रीके १० स्थान हुए।

इस शरीरमें ७ धातु है, १ रस, २ लोही, ३ मांस, ४ मेद, ५ हाड, ६ मींजी, ७ शुक्र, जो आहार करता है सो पित्तके तेजसे पककर पहिले चार दिनमें उसका रस होता है, फिर चार दिनमें उस रसका लोही होता है; यों चार चार दिनके अंतर से एकेक धातूपणे प्रणमता प्रगमता एक महीनेके अंदर शुक्र होता है।

सात उपधातू :—(१—२—३) जीभका, नेत्रका, और गलेकामेल रस की उपधातू, ४ कानका मेल मांसकी उपधातू, ५ बीस ही नख हाडकी उपधातू, ६ आंखका गीड मींजी

की उपधातु, ७ मुखके उपरकी चिकणाइ शुक्रकी उपधातू ।

मांस रुप जो धातु है उसे 'वसा' तथा 'औज' कहते हैं, यह घृत जैसा चिकणा होता है, सर्व शरीरमें रम रहता है, यह शीतल और पूष्टीका कर्ता बलवान है ।

७ त्वचा (चमडी) १ भामनी नामे उपर की त्वचा चिकणी है, सो शरीरकी विभूषा (शोभा) करनेवाली है, २ लालरंगकी त्वचा उसमें तिल आर्य पैदा होता है, ३ श्वेत त्वचा उसमें चर्म दल रोग पैदा होता है, ४ तांबेके रंग जैसी त्वचा उसमें कोढ रोग पैदा होता है, ५ छेदनी त्वचा उसमें अठारह प्रकारके कोढ पैदा होता है, ६ रोहणी नाये त्वचा उसमें गुमड़े गंडमाला प्रमुख रोग पैदा होता है, ७ स्थुल त्वचा, उसमें बीद्रधी रहते हैं।

तीन दोषका स्वरुप—१ वात (वायू), २

पित्त, ३ कफ, इन तीनोंको कोई तीन दोष और कोई तीन मेल कहते हैं।

१ वायू शरीरमें सर्व ठिकाणे वस्तुओंका विभाग करता रहता है। यह सुक्ष्म, शीतल, हलका और चञ्चल होता है, यह नसे रुप नल करके जो वस्तु खानेमें आती है,उसको ठिकाने पहुंचाता है, इसके पांच स्थान हैं:—१ मलका स्थान २ कोठा (पेट) ३ अग्नि स्थान ४ हृदय ५ (पांचवा) कंठ, इन पांच ठिकाने रहता है। १ गुदामें रहता है उसे अपान वायू कहते हैं, २ माभीमें रहता है उसे सामान्य वायू कहते हैं, ३ हृदयमें रहता है उसे प्राणवायू कहता है, ४ कंठमें रहता है उसे उदान वायू कहते हैं, ५ (पांचवा) सर्व शरीरमें रहता है उसे व्यान वायू कहते हैं। इस प्रकृति वालेके लक्षणः—केश छोटे, शरीर दुर्बल लुखास लिये होता है, इसका मन चञ्चल

रहता है, वाचाल होता है, और इसको आकाशमें उड़ने के स्वप्न आते हैं इसे रजोगुणी कहते हैं ।

२ पित्त गरम, पतला, पीला, कड़वा, तीखा, दग्ध होनेसे खट्टा हो जाता है, यह पांच ठिकाणे रहके पांच गुण करता है, १ आसयमें तिल जितना अग्निरूप होकर रहता है यह अग्नि पांच प्रकारकी, १ मंदाग्निसे कफ, २ तिक्ष्णाग्निसे पित्त, ३ विषमाग्निसे वात, ४ समाग्नि श्रेष्ट, ५ विगमाग्नि नेष्ट, २ त्वचासे रहकर कांती करता है, ३ नेत्रमें रहकर वस्तुको देखाता है, ४ प्रकृतिमें रहकर वस्तुको पाचन कर खाये हुयेका रस लोही बनाता है, ५ हृदयमें रह बुद्धि उत्पन्न करता है, इसके ५ नाम हैं—१ पाचक, २ अंजक, ३ रंजक, ४ अलोचक, ५ साधक इसकी प्रकृतिवालेके लक्षण जवानीमें श्वेत बाल होवे बुद्धिमान

होवे, पसीना बहुत आवे, क्रोधी होवे, और स्वप्नमें तेज देखे, इसे तमोगुण कहते हैं।

कफ चिकणा, भारी, श्वेत, शीतल, मीठा होता है, दग्ध हुए खरा हो जाता है, इसके पांच स्थानः—१ आसयमें, २ मस्तकमें, ३ कंठमें, ४ हृदयमें, ५ सन्धीमें, यह पांच ठिकाने रह स्थिरता कोमलता करता है, इसके पांच नामः—१ क्लेदन, २ स्नेहन, ३ रसन, ४ अव लंबन, ५ गुरूत्व, कफकी प्रकृतिवालेके लक्षण गंभीर, मंद बुद्धि होता है, शरीर चिकणा, केश बलवान, और स्वप्नमें पाणी देखे, इसे तमो गुण कहते हैं।

और भी इस शरीरमें मांस, हाड, मेद, इनको बांधनेवाली जो नसें हैं उनको स्नायु कहते हैं, यह शरीर हड्डीयोंके आधारसे खड़ा है जिसको आधार इनका ही है, इस देहमें सबसे बड़ी सोलह नसे हैं, उनको कंरड कहते

है, यह शरीरको संकोचन प्रसारन सत्ति देते हैं।

संरंध्राका स्वरूप—कानके दो, नाकके दो, आंखके दो, यह ६, ७ जनेन्द्रि, ८ गुदा, ९ मुख यों ९ छिद्र पुरुषके और स्त्रीके १ गर्भाशय, और दो स्तन, यह ३ जास्ती, यों ११ छिद्र हैं और छोटे छिद्र तो अनेक हैं। नाभीके डावी तरफ जो आशयके ऊपर तिल है सो पाणीको ग्रहण करनेवाली नसका मूल है, इससे ही प्यास (तृषा) शांत होती है, और कूंख (पेट) में जो दो गोले हैं, व जठरके मेदको तेज करते हैं, इस शरीरमें सर्व कोठे ७२ हैं, जिसमें छव कोठे वड़े हैं, जिसमेंसे शीतकाल (सियाले) में तीन कोठे आहारके, दो कोठे पाणीके और एक कोठा खाली श्वासो श्वासको रहता है। ऐसेही ग्रीष्म ऋतुमें दो आहारके तीन पाणीके एक श्वासो श्वासका खाली रहता है, ऐसेही

चौमासे (वर्षाऋतु) में अढाइ कोठे आहार के, अढाइ पाणीके, एक खाली रहता है।

इस शरीरमें संधी साठ है, पच्चीस पल प्रमाणे कालजो हैं। दो पल प्रमाणे आंख है, तीस टांग प्रमाणे शुक्र है, एक आढा लोही है, आधा आढा चर्बी है, सिर (मस्तक) की भेजी एक पाथा, मूत्र एक आढा, विष्ठा एक पाथा, पित्त एक कलव, और श्लेष्म एक कलव, इस प्रमाणे शरीरमें है ❀ जो इससे ज्यादा हो जाय तो रोग पैदा होवे, और कमी होवे जाय तो मृत्यु निपजे।

एकसो साठ नाड़ी नाभीके उपर यह रसको धरनेवाली है, एकसो साठ नाड़ी नाभीके नीचे, एकसो साठ त्रीछी, हाथ प्रमुखमें

❀ ८ सरसबका १ जव, ४ जवकी १ रत्ती, ६ रत्तीका १ मासा, ४ मासासी १ टांक, ८ टांकका १ पैसा, २ पैसेकी १ पल, ४ पलका १ पाव, ४ पावका १ सेर, ४ सेरको १ अढक, ४ अढक की १ द्रोण।

लपटी, एकसो साठ नाड़ी नाभीके नीचे गुदेको बींट रही है, पच्चीस नड़ी श्लेष्मको पच्चीस पित्तको, दश शुक्रको धरनेवाली है, यों सर्व नाड़ी ७०० हैं।

इस शरीरके दो हाथ दो पग, यों चार शाखा एकेक शाखामें तीस तीस हड्डी, यह १२० हुई, ५ जीमणी कमरमें और ५ डावी कमरमें, चार भग (योनी) में और चार गुदामें, एक श्रीकनमें, बहतर दोनों पसवाड़े में, तीस पीठमें, आठ हृदयमें, दो आंखमें नव ग्रिवामें चार गलेमें, दो हडवचीमें, ३२ दांत, एक नाकमें, एक तालुवेमें सर्व ३०० हड्डी हुई।

इस शरीरमें साढ़े तीन क्रोड़ रोम हैं जिसमेंसे दो क्रोड़ एकावन लाख रोम गलेके नीचे, और निन्याणव लाख गलेके ऊपर है, और एक एक रोममें पौणी दो दो रोग माठरे

(कुछ कम) भरे हुए हैं, जिसमें भी जलंधर भगंदरादिक १६ रोग मोटके (बड़े) भरे हुए हैं, इत्यादि अशुची (अपवित्रता) से और आधी (चिंता) व्याधी (रोग) उपाधी (काम कार्य) करके यह शरीर पूर्ण भरा है, जहां तक पूर्ण पुण्य है वहां तक सर्व अपवित्रता छिपी हुई है, इसे गौरी काली चमडी ढांक रही है, जब अशुभ पाप कर्म उदय (प्रगट) होवेगा तब बिगड़ते किंचित् ही देर नहीं लगेगी (ऐसी भावना सनतकुमार चक्रवर्तीने भाईथी) ॥६॥

॥ सातमी आश्रव भावना ॥

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा।
कर्म चोर चहुँ ओर, सब लूटे नहीं दिशता ॥

ऐसा विचारे कि, रे जीव ! तेने अनंत

संसार परिभ्रमण किया, इसका मुख्य हेतु आश्रव ही है, क्योंकि पाप तो इस जीवने अनंत वख्त छोड़ा, परन्तु आश्रव छोड़े विन धर्म पूर्ण फल नहीं दे सकता । आश्रव २० प्रकारके हैं परन्तु यहां मुख्यमें अव्रतका अर्थात् उपभोग (जो एक वख्त भोगनेमें आवे आहार पाणी प्रमुख) परिभोग (एक वस्तु बारम्बार भोगनेमें आवे, वस्त्र भूषण प्रमुख) और भी धन, धान्य, भूमि इत्यादिककी मर्यादा नहीं करना, इच्छाका निरुंधन नहीं करना, सोही आश्रव इस भवमें महा तृष्णा रूप सागरमें गोते खिलाता है, और आगे भी दुर्गतिमें अनंत काल विटंवणा देनेवाला होता है, ऐसा जाण रे जीव! अब तो आश्रव छोड़ और व्रत अंगिकार जरूर कर, (यह आश्रव भावना समुद्रपालजी ने भाईथी) ॥ ७ ॥

॥ आठमी संवर भावना ॥

सतगुरु देव जगाय, मोह नींद जब उपशमै ।
तब कुछ बनै उपाय, कर्म चोर आवत रुकें ॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव ! संसारमें रुलानेवाला आश्रव है, जिसको रोकनेका उपाय एक संवर ही है, इस लिये अब तो कायिक (काया) वाचित (वचन) मानसिक (मन) की इच्छाको रुंधन कर एकान्त समता रूप धर्ममें लीन हो, अर्थात् जीवरूप तलावमें कर्मरूप नालेसे, अव्रत रूप पाणी आ रहा है, उसको संवर (व्रत) रूप पाल बांधके आश्रवको रोक ले (यह संवर भावना हरिकेशीजी महा-ऋषि ने भाई थी) ॥ ८ ॥

॥ नवमी निर्जरा भावना ॥

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर ।
या विधि विन निकसे नहीं, पैठे पूरब चोर ॥
पंच महा व्रत संचरण, समिति पंच परकार ।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार ॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव ! संवरसे तो आते पापको रोक (बंध कर) दिया, परन्तु पहले किये हुए पापको खपाने वाली तो एक निर्जरा (तपश्चर्या) ही है, छव बाह्य, छव अभ्यन्तर, बारह प्रकारका तप, इसलोक पर-लोकके सुखके रूपकी या कीर्तिकी वांछा रहित एकांत मोक्षार्थी हो कर करे तो तेरा कल्याण होवे अर्थात् जीवरूप कपड़ेको कर्म्मरूप मैल लगा हुवा है, इनको संवररूप साबुन लेकर तपरूप पाणीसे धो, सो तेरेको मोक्षरूप

अविचल सुखकी प्राप्ति हो जावे, (यह निर्जरा भावना अर्जुन माली ने भाई थी) ॥६॥

दसमी लोकसंठाण भावना।

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादितै, भरमत है बिन ज्ञान ॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव ! इस लोकका संठाण कैसा है, जिसका तुं विचार करके देख तीन दीवे जैसा इस लोकका संठाण (आकार) है। जैसा कि एक दीवा उलटा जिसपर दूसरा दीवा सीधा। और उसपर तीसरा दीवा उलटा रखनेसे जैसा आकार होता है, तैसा इस लोकका आकार है, सर्व लोकका घनाकार ३४३ राजुका है, इस लोकके मध्य भागमें

(जैसा मकानके बीचमें एक पोकल स्थंभ होता है तैसा) एक राजुकी चौडी और १४ राजुकी लंबी एक ऐसी त्रस नाल है, उसके अंदर त्रस और स्थावर जीव भेले भरे हुवे हैं, और इसके बाहिर बाकी सब लोकमें स्थावर जीव ही खिं- चोखिंच भरे हुए हैं, तो रे जीव ! तुं अनंत बखत् इस लोकके विषे त्रस थावरपणे, सूक्ष्म बादरपणे, सन्नी असन्नीपणे पर्याप्ता अप- र्याप्तापणे, नारकी तिर्यंचपणे मनुष्य देवतापणे, जन्म मरण करके सब लोक फरस लिया, ऐसी कोई जगह लोकके अन्दर नहीं रही कि जिस ठिकाणे तूं जन्म मरण नहीं किया हो, अर्थात् (एक बालाग्रह रखे उतनी जगा लोक में खाली नहीं रखी) ऐसा जानकर रे जीव— अब तो ऐसी जगा देखनेकी इच्छा कर के जहां जन्म मरणादि कष्टकी उत्पत्ति न होवे, और पुनर्पि संसारसागरमें परिभ्रमण करनेका काम

न पड़े, ऐसा स्थान (ठिकाणा) कहां है कि, लोकके अग्रभागके ऊपर अर्थात् स्वार्थसिद्ध विमानसे बारह योजन ऊपर ४५ लाख योजन की पूर्ण चंद्राकार समान गोल और छत्राकार, मध्यमें ८ योजनकी जाडी, और आखरी किनारे पर मच्छिके पंखसे भी पतली, मक्खनवत् चीकनी, अर्जुन स्वर्णमय सफेद, ऐसी सिद्धसिला हैं। जहां एक कोसके छट्ठे भागके ऊपर अनंते सिद्ध भगवंत विराजते हैं, वहां कोई प्रकारका कष्ट नहीं है, इस लिये वहां जानेकी तु भी इच्छा कर, और ज्ञान दर्शन चारित्र तप अंगिकार करनेका उद्यम कर, तो वो मुक्ति स्थान तेरे को शीघ्र मिल जायगा, (यह लोक संठाणभावना शिवराजऋषिने भाईथी) ॥ १० ॥

ग्यारहमी बोधबीज भावना।

धन कन कंचनराज सुख, सबहि सुलभ कर जान
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान॥
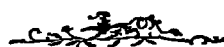
ऐसा विचार करे कि रे जीव! तेरा निस्तारा किस करणीसे होगा, इस जीवको मोक्ष देनेका मुख्य हेतु सम्यक्त्व हैं, सम्यक्त्व बिन उतकृष्ट करणी कर नवग्रीवेग तक जा आया, परन्तु कुछ कल्याण न हुवा तो अब सम्यक्त्व फरसनेका अवसर (मोका) आया है, सो अब प्रमादको मेट सम्यक्त्व रत्न प्राप्त कर, और देव अरिहन्त, गुरू निग्रन्थ, केवली परुप्यो दया धर्म यह तीन तत्व शुद्ध अंगिकार कर, और कुदेव, कुगुरु, कुधर्मको त्यागन कर श्री वीतराग प्रणित वाणी (वचनो) की आस्ता (श्रद्धा) पूर्ण रख सो येही एक सम्यक्त्व है,

जैसे डोरा पोई हुई सुई कचरेमें खोई नहीं जाती है तैसे सम्यक्त्व पाया हुवा प्राणी संसार-समुद्रमें बहुत परिभ्रमण नहीं करते हैं। ऐसा समझ कर रे जीव! तूं बोधवीज सम्यक्त्वकी प्राप्ति कर, कि जिससे मोक्षकी प्राप्ति होवे (यह बोधबीज भावना, कृष्ण वासुदेव, श्रेणिक राजा, और ऋषभदेवजीके अठाणुं पुत्रोंने भाईथी) ॥११॥

॥ बारमी धर्म भावना ॥

जाचे सुरतरु देय सुख, चिंतत चिंतारैन।
विन जाचे विन चिंतये, धर्म सकल सुखदैन॥

ऐसा विचारे कि रे जीव! यह नरभव है सो निर्वाण (मोक्ष) प्राप्ति करनेका कारण है, और मोक्ष धर्म करणीसे प्राप्ति होती है, यह

जन्म धर्म करनेको ही पाया है, कारणकी मनुष्य जन्म सवाय धर्मकरणी बण नहीं सकती है, और धर्म विन मनुष्य पशुतुल्य है, इस लिये अवश्य धर्म कर, धर्म तो इस संसारमें बहोत प्रकारसे लोक मान बैठे हैं, परन्तु सच्चा धर्मका मर्म (स्वरूप) कुछ नहीं समझते हैं फक्त अपना अपना मत पक्ष ताणतें हैं, इस लिये सच्चा धर्म वोही है, की जिस धर्ममें किसी जीवको मन वचन काया करके बिलकुल तकलीफ नहीं देते हैं, अर्थात् (अहिंसा परमो धर्मः) इति वचनात् जहां दया है सो ही परम (उत्कृष्ट) धर्म है, इस लिये दया धर्म अंगिकार कर, (यह धर्म भावना धर्मरुची मुनीनें भाइथी) ॥१२॥

१२ बारह प्रकारनो आहार पाणी परिठवे पिण भोगवे नहीं—आधाकर्मि १, उद्देशिक २, पूतीकर्म ३, मिश्र ४, सचित्त अचित्त मिश्रया

५, अजोयरे ६, सिज्झातरनो ७, सचित्त पाणीनी बुंद पड़े तो ८, खेताइ कंते ६, कालाइ कंते १०, मगाइ कंते ११, पमाणाइ कंते १२।

१२ बारह संभोग—उपधि वस्त्र पात्रनो लेवो १, सूत्र सिद्धांत लेवो वाचणी लेवी देवी २, आहार पाणी लेवो ३, मांहोमांहि नमस्कार नो करवो ४, शिष्यादिकनो देवो ५, निमंत्रणा करवी ६, मांहोमांहि खड़ा होणा ७, कीर्त्ति गुणग्राम करे ८, वैयावच्च करणी ६, एकठा मिलवो १०, एक आसण बेसवो ११, कथा प्रबंधनो कहिवो १२।

१२ बारे बोल करी भव्य जीवकुं पछतावणो पड़े—छती योगवाइ साधु साधवीको १४ प्रकारको दान नहीं देवे तो पछतावणो पड़े १, दान देइने पोमावे तो पछतावणो पड़े २, दान देता वर्जेतो पछतावणो पड़े ३, छती

योगवाइ सामायक नित नेम संबर न करे तो पछतावणो पड़े ४, सामायक नित नेम करतांने वर्जे तो पछतावणो पड़े ५, छती शक्ति १२ प्रकारकी तपस्या न करे तो पछतावणो पड़े ६, बारह प्रकारकी तपस्या करतांने वर्जे तो पछतावणो पड़े ७, साधू साधवी आया तेहनी वख्याण वाणी न सुणे तो पछतावणो पड़े ८, साधु साधवीकी निंदा करे तो पछतावणो पड़े ९, पांच महाव्रत धारी साधु साधवीको बंदणा नहीं करे तो पछतावणो पड़े १०, छती योगवाइ भणे गुणे नहीं तो पछतावणो पड़े ११, छती योगवाइ मकान (थान) पाट पाटला प्रमुख नहीं देवे तो पछतावणो पड़े १२ ।

॥ तेरमो बोल ॥

१३ तेरे काठीयांका नाम १, आलस काठीयो ते साधू समीपे आवतां धर्म सांभलतां आलस ल्यावे २, मोह काठीयो ते सजन उपरा स्नेह राखे ३, अग्याकाठीयो ते एह क्या जांणे है इनसे हमही ज्यादा समझते है ४, मान काठीयो ते मुझ समान दूसरा कोई नहीं है ५, क्रोधकाठीयो ते गुरु हमसे तो बोलते ही नहीं ६, प्रमाद काठीयो ते रात दिन निन्द्रा सेवे गुरुवादिकरी वाणी नहीं सुणे ७, कृपण काठीयो ते व्याख्यानादि सुणयां दानादिक देणो पडसी एसो वीचारे ८, भय काठीयो ते नारकीरा दुःख सुणावसी ९, शोक काठीयो ते धर्म समय शोकादिक अंतराय दे १०, अज्ञान काठीयो ते धर्म तत्व सरदे नहीं ११, भ्रम काठीयो धर्मका फल होवेगा या नहीं

१२, कुतोहल काठायो ते कोतुक खेल तमासादिमें रहै १३, विषय काठीयो तें इन्द्रीयोंके काम भोगमें मग्न रहै ए तेरह काठीया दूर करे तब धर्म पामें और आत्माका कल्याण करे ।

१३ तेरे क्रिया साधूने लागे यथा स्वभावे अथवा गिलाणादिकने काजै आहार असूझतो लेवो ते अर्थ क्रिया १, देवगुरु संघनो प्रत्यनीक तथा धर्मनो हिंसक ते संघातें बोलवुंते हिंसकी क्रिया २, वस्तु पूंजी सूकता कोई जीवनै विराधना हुवे ते अकस्मात् क्रिया ३, सापराध निपराध भमता मरण पामें ते दृष्टि विपर्यासि की क्रिया ४, कुडो बोलै ते मृखावादकी क्रिया ५, अणादीधे लेवे ते अदत्तादानकी क्रिया ६, हीयामें फोकट उचाट धरै ते अधात्मकी क्रिया ७, कारण पाखें असूझतो लेवो ते अनर्थकी क्रिया ८, अहंकार

अभिमान करै ते मानकी क्रिया ६, अल्प अपराध हुवै ने घणुं दंडै ते अमित्रकी क्रिया १०,कुटिलपणोकरवुं ते कुटिलकी क्रिया ११, कामादिकनो आसक्त थको ओरानें बंधवंधनादिक करवो ते लोभकी क्रिया १२, इर्यापंथकी क्रियानो अणसद्दहवो ते इर्यापंथकी क्रिया १३,

१३ तेरे बोल हुवे जिहां साधु चोमासो करे—बेन्द्रियादिक जीव थोड़ा होय १, कीचड़ कादो थोड़ो होय २, उच्चार पासवणको जागा निरवद्य होय ३, थानक साताकारी होय ४, छाछ दहि दूध घृत घणो होय ५, बस्ती घणी होय ६, राजवैद्य होय ७, औषध दवा चाहिजे सो मिले ८, श्रावक कोठे धान घणो होय ९, गामरो ठाकुर धर्मरो रागी होय १०, पाखंडीयोंका जोर थोड़ा होय ११, आहार पाणीनी साता

होय १२, सिझाय करणेकी जागा जुदी होय १३ ।

१३ तेरे तिणगां जन्म रूपणी रूई मरण रूपीया-- तिणगा १, संयोगरूपणी रूई वियोगरूपीया तिणगा २, साता रूपणी रूई असाता रुपीया तिणगा ३, संपदा रूपणी रूई आपदा रूपीया तिणगा ४, हरख रूपणी रूई सोच रूपया तिणगा ५, सिल रुपणी रूई कुसील रूपीया तिणगा ६, ज्ञानरूपी रूई अज्ञान-रूपी तिणगा ७, सम्यक्त रुपी रूई मिथ्यात्व रूपी तिणगा ८, संयमरूपी रूई असंयम-रूपी तिणगा ९, तपस्यारूपी रूई क्रोधरूपी तिणगा १०, विवेकरूपी रूई अविवेकरूपी तिणगा ११ सनेहरूपी रूई मायारूपी ति-णगा १२, स'तोष रूपणी रूई लोभ रूपीया तिणगा १३ ।

॥ महानुभाव वन्दनाका १३ बोल ॥

धन्न श्री ऋषभदेवजी अनंत बल रा धणी काया ने कांपसी धन वां पुरुषां ने वरसी तप चौविहार कियो, हे जीव, छमछरीरो उपवास तुंही चौविहार कर थारे कायारी गरज सरसे, च्यार हजार साधांरे परिवार सुं दिक्षा लीधी, दश हजार साधांरे परिवार सुं छव दिनांरे संथारे सुं मुक्ति पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ १ ॥

धन श्री महावीर स्वामी अनंत बलरा धणी कर्म काटया, धन उत्तम पुरुषां ने बाहरे मास तेरे पख चौविहार किया, छव मासी चौविहार किया, पंचमासी चौविहार किया, चौमासी चौविहार किया, तीमासी चौविहार किया, दो मासी, डेढ मासी चौविहार किया, बहोत्तर पख चौविहार किया, २२६ बेला चौविहार किया,

२ दिन सुदि पड़िमा वह्या २ दिन वदि पड़िमा वह्या इसी तपस्या करीने कर्म खपाइने दोय दिनांरो संथारो करीने आधी रात मोक्ष पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ २ ॥

धन श्री गणधर गौतम स्वामी तीन आखरा उपर, ईगन देवा विगन देवा गुण देवा गुणतप कीधा पहिले पहोर ध्यान करे दूजे पहोर सभाय करे तीजे पहोर गौचरी करे चौथे पहोर पांचसो साधांने बांचणी देइने गुण रयण छमछरी तप करीने मोक्ष पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ ३ ॥

धन श्री धन्नोजी अणगार समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणीने दिक्षा लेइने गौचरीमें अरस निरस विरस कागा कुत्ता नहीं वंछे इसो अहार लेइने बेले बेले पारणो करीने सर्वार्थ सिद्ध विमानमें पहुंता, वांने म्हारी वंदणा नमस्कार हुइजो ॥ ४ ॥

धन श्री एवंता अणगार भगवान समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणीने दिक्षा लेइने साधांरे परिवार सुं थंडिले गया पाणी रो नालो देख्यो माटी री पाल बांधी पातरी तिराई आओ देखो साधां मारी न्याव तिरे छे साधां मन में जाणयौ भगवान महावीर स्वामी मुंडीने क्या किधो पृथ्वी पाणी आदि छक्काय जीवांने ओलखेइ नहीं साधू टली अलगा नीकल गया श्रीएवंतोजी मारकबडी साधांने पुण भगवानरे समोसरण में आया भगवान फुरमाई प्रकृति इयरी भद्रिक छे हलुकर्मी जीव छे इण भवसें ही मोक्ष जासी, वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो ॥ ५ ॥

धन श्री अर्जुनमालीजी भगवान समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणी ने दिक्षा लेइने राजग्रीह नगरीमें सुद्ध परिणामें गोचरी उठ्या कोई भाठा मारे, कोई सोटा मारे, केई कूत्ता

लगावे, केई धूड़ फेंके. केई कहे म्हारो बाप मार्यो, केई कहे म्हारी मा मारी, केई कहे म्हारी बेन (भगनी) मारी, केइ कहे म्हारो भाई मार्यो, केइ कहे म्हारी भार्या मारी, केइ कहे म्हारो धणी मार्यो, केइ कहे म्हारो बेटो मार्यो अर्जुन मालीजी मनमें चिंतावना करी, हे जीव तें घणा जीवांरी जीव काया न्यारी न्यारी करी दीसे छे तने तो थोड़ा ही संतावे छे इसी क्षमा करीने बेले बेले पारणे छव महिना तांई फिर्या, राजग्रीह नगरीमें अहार पाणी कीण ही वेरायो नहीं छव महीना में हीं कर्म खपावी पनरे दिनांरो संथारो करीने मोक्ष पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार हुइजो ॥ ६ ॥

धन श्री मेघकुमारजी भगवान समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणीने दिक्षा लीनी, चउदे हजार मुनिराजांरे परिवार सुं रात ने सूता रातरा मुनिराज केइ तो मातरो परठण ने उठ्या

केइ खंखारो थुंकणने उठ्या, कइ नाकरो मेल परिठावण ने उठ्या, ज्युं मेघकुमारजीरे ठोकरां री लागी, मेघकुमारजी मन में रातरा चिंतावना करी सदाइ तो हुं भगवानरे समीपे आवतो जब भगवान मेघजी मेघजी कहकर बतलावता आज कीणहीं मने मेघलो कहकर बतलायो नहीं मैं कांइ भगवान रो खायो नहीं, पीयो नहीं, लीयो नहीं, दीयो नहीं, ओघो पातरा मुंहपत्ति देइने परभाते म्हारे घरे जासुं, मेघ-कुमारजी भगवान रे समोसरणमें आया जब भगवान मेघकुमारजी ने वतलावो आवो मेघ आओ मेघ रात तो तुम्हे दुःखे दुःखे काढी एक रात्रि छव महिना जीसी काढी, भगवान मेघक-वररे पुर्वले भवरो वृतान्त वतायो, के तैं हाथीरे भवमें ससियेरी दया पाली, श्रेणिक राजारे घरिपर बेटो थयो, हे मेघकुमार तिर्यंचरे भवमें इतनो वेदना सही तीण आगै इया

वेदना तो कीतिक है, मेघकुमारजी मनमें चिंतवना करीके आज पीछे दोय नेत्र की सार करसुं और शरीरकी सुश्रषा नहीं करुं इसी क्षमा करीने विजय विमाने गया, वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो ॥ ७ ॥

धन श्री सुबाहु स्वामी सात भवतो तिर्यञ्चरा किया, सात भव मनुष्य रा किया, सात भव नारकी रा किया सात भव देवतारा करीने सुखे सुखे भोगवीने मुक्ति पधारसे वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो ॥ ८ ॥

धन श्री खंधकजी, जीणांने काया असासती जाणी, सासती जाणीं नहीं, दुकर दुक्कर परिसह सहिने अच्यूत (बारमां) देवलोक पहुंता, त्यांने मनुष्य होकर मुक्ति जासी, वांने म्हारी वंदना नमस्कार होइजो ॥ ६ ॥

धन श्री गजसुकमालजी भगवान समीपे ग्रहने दीक्षा लेइने मसाण भूमिका जाइ उभा

काउसग्ग कियो सोमल ब्राह्मण (सुसरे) गज-सुकमालजीने देख पुर्वलो द्वेष जाग्यो, म्हारी बेटीने दुःख थासी सो हु इयरो बैर काढसु, भीनी माटी लेइने पाल बांधी शिर अंगार धर्या, मुनि माथो धूण्यो नहीं नाके सल घाल्यो नहीं, सगपण दाख्यो नहीं, इसी समता करीने केवलज्ञान उपजाइने मुक्ति पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो ।१०।

धन श्री खंधक कुमारजी दीक्षा लेइने विचर्या बेनोइरी नगरीमें गोचरी उठ्या, बेनोइ, खंधकमुनीने देख काचर रे भवरो द्वेष जाग्यो, एडीसु लगाइने चोटी तांई खाल उतारी, मुनि सगपणदाख्यो नहीं, माथो धूण्यो नहीं, नाके सल घाल्यो नहीं, इसा दुक्कर दुक्कर परिसा सहिने केवल ज्ञान उपजाइने मुक्ति पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो ॥ ११ ॥

धन श्रीकृष्ण महाराजरी आठ वर्ष

महिष्या, ओपमावइ १, गौरी २, गंधारी ३, लक्ष्मणा ४, सूसमा ५, जंबुवती ६, सतभोमा ७, रुक्मणी ८, आठों राण्यां आइने भगवान समीपे हाथ जोड़ मानमोड़ पूज्य भगवानने नमस्कार करीने चंदनबाला पासे दीक्षा लेइने संजम पालीने मुक्ति पहुंता वांने म्हारी वंदना नमस्कार होइजो ॥१२॥

धन श्री श्रेणिक महाराजरी दस अग्र महिष्या—कालि १, सुकालि २, महाकालि ३, किंन्हा ४, सुकिंन्हा ५, महाकिन्हा ६, वीर किन्हा ७, रामकिन्हा ८, पीउसेण किन्हा ६, महासेण किन्हा १० दसों राण्यां हाथजोड़ मानमोड़ पूज्य भगवान समीपे आइने भगवान ने पूछयो कि अहो भगवान काली आदि कुमारों कोणक और चेड़ाराजारी लड़ाईमां गया छे, जीत्या के हारया, भगवान पीछी फुरमाइ (छट्टी झूमठी चंपलेरी डाल परे कमलाइने हेठे पड़ीया)

दसुंइ कवरांने चेडेराजाजीव काया रहीत कीया दसुंइ राणयां सुणीने कह्यो अहो भगवान म्हाने संसाररे अलिते पलितेसुं काढो, भगवान दसों राणयांने संजम देइने चंदनबालाने सुंपी, चंदन बालानी आज्ञा लेइने काली आर्या रत्नावनी तप कियो, दुजी सुकाली आर्या कनकावली तप अंगीकार कियो, तीजी महाकाली लघुसिंघ तप कियो, चौथी किन्हा आर्या महासेन सिंघ तप कियो,पांचमी सुकिन्हा आर्याने सातमीसे दसमी भिक्षुनी पड़िमा तप कियो, छट्टी महा किन्हा आर्या ने लघु सर्वतोभद्र तप कियो, सातमी वीर किन्हा बृद्ध सर्वतोभद्र तप करीने विचरी, आठमी राम किन्हा महोत्तर तप करीने विचरी नवमी पीयुसेण कन्हा मुक्तावली तप करीने विचरी, दसमी महासेण कन्हा आंबिल बृद्ध माण तप करीने विचरी, इसी इसी तपस्या करीने मुक्ति पहुंता,वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो॥१३॥

१३ तेरमो बोल जाणपणेका—धर्मका जाणपणा होय तो जीवदया पाले १, ज्ञानका बल होय तो थोड़ा बोले २, बुद्धिवन्त होय तो सभा जीते ३, साधुकी संगत होय तो संतोष ऊपजें ४, वैराग्य होय तो पांच इन्द्रि दमें ५, सूत्र सिद्धांत सुणता रहे तो धर्म विषे प्रणाम चढता रहे ६, प्राणी जीवकी रक्षा करे तो निर्भयपणो पामें ७, मोह मछरपणो छोड़े तो देवताको पूजनीक हुवें ८, न्याय-मार्गमें चाले तो शोभा पावें ९, सर्व जीवकुं खमत खामणा करे तो साता पावें १०, गुरुरी सेवा भगती करे, विन्य करे तो ज्ञान पामें ११, विद्वानरो संगत करे, विनो करे तो बुद्धि बधें १२, भगवानकी आज्ञासहित क्रिया करे तो मोक्ष पामें १३ ।

॥ चौदहमो बोल ॥

१४ श्रीनन्दजी सूत्रमें १४ प्रकारके श्रोता कहा हैं १, चालणी जैसे—जैसे चालणी सार सार पदार्थ अनाजको छोड़ असार तुस कंकर वगैरहको धारण करती है तैसे ही कितने ही श्रोता सद्बोधका सार गुण ग्रहणता छोड़ अवगुण ही धारण करते है २, मंजार जैसे—जैसे बिल्ली पहले दूधको जमीन पर ढोल देती है और फिर चाट चाट कर पीती है तैसेही कितने ही श्रोता प्रथम वक्ताका मन दुखायके फिर उपदेश श्रवण करते हैं ३, बुगलै जैसे—जैसा बुगला ऊपरसे तो स्वेत अच्छा दिखता है और अन्दरमें दगा रखता है तैसे ही कितने ही श्रोता ऊपरसे तो बुगला भक्ति करते हैं परन्तु अन्तकरणमें मलीन होते हैं जिनसे ज्ञान ग्रहण किया

उनके साथही दगा करते हैं ४. पाषाण जैसे—जैसे पाषाण पर वृष्टी होनेसे ऊपरसे तो तरोतर भीज जाता है परन्तु अन्दर पाणी भेदता नहीं है तैसे कितनेक श्रोता सद्बोध सुणाते तो बड़ाही बैराग्य भाव दरसाते हैं और अकुश करते बिलकुल ही डर नहीं लाते हैं ५, सर्प जैसे—जैसे सर्पकु पिलाया दूध जेहर होजाता है तैसे कितनेक श्रोता जिनके पास ज्ञान ग्रहण किया उनकी तथा उनके धर्मकी निन्दा उथापना करने लग जाते हैं जैसे भैंसा जैसे—पाणीमें पड़कर हंग मूत पाणीको गुदला देते हैं फिर आप पीता है तैसेही कितनेक श्रोता सभामें अनेक वीकथा कदाग्रह क्लेशकर गड़बड़ मचा देते हैं फिर सुणाता है ७, फूटेघट जैसे ज्यों फूटे घड़ेमें पांणी ठहरता नहीं है त्यों कितनेक श्रोता उपदेश सुन कर वहांही भूल

जाते हैं बिलकुल याद रखते नहीं हैं ८, डांस जैसे—जैसे डांस डंश कर रक्त ग्रहण करता है तैसे कितनेक श्रोता ज्ञानीको कौचवाकर ज्ञान ग्रहण करते हैं ९, जलोक जैसे जोक निरोगी रक्तको छोड़ बिगड़े हुवे रक्त ग्रहण करती है त्यों कितनेक श्रोता सद्बोधको वो सद्बोधकके सद्गुणोका त्याग न कर दुर्गुणो को ग्रहण करे यह नव प्रकारके अधम पाप-चारी (खराब) श्रोता कहे जाते हैं १०, पृथ्वी जैसे, ज्यों पृथ्वीको ज्यादा खोदें त्यों त्यों ज्यादा कोमलता आवे और बीजकी ज्यादा उत्पत्ती हुवे त्यों कितनेक श्रोता बहुत परिश्रम देकर ज्ञान ग्रहण करे परन्तु फिर गुणवंत हो ज्ञानादि गुणोंका परिश्रम भी अच्छा करे ११, अंतर जैसे, ज्यों ज्यों अंतर मसले त्यों त्यों ज्यादा सुगंध देवे तैसे कितनेक श्रोता बहुत प्रेरणासे बहुत होसियार होवे

और जहां जावे वहां धर्मरूप सुगंध फैलावे यह दोय मध्य श्रोता १२, बकरी जैसा—जैसे बकरी नितरा नितरा अधर अधर पाणी पी लेवे परन्तु पाणीको गुदोले नहीं तैसे कितनेक श्रोता वक्ता को बिलकुल ही तकलीफ न देते और उनके अल्पज्ञाता रूप दुर्गुणके सन्मुख ही देखते गुण ही गुणको ग्रहण करके तृप्त होवे । १३ गौ जैसे—जैसे गाय निसार माल खाकर भी दूध जैसा उत्तम पदार्थ देवै तैसे कितनेक श्रोता थोड़ा भी ज्ञान ग्रहण कर ज्ञानदाताको आहार वस्त्र पात्र शास्त्र औषध इत्यादि इच्छत दान दे सत्कार सन्मान कर बहुत शाता उपजावे १४ हंस जैसे—जैसे हंस पवित्र मुक्ताफल (मोती) को चुगलेते हैं तैसेही श्रोता शास्त्रके बचनोंका ग्रहण कर सबको सुखदाता हुवे यह उत्तम श्रोता होता है ।

१४ जीवरा १४ भेद कहां कहां पावे ?—जीवरो भेद नारकी देवतारे प्रयाप्त में पावे १, जीवरा भेद सन्नीपंचेन्द्रिमें पावे २, जीवरा भेद समुच्चय नारकीमें देवतामें पावे ३, जीवरा भेद एकेन्द्रिमें पावे ४, जीवरा भेद भाषकमें पावे ५, जीवरा भेद समदृष्टिमें पावे ६, जीवरा भेद यांप्तामें पावे ७, जीवरा भेद अणाहारिकमें पावे ८, जीवरा भेद उदारीकरे मिश्रमें पावे ६, जीवरा भेदत्रसमें पावे १०, जीवरा भेद श्रुतइन्द्रिरे अलब्धीयेमें पावे ११, जीवरा भेद बादरमें पावे १२, जीवरा भेद सासता पावे १३, जीवरा भेद समुच्चय जीवमें पावे १४ ।

१४ गुणठाणा चौदह कठै कठै लाधे, १ गुणठाणो मिथ्यात्वीमें, २ गुणठा० विकलेन्द्रिमें ३ गुणठा० विनयवादीके समोसरणमें, ४ गुणठा० नारकीमें देवतामें, ५ गुणठा०

तिर्यंचमें, ६ गुणठा० तीन माठी लेश्यमें, ७ गुणठा० तेजुपद्मलेश्यमें, ८ गुणठा० छव हास्यादिकमें, ९ गुणठा० संज्जलरीत्रीकमें, १० गुणठा० संज्जलरेलोभमें, ११ गुणठा० मोहनीमें, १२ गुणठा० छदमस्थमें, १३ गुणठा० सयोगीमें, १४ गुणठा० समुच्चय जीवनें।

१४ पहिलो गुणठाणो वर्जीने, १३ गुणठाणा नियमाभव्यीमें, २ गुणठाणा वर्जीनें, १२ गुणठाणा नियमा छव पर्यायमें, मनयोगीमें, ३ गुणठाणा वर्जीने, ११ गुणठाणा च्रायक समकितमें, ४ गुणठाणा वर्जीनें, १० गुणठाणा वृतीमें, ५ गुणठाणा वर्जीनें, ६ गुणठाणा संजतीमें ६ गुणठाणा वर्जीनें, ८ गुणठाणा अप्रमादीमें, ७ गुणठाणा वर्जीनें, ७ गुणठाणा शुक्ल ध्यानमें, ८ गुणठाणा वर्जीनें छव गुणठा० हास्यादिकरे अलद्धीयेमें,

६ गुण ठाणा वर्जीनें, ५ गुणठाणा अवेदी में, १० दस गुणठाणा वर्जीनें, ४ गुणठाणा अकषाइमें, ११ गुणठाणा वर्जीनें, ३ गुण-ठाणा खिण वीतरागीमें, १२ गुणठाणा वर्जीनें, २ गुणठाणा केवलीमें १३ गुण-ठाणा वर्जीनें, १ गुणठाणो अजोगीमें ।

१४ प्रस्ताविक १४ बोल—धर्मरो परिवार कांई सम्यक्त १, धर्मरो बाप कांई जाण पणो २, धर्मरी माता कांई दया ३, धर्मरो भाई कांई सत ४, धर्मरी बेन कांई सुमती ५, धर्मरी स्त्री कांई क्षमा ६, धर्मरो बेटो कांइ संतोष ७, धर्मरी बेटी कांई सुबुद्धि ८, धर्मरी पोसाग कांई शील ९, धर्मरो गन्तो (गलनो) कांई तपस्या १०, धर्मरो खजानो कांई सूत्र ११, धर्मरो प्रकाशक कुण साधुजी १२, अमर कुण तीर्थंकरदेव १३, धर्मरो वासो कठे मोक्षमें १४ ।

१४ साता वेदनी बंधणेके १४ कारण—दया १, दान २, क्षमा ३, सत्यव्रत ४, शील ५, इन्द्रिय दमन ६, संयम ७, ज्ञान ८, भक्ति ९, बंदना १०, शास्त्र विचार ११, सद्बोध १२, अनुकंपा १३, सत्य बचन १४।

१४ विद्याचवदे लोकोत्तर—गणितानुयोग १, करणानुयोग २, चरणानुयोग ३, द्रव्यानुयोग ४, शिक्षाकल्प ५, व्याकरण ६, छंदविद्या ७, अलंकार ८, ज्योतिष ९, निर्युक्ती १०, इतिहास ११, शास्त्र १२, मिमांस १३, न्यांय १४।

१४ लौकिक चवदह विद्या—ब्रह्म १, चातुरी २, बल ३, वाहन ४, देशना ५, वाहु ६, जलतरण ७, रसायन ८, गायन ९, वाद्य १०, व्याकरण ११, वेद १२, ज्योतिष १३, वैद्यक १४।

१४ अवनीतके १४ बोल—वार वार क्रोध करे ते अवनीत १, प्रतिबंधका क्रोध करे ते अव-

नीत २, मित्रकी मित्राई छाड़े तो अवनीत ३, सूत्र भणी मद करे तो अवनीत ४, आपके ओगुण पारके माथे देवे तो अवनीत ५, मित्र उपरी कोप करे तो अवनीत ६, मित्रकी पूठ पाछे निन्दा करे तो अवनीत ७, असमंदकारी भाषा बोले तो अवनीत ८, द्रोही होय तो अवनीत ६, अहंकारी होय तो अवनीत १०, संविभागी किसीकुं नहीं हुवे तो अवनीत ११, अप्रितीकारीयो होय तो अवनीत १२, लोभी होयतो अवनीत १३, इन्द्रियों मोकली मेले-विषय लालची ते अवनीत १४ ।

१४ सातावेदनी १४ बोल करी बांधे—दयावन्त होय तो साता वेदनी बांधे १, हर्षसुं दान देवे तो साता वेदनी बांधे २, कषाय घटावे—क्षमा करे तो सातावेदनी बाधे ३, व्रत-पंचखाण शुद्ध पाले तो सातावेदनी बांधे ४,

आरंभ परिग्रह घटावे—पांच इन्द्रि वश करे तो सातावेदनी बांधे ५, छकायरी रक्षा करे तो सातावेदनी बांधे ६, शुद्ध मन शील पाले तो सातावेदनी बांधे ७, ज्ञानवन्त होय—ज्ञानरो उधम करे तो सातावेदनी बांधे ८, साधुको वंदणा नमस्कार करे तो सातावेदनी बांधे ६, सूत्र सिद्धांत भणे तो सातावेदनी बांधे १०, तिर्थंकरजीने वंदना नमस्कार करे तो सातावेदनी बांधे ११, अनुकंपा करे तो सातावेदनी बांधे १२, धर्मोपदेश देवे तो सातावेदनी बांधे १३, सत्यवचन बोले तो सातावेदनी बांधे १४ ।

१४ वक्तना चौदह गुण लिखते हैं—प्रश्नव्याकरणोक्त शोल बोलनो जाण पंडित होय १, शास्त्रथी विचार जाणे २, वाणीमांही मिठाश होय ३, प्रस्तावअवसर ओलखे ४, सत्य बोले ५, सांभलने वालाका संशय दूर करे

६, अनेक शास्त्रवेत्ता गीतार्थ उपयोगी होय ७, अर्थने विस्तारी तथा संवरी जाणे ८, व्याकरणरहित छता कंठनी भाषामें पिण अपशब्द न बोले ९, वचनसे सभाजनने हर्ष करे १०, प्रश्नार्थ ग्राहक ११, अभिमान रहित १२, धर्मवन्त १३, संतोषवन्त १४, ए चौदह बोलका जाणकार होय सो वक्ता जाणना ।

१४ श्रोताका १४ गुण—भक्तिवन्त १, मिठाबोला २, गर्व रहित ३, सांभलवा उपर रुचि ४, चंचलतारहित एकाग्रचित्त सुणे और धारे ५, जैसा सुणे वेसा प्रगट अक्षर कहे ६, प्रश्नका जाण ७, घणा शास्त्र सुणया तिणके रहस्य जाणे ८, धर्मके कार्य आलस्य न करे ९, धर्म सुणता निन्द्रा न लेवे १०, बुद्धिवन्त होय ११, दातार रूप गुण होय १२, जिसके पास धर्म सुणे उसका पिछाड़ी गुण वर्णवे

१३, कोइनी निन्दा न करे किसीके साथ वाद विवाद न करे १४ ।

॥ पन्द्रहमों बोल ॥

१५ सिद्ध भगवान १५ भेदे होवे, १ तीर्थंकर की पदवी भोगकर सिद्ध हुवे, २ अतिर्थंकर सिद्धा सामान्य केवली सिद्ध हुवे, ३ तीर्थ सिद्धा तीर्थ साधु साधवी श्रावकश्राविकामेंसे सिद्ध होवे, ४ अतीर्थ सिद्धा तीर्थका विछेद होवे उस वक्त जाति स्मरणादि ज्ञानसे बोध पाकर सिद्ध होवे, ५ स्वयंबुद्ध सिद्धा गुरु विना जाति स्मरणादि ज्ञानसे पूर्व भवका स्वरूप जाणके दिक्षा लेके सिद्ध होवे, ६ प्रत्येकबुद्ध सिद्धा वृषभ वृक्ष स्मशान वा दल वियोग रोग इत्यादि देखके अनित्यादि

भावसे स्वयमेव दिक्षा ले सिद्ध होवे, ७ बुद्ध बोधित सिद्धा आचार्यादिकके प्रतिबोधसे दिक्षा ले सिद्ध हुवे, ८ स्त्रीलिंग सिद्धा स्त्रीवेद वीकारका क्षय करे फक्त अवयवरुप स्त्रीलिंग रहै वो दिक्षा ले सिद्ध होवें, ९ पुरुषलिंग सिद्धा ऐसे ही पुरुष विषय वांछा त्याग दिक्षा ले सिद्ध होवे, १० नपुंसकलिंग सिद्धा ऐसे ही नपुंसक वेद क्षय हुवे फक्त लिंगरूप रहै सो दिक्षा ले सिद्ध होवे, ११ स्वलिंग सिद्धा जो रजोहरण मुहपति आदिक साधूका लिंग धार तुरंत प्रणामकी विशुद्धता होनेसे सिद्ध होवे, १२ अन्यलिंग सिद्धा अन्यमतमें किसीकुं अज्ञान तपसे विभंग ज्ञान उत्पन्न होवे उससे जैन साधुकी क्रिया देख अनु-रागजगे जैनशैली आवे तव विभंग ज्ञान फिटी अवधि ज्ञान होवे ज्यों ज्यों प्रणामकी विशुद्धि होती जाय त्यों त्यों ज्ञानकी वृद्धि

होते होते परम अवधि ज्ञान पाय तुरंत घन-घाति कर्मखपाय केवली होय मोक्ष पधारै जो आयुष्य जास्ती होता तो लिंग भेष बदलते यह अन्य लिंग सिद्धा, १३ गृहलिंग सिद्धा गृहस्थी धर्म क्रिया करते प्रणामको विशुद्धता हुवे तुरंत केवल ले मोक्ष पधारें आयुष्य थोड़ेके कारण भेषलिंग नहीं बदल सके सो गृहलिंग सिद्धा, १४ एक सिद्धा एक समय में एक ही सिद्ध होवें सो एक सिद्ध, १५ अनेक सिद्ध एक समयमें दो से लगाकर एक सो आठतक सिद्ध होवे सो अनेक सिद्धः ।

१५ वीनयवानके १५ लक्षण, १ गतिस्थानक भाषा और भाव इन चारों चपला रहित अर्थात स्थिरस्वभावी, २ सरल, ३ अकुतु-हली (अकतोली), ४ किसीका अपमान व तिरस्कार नहीं करे, ५ विशेष काल क्रोध न

रखे, ६ मित्रोंसे हिल मिल चले, ७ ज्ञानका अभिमान न करे, ८ अपनेसे हुआ अपराध स्वीकार करे परन्तु दूसरेपर नहीं डाले ९, स्वधर्मीयोंपर कोप नहीं करे, १० अप्रिय-कारीकेभी गुणानुवाद बोले ,११ रहस्य बात प्रगट नहीं करे, १२ विशेष आडम्बर नहीं करे, १३ तत्वज्ञ, १४ जातिवंत, १५ लज्जावंत जितेंद्री।

१५ आसाता वेदनी बंधणके १५ कारण, १ जीव घात करे, २ छेदन करे, ३ भेदन करे, ४ परिताप करें, ५ चुगली करे, ६ परायेकुं दुःख देवे, ७ त्रास देवे, ८ आक्रंद करावे, ९ स्वतः दुःख शोक करे, १० द्रोह करे, ११ असत्य बोलै, १२ बिरोध करे, १३ क्रोध मान उपजावै, १४ युद्ध झगड़े करावै १५, पर निंदा करे।

१५ योग १५ कहां कहां पावे, १ योग वाटें वहता जीवमें, २ योग तीन विकलेन्द्रि पर्यासामें,

३ योग चार थावरमें, ४ योग बादर वायुकायरे पर्याप्तामें, ५ योग एकेन्द्रिमें, ६ योग असन्नीमें, ७ योग तेरमें गुणगणामें, ८ आठ योग मूंन (मोन) वाली आर्यामें अथवा पंचेन्द्रिरे अलब्धीये आहारीकमें, ९ योग परिहार विशुध सुक्ष्म संपराय चारित्रमें, १० योग मिश्रदृष्टिमें—वेक्रिय, आहारीक शरीरमें, ११ (इग्यारह) योग नारकी देवता यथाख्यात चारित्रमें, १२ योग श्रावकमें, १३ योग स्त्री वेदमें, १४ योग सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रमें, १५ योग समुच्चय जीवमें पावे।

१५ सुविनीतका १५ बोल—नीचाप्रवर्त्ते १, चपलपणा रहित २, मायारहित ३, कतुहलपणारहित ४, कर्कश वचनरहित ५, दीर्घ रोष (रीस) न करे ६, मित्रसु मित्राइपणो सेवे ७, सूत्र भणी मद न करे ८, आचार्यादिकरी निन्दा न करे ९, मित्रके उपर कोप

न करे १०, मित्रके पूठ पाछे गुण बोले ११, कलह ममतरहित १२, ज्ञानतत्व जाणे १३, अभिजात विनेवंत १४, लज्यावंत गुप्तइन्द्रि।

१५ बोल १५ समुद्रनी उपमारा संसार वर्णव— पूज्य भगवान समुद्रमें पाणी छे, संसाररूपीये समुद्रमें कीसो पाणी छे? उतर—जन्म जरा मरणरूपीयो तथा मोहरूपीयो पाणी छे १, पूज्य भगवान समुद्रमें कादो छे, संसार-रूपीये समुद्रमें कीसो कादो छे? उतर—कामभोग रूपीयो, राग द्वेष रूपीयो कादो छे २, पूज्य भगवान समुद्रमें तो फेन उठे छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसा फेण उठे छे? उतर—अहंकाररूपी फेण उठे छे ३, पूज्य भगवान समुद्रमें तो दरड़ा छे; संसाररूपी समुद्रमें कीसा दरड़ा छे? उतर--असणारूपी दरड़ा छे ४, पूज्य भगवान समुद्रमें तो कलस उबके छे, संसररूपी समुद्रमें कीसा कलस

उबके छे ? उतर—नारकी तीर्यंच मनुष्य देवतारूपी कलस उबके छे ५, पूज्य भगवान समुद्रमें मगरमच्छ छे, संसाररूपी समुद्रमें किसा मगरमच्छ छे ? उतर--सबला निबला ने मारे छे ७, पूज्य भगवान समुद्रमें तो डुंगर छे, संसाररूपो समुद्रमें कीसा डुंगर छे ? उतर—आठ करमरूपीया डुंगर छे ८, पूज्य भगवान समुद्रमें तो भवरीया पड़े छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसा भवरीया पड़े छे ? उतर—दगाबाजी कपटरूपी भवरीया पड़े छे ६, पूज्य भगवान समुद्रमें तो वायरो छे, संसार रूपी समद्रमें कीसो वायरो छे ? उतर—मिथ्यातरूपी वायरो छे १०, पूज्य भगवान समुद्रमें तो सींगोटीया छे, संसार-रूपी समुद्रमें कीसा सींगोटीया छे ? उतर—तीनसे तेसठ पाखंडरूपीया सींगो-टीया छे ११, पूज्य भगवान समुद्रमें तो

मोती नीकले छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसा मोती छे? उतर—साधु साधवी श्रावक श्राविकारूपीया रत्न पदार्थ मोती छे १२, पूज्य भगवान समुद्रमें कल्लोला छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसा कल्लोला छे? उतर---लोभ-रूपी तथा स्नेहरूपी कल्लोला छे १३ पूज्य भगवान समुद्रमें तो अग्नि छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसी अग्नि छे? उतर---क्रोधरूपी अग्नि छे १४, पूज्य भगवान समुद्रमें काठो छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसो काठो छे? उतर---मोक्षरूपीयो काठो (कीनारो, छेड़ो) छे १५।

॥ सोलहमो बोल ॥

१६ भाषारा बोल—एक वखत भाषाबोले तब अनंता पुद्गल खेरुकरे १. असंख्यात समा

मांहिला दोय समालागे २, लोकने फरसने अलोकरे छड़े तक ठहरे ३, तीन दीसना पुद्गल आहारी ४, तीन सरीरना पुद्गल साहारी ५, भाषा जीव ६, भाषा रुपी ७, भाषा अजीव ८, भाषा जीवरे केड़ें ६, भाषा थितिया पुद्गल लेके वहता पुद्गल लै अर्थात् थितिया लै १०, भाषा आत्म प्रदेशनै बोले, ११, भाषा बोलता असंख्याता समय लागे १२, विचारने बोलेतो ५ बोलसुं बोले १३, विना विचारी बोलेतो १६ बोलसुं बोले, १४ जीवसुं उपनी भाषा छै १५, शरीरसुं आद लोकने छेहड़े अंत १६ ।

१६ सोले शीलका गुण—शुद्ध शील पाले तो कलंक लागे नहीं १, शुद्ध शील पाले तो संसार समुद्र रहित हुवे २, शुद्ध शील पाले तो साचो धर्म पावे ३, शुद्ध शील पाले तो लौक में जस होय ४, शुद्ध शील पाले तो देवता

होय ५, शुद्ध शील पाले तो देवताका पूज-
नीक होय ६, शुद्ध शील पाले तो रूपवंत होय,
संपदा पावे ७, शुद्ध शील पाले तो सर्प फूलां
की माला होय ८, शुद्ध शील पाले तो अग्नि
शीतल होय ९, शुद्ध शील पाले तो विष
अमृत होय १०, शुद्ध शील पाले तो सिंह
मृग होय ११, शुद्ध शील पाले तो गज बकरी
होय १२, शुद्ध शील पाले तो आपदासुं संपदा
पावै १३, शुद्ध शील पाले तो टुणो टुमण
लागे नहीं १४, शुद्ध शील पाले तो समुद्र
मार्ग देवे १५, शुद्ध शील पाले तो मेरू पर्वत
टीबे सरीखो होवे १६,

॥ सतरहमो बोल ॥

१७ (सप्तदस) विहे मरणे पन्नते तंजाह आविय-
मरणे कहतां कल्लोलनीय परे मरण १, ओहि

मरणे अवधि मार्यादा पूर्ण करने मरे २, आतंतिक मरणे--नरकादिकना दुःख अत्यन्त भोगवीने मरे देवलोकना सुख अत्यंत भोगवीने मरे ३, वलाय मरणे--व्रतभांजीने मरे ४, वसट्ट मरणे---इन्द्रिने परवसथको मरणपामें ५, अंतोसल्ल मरणे---लज्जादिक आंणी अणआलोयां मरणपामें ६, तब्भव मरणे--जे भव मांहि हुवे तेहिज भवनो आऊषो बांधी मरे ७, पंडिय मरणे---सर्वविरती ज्ञानी-थको मरण पामें ८, बाल मरणे---अविर-तीनो अज्ञान मरण ९. बाल पंडिय मरणे—देश विरती श्रावकनुं मरण १०, छद्मस्थ मरणे—केवल ज्ञान पांम्या विना मरण ११, केवली मरणे—केवल ज्ञान पांमी मरे १२, विहायसि मरणे--आकासने विषैफांसी प्रमुखे (फांसीलगाकर) मरणपामें १३. गिद्ध. मरणे—मोटा कोई कलेवर मां प्रवेशकर पंखी

तथा सियाल प्रमुख मरे १४, भत्त पच्चक्काण मरणे---भात (आहार) रा पच्च खाण करी मरण पांमें १५, इंगिणी मरणे—अगनी प्रमुखे चली मरे पाउवगाम मरणे—पादोप-गमन संथारो हाथ पग हलावै नहीं १७, एवं सप्तदश प्रकारा।

१७ सम्यक्त रत्नको संभालकर रखनेके लिये हित शिक्षाके उपदेशक बोल—१ भूत भविष्यत वर्तमान कालके सर्व तिर्थंकरोका एक यह ही उपदेश है कि सर्व प्राण (वेंद्री तेंद्री चोरिन्द्रि) भूत (वनास्पति) जीव (पचेंद्री) सत्व (पृथ्वी पाणी अग्नि वायु) इनकी किंचित मात्र ही हिंसा नहीं होती हो किंचित ही दुःख नहीं उपजाता हो येही सत्य सनातन पवित्र धर्म रागी त्यागी योगी और भोगी को एकसा अंगीकार करने योग्य है, २ ऐसा धर्म ग्रहण कर प्रमादी (आलसी) नहीं

होना इसमें दि्ढ रहना, ३ मिथ्या-त्वीयोंके ठाठ पाट पाखंड देखकर मोहित नहीं होना, ४ दुनियामें मिथ्यात्वियोंकी देखादेखी नहीं करनी, ५ जो देखादेखी नहीं करता है उससे कुमती दूर रहती है, ६ उपर कहे धर्मपर जिनकी श्रद्धा नहीं है उस जैसा कुमति कोई नहीं है उपरोक्त धर्म प्रभूजीने देखकर सुणकर जाणकर और अनुभव करके फरमाया है ८ संसारमें मिथ्यात्वमें फंसे हुवे जीव अनंत संसार परिभ्रमण करे है, ९ तत्वदर्शी जीव सदा धर्ममें प्रमाद छोड़ कर सदा सावधान पणे विचरते हैं, १० जो कर्मबंधके हेतु हैं वो सम्यक्तिको कर्म तोड़ने के हेतू वक्तपर हो जाते हैं, ११ जो कर्म तोड़नेके हेतु हैं सो मिथ्यात्वियोंको कर्मवंध के हेतु हो जाते हैं, १२ जितने कर्मके हेतु है उतने ही कर्म खपानेके हेतु भी जानना,

१३ कर्मपिड़ित जगत जीवको देखकर कोण धर्मकरने सावधान न होयगा, १४ जिनेश्वरका धर्म विषयाशक्त प्रमादियों भी सुणकर तुरंत ग्रहण कर लेते हैं, १५ मृत्युके मुखमें रहे अज्ञानी आरंभमें (तल्लीन) होके भव भ्रमण बढाते हैं, १६ कितनेक जीव नर्कके दुःखके भी शोकीन होते है वारंवार जानेसे तृप्त नहीं होते है, १७ कूकर्मी अती दुःख पाते हैं और कुकर्म नहीं करे सो सुख पाते हैं।

॥ अठारहमो बोल ॥

॥ अथ चोरकी १८ प्रसुती लिख्यते ॥ १ चोर के साथ मिलके कहै डरो मत मैं तुमारे सामिल हूं काम पड़ेगा तब साज देउंगा, २ चोर मिले तब सुख समाधि पूछै, ३

चोरकुं अंगुली आदि संज्ञा करके कहे कि अमुक ठिकाने चोरी करने जाओ, ४ आप प्रतीतदार साहूकार बनके पहिले राजा सेठ के धनादिकके ठिकाना देख आवे और फिर चोरको बतावे कि अमुक ठिकाने धन है, ५ चोरी करने जावो और कोई पकड़नेवाला मिल जाय तो पहिले उसे छिपनेका ठिकाना बतावै, ६ किसीको चोरकी खबर लगी और वो पकड़ने आवे चोर नहीं मिलनेसे उस जाणापुरुषको पूछे कि चोर किधर गये पूर्व गया होवे,तो पश्चिममें बतावे पश्चिम गये हुवे तो पूर्व बतावे, ७ चोरी करके आये हुये चोरोंको अपनें घरमें मांचा खाट देवे पलंमादि आसन बेठने सोनेको देवे, ८ चोर चोरीकरते कहींसे पकड़ गये तथा शस्त्र गोली लगी जिससे अंग उपांगका भंग हुआ घाव लगा उसको घर पहुंचाने आप घोड़ा प्रमुख

वाहन देवे, ६ वाहनपर बैठकर जानेकी शक्ति न हुवे तो आप अपने घरमें गुप्त रखे, १० चोरका भारी भारी माल आप लेकर भरती करे, ११ चोरको ऊंचे आसन बैठावे, १२ चोर अपने घरमें है और उनको पकड़नेवाले आवे तब आप उनको छिपा करके बोले इहां नहीं है, १३ चोरको खान पान माल मकान आदिक भोजन देकर साता उपजावे जाते वक्त आगे खानेका भाता बंधावे, १४ जिस जिस ठिकाणे उनको जो जो वस्तुकी चाहना होवे सो उन को गुप्तपणे पहोंचावे, १५ चोर थकके आया होय उसको तैलादिक मर्दन करावे उष्णोदिक पाणीसे न्हवावे गुड़ प्रमुख खवावे अग्निसे तपावे घाव लगा होवे वहां मलहम पट्टी बांधे इत्यादि साता उपजावे, १६ रसोई निप जाने अग्नि पानी प्रमुख आप लाय देवे,

१७ घबराकर आये उसे हवा कर शांति करे
१८ चोर के लाये हुये धन धान पशु प्रमुखको
अपने घरमें बंदोवस्तके साथ रखे जो चाहिये
सो देवे यह १८ प्रकारसे चोरको साज
(मदत) देनेसे चोर ही कहना यह अठारे
काम करने वाला राज दरबारमें सजा पाता
है और भी चोरको कहै कि बैठे बैठे क्या
करते हो बहुत दिन हुवे चोरी करने क्यों
नहीं जाते हो जावो अब तो कुछ माल
लावो हम सब तुम्हारा माल खपाय देवेंगे
कुछ फिकर मत करो तथा अमुक ठिकाणे
कल गये थे कुछ हाथ लगा की नहीं
बताइये और भी कूदाली कुस प्रमुख
उनको चाहिये सो शस्त्रका साज देवें इत्यादि
सब काम करनेवालेको चोर ही कहना यह
काम श्रावकको करने उचित नहीं है इस लाल-
चसे विवेकवंत अवश्य बचेंगे ॥ इति ॥

॥ उनैसमो बोल ॥

१९ ज्ञाता सूत्र का अध्ययन—१ मेघकुमारको, २ धना सार्थवाह अने विजय चोर को, ३ मोरड़ीके इंडेको, ४ काछवा (कुर्म काछवा) को, ५ शैलक राज ऋषिको (थावच्चापुत्रको) ६ तुंवड़ीको, ७ रोहणीको (सार्थवाह अने च्यार वहुको) ८ मल्ली भगवती (मल्लीनाथ)को ९ जिनपाल जिनऋषिको, १० चन्द्रमाकी कलाको, ११ दावानलको, १२ जितशत्रु राजा अने सुबुद्धि प्रधानको, १३ नंद मणि-कारको, १४ तेतली पुत्र प्रधान अने पोटला सोनारके पुत्रको, १५ नंदी वन फलको, १६ द्रौपदी (आवर कंकानगरी) को, १७ काली द्वीप घोड़े (समुद्र अश्व) को, १८ सुसमा दारिकाको, १९ पुंडरीक कुंडरीकको।

१९ कावसग्गरा १९ दोष---गोडे उपर पग

राखे १, काया आघी पाछी डोलावे २, उ-ठंगण लेवे ३, माथो नमाय उभो रहे ४, दोनुं हाथ ऊंचा राखे ५, घुंघटो काढ़े ६, पगरे उपर पग राखे ७, वांको आडो रहे ८, साधुनी बरोबर रहे ६, गाडीनी ओघणनी परे रहे १०, खड़ो वांको रहे ११, रजोहरण ऊंचो राखे १२, एक आसण न रहे १३, आंख एक ठाम न राखे ०४, माथो हलावे १५, कुकुकार करे १६, डील चलावे १७, आलस मोड़े १८, सुन्य चित्त करे १६ ।

इये उगनीस दोष काउसग्गमें वर्ज्यां ।

॥ बीशमां बोल ॥

२० बीस असमाधिया दोष--दबदब करतो चाले तो १, विना पूंजे चाले तो २, पूंजै कहां पग धरे कहां तो ३, मर्यादासुं अधिका पाट पाटला

शज्या भोगवे तो ४, गुरुके, वडोंके सामो बोले तो ५, बहुश्रुतिजीकी घात चिंतवें तो ६, एकेंद्रियादि जीवने शाता, रस, विभूषा निमत हणे तो ७, वार वार क्रोध करे तो ८, पीठ पूठे गुणवन्तका अवगुणवाद बोले तो ६, निश्चेकारी भाषा बोले तो १०, नवो कलह करे तो ११, खमाया हुवे कलहकुं वार वार उधेड़े (फिर फिर उदीरे) तो १२, अकाले सिझाय करे तो १३, सचित्त रजसुं खरड्यो होय विना पूंजे ऊठै बैठै चले अने आहारादि लेणे जाय तो १४, पहर रात्री उपरांत गाढे शब्दे बोले तो १५, वारवार च्यार तीर्थमें कलह करे, गच्छ माहि भेद उत्पन्न करे तो १६, रे तुं बोले तो १७, छवकायके जीवांकुं असमाधि उपजावे तो १८, सवेरेका आहार लावे सामतांइ भोगवे तो १६, एषणा कुमती आहार भोगवे तो २०।

२० वीस बोले करी जीव तीर्थंकर गोत्र कर्म वांधे, अरिहंतजीरो जाप करे तो जीव कर्मरी कोड खपावे उत्कृष्टी भावना आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे १, सिद्धारा गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे २, सूत्र सिद्धांतरा गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ३, गुरुना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ४, थिवरना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ५, बहुश्रुतीना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ६, तपस्वीना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ७, ज्ञान उपर उपयोग देतो थको तीर्थंकर गोत्र बांधे ८, सम्यक्त पालतो थको तीर्थंकर गोत्र बांधे ९, विनय करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १० दोय वेला आवसग्ग करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे ११, व्रत पच्चक्काण चोखा पालतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र

बांधे १२, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १३, बारे भेदे तपस्या करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १४, सुपात्रने दान देवतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १५, वेयावच्च करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १६, सर्व जीवाने सुख उपजावतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १७, अपूर्वज्ञान पढ़तो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १८, सूत्रनी भक्ति करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १९, तीर्थंकरनो मार्ग दीपावतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

॥ एकईसमां बोल ॥

२१ इकवीस सबला दोष (सबल कर्म) हस्त कर्म करे तो सबलो दोष १, मैथुन सेवे तो २,

रात्री भोजन भोगवे तो ३, आधाकर्मी आहार भोगवे तो ४, राजपिंड आहार भोगवे तो ५, उद्देशी १, क्रीय २, पामीचे ३, अछिजे ४ अणिसट्टेय ५, अभ्भायरे ६, उद्गमनरा ए छव दोष आहार भोगवे तो ६, बारवार पच्च-क्खाण लेवे छोडे तो ७, छव महीनामांही नयो टोलो बदले तो ८, एक मासमें ३ नदीके पाणीरो लेप लगावे तो ९, एक मासमें ३ माया थानक सेवे तो १०, सिझातरनो आहार भोगवे तो ११, जाणपूछने प्राणातिपात सेवे तो १२, जाणपुछ मृषावाद बोले तो १३, जाण पुछ अदत्तादान लेवे तो १४, सचित्त उपरे ऊठै बैठै तो १५, सचित्त संनिग्ध माटी उपर ऊठै बैठै हले चले तो १६, इन्डा जाला सहित पाट पाटलाभोगवे तो १७, मूल १ कंद २ खंध ३ त्वचा ४ शाखा ५ पलव (प्रवालं) ६ फूल ७ फल ८ बीज ९

हरा पत्र १० ए दश प्रकारनी हरीकाय भोगवे तो १८, एक सालमें दस नदीरो लेप लगावे तो १९, एक वर्ष मध्ये दश माया थानक सेवे तो २०, सचित सेती हाथ पग खरड्या होय जिसके हाथसुं आहार पाणी वेहरावे साधु लेवे तो सबलो दोष लागे २१।

२१ श्रावकना इकवीस गुण—अक्षुद्र १, जस-वंत २, सोम प्रकृति ३, लोकप्रिय ४, आक-रो स्वभाव नहीं ५, पापसे डरे ६, श्रद्धावंत ७, लब्धलक्ष ८, लज्यावंत ९, दयावंत १०, मध्यस्थ ११, गंभीर १२, सोमदृष्टि १३, गुण रागी १४, धर्मकथी १५, साचो पक्ष करे १६, शुद्ध विचारी १७, वृद्धोंकी रीत चाले १८, विनयवंन १९, किया गुण माने २०, परहितकारी २१।

२१ श्रावकके इकवीस गुण—नवतत्वका स्वरूप जाणे १, धर्म करणीमें सहाय (सहायता) वंछे

नहीं २, धर्मथकी चलाया किसीका चले नहीं ३, जिनधर्ममें शंकादि आणे नहीं ४, जे सूत्ररो अर्थ ज्ञान धारे तिणरो निर्णय करे प्रमाद करे नहीं ५, श्रावकरा हाड और हाडरी मींजी धर्ममें रंगायमान रहवे ६, म्हारो आउखो अथिर छे, जिनधर्म सार छे इसी चिंतवणा करे ७, श्रावकजी फटिकरत्न जैसा निर्मला होय कूड कपट राखे नहीं ८, श्रावक घरका द्वार सवा पोहर दिन चढे तांई दान सारु उघाड़ा राखे ९, श्रावक एक मासमें छव पोसा करे १०, श्रावक राजाके अंतेउर भंडार, शाहुकारकी दुकानमें जावे तो अप्रतीत ऊपजे ऐसे कार्यकरे नहीं ११, लिया व्रत पच्चक्काण निर्मला पाले १२, चौदह प्रकारे दान सुझतो मुनिने देवे १३, धर्मको उपदेश देवे १४, तीन मनोरथ सदा चिंतवे १५, च्यार तीर्थंरा गुणग्राम करे अन्याय करे नहीं

१६, नया नया सूत्र सिद्धांत सुणे १७, कोइ नयो आदमी धर्म पायो हुवे जिणने साज देवे ज्ञान सिखावे १८, दो वख्त कालोकाल पडिक्कमणो करे १६, सर्व जीवांसुं हितपणो राखे वैरभाव राखे नहीं २०, छत्ती शक्ति तपस्या करे ज्ञान शिखणको उद्यम करे २१।

२१ बोल, श्रावकरा गुण २१---करुणावंत हुवे १, दयावन्त हुवे २, लज्यावन्त हुवे ३, शिलवन्त हुवे ४, विरतवन्त हुवे ५, आपरी आत्मारो कार्य सारे ६, पराई आत्मारो वांक नहीं काढ़े ७, आई वेदना सर्व सहनकरे ८, पुन्य पापरो निर्णय करे ६, मिथ्याति परीसह देवे तो समभावे वेदे १०, बहु सूत्ररो जाणहुवे ११, सर्व जीवांरो हितकारी हुवे १२, धर्ममें रातो रहै १३, पापसुं डरतो रहै १४, निर्लोभी हुवे १५, निरस्वादि हुवे १६, निगरभी हुवे १७, आठ कर्मरा जाण हुवे १८, छती सक्ती

पोसेमें निद्रा न लेवे १६, दृढधर्मी होवे २०, दूध पाणी जैसो न्याय करे २१ ।

२१ अथ इकवीस बोल टोटो पड़नेरा--१ भणने गुणनेरो आलसकरे तो ज्ञानरो टोटो पड़े, २ साधु साधवी होयने स्नान करे तो सम्यक्तरो टोटो पड़े, ३ दोयवार शुद्धषट् आवश्यक न करे तो व्रत पच्चखाणरो टोटो पड़े, ४ आहार पाणीरो लोलपी होवे तो तपस्यारो टोटो पड़े, ५ विना उपयोग, अजयणासुं चाले तो जीव दयारो टोटो पड़े, ६ धन योवन रुपरो मद-करे तो आछी आरोग्य (निरोग) देहरो टोटो पड़े, ७ बड़ानो विनय न करे तो जिन आज्ञानो टोटो पड़े, ८ क्रोध कलेश करे तथा मिटयो कलह उधेरे तो हेत मिला-परो टोटो पड़े, ९ पछलि रातरी धर्म जा-गरणा न करे तो धर्म ध्यानरो टोटो पड़े, १० माया कपटाई दगाबाजी करे तो जस

कीर्त्ति नो टोटो पड़े, ११ चिंता उच्चाट सोग, संकल्प विकल्प मन राखे तो अकल, बुद्धिको टोटो पड़े, १२ साधु साधवी ग्राम नगर विहार न करे तो धर्म कथारो टोटो पड़े, ज्ञान सीखे सिखावे नहीं तो जिन शासन तथा सिद्धांतको टोटो पड़े, १४ कठिन, कुलच्छभाव कठोर परणाम राखे तो शीतलता पणा, सरल पणाको टोटो पड़े, १५ स्त्रीरो लालची होय, स्त्री री अभीलाषा वांच्छा करे, राग रागणीं सुणे तो शील व्रत-ब्रह्मचर्यरो टोटो पड़े, १६ साधु साधवी श्रावक श्राविका च्यार तीर्थ मांहो मांही हेत मिलाप न राखे तो जैनमार्गरो टोटो पड़े, १७ व्रत पच्चक्खाणमें दोष लगावे, आलोवे नहीं, निंदै नहीं, प्रायच्छित्त लेवे नहीं, तपस्या करे नहीं, सलेषणा करे नहीं तो मोक्ष मार्गनो टोटो पड़े, १८ श्री अरिहंतजी रा तथा अरिहंत भाषा धर्मरा तथा

च्यार तीर्थरा अवर्णवाद बोले तो सत्य धर्म पामणेको टोटो पड़े, १६ तपस्या, आचार, भावनाका चोर होवे तथा सद्गुरुरो वचन नहीं माने तो ऊंची गतिरो टोटो पड़े, २० साधु साधवी गुरु, गुरुणी नी आज्ञा उलंघे तो अराधक पणा रो टोटो पड़े, २१ श्री भगवानरा वचन उपरांत तर्क उठायने कहे तो शुद्ध मार्गरो टोटो पड़े ।

२१ पोषेका दोष—१ पोषाके निमित्त (पोसेके पहले दिन) हजामत करावे, वस्त्र धुलावे, रंगावे और शरीरकी शुश्रता करे सो दोष ।

२ पोषाके अगले दिन विषय सेवे सो दोष.

३ अजीर्ण होवे इस प्रकार अधिक आहार उतर पारणेमें करे सो दोष,

४ विषय विकार बढ़े ऐसा मोदक पुष्ट, सरस आहार उतर पारणेमें करे सो दोष ।

५ पोषाके वस्त्र तथा उपकरण बराबर पुंजे पडि-

लेहे नहीं माठी रिते जोवे माठी रिते पुंजे सो दोष।

६ उच्चारादिक भूमिका पडिलेहण किये बिना परठवे थोड़ो जागा पुंजे घणी जागा परठे माठी रिते जोवे माठी रिते पुंजै माठी रिते परठे सो दोष।

७ पोषधव्रत अविधिसे लेवै तथा पाड़े सो दोष।

८ प्रमाणसे अधिक वस्त्र रखे सो दोष।

९ धर्मकी हेलना होवे ऐसे गंदे, अपवित्र या रंग रंगीला वस्त्र रखे तथा खोलकर रखणे जैसा (खुलसके वैसा) आभुषण (गैहणा) रखे सो दोष।

१० पुंजे पडिलेहे विना हालचाल करे सो दोष।

११ सो हाथसे ऊपरांत जानेके बाद ईरीयावही नहीं पडिक्कमे, परठण जाते वखत आवसही आवसही न कहै, आंवतो वखत निशेही निशेही न कहै, आज्ञा लीया बिन परठे,

ऊंचे से परठे, परठोने तीन वार बोसरे बोसरे नहीं कहे सो दोष ।

१२ संसारकी चरचा, संसारको नातो करे तथा प्रमाद सेवे तो दोष ।

१३ परठोने आयकर तथा निंद्रासे ऊठकर तथा पडिलेहणा कीये बाद चोविसस्तव (चोईस्थवो) न करे सो दोष ।

१४ शरीरका मैल उतारे या पुंजे विना खाज खुने निंद्रा लेवे तो दोष ।

१५ विकथा या पर निंदा करे सो दोष ।

१६ कलह या मस्करी करे तो दोष ।

१७ अव्रतीको आदर देवे और आसनका आमंत्रण करे तो दोष ।

१८ भाषा सुमति रखे विना बोले खुले मुंढ बोले सो दोष ।

१९ दो घड़ी व्यतीत होनेके पेश्तर स्त्रीके आसन पर (जिस जगह स्त्री बैठी हो उस जगहपर)

पुरुष और पुरुष के आसन पर स्त्री बैठे तो दोष,

२० पुरुष स्त्री को और स्त्री पुरुष को विषय दृष्टि से देखे तो दोष।

२१ अपनी मालकीयती (अपना रख्याहुया) पोषा के उपकरण के सिवाय अन्य चीजें अव्रतीकी आज्ञा लिये विना लेवे या अव्रती (खुले आदमी) के पास कोई भी चीज मंगवावे तो दोष।

श्रावकके २१ लक्षण---१ 'अल्प इच्छा'-थोड़ी इच्छा-विषय तृष्णा शब्द रुपादिकका विषय कमी करे,विषयमें अत्यंत ग्रधी न होवे सुख वृत्ति रहे।

२ 'अल्पारंभ' छव कायका अरंभ बढावे नहीं, अनर्था दंड सेवन करे नहीं, जितना आरंभ घटता हो उतना घटानेका उद्यम करे।

३ 'अल्पपरिग्रही' धनकी तृष्णा थोड़ी, कुकर्म कुव्यापारकी इच्छा नहीं, जितना प्राप्त हुवा

है, उतनेही पर संतोष रक्खे, मर्यादा संकोचे ।

४ 'सुशील' ब्रह्मचर्यवंत, तथा आचार गोचार प्रशंनिय रक्खे ।

५ 'सुवृत्ति' व्रत प्रत्याख्यान शुद्ध निरतीचार चढते प्रणामसे पाले ।

६ 'धर्मिष्ठ' नित्यनियम प्रमाणे धर्म क्रिया करे ।

७ 'धर्म वृत्ति' मन वचन कायाके योग सदा धर्म मार्गमें प्रवृतता रहे ।

८ 'कल्प उग्रविहारी' जो जो श्रावकके कल्प (आचार) है उसमें उग्र विहार करनेवाले अर्थात् उपसर्ग उत्पन्न हुये भी स्थिर प्रणाम रक्खे ।

९ 'महासंवेग विहारी' सदा निवृत्ति (निर्दोष) मार्गमें तल्लीन रहे ।

१० 'उदासी' संसारके कार्यमें सदा उदासीन व्रत्ति यूक्त रहे ।

११ 'वैराग्य वंत' सदा आरंभ परिग्रहसे निवर्तने

की अभीलाषा रक्खे ।

१२ एकांत आर्य' निष्कपटी-सरल- बाह्याभ्यंतर एक सरीखे रहे ।

१३ 'सम्यग मार्गी' सम्यक ज्ञान दर्शन चरीता चरीते में सदा प्रवृते ।

१४ 'सु साधु' धर्म मार्गमें नित्य वृद्धि करते आत्म साधन करे, प्रणामसे अवृत सर्वथा बंध करदी है; फक्त संसार व्यावहार साधने द्रव्यसे हिंशा करनी पड़ती है ❀ इसलिये भाव श्रावकका लच्चण साधु जैसे ही है।

१५ 'सुपात्र' ज्ञानादि वस्तुका विनाश न होवे तथा दान फली भूत होवे ।

❀ हिंशाकी चौभङ्गी—१ द्रवसे हिंशा और भावसे हिंशा, जो कपाइ आदिक जीवका वधकरे सो २ द्रव्यसे हिंशा और भावसे अहिंशा, जो हिंशाके त्यागी मुनीराजको आहार विहार आदिकमें बिन उपयोग हिंशा निपजे सो ३ भावसे हिंशा और द्रवसे दया-द्रव लिंगी तथा अभव्वी साधू करे, ४ और द्रवसे भावसे दोनोसे अहिंशा जोके अप्रमादि तथा केवल ज्ञानी मुनिराज पालते हैं ।

१६ 'उत्तम' सम्यत्वी आदिकसे गुणाधिक श्रेष्ट है ।

१७ 'क्रिया वादी' पुन्य पापके फलको मानने-वाले शुद्ध क्रिया करनेवाले ।

१८ 'आस्तिक्य' दृढ श्रद्धावंत जिनेश्वरके या साधुके बचनपर पूर्ण प्रतीतवंत आसतावंत ।

१६ 'आराधिक' जिन बचन अनुसार करणी करनेवाले, शुद्ध वृत्ति ।

२० 'जैन मार्ग प्रभावक' तन, मन, धन, करके धर्मकी उन्नती करे ।

२१ 'अर्हतके शिष्य' साधु जेष्ट शिष्य, और श्रावक लघू शिष्य, ऐसे अनेक उत्तमोत्तम गुणके धरण हार श्रावक होते हैं ।

ऐसे अनेक गुणके धारक श्रावकजी बारह ब्रत ग्रहण कर अव्रत को रोकते हैं ।

॥ बाईसमां बोल ॥
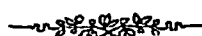
२२ परिसहः—(१) "क्षुधा परिसह" क्षुधा उत्पन्न होनेसे मुनीश्वर भिक्षावृत्तीसे अपना निर्वाह करे, परन्तु जो कभी आहारका जोग न वने और मरणांत कष्ट आपड़े तो भी अन्न, हरीलीलोती प्रमुख सजीव पदार्थ लेवे नहीं, और पकानादिक क्रिया करके किवां करायके ऐसा सदोष आहार भोगवनेकी इच्छा भी करे नहीं, (२) "पिवासा परिसह" प्यास लगे तो अचित जलकी याचना करे परन्तु जोग न मिलनेसे सचेत जलकी इच्छा भी करे नहीं, (३) "सीय परिसह" शीत निवर्तन करनेके लिये अग्निसे शरीर तपाने की, या मर्यादा उपरांत वस्त्र भोगवनेकी, या मर्यादा के अंदर भी सदोष-अकल्पनीय वस्त्र ग्रहण करनेकी इच्छा करे नहीं, (४)

"उसिन (उष्ण) परिसह"—उष्णता तापसे आकूल व्याकुल होने पर भी साधु स्नान करे नहीं, और पंखा आदिसे हवा लेवे नहीं, (५) "दंश मस परिसह"--वर्षा ऋतुमें डांस--मच्छर खटमल इत्यादि जीवोंकी पीड़ा होनेसे उनको समभावसे सहन करे (६) "अचेल परिसह"—वस्त्र फट जानेसे और जीर्ण होनेसे भी मुनीदीन--पणे वस्त्रकी याचना करे नहीं, तथा सदोष वस्त्र भोगवने की इच्छा करे नहीं, (७) "अरइ परिसह"-अन्न वस्त्रादिक का जोग नहीं बननेसे भी साधुको अरति (चिंता) उत्पन्न नहीं होनी चाहिये, नरक तिर्यंचादि गतिमें जो दुःख परवश्य पणे सहे हैं उनको याद करके परिसह समभावसे सहन करे, (८) "इत्थी (स्त्री) परिसह" कोई दुष्टा (स्त्री) साधुको विषयकी आमंत्रणा करे, किंवा हाव-भाव-

कटाक्षसे मन खैंचनेकी युक्ती करे, तो भी साधु अपने मनकी लगाम बराबर पकड़ रक्खे और इस तरह विचार करे कि :—

काव्य—समाइ पेहाए परिव्वयंतो,
सियामणो निरसइ बहिद्धा।
न सा महं नोवि अहंपितीसे,
इच्चेवताओ विणइज्ज रागं॥

अर्थात्-- श्री दशवैकालीक सूत्रमें ऐसा कहा है कि यदि स्त्री आदिकको देखनेसे साधुका मन संयमसे भ्रमीत हो जावे तो, ऐसा चिंतवन करना कि--ये स्त्री मेरी नहीं है, और मैं उनका नहीं हूं, ऐसा विचारके स्नेह राग निवारना, ऐसा करने पर भी जो मन शांत न होवे तो :—

आयावया ही चय सोगमल्लं,
कामे कमाही कमियं खू दुखं।
छिंदाहिं दोसं विणाइज्ज रागं,
एवं सुही होइसि संपराए॥५॥

अर्थात्-शरीरका सुखमालपणा छोड़कर सूर्यकी आतापना लेना, उणोदरी प्रमुख बारह प्रकारके तप करना, आहार कमी करता जाना, क्षुधा सहन करना, ऐसा करनेसे शब्दादिक काम भोग और उनसे उत्पन्न होनेवाले राग द्वेष दूर रहेगा और जिवको सुख मिलेगा, (६) "चरिया (विहार) परिसह"—प्रेमफासमें नहीं फसनेके लिये साधूको ग्रामानुग्राम बिचरना पड़ता है, नवकल्पी (८ महीनेके ८, और चौमासैका १, ऐसे ६ कल्पी) विहार करना पड़ता है, वृद्ध-थीवर-रोगी तपस्वी या उन्होंकी सेवा करनेवालेको तथा ज्ञाननिमित्त गुरुकी आज्ञासे एक ग्राम रहनेमें अटकै नहीं, (१०) "निसीया परिसह" चलते चलते साधूको रास्तेमें विश्रामके लिये एक ठिकाने बैठना पड़े और वहां समविषम भूमिका

मिले तो राग द्वेष नहीं करे; (११) "सिज्जा परिसह"—कहीं एक रात्री और कहीं चातुर्मासादिक अधिक काल रहना पड़े और वहां मनोज्ञ सेज्जा (शय्या)-स्थान (रहनेका मकान) नहीं मिले—टूटाफूटा इत्यादि, उपद्रवकारी मकानका संयोग बने तो मनमें किलामना नहीं पावे, (१२) "अक्रोस (रीस) परिसह" ग्रामादिकमें रहते साधुका भेष—क्रिया प्रमुख देखकर कोई ईर्षावंत या मताभिमानी मनुष्य कठोर वचन कहें-निंदा करे--अछता आल देवे--ठग पाखंडी बनावे तो भी साधू समभावसे सहे (१३) "वध परिसह"--कोई मनुष्य कोपात्र होकर ताड़न कर बैठे तो भी मुनी सम भावसे सहे, (१४) "याचना परिसह"—औषधादिक री जरूर पड़नेसे याचना करनी पड़े तो "मैं मोटे घरका होकर कैसे मांगू ?

ऐसा अभिमान न लावे, साधुका तो निर्वाह याचनापर है, (१५) " अलाभ परिसह " याचना करने पर भी इच्छित वस्तु न मिले तो खेद नहीं लाना, (१६) "रोग परिसह" शरीरमें कोई प्रकारका रोग उत्पन्न होनेसे " हाय, हाय ! आह, आह ! " ऐसा न करे, (१७) " तृण फास परिसह " रोगसे दुर्बल हुवा शरीरको पृथ्वीका कठण स्पर्श सहन न होवे तब कुछ गादी तकीए तो साधूके कामको आवेहीं नहीं शाल (चावल) इत्यादिकका नरम पराल (घास) का बिछाना उपर शयन करे जब उसका स्पर्श शरीरको कठिन (करड़ा) लगे तो गृहस्थावासको न सभाले, (१८) " जल मेल परिसह"—मेल और परसीनेसे घबराया हुवा साधु स्नानकी अभीलाषा न करे, (१९) "सत्कार परिसह"—साधुको सत्कार वंदना नमस्कार न करे तो

इससे साधुको बुरा न मानना चाहिये, (२०) "पन्ना परिसह"—साधुके पास ज्ञान ज्यादा होनेसे वहोत जणे सूत्रकी बांचना लेनेको आवे, कितनेक प्रश्न पूछनेके लिये आवे, तब कोचवाकर (कन्टाल कर) घबराकर ऐसा न चिंतवे कि मैं मूर्ख रहता तो ऐसी तकलीफ नहीं पड़ती, (२१) "अन्नाण परिसह" बहुत परिश्रम उठाने पर भी ज्ञान न मिले तो खेदित नहीं होना चाहिये, अकेले ज्ञानसे मोक्ष नहीं है, ज्ञान और क्रिया दोनोंकी जरुरत है, (२२) "दंशण परिसह"—ज्ञान थोड़ा होनेसे जिन वचनमें शंका आदि उत्पन्न हुवे तो समकितको दूषण (अनाचार) लगावे नहीं, परन्तु शास्त्र वचनपर पूर्ण श्रद्धा रक्खे ।

२२ परीसह (परीषह) विचार—गाथा पन्ना अन्नाण परीसह नाणावरणम्मिहूंति दोचेव

एक्कोअ अंतराए अलाभ परीसहोचेव, १ अरइ अचेल इत्थी निसहीया जायणाय उक्कोसा सक्कार परीसहे एए चरित्तमोहम्मिसत्तेव दंसण मोहे दंसण परीसहो नियम सो हवइ एक्को सेसा परीसाहा खलु एक्कारस वेयणिज्जम्मि, ३ वावीस परीसह चारकर्म थी उपजै, ज्ञानावरणी थी बे परीसह उपजै, तेहना नाम प्रज्ञा १ अज्ञान २ परीसह, वेदनी थी ११ परीसह ते केहा (किसा) क्षुधा १, तृषा २, शीत ३, उष्ण ४, डांस मसा ५, चर्या ६, शिज्जा ७, वध ८, रोग ६, तृण स्पर्श १०, मल ११, मोहनी थी ८ परीसह उपजै दर्शन मोहनी थी दर्शन परीसह चरित्र मोहनी थी सात उपजै ते केहा ? १ अरति २ अचेल ३ स्त्री ४ निषेध ५ याचना ६ आक्रोश ७ सत्कार अंतरायथी १ ऊपजै अलाभ एवं २२ परीसह छद्मस्थ एकै समें

२० परीसह वेदै शीत अथवा उष्ण चालवो अथवा वैसवो केवलीनें इग्यार परीसह होय तिणमें एकै समय ६ वेदै शीत अथवा उष्ण चालवो तथा वैसवो वीयराग संयमे एकै समय १२ परिसह वेदे द्वाविंश तिरपि परीषहा वादर संपराय नाम्नि गुणस्थानके कोऽर्थोऽनिवृत्ति वादर संपराये नवमं गुण-स्थानं यावत् सर्वेपि परीषहा भवंति चतुर्दश संख्या एव क्षुत्पिपासा शीतोष्ण दंशमसक चर्य्या शैय्या वधा लाभ रोग तृण स्पर्शमल प्रज्ञा अज्ञान परीसहाः सूक्ष्म संपराये उदय भासादयंतीति तथा आठकर्मनो बंधतेहनि २२ परिसह वीस एकै समय वंध छविहबंध सराग छद्मस्थनें १४ परीसह उदय १२ नौ एकविहवंधक वीतराग छद्मस्थनें १४ उदय १२ नौ एकविह बंधक सयोगीनें ११ परीसह अयोगिनें ११ परीसह उदये

९ होइ पूर्ववत् युग्म परीसहाभावः इति २२ परीषहाधिकारः ।

२२ वाद, २२ जणासुं वाद न कीजे—१ धनवन्त सेती वाद न कीजे, २ बलवन्त सेती वाद न कीजे, ३ घणे परिवाररे धणीसुं वाद न कीजे, ४ तपस्वीसुं वाद न कीजे, ५ नीचसुं वाद न कीजे, ६ अहंकारीसुं वाद न कीजे, ७ गुरांसुं वाद न कीजे, ८ थिवरसुं वाद न कीजे, ९ चोरसुं वाद न कीजे, १० जुवारीसुं वाद न कीजे, ११ रोगीसुं वाद न कीजे, १२ क्रोधीसुं वाद न कीजे, १३ झुठबोले जिणसुं वाद न कीजे, १४ कुसंगतीसुं वाद न कीजे, १५ राजा सेती वाद न कीजे, १६ शीतल लेश्यारे धणीसुं वाद न कीजे, १७ तेजु लेश्यारे धणीसुं वाद न कीजे, १८ मुख मीठा पेटे दगो तिणसुं वाद न कीजे, १९ दानेसरीसुं वाद न

कीजे, २० ज्ञानीसुं वाद न कीजे, २१ गणिकासुं वाद न कीजे, २२ बालकसुं वाद न कीजे।

॥ तेइसमो बोल ॥

२३ तेवीस बोल वेगा (जल्दी) मोक्ष जाणेका, १ आकरो (कठिन) तप करे तो जीव वेगो (शिघ्र) मोक्ष (मुक्ति) जावे, (जाय) २ मोक्ष-कार्य करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ३ शुद्ध प्रणामसे सूत्र सिद्धांत सुणे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ४ शुद्ध मनसुं सूत्र ज्ञान भणे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ५ पांच इन्द्रीयोंना विषय त्यागे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ६ छव काय जीवांरी दया पाले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ७ भण्या हुवा ज्ञान वार

वार चितारे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ८ साधु साध्वीरो भक्तिभाव राखे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ९ तीन योगसे जैसे करणो कराबणो अनुमोदनो यह नव कोटी शुद्ध पच्चक्खाण करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १० धर्मको संबन्ध साचो जाणे (सर्दहै) तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ११ कषायका त्याग करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १२ क्षमा करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १३ लाग्या दोष का प्रायश्चित लेवे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १४ लीये हुवे व्रत पच्चक्खाण निर्मला पाले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १५ शुद्ध प्रणामसुं शील पाले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १६ च्यार तीर्थने साताउपजावे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १७ निरवद्य भाषा बोले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १८ संजम लेकर अंत तक शुद्ध पाले

तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १६ धर्मध्यान शुक्ल ध्यान ध्यावे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, २० महीनेमें छव पोसा करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे २१ पाछली रात्रीरी धर्म जागरणा करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, २२ उभइ टंक कालो प्रतिक्रमण करे, सामाइक करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, २३ आलोयणा लेइ संथारो करी पंडित मरण हुवे तो जीव वेगो मोक्ष जावे।

॥ चौवीसमां बोल ॥

॥ वर्तमान चौवीसी ॥

२४ तिर्थंकरांका नाम---१ श्री ऋषभदेवजी, २ श्री अजितनाथजी, ३ श्री संभवनाथजी, ४ श्री अभिनंदनजी, ५ श्री सुमतिनाथजी, ६ श्री पद्मप्रभुजी, ७ श्री सुपार्श्वनाथजी, ८

श्री चंद्रप्रभुजी, ९ श्री सुविधिनाथजी, १० श्री शीतलनाथजी, ११ श्री श्रेयांसजी, १२ श्री वासपूज्यजी, १३ श्री विमलनाथजी, १४ श्री अनन्तनाथजी, १५ श्री धर्मनाथजी, १६ श्री शांतिनाथजी, १७ श्री कुंथुनाथजी, १८ श्री अरनाथजी, १९ श्री मल्लीनाथजी, २० श्री मुनि सुब्रतजी, २१ श्री नमिनाथजी, २२ श्री रिष्ठनेमिनाथजी, २३ श्री पार्श्वनाथजी, २४ श्री महावीर स्वामीजी ।

२४ भगवती सूत्र शतक १९ उद्देसे नवमें बोल २४—मनुष्य तिर्यंचमें बैठा थकां नारकीमें जाणेवाले कुं भव द्रव्य नेरीया कहीजै १, भव द्रव्य नारकीयारी (नेरियारी) स्थिति जघन्थ अंतर्मुहुर्तकी उत्कृष्टी कोड पूर्वकी मनुष्य तिर्यंचमें बैठा थकां देवतारो आउखो बांधे तिके भव द्रव्य देवकी स्थिति असुर-कुमारादि १० भवनपती, वाणव्यंतर, जोतषी,

वैमानीकरी स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्टी ३ पल्यकी मनुष्य तिर्यंच देवतामें बैठा थकां पृथ्वी १, पांणी २, वनस्पतीमें जाणे-वालेकी स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्टी २ सागर झाझेरी मनुष्यमें तिर्यंचमें बैठा थकां तेऊ १ वायु १ तीन विकलेन्द्रिमें जाणेवालारी स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्टी कोडपूर्वकी च्यारु गतीमें बैठा थकां मनुष्य १ तिर्यंचमें जाणेवालेकी स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृ-ष्टी ३३ सागरकी ।

२४ दंडकका बोल—साधु आर्याजीमें १ दंडक पावे, सरावगमें २ दंडक पावे, विकलेन्द्रिमें ३ दंडक पावे, सत्तकहतापृथ्वीयादिकमें ४ दंडक पावे, एकेन्द्रिमें ५ दंडक पावे, घ्राणेन्द्रिके अलद्धियेमें ६, चक्खु इन्द्रिके अलद्धियेमें ७, असन्नीयेमें ८, तिर्यंचमें ९, भवन पतीमें १० नपुंसकमें ११ तीरछेलोकमें

१२, देवतामें १३, नोगर्भजरे मनयोगीमें १४, पुरुषवेदमें १५, पंचेन्द्रिमें १६, वैक्रीये शरीरमें १७, तेजुलेश्यामें १८, त्रसकायेमें १६, सत्यरे अलद्धियेमें २०, नीचे लोकमें २१, माठीलेश्यामें २२, पृथ्वी पांणी तेईसरी आगतमें २३, सिद्धांरे अलद्धियेमें दंडक २४, पावे ।

॥ पचीसमो बोल ॥

२५ में बोले सामायिकरा २५ भेद—१ द्रव्यथकी निकट भवी, २ क्षेत्रथकी त्रसनाडी, ३ कालथकी देसउणो अर्द्ध पुद्गलीक, ४ भावथकी क्षय उपशम, ५ पुनःद्रव्यथकी ५ आश्रवरात्याग ६ खेत्रथकी आखेलोकमें, ७ कालथकी इतर आवतु, ८ भावथकी करण-

जोग ६ द्रव्यशुद्धि-भंडउपगरणनिरविकार, १० क्षेत्र शुद्धि-चित्रामादिकरो मकान नहीं होवे अथवा राजादिकरो कोई काम नहीं हुवे, १२ भाव शुद्धि-शुद्ध श्रद्धा, १३ सामान्य-समभाव, १४ विशेष च्यार भेद-सूत्र सामायिक समकित सामायिक देशवृति सामायिक सर्ववृत्ति सामायिक १५ नाम निक्षेपाकरी किसी जीव अजीवरो नाम सामयिक देवे १६ स्थापना निक्षेपाकरी अक्षर लिख दीया--"सामायिक" अथवा पुतली रख दीवी १७ द्रव्य निक्षेपाकरी-सुन्यचित्त १८ भावनिक्षेपा उपयोग सहित १९ नेगमनय सामायिकरा भाव हुआ, २० संग्रह नय सामायिकरा भंड उपगरणका संग्रह किया, २१ व्यवहार नय सावद्य योगका त्याग करे २२ ऋजुसूत्र नय बत्तीस दोष टाले २३ शब्द नय आत्मा और जीवने मित्र पणेमाने २४ समभिरूढ नय

श्रद्धा उपर आरूढ हो गया २५ एवंभूत नय-निज आत्मरूपकुं सामायिक माने अन्य नहीं(अन्यने नहीं माने),

२५ वक्ता उपदेशकके गुण—१ दृढ़ श्रद्धावंत होवे क्योंकि जो आप पक्के श्रद्धावंत होंगे वोही श्रोताकी श्रद्धाको निशंकितसे दृढ़ कर सकेंगे, २ वाचनाकलावंत हुवे किसी भी प्रकार के शास्त्रको पढते हुये जरा भी अटके नहीं शुद्धता और सरलतासे शास्त्र सुणावे, ३ निश्चय व्यवहारके जाण होवे जिस वक्त जैसी परषदा और जैसा अवसर देखे वैसा ही सद्बोध करे की जो श्रोता गुणधारण करे उनकी आत्मामें रुचे, ४ जिनाज्ञा भंगका डर होवे यर्थात् एक देशके राजाकी आज्ञाका भंग करनेसे सजा मिलती हैं तो त्रिलोकी नाथ तिर्थंकर भगवानकी आज्ञाका भंग करेगा उसका क्या हाल होवेगा ऐसा जाण

आज्ञाविरुद्ध विपरीत परुपणा न करे, ५ क्षमा वंत हुवे क्योंकि क्रोधी होवेगा वो अपणे दुर्गुणसे डरता क्षमादि धर्मकी यथातथ्य परुपणा नहीं कर सकेगा और वक्तपर क्रोध उत्पन्न होवेगा रंगमें भंग कर देवेगा इस लिये वक्ता क्षमावंत चाहिये, ६ निराभिमानी अर्थात् विनयवानका बुद्धि प्रबल रहती है वो यथातथ्य उपदेश कर सकते हैं और जो अभिमानी होता है वो सत्यासत्यका विचार नहीं करते अपने खोटी बातको भी अनेक कुहेतु करके सिद्ध करेंगे और दुसरेकी बात को भी उत्थापन करेंगे, ७ निष्कपटी होवेगा जो सरल होवेगा सोही यथातथ्य बात प्रकाशेगा कपटी तो अपणी दुर्गुण ढकनेके लिये बातको पलटावेगा ८, निर्लोभी होवे सो वेपरवाह रहते हैं वो राजा रंक सबको एक सा सत्य उपदेश कर सकते हैं और

लोभी खुशामदी करनेवाले होते हैं वो श्रोताका मन दुःखा जानके बातको फिरा देते हैं, ६ श्रोताके अभिप्रायका जाण होवे अर्थात् जो जो प्रश्न श्रोताके मनमें उठें उनकी मुखमुद्रासे जाण उनका आप ही समाधान कर देवे, १० धैर्यवंत होए कोईभी बात धीरजसे श्रोताके समझमें आवें वैसी ही करै तथा प्रश्नका उत्तर श्रोताके समझमें बेठे ऐसा मधुरतासे थोड़ेमें देवे, ११ हटग्राही नहीं होवे अर्थात् किसी प्रश्नका उत्तर आपको न आवो तो उसकी झुठी स्थापना नहीं करे नम्रतासे कहै कि मेरेको उत्तर नहीं आता है मैं किसी गुरुसे पूछकर निश्चय करूंगा १२ सद्गुणी-निंद्यकर्मसे बचा हुवा होवे सो अर्थात् राजारी विश्वास-घात इत्यादि कर्म जिसने नहीं किये होवे वो जो के किसीसे दबता नहीं है, १३

कुलहीण नहीं होवे क्योंकि कुल हीणकी श्रोता मर्यादा नहीं रख सकते हैं, १४ अंग हीण न होवे क्योंकि अंगहीण शोभता नहीं है १५ कुस्वरी न होए क्योंकि खोटे स्वरवाले का बचन सुहाता नहीं है १६ बुद्धिवंत होवे १७ मिष्टबचनी होवे, १८ कांतिवंत होवे, १६ समर्थ होवे उपदेश देता थकै नहीं २० बहुत ग्रन्थ अवलोकन (देखे) हुए होय २१ अध्यात्म अर्थका जाण होवे, २२ शब्दका रहस्यका जाण होवे २३ अर्थ संकोचन विस्तार कर जाणे २४ अनेक युक्तियों, तर्कों का जाण होवे, २५ सर्वशुभ गुण युक्त होवे यह २५ गुण-युक्त होगा सोही असर कारक सद्उपदेश कर सकैगे ।

२५ मे बोल—पांच महाव्रतकी पचीश भावना, पहिले महाव्रतकी पांच भावना---इर्याभावना १, मनभावना २, वचनभावना ३, एषणा-

भावना ४, अयाणभंडमत निखेवणा भावना ५, दूजे महाव्रतरी पांच भावना, झुठ न बोले ६, क्रोध करी न बोले ७, लोभ करी न बोले ८, भय करी न बोले ९, हास करी न बोले १०, तीजे महा व्रतरी पांच भावना, अठारे प्रकारना थानक न भोगवे ११, तृण मात्र पण जाचीने लेवे १२, थानक घटारे मठारे नहीं १३, साधर्मीका वस्त्र आज्ञा विना लेवे नहीं १४, साधुरी वेयावच्च करे १५, चोथे महाव्रतरी पांच भावना, स्त्री पशु पिंडगरहित थानक भोगवे १६, स्त्री की कथा न करे १७, स्त्रीका अंग उपांग न निरखे १८, पूर्वली क्रीडा भोग न संभारे (चितारे) १९, सरस आहार नित प्रते न करे २०, पांचमें महाव्रतरी पांच भावना, शब्द २१, रूप २२, गंध २३, रस २४, फरस २५, मनोगम उपर राग न करे अमनोगम उपरे द्वेष न करे ।

॥ २५॥ साढ़ा पचीस आर्य देश ॥

१ मगध देश राजगृहीनगरी १ कोड़ ६६ लाख ग्राम ।

२ अंग देश चंपानगरी ५ लाख ग्राम ।

२ वंग देश ताम्रलिप्तीनगरी १८ लाख ग्राम ।

४ कलिंग देश कंचनपुर नगर २० लाख ग्राम ।

५ काशी देश वाणारसी नगरी १ लाख ६० हजार ग्राम ।

६ कोशल देश साकेत (अजोध्या) नगर ६६ हजार ग्राम ।

७ कूरू देश गजपुर नगर (हथीणापुर) ८ लाख २३ हजार ४२५ ग्राम ।

८ कूशार्त्त देश सौरीपुर नगर १ लाख ४३ हजार ग्राम ।

९ पांचाल देश कंपिलपुर नगर ३ लाख ६३ हजार ग्राम ।

१० जंगल देश अहिच्छत्ता नगरी १ लाख ४५ हजार ग्राम ।

११ सोरठ देश द्वारावती (द्वारका) नगरी ६ लाख ८० हजार ५२६ ग्राम ।

१२ विदेह देश मिथिला नगरी ८ हजार ग्राम ।

१३ वत्स (कच्छ) देश कोशंबी नगरी २८ हजार ग्राम ।

१४ शांडिल देश नंदीपुर नगरी २१ हजार ग्राम ।

१५ मलय देश भाद्दिलपुर नगरी ७० हजार ग्राम ।

१६ वच्छ देश वेराटपुरी (नगरी) २ लाख ८८ हजार ग्राम ।

१७ वरण देश अच्छापुरी (नगरी) २४ हजार ग्राम ।

१८ दशार्ण देश मृतिकावती नगरी १८ हजार ग्राम ।

१९ चेदर्क (चेदी) देश शौक्तिकावती नगरी ४२ हजार ग्राम ।

२० सिंधू देश वीतभय (पाटण) नगर ६ लाख
   ८० हजार ५०० ग्राम ।
२१ सौवीर देश मथुरा नगरी ८ हजार ग्राम ।
२२ सूरसेन देश पावा नगरी ३६ हजार ग्राम ।
२३ भंग देश मासपुरी नगरी ५२ हजार ४५०
   ग्राम ।
२४ कुणाल देश सावत्थी नगरी ६३ हजार ग्राम ।
२५ लाट देश कोटीवर्ष नगरी ७ लाख १३
   हजार ग्राम ।
२५॥ केकय (अर्द्ध कैकेइ) अर्द्ध देश श्वेतंविका
   नगरी १ लाख २६ हजार ग्राम आर्य्य
   १ लाख २६ हजार ग्राम अनार्य्य
   ७ हजार ग्राम खालसे ।
   ग्राम संख्या श्रीपनणाजी सुत्रके अर्थमें है ।

———

२५॥ (साढापच्चीस) आर्य देश १, मगध देश राजगृह नगरी १ कोड ६६ लाख गाम २, अंगदेश चंपानगरी ५, लाख गाम ३, बंग देश तामलीप्ती नगरी १८ लाख गाम ४, कलिंग देश कंचणपूर नगर २० लाख गाम ५, काशी देश वाणारसी नगरी १ लाख ६० हजार गाम ६, कोसल देश साकेत नगर (अयोध्या नगरी) ६६ हजार गाम ७, कुरू देश गजपुर नगर (हथीनापुर नगर) ८ लाख २३ तेवीस हजार ४२५ गाम ८, कुशार्त्त (कुशावर्त्त) देश सोरीपुरी नगर १ लाख ४३ हजार गाम ६, पंचाल देश कंपिलपुर नगर तीन लाख ६३ हजार गाम १०, जंगल देश अहिछत्ता नगरी ७ लाख ४५ हजार गाम ११, वत्थ (कछ) देश कोशंबी नगरी २८ हजार गाम १२, सांडिल देश नंदीपुर नगरी २१ हजार गाम १३, मालय देश भद्दिलपुर

नगरी ७० हजार गाम १४, वच्छ देश वेराट नगरी (वेराटदेश वंच्छपुर) २ लाख ८८ हजार गाम १५, दशार्ण देश मृत्तिकावती नगरी १८ हजार गाम १६, वरण देश अत्थापुर नगरी चोवीस २४ हजार गाम १७, विदेह (वेदि) देश शौक्तिकावती नगरी ४२ हजार गाम १८, सिंधू देश वीत भय पाटण (नगर) ६ लाख ८० हजार पांचसो गाम १९, सौवीर देश मथुरा नगरी ८ हजार गाम २०, विदेह देश मिथिला नगरी ८ हजार गाम २१, सुरसेन देश पापा नगरी (पावापुरी) ३६ हजार गाम २२, भंग देश मासपुर नगर ५२ हजार चार सो पचास गाम २३, लाट देश कोटोवर्ष नगरी (कादा वती नगरी) ७० लाख १३ हजार गाम २४, कुणाल देश सावत्थी नगरी ६३ हजार गाम २५, सोरठ देश द्वारा नगरी ६८

हजार पांचसो २६ गाम २५॥, कैकेई अर्द्ध (केकेय) देश श्वेतबिका नगरी १ लाख २६ हजार आर्य देश १ लाख २६ हजार अनार्य देश ७ हजार खालसे।

॥ पाठन्तर ॥

अथ आर्य देश १ मगध देश राजगृही नगरी पूर्व देश प्रसिद्ध मुनिसुव्रत जन्म २ अंगदेश चंपा नगरी राजगृहीथकी पूर्वदेशे कोश ६० श्री वासुपूज्य पंचकल्याणक बंगदेश तामलिप्ता नगरी सम्मेत शिखरथी दक्षिण दिशे उड़ीसा जगन्नाथपुरी पासै ४ कालिंग देश कंचणपुर नगरी हाजी पुर थी पूर्व दिशे ३० कोस, कोशलदेश अयोध्या नगरी खइराबादथी कोश ६० उत्तर दिशें इस समय आहिज प्रसिद्ध छै ६ कुरुदेश हस्तिनापुर नगर दिल्लीथी

कोस ४० इशानकुणै शांति कुंथु अरि जन्म कल्पाणक ७ कुशावर्त्त देश सोरीपुर नगर आगराहूंती कोश १८ अग्निकूणैं नेमिजिन जन्मकल्पाणक ८ पंचालदेश (पंजाब) कांपिल्यपुर नगर आगराहूंती कोश ५० उत्तर दिशैं श्री विमलनाथ जन्म ९ जंगलदेश अहिछत्ता नगरी सांभलि थकी कोस ४० उत्तर दिशी १० सोरठ देश द्वारिका नगरि गुजरात परै प्रसिद्ध ११ काशी देश बणारसी नगरी जुणपुरथी कोश १८ अग्निकुंणे १२ विदेह देश मिथिला नगरी हाजीपुरथी कोश ४० उत्तर दिशैं गंगापार मल्लिनमि जन्मः १३ बच्छ (वत्स) देश कोशंबी नगरी जुणपुरथी कोस ५० पूर्व दिशें पद्म प्रभु जन्मः १४ शांडिल्य देश नंदिपुर झाड़ खंड मांहि १५ मलय देश भद्दिल पुर समेत शिखरथी कोश २५ उत्तर पासै शीतल जन्मः १६ वैराट देश वच्छपुर

सांभरपासै १७ वरण देश अच्छापुर (अस्थापुर) १८ दशार्ण देश मृत्तिकावती नगरी गया थी २५ कोस १६ वेदीदेश श्रुक्ति नगरी हाजीपुरथी कोश ५० उत्तर दिसै २० सिंधू देश वीतभय पाटण जेसल मेरथी पश्चिम दिशै २१ सोवीर देश मथुरा, राजगृही पासै २२ वंगदेश पावापुरी राजगृही पासैं २३ वर्त्त देश (भंगदेश) मासपुर ४२ कुणाल देश सावथी नगरी खैरावादथी ६० कोस २५ लाट-देश कोडीवर्ष नगर उड़ीसा पासै २५॥ कैकेई देशार्द्ध श्वेतांविका नगरी चत्रीकुंडथी कोस ५० इति साडापच्चीस आर्य देश जाणना ॥

॥ छवीसमां बोल ॥

२६ प्रकारे दशाश्रुत स्कंध, वृहत् कल्पने व्यवहारनां अध्ययनः—(१) दस दशाश्रुत

स्कंधना, (२) छ बृहत् कल्पना, (३) दश व्यवहारनां अध्ययन छे (१०—६—१० = २६) ।

॥ सातार्इसमां बोल ॥

२७ प्रकारे अणागारना गुण— (१) सर्व प्राणातिपातथी विराम, (निवर्ते) (२) सर्व मृषावाद थी विराम, (३) सर्व अदत्तादानथी विराम, (४) सर्व मैथुनथी विराम (५) सर्व परिग्रहथी विराम, (६) श्रोत्रेन्द्रिय निग्रह, (७) चक्षुधेन्द्रिय निग्रह, (८) घ्राणेन्द्रिय निग्रह, (९) रसेन्द्रिय निग्रह, (१०) स्पर्शेन्द्रिय निग्रह, (११) क्रोध विजय, (१२) मान विजय, (१३) माया विजय, (१४) लोभविजय, (१५) भाव सत्य, (१६) करण सत्य, (१७) योग सत्य, (१८) क्षमा, (१९) वैराग्य, (२०) मनसमा-

धारणता, (२१) वचन समाधारणता, (२२) काय समाधारणता, (२३) ज्ञान, (२४) दर्शन (२५) चारित्र, (२६) वेदना सहिष्णुता, (२७) मरण सहिष्णुता,

---

॥ पाठन्तर ॥

पंच महव्वय जुतो, पंचिंद्रिय समरणो।
चउविह कषाय मुक्को, तउसमाधारणीया ॥
तिउसच्च संपन्न तिउ, खंती संवेगरउ।
वेयणामच्चू भयगयं, साधुगुण सत्तवीसं ॥

अर्थ—५ महाव्रत (पच्चीस भावना युक्त) शुद्ध निर्दोष पाले, ५ इन्द्रियों २३ विषयसे निवर्ते, ४ क्रोधादि कषायसे निवर्ते।

१५ 'मन समाधणीया' पापसे मन निवर्ते धर्म मार्गमें प्रवर्तावे, १६ 'वय समाधारणीया' निर्दोष कार्य उपने बोले १७ 'काय समाधर-

णिया' कायाकी चपलता रुंधे १८ 'भाव सच्चे' अंतःकरणके प्रणामकी धारा सदा निर्मल शुभ वर्धमान धर्मध्यान शुक्ल ध्यान युक्त रहे १६ 'करण सच्चे' करण सित्तरीके ७० गुण युक्त, तथा साधुको क्रिया करनेकी विधि शास्त्रमें फरमाइ है वैसी सदा योग्य वक्तमें करें, पिछलि प्रहर रात बाकी रहे तब जाग्रत होके आकाश दिशा प्रतिलेखे (देखे) कि किसी प्रकारकी असभ्भाइ तो नहीं है ? जो निर्मल दिशा होय तो शास्त्रकी सज्भाय करे फिर असभ्भाइकी (लाल दिशा) हो तब प्रतिक्रमण करे, सूर्योदय पीछे प्रतिलेहना करे, अर्थात् वस्त्रादिक सर्व उपकरणको देखें, फिर प्रहर दिन आवे वहां तक स्वाध्याय करे, तथा श्रोतागणका योग्य होय तो धर्मो पदेश करे—व्याख्यान बांचे, फिर ध्यान करे शास्त्रके अर्थकी चितावना करे, और जो

भिक्षाका काल हो तो गौचरी निमीत्त जाकर शुद्ध आहार विधियुक्त लाकर आत्माको भाड़ा देवे; चौथे आरेमें तीसरा प्रहर भिक्षा के लिये जाते थे क्योंकि उस वक्त सबलोग एक ❋ ही वक्त भोजन करते थे और एक घर में ३२ स्त्री और २८ पुरुष होते सो घर गिणतीमें था, इस लिये ६० मनुष्यका भोजन निपजाते सहज दो प्रहर, दिन आ जाता था, शास्त्रमें कहा है कि 'कालं काल समायरे,' अर्थात जिस क्षेत्रमें जो भिक्षा का काल होय, उस वक्त गौचरी जाय जो जलदी जाय अथवा देरसे जाय, तो बहुत घूमना पड़े, इच्छित आहार न मिले, शरीर को किलामना उपजे, लोकोमें निंदा होवे कि वक्त वे वक्त साधू क्यों फिरता है? तथा

❋ पहिले आरेमें ३ दिनके अंतरे, दूसरेमें २ दिनके अंतरे, तीसरेमे एक दिनके अंतरे, चौथेमें दिनमें एक वक्त भोजनकी इच्छा होती थी।

स्वाध्याय ध्यानकी अंतराय पड़े इत्यादि दोष जाण कालोकाल भिक्षाके लिये जाय, फिर शास्त्रोक्त विधीसे आहार करे, फिर ध्यान करे, फिर चौथे प्रहर प्रति लेखन कर स्वाध्याय करे, असझाइकी वक्त देवसी प्रतिक्रमण करे असाझइ निवर्तनेसे सझाय करे दूसरे प्रहर ध्यान करे, तिसरे प्रहर निद्रामुक्त होवे, ये दिनरात्रीकी साधूकी क्रिया श्री उत्तराध्ययन सूत्रके २६ वे अध्ययनमें कही है और भी अंतर विधि बहुत हे सो गुरू आमनासे धारे) ।

२० 'जोग सचे'—मन-बचन-कायाके योगकी सत्यता-सरलता रखे, योगाभ्यास-आत्म-साधन-सम-दम उपसम इत्यादि, साधना की प्रति दिन वृद्धि करे ।

'संपन्नतिउ'—साधु तीन वस्तु संपन्न है, नाण-सपन्न, दंशण संपन, चारित्र संपन्न ।

२१ नाण संपन्न—मति, श्रुत, अंग उपांग पूर्वादिक जिस कालमें जितना ज्ञान हाजिर होवे उतना उमंग सहित अभ्यास करे, वांचना-पृच्छना-पर्यटना आदि करके, दृढ करे, अन्यको यथायोग्य ज्ञान दे वृद्धि करे।

२२ 'दंशण संपन्न'—१ कषाय, २ नोकषाय, ३ मोहनीय इत्यादि दोष रहित शुद्ध सम्यक्त्ववंत होवे, देवादिक भी चलावे तो चले नहीं, शंकादि दोष रहित निर्मल सम्यकत्व पाले।

२३ 'चारित्र संपन्न'—सामायिक-छेदोपस्थापनी-परिहार विशुद्ध सूक्ष्म संमपराय-यथाख्यात ये पांच चरित्रयूक्त, (इसकालमें पहिले २ चारित्र हैं)।

२४ 'खंती'—क्षमावन्त।

२५ 'संवेग'—सदा वैराग्यवन्त रहै।

श्लोक--'संरीर मनसोगंन्तु, वेदना प्रभवाद्भवात्'
स्वप्नेन्द्र जाल सङ्कल्पाद्भितिःसंवेग उच्यते॥

अर्थात् इस संसारमें शारीरिक और मानसिक वेदनासे अति ही पीडा हो रही है जिसको देखकर, और सर्व संयोग इन्द्रजाल और स्वप्नवत् जानकर, संसारमें डरना उसका नाम 'संवेग' है।

२६ 'वेदनी सम अहीया सणीयाए'—क्षुदादिक २२ परिसह उत्पन्न होवे तो सम प्रमाणसे सहन करे।

२७ 'मरणातिय सम--अहीया सणीयाये' मरणांतिक कष्टमें तथा मरणसे डरे नहीं परन्तु समाधि मरण करे।

२७ सताइस बोलै करी त्रस कायकी हिंसा टलै १ प्रहर रात गये पीछै और दिनऊगे पहिले जोरसे बोलना नहीं क्योंकि विसमरी जागकर, मक्खी प्रमुख जीवोंका भक्षण

कर जाय तथा पाडोसी जागृत होय तो मैथुन पचन खंडन पीसनादि अनेक क्रिया करे, १ रातको छाछ [मही] करना नहीं, ३ लीपणा नहीं वुहारना (झाडना) नहीं भोजन (आहार) नहीं निपजाना ४ मार्गमें रातकुं (विनउपयोग) नहीं चलना ५ वस्त्र नहीं धोवना ६ स्नान नहीं करना ७ भोजन नहीं करना इतने काम रातको नहीं करना इनसे त्रस जीवकी घात और आत्महत्या होनेका कारण होता है ८ जंगल; मैदान, खुली जागा मीलतां पायखानामें दिशा (टट्टी) नहीं जाना क्योंकि उसमें असंख्य छमोछम (चम्मुच्छन) मनुष्य पैदा होकर मरजाते हैं ९ खाडेमांही फाटी जमीन ऊपर या तुस राखके ढगलेपर दिशा नहीं जाना उस में जीव मृत्यु पाते हैं, १० खुली जागा मीलतां मोरीमें नालीमें पेशाब नहीं करना

तथा स्नान नहीं करना ११ देखे बिना धोबीको कपड़ा धोणे नहीं देना १२ खाट पिलंगको पाणीमें नहीं डुवाना तथा ऊपर गरम गरम पाणी नहीं डालना १३ दीवाली प्रमुख पर्वको जो घरमें खटमलादिक जीव होय तो लीपणा छापणा नहीं करना १४ सड़ा धान सड़ी हुई कोई भी वस्तुको धूप (तड़के) में नहीं धरना, १५ आटा दाल शाग लकड़ी छाणा घट्टी ऊंखल वर्तन इत्यादि कोई वस्तु देखे विना वापरनी नहीं १६ आटा दाल शाग गोबर वगैरे वहुत दिन तक संग्रह करके नहीं रखना १७ चोमासेके कालमें घरमें वरतनादि सुकमाल सणकी तथा ऊनकी पूंजणीसे पूंजे विन नहीं वापरना क्योंकि कुंथूवादिक जीव वहुत पैदा होते हैं १८ चूला पलीन्डा घट्टी ऊंखलादि चंदरवा (छत) विन नहीं राखना १९ पांणी छांणे

विना नहीं वापरना २० पांणीका जीवांणी जो जागाका पाणी होय उस जागाका पाणी सिवाय दूसरे सरोवरमें तथा विना पाणीके ठिकाणे नहीं नाखना २१ वने वहां तक हिंसक व्यापार जैसे दाणे धानका किराणेका मिल (गिरनी) विगेरह का नहीं करना २२ दूधका दहीका घीका तैलका रसका छाछका पांणी विगेरह पतले पदार्थ वस्तुके वर्त्तन खुला नहीं राखना २३ दीवा पिलसोद चूला खुला नहीं राखना २४ सडेहुये धानको पांणीमें धोणा नहीं २५ चोर भाजी भूट्टे प्रमुख जोजो त्रस जीवकी वस्तु नजर आवे सो नहीं खाना २६ गायादिकके वाडेमें तथा जिहां मच्छरादिक जीवोंकी उत्पत्ति होवे वहां धूंवा नहीं करना २७ जूतेमें नाल खीले लगाना नहीं और पहले लगेहुये होवे वो नहीं पहरना उपयोग राखकर हिंसा टालना।

॥ अठाइसमो बोल ॥

२८ प्रकारे आचार कल्प—(१) मास प्रायश्चित, (२) मासने पांच दिवस, (३) मासने दश दिवस, (४) मासने पन्नर दिवस, (५) मासने वीश दिवस, (६) मासने पचीस दिवस, (७) बे मास, (८) बे मासने पांच दिवस, (९) बे मासने दश दिवस, (१०) बे मासने पन्नर दिवस, (११) बे मासने वीश दिवस, (१२) बे मासने पचीस दिवस, (१३) त्रण मास, (१४) त्रण मासने पांच दिवस, (१५) त्रण मासने दश दिवस, (१६) त्रण मासने पन्नर दिवस, (१७) त्रण मासने वीश दिवस, (१८) त्रण मासने पचीस दिवस, (१९) चार मास, (२०) चार मासने पांच दिवस, (२१) चार मासने दश दिवस, (२२) चार मासने पन्नर दिवस, (२३) चार मासने

वीश दिवस, (२४) चार मासने पचीस दिवस (२५) पांच मास, ए पचीस उपघातिक छे, (२६) अनुघातिकरोपणा, (२७) कृत्स्न (संपूर्ण) (२८) अकृत्स्न (असंपूर्ण) ।

॥ उनतीसमो बोल ॥

२९ प्रकारे पापसूत्र—१ भूमिकंप शास्त्र, (२) उत्पात शास्त्र, (३) स्वप्न शास्त्र, (४) अन्तरिक्ष शास्त्र, (जेमां आकाशना चिन्हो समाय छे), (५) अंग फरकवानां शास्त्र, (६) स्वर शास्त्र, (७) व्यंजन शास्त्र, (मिसा, तिल वगेरे समाय छे) (८) लक्षण शास्त्र ए आठ सूत्रथी आठ वृत्तिथीने आठ वार्तिकथी कुल चौविश, (२५) त्रिकथा अनुयोग, (२६) विधा अनुयोग, (२७) मंत्र अनुयोग, (२८)

योग अनुयोग, (२६) अन्य तीर्थिक प्रवृत्त अनुयोग।

॥ तीसमां बोल ॥

३० तीस बोल करी जीव महा मोहनी कर्म बांधे, त्रस जीवने पाणी मांहि डबोयने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे १, मुख भिंचीने (बांधी) गला घोंटीने (सास रोकीने) मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे २, अग्निमें प्रज्जालि धुंवामें घोटीने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे ३, माथे घाव घालीने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे ४, आला चांबडासे बांधीने धुप तावडामें बेठाइने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे ५, गेहला गूंगाने मारीनें हंसे तो महा मोहनी कर्म बांधे ६, अणाचार सेवीने गोपवे तो महा मोहनी

कर्म वांधे ७, आपणो सेव्यो पाप पारके माथे डाले तो महा मोहनी कर्म बांधे ८, भरी पर्षदा में मिश्र भाषा बोले तो महा मोहनी कर्म वांधे ९, राजाका बुरा चिंतवे राजमें धन आवता रोके राजारी राणीने भोगवे तो मह मोहनी कर्म वांधे १०, वाल ब्रह्मचारी नहं वाल ब्रह्मचारी कहावे (कवावे) तो महा मोहनी कर्म वांधे ११, ब्रह्मचारी नहीं और ब्रह्मचारी कहावे तो महा मोहनी कर्म बांधे १२, गुमास्तो साह (सेठ) रो बुरो चिंतवे सेठ रो धन उडावे, खंडावे साहकी स्त्रीने भोगवेतो महा मोहनी कर्म वांधे १३, पंचानु बुरा चिंतवे तो महा मोहनी कर्म बांधे १४, चाकर ठाकुरने, प्रधान राजाने, स्त्री भरतारने मारे सापणा आपणा इन्डाने गले तो महा मोहनी कर्म वांधे १५, पृथ्वीपति राजाकी घात चिंतवे तो महा मोहनी कर्म बांधे

१६, एक देशरा राजा तथा साध साधवीकी घात चिंतवे तो महा मोहनी कर्म बांधे धर्मि पुरुषने धर्म करता डिगावे. तो महा मोहनी कर्म बांधे १८, तिर्थंकर देवके अवगुण वाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे १६, चतुर्विध संघका अवर्णवाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे २०, आचार्य उपाध्यायजीका अवर्णवाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे २१, आचार्य उपाध्याय-जीको सामनो करे तो महा मोहनी कर्म बांधे २२, बहु सूत्री नहीं अरु बहुसूत्री कहावे तो महा मोहनी कर्म बांधे २३, तपस्वी नहीं तपसी कहावे तो महा मोहनी कर्म बांधे २४, रोगी गीलाणकी छती-शकती वेयापच्च न करे तो महा मोहनी कर्म बांधे २५, टोला मांहि भेद पाडे तो महा मोहनी कर्म बांधे २६, हिंस्याकारी शास्त्र परुपे तो महा मोहनी

कर्म बांधे २७ देवताके मनुषके अछते काम भोगकी वंछा करे तो महा मोहनी कर्म बांधे २८, ब्रह्मचर्य पाली तपस्या करी आ-लोइ निन्दि देवता थया छे तेहनी जो निन्दा करे तो महा मोहनी कर्म बांधे २९, देवता आवे नहीं अरु कहे म्हारे पास देवता आवे छे इम कहे तो महा मोहनी कर्म बांधे ३० ।

पाठन्तर ।

त्रीस प्रकारे मोहनीयनां स्थानक—(१) स्त्री, पुरुष, नपुंसकने अथवा कोई त्रस प्राणीने जलमां पेसारीने जलरूप शस्त्रे करीने मारे ते महामोहनीय कर्म बांधे ।

२, हाथे करी प्राणीना मुख प्रमुख बांधी, श्वास रुंधी जीवने मारे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३, अग्नि प्रजली, वाडादिकमां प्राणी रोकी धूमाडे करी, आकुल व्याकुल करी मारे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

४, उत्तमांग जे मस्तक तेने खडगादिके करी भेदे-छेदे-फाडे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

५, चामडा प्रमुखनी वाधरीए करी मस्तकादिक शरीरने ताणी बांधी वारंवार अशुभ परिणामे करी कदर्थना करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

६ विश्वासकारी वेष करी-मार्ग प्रमुखने विषे जीवने हणे-ते लोकमां उपहास्य थाय तेवी रीते तथा पोते कर्तव्य करी आनंद माने ते महामोहनीय कर्म बांधे ।

७, कपटे करी पोतानो दुष्ट आचार गोपवे तथा पोतानी मायाए करी अन्यने पण पाश (फास) मां नाखे, तथा शुद्ध सूत्रार्थ गोपवे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

८, पोते अनेक चोरी बालघात (अन्याय) प्रमुख कर्म कीधां होय, ते दोष निर्दोषी पुरुष उपर नांखे, तथा यशस्वीनो यश घटाडवा माटे अछता आल आपे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

९ परने रुडुं मनावबा माटे द्रव्य भाव थी झगड़ा (कलेश) वधारवा माटे, जाणतो थको सभा मध्ये सत्य मृषा (मिश्र) भाषा बोले, तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१०, राजनो भंडारी प्रमुख ते, राजा प्रधान तथा समर्थ कोई पुरुषनी लक्ष्मी प्रमुख लेवा चाहे, तथा तेनी स्त्री विणसाड़े, तथा तेना रागी पुरुषोनां मन फेरवे, तथा राजने राज्य कर्त्तव्यथी बहार करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

११, स्त्रीओने विषे गृद्ध थई परणया छतां कुमारपणानुं (हुं कुंवारो छुं) बिरूद (नाम) धरावे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१२ गाथोनी मध्ये गर्दभ माफिक स्त्रीना विषय विषे गृद्धथको आत्मानुं अहित करनार मायामृषा बोले, अब्रह्मचारी छतां ब्रह्मचारीनुं बिरुद धरावे तो महामोहनीय कर्म बांधे (लोकमां धर्मनो अविश्वास थाय, धर्मी उपर प्रतीत न रहे, ते माटे) ।

१३, जेनी निश्राए आजुविका करे छे तेनी लक्ष्मीने विषे लुब्ध थई तेनी लक्ष्मी लूंटे तथा पर पासे लूंटावे तो महामोहनीय कर्म बांधे "चिलाती चोरवत्" ।

१४, जेणे द्रारिद्र पणुं (निर्धनपणुं) मटाडी मापदार (होदादार) कर्यो, ते महर्द्धिकपणु पाम्या पछी, इर्ष्यादोषे करी, कलुषित चित्ते करी, ते उपकारी पुरुषने विपत्ति आपे तथा धन प्रमुख आववानी अंतराय पाडे तो महा मोहनीय कर्म बांधे ।

१५ पोतानु भरणपोषण करनार राजा प्रधान प्रमुखने तथा ज्ञान प्रमुखना अभ्यास करावनार गुर्वादिने हणे तो महामोहनीय कर्म बांधे (सर्पणी जेम इंडाने हणे तेम)।

१६ देशनो राजा तथा वाणीयाना वृंदनो प्रवर्त्तावक (व्यवहारियो) तथा नगरशेठ ए त्रण घणा यशना धणी छे, तेने हणे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१७ जे घणा जणने आधारभूत (समुद्रमां द्वीप समान) छे तेमने हणे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१८, संयम लेवा सावधान थयो छे तेने, तथा संयम-लीधेलो छे तेने, धर्मथी भ्रष्ट करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१९, अनंत ज्ञानी तथा अनंतदर्शी ऐवा तीर्थंकर देवना अवर्णवाद बोले तो महा-मोहनीय कर्म बांधे ।

२०, तीर्थंकर देवना प्ररुपित न्याय मार्गनो द्वेषी थई अवर्णवाद बोले, निंदा करे अने शुद्ध मार्ग थी लोकोनां मन फेरवे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२१, आचार्य उपाध्याय जे सूत्र प्रमुख शिखवे छे, भणावे छे तेवा पुरुषने हीले निंदे, खींसे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२२, आचार्य उपाध्यायने साचे मने आराधे नहीं, तथा अहंकार थको भक्ति न करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२३, अबहुश्रुत (अलपसूत्री) थको शास्त्र-करी पोतानी श्लाधा करे तथा स्वाध्यायनो वाद करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२४, अतपस्वी थको तपस्वीनु बिरुध (नाम) धरावे (लोकोने छेतरवा माटे) तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२५, उपकारने अर्थे गुर्वादिनो तथा स्थाविर ग्लान प्रमुखनो छती शक्तिऐ विनय वैयावच्च न करे (कहे जे म्हारी सेवा ऐणे पूर्वे करी नहोती ऐम ते धूर्त मायावी मलिन चित्तनो धणी पोताना वोध वीजनो नाश करनार अनुकंपारहित होय) तो महामोहनीय कर्म वांधे ।

२६, चार तीर्थनो भेद करे ऐवी कथा वार्त्ता प्रमुख (क्लेशरूप शास्त्रादिक) नो प्रयोग करे तो महामोहनीय कर्म वांधे ।

२७, पोतानी श्लाघा वधारवा तथा वीजा साथे मित्रता करवा अधर्मयोग ऐवा वशीकरण निमित्त मंत्र प्रमुख प्रयोजे, तो महामोहनीय कर्म वांधे ।

२८, जे कोई मनुष्य संवंधी भोग तथा देव संवंधी भोगने अतृप्तपणे गाढे परिणामथी आशक्त थई आस्वादन करे तो महामोहनीय कर्म वांधे ।

२९, महर्द्धिक महाज्योतिवान् महायशस्वी देवोना बल वीर्य प्रमुखनो अवर्णवाद बोले तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३०, अज्ञानी थको लोकमां पूजा (श्लाघा) नो अर्थी वैमानिक व्यंतर प्रमुख देवने नहीं देखतो थको कहे जे हुं देखुं छुं, तेवुं कहे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३० बोल तपस्या फलका पंचगुणो फल १ (एक) उपवासे एक (उपवास) नो फल २ (दोय) उपवासे पांच (उपवास) नो फल ३ (तेलानो) पचीसनो फल ४ (चोलानो) एकसो पचीस (उपवास) नो फल ५ (पांच) नो छव सें पचवीसनो फल, ६ (छव) नो इकतीससें पचीसनो फल ७ (सात) नो पनरे सहस्र (हजार) छव सें पचीसनो फल ८ (आठ) नो अट्ठोतर सहस्र एक सो पचीसनो फल ९ (नव) उपवासे तीन लाख नेउ सहस्र छवसें

॥ शुद्धि पत्र ॥

३० बोल तपस्याका फलका।

१४ उपवासे १२२ क्रोड ७ लाख ३१२५ उपवासरो फल जाणजो।

१७ उपवासे- १५ हजार क्रोड २५८ क्रोड ७८ लाख ६० हजार ६२५ उपवासरो फल जाणजो।

१८ उपवासे ७६ हजार क्रोड २६२ क्रोड ६४ लाख ५३ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो।

२० उपवासे—१६ लाख ७ हजार ३४८ क्रोड ६३ लाख २८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो।

२२ उपवासे---४ कोडाकोड ७६ लाख क्रोड ८३ हजार क्रोड ७१५ क्रोड ८२ लाख ३१२५ उपवासरो फल जाणजो।

२४ उपवासे---११६ कोडाकोड २० लाख

क्रोड ६२ हजार कोड ८६५ क्रोड ५० लाख ७८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो ।

२८ उपवासे—७४ हजार क्रोडाकोड ५०५ कोडाक्रोड ८० लाग्व क्रोड ५६ हजार क्रोड ६६२ कोड ३८ लाग्व २८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो ।

३० उपवासे (याने मास खामणरी तपस्या)---१८ लाख क्रोडाक्रोड ६२ हजार क्रोडाकोड ६४५ कोडाकोड़ १४ लाग्व क्रोड ६२ हजार क्रोड ३०६ क्रोड़ ६७ लाख ३ हजार १२५ (१८६२६४५१४६२३०६६७३१२५) उपवासरो फल जाणजो ।

पचीस नो फल १० (दश) उपवासे उग-
णीस लाख त्रेपन संहस्त्र एकसो पचवीसनो
फल ११ (इग्यारे) उपवासे सतांणुं लाख
पैसट्ठ सहस्त्र छवसें पचवीसनो फल १२
(वारे) उपवासे चार कोड अठासी लाख
अठावीस सहस्त्र एकसो पचीसनो फल
१३ (तेरे) उपवासे चोवीसक्रोड एकतालीस
लाख चालीस सहस्त्र छवसे पचवीसनो फल
१४ (चवदे) उपवासे एकसो बावीस कोड
सतरे लाख इकतीससो पचीस नो फल १५
(पनरें) उपवासे छवसो दश कोड पैत्रीस
लाख पनरे सहस्त्र छवसो पचवीसनो फल
१६ (सोलें) उपवासे त्रिण सहस्त्र कोड
एकावन कोडि पचोहत्तर लाख ७८ हजार
१२५ नो फल १७ (सतरे) उपवासे पनरे
सहस्त्र कोड वे सें कोड अट्ठावन कोड ७८
लाख ६० हजार छवसेंनो फल १८ (अट्ठारे)

उपवासे छोयंतर सहस्त्र कोड दोयसो कोड त्रिण कोड चोणाणु लाख त्रेपन हजार एक सो पचवीसनो फल १९ (उगणीस) उपवासे तीन लाख कोड इक्यासी सहस्त्र कोड चार सें कोड गुणातरकोड बहोतर लाख पैसट्ठ सहस्त्र छवसें पचवीसनो फल २० (वीस) उपवास उगणासट्ठ लाष सात सहस्त्र त्रिणसें अडतालीस कोडि तेसट्ठ लाख अठावीस सहस्त्र एकसो पचवीसनो फल २१ (इकवीस) उपवास पचाणु लाख कोडि छतीस सहस्त्र कोडि सात सें कोडि तयालीस कोड सोले लाख चालीस हजार (सहस्त्र) छव सें पचीसनो फल २२ (बावीस) उपवासे चार कोडाकोड बहोतर लाख कोड त्रयासी सहस्त्र कोड सातसें कोड पनरे कोड बयासी लाष एकतीससें पचवीस वास (उपवास) नो फल २३ (तेवीस) उपवासे

तेवीसे कोडाकोड चोरासी लाख कोड अट्ठारे सहस्र कोड पांचसे कोड उगणयासी कोड दश लाख पन्नरैं सहस्र छवसें पचवीसनो फल २४ (चोवीस) उपवासे एक सो उगणीस कोडाकोड वीस लाख कोड बाणुसहस्र कोड आठ्ठ सें कोड पचाणु कोड पचीस लाष अठ्ठोतर सहस्र एकसो पचवीसनो फल २५ (पचीस) उपवास पांच सो छिन्नु कोडाकोड चार लाख चोसठ्ठ सहस्र कोड च्यारसें कोड सतोतर कोड त्रेपन लाख नेउ सहस्र छवसे पचवीसनो फल २६ (छावीस) उपवासे गुणत्रीतसें असीकोडाकोड तेवीस लाष कोड बावीस सहस्र कोड त्रिणसें कोडि सत्यासी कोड उगणोत्तर लाख त्रेपन सहस्र एकसो पचवीसनो फल २७ (सतावीस) उपवासे चवदे सहस्र नवसे एक कोडा कोड सोले लाष कोड इग्यारे सहस्र कोड नवसें कोड अड़तीस

कोड सेंतालीस लाख पैसट्ठ सहस्र छवसें पचवीसनो फल २८ (अट्ठाइस) उपवासे चहोत्तर सहस्र पांच सें पांच कोडाकोड असी-लाख कोड उगणसट्ठ सहस्र कोड छव कोड बाणुकोड अड़तीस लाख अट्ठावीस सहस्र छकसो पचवीसनोफल २६ (उगणतीस) उपवासे तीन लाख बहोतर हजार पांचसें उगणतीस कोडाकोड दोय लाख कोड अट्ठाणु सहस्र कोड च्यारसें कोड इकसट्ठ कोड एकाणु लाख चालीस हजार छवसें पचवीसनो फल ३० (तीस) उपवासे अट्ठारे लाख कोडाकोड बासट्ठ सहस्र कोडाकोड छवसें कोडाकोड पैतालीस कोडाकोड चवदे लाख कोड बाणु सहस्र कोड तीनसें कोड सतानुं लाख तीन सहस्र एकसो पचवीसनो फल। इति तपस्या पंचगुणा गुणाकारनो फल जांणवो ॥

॥ एकतीसमो बोल ॥

३१ प्रकारे सिद्धना आदि गुण—आठ कर्मनी एकत्रिश प्रकृतिनो विजय ते एकत्रिश गुण, ते एकत्रिश प्रकृति नीचे मुजबः—

१ ज्ञानावरणीय कर्मनी पांच प्रकृति—१ मति ज्ञानावरनीय, २ श्रुत ज्ञानावरनीय, ३ अवधि ज्ञानावरनीय, ४ मनःपर्यव ज्ञानावरनीय, ५ केवल ज्ञानावरनीय ।

२ दर्शनावरनीय कर्मनी नव प्रकृति—१ निद्रा, २ निद्रानिद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचला प्रचला, ५ थीणद्धी (स्त्यानर्द्धि), ६ चक्षू दर्शनावरनीय, ७ अचक्षु दर्शनावरनीय, ८ अवधि दर्शनावरनीय, ९ केवल दर्शनावरनीय ।

३ वेदनीय कर्मनी बे प्रकृति—१ शाता वेदनीय, २ अशाता वेदनीय ।

४ मोहनीय कर्मनी बे प्रकृति—१ दर्शन मो-

हनीय, २ चारित्र मोहनीय ।

५ आयुष्य कर्मनी चार प्रकृति—१ नरक आयुष्य, २ तिर्यंच आयुष्य, ३ मनुष्य आयुष्य, ४ देव आयुष्य ।

६ नाम कर्मनी बे प्रकृति—१ शुभ नाम, २ अशुभ नाम ।

७ गोत्र कर्मनी बे प्रकृति—१ उच्च गोत्र, २ नीच गोत्र ।

८ अन्तराय कर्मनी पांच प्रकृति—१ दानांतराय, २ लाभांतराय, ३ भोगांतराय, ४ उपभोगांतराय, ५ वीर्यांतराय ।

॥ बत्तीसमो बोल ॥

साधुजीकी ३२ औपमा ।

३२—१ "कांसी पत्र इव"-जैसे कांसीके कटोरेमें पाणी भेदाय नहीं, तैसे मुनी मोह

मायासे भेदाय नहीं, २ 'शंख इव' जैसे शंख रंगाय नहीं, त्यों मुनी स्नेहसे रंगाय नहीं, ३ 'जीव गई इव' जैसे जीव परभवमें जावे उसकी गतिका कोई भंग कर सके नहीं, तैसे मुनी अप्रतिबंध विहारी होते हैं, ४ 'सुवर्ण इव' जैसे सोनेको काट (कीट) लगे नहीं, तैसे साधूको पाप रूप काट लगे नहीं, ५ 'भिंग इव' जैसे आरीसे (कांच) में रूप देखाय, तैसे साधु ज्ञान करके निज आत्मरूप देखे, ६ 'कुम्मो (काछवा) इव' जैसे किसी वनके सरोवरमें बहुत काछवे रहते थे, वो आहार करनेको बाहिर आते तब वनवासी बहुत जम्बुक (सियाल) उनको भक्ष करने आते थे, तब कितनेक काछबे तो ढाल नीचे अपने पांच ही अंग (चार पग पांचमा सिर) दबा लेते थे, जो होशियार थे वो सर्व रात्रि अपनी ढालके नीचे स्थिर रहते थे, और कितनेक पांच अंगमेंका एक बाहिर

निकालके देखते की जंबुक गये क्या ? उतनेमें ही वो छिपे हुवे पापी सियाल उसका अंग तोड़ उसे मार खा जाते थे, और जो स्थिर रहते वो दिन उदय भये सियाल गये पीछे, अपने ठिकाणे—सरोवरमें जाकर सुखी होते थे इसी तरह साधु पांच इंद्रीको ज्ञान रूपी ढाल नीचे, जीवे वहां तक दाब रखे, स्त्रीयादि भोगरूप सियालके ताबेमें नहीं पडे, और आयुष्य पूर्ण करके मोक्ष रूप सरोवर प्राप्त करे, ७ 'पद्मकमल इव' जैसे पद्म कमल कीचड़में उत्पन्न हो, जलमें वृद्धि पाकर पीछा पाणीसे लेपाय नहीं; तैसे साधु संसारमें पैदा होते हैं परन्तु संसारके भोगोंका त्याग किये पीछे संसारके भोगमें लिपाय नहीं, ८ 'गगणइव' जैसे आकाशको स्थंभ नहीं, निराधार ठेहरा है, तैसे साधु किसीका आश्रय इच्छे नहीं, ९ 'वायूइव' हवा एक ठिकाणे रहे नहीं, फिरती रहती है तैसे साधु

भी सदा फिरते रहे, १० 'चन्द्रइव' चन्द्रमा जैसे सदा निर्मल हृदयके धरणाहार और शीतल स्वभावी होवें ११ 'आइच्चइव' जैसे सूर्य्य अन्धकारका नाश करे तैसे साधु मिथ्यांध-कारका नाश करे, १२ 'समुद्रइव' जैसे समुद्रमें अनेक नदियोंका पाणी जाता है तोभी झलकता नहीं है; तैसे साधु, सबके शुभाशुभ वचन सहे, परन्तु कोप नहीं करे, १३ 'भारन्ड इव' भारन्ड पक्षीके दो मुख और तीन पग होते हैं, वो सदा आकाशमें रहता है, फक्त आहार निमित्त पृथ्वीपर आता है, तब पांखा फैलाकर बैठता है, और एक मुखसे चारोंहीं तरफ देखता है, कि कहीं मुझे किसी तरफसे उपसर्ग न हो जाय! और दूसरे मुखसे आहार करता है थोड़ी भी शंका पड़नेसे तत्क्षण उड जाता है, तैसेही साधु सदा संयममें रहे, फक्त आहार प्रमुख निमित्त गृहस्थके घरकों जावे,

तब द्रव्य दृष्टी तो आहारके सन्मुख रखे, और अन्तर दृष्टीसे अवलोकन करता रहे कि, मुझे किसी प्रकारका दोष न लग जाय, जो किंचित् ही दोष लगने जैसा देखे तो तत्क्षण वहांसे चले जावें, १४ 'मंदरइव' जैसे मेरूपर्वत हवासे कंपायमान न होवे तैसे साधु परिसह उपसर्गसे चलायमान न होवे, १५ 'तोय इव' जैसे शरद ऋतुका पाणी निर्मल रहे तैसे साधुका हृदय सदा निर्मल रहे, १६ 'खड़गीहत्थि इव' जैसे गेंडा हाथीके (गेन्डेके) एकही सिंग रहता है, उससे वो सबका पराजय कर सक्ता है, तैसे साधु एक निश्चय नयमें स्थिर हो कर सर्व कर्म शत्रुओंको पराजय करते हैं, १७ 'गंधहत्थि इव' जैसे गंध हस्थीको संग्राममें ज्यों ज्यों भालेका प्रहार लगता है, त्यों त्यों जास्ती जास्ती सूरा हो कर शत्र को पराजय करता है, तैसे साधु पर ज्यों ज्यों परिसह पड़े, त्यों त्यों जादा

जादा सूरा होकर कर्म शत्रुका पराजय करे, १८ 'वृषभ इव' जैसे मारवाडका धोरी वैल, लिया हुवा भार प्राण जाते भी वीचमें डाले नहीं तैसे साधु पांच महाव्रत रूप महा भार प्राण जाते भी जीवे वहां तक फेंके नहीं १६ 'सिंह इव' जैसे केशरी सिंह किसी पशुका डराया डरे नहीं, तैसे साधु किसी पाषंडियोंसे चलायमान होवे नहीं, २० 'पृथ्वी इव' जैसे पृथ्वी शीत, उष्ण, अच्छा, बुरा सब समभाव सहन करे तथा पूजनेवाले और खोदनेवालेकी तर्फ समभाव रखे, तैसे साधु शत्रु, मित्र पर समभाव रखे निंदक वंदनीकको एकसा उपदेश करके तारे, २१ 'वन्ही इव' घृतके सींचनेसे अग्नि जैसे दिप्त होती है, तैसे साधु ज्ञानादि गुण करके दिप्त होवे, २२ 'गोशीर्ष चंदन इव' जैसे चन्दन काटे तथा जलावे उसको जास्ती सुगंध देवे, तैसे साधु परिसह

उपसर्ग उपजाणेवालेको अपना कर्म काटने-वाला जाणी समभाव उपसर्ग सहन करे फिर उसको ही उपदेश देकर तारे, २३ 'दह इव' द्रह चार प्रकारके—१ केशरी प्रमुख वर्षधर पर्वतकी द्रहमेंसे पाणी निकलता है परन्तु बाहिरका पाणी उसमें आता नहीं है; तैसे कोई साधु दूसरेको ज्ञान सिखाते हैं, परन्तु आप दूसरेके पास सीखते नहीं हैं, २ समुद्रमें पाणी आता है, परन्तु निकलता नहीं है; तैसे कितनेक साधु दूसरेके पास ज्ञान सीखते हैं, परन्तु सिखाते नहीं हैं, ३ गंगा प्रापात कूंड प्रमुखमें पाणी आता भी है और जाता भी है; तैसे कितनेक साधु ज्ञान पढ़ते हैं और पढ़ाते भी हैं, ४ आढाइ द्वीपके बाहिरके समुद्रमें पाणी आता भी नहीं है, और निकलता भी नहीं है; तैसे कितनेक साधु पढ़ते भी नहीं हैं, और पढ़ाते भी नहीं हैं, तथा जैसे द्रहका पाणी

अखूट होता है, तैसे साधु भी अखूट ज्ञानके धारक (धरणहार) होते हैं, २४ 'खिल्लीइव' जैसे खुंटा ठोकते एकही दिशामें प्रवेश करे, तैसे साधु एकांत मोक्ष मार्गके सन्मुख होकर प्रवर्ते, २५ 'शून्यगृहइव' जैसे गृहस्थ शून्य (सुने) घरकी संभाल नहीं करे, तैसे साधु शरीरकी संभाल नहीं करे, २६ 'दीवेइव' जैसे समुद्रमें पड़े हुये प्राणीको द्वीप का आधार होता है, तैसेही संसार समुद्रमें पड़े हुये प्राणीको त्रस-स्थावर सब जीवोंका साधु आधारभूत अनाथों के नाथ होते हैं, २७ 'शस्त्रधारइव' जैसे पाछणे (शस्त्र)की धार एकही दिशा विघ्न निवारके आगे चढती है, तैसे साधु कर्म शत्रुका निकंदन करते एकांत आत्मकल्याणके मार्गमें चलते हैं, २८ 'सप्पइव' जैसे सर्प कांटेसे डरे, तैसे साधू कर्मबंधके कारणसे डरे, २६ 'सकूणइव' जैसे पक्षी रातको बासी न रखे, तैसे साधू चार

ही आहार रातको पास न रखे, ३० 'मिग्गइव' जैसे मृग नित्य नये स्थान भोगवे, शंकाके ठिकाणे विश्वास न करे, तैसे साधू नित्य विहारी रहे, और शंकाके ठिकाणे दोष लगने के स्थान किंचित ही विश्वास नहीं करे, ३१ 'कठइव' जैसे लकड, काटनेवालेको और पूजने वालेको दोनोंको एक माफक (सम) जाने तैसे साधू शत्रु मित्रको सम (एक सरषा) जाणे, ३२ 'स्फटिक रयणाइव' जैसे स्फटिक रत्न बाहिर भीतर एकसा निर्मल तैसे साधू बाह्य अभ्यंतर सरीखी वृत्ति रखे, कपट क्रिया न करे, ऐसी और भी अनेक उत्तम पदार्थोंकी ओपमा साधुको दी जाती है, जैसे पारशमणि, चिंतामणी, काम कूंभ, कल्पवृक्ष, चित्रवेली, (चित्रवेल) इत्यादि पदार्थ जिसके पास होय, उसका मनोरथ सिद्ध करे, तैसे साधूजी भी भव्यजीवों को ज्ञानादि गुण देकर उनके मनोरथ

सिद्ध करे, जैसे बिन छिद्र (छेद) की झाझमें जो बैठे उसको वो पार पहुंचाती है, तैसे साधु कनक कांतारूप छिद्र करके रहित हैं वो, उनके आश्रितोंको, संसार समुद्रके पार करते हैं, जैसे फलित झाडको पत्थर मारनेसें वो फल देता हैं, तैसे साधू अपकारियों पर ही उपकार करते हैं, इत्यादि अनेक औपमा दी जाती हैं, इत्यादि अनेक शुभ उपमा युक्त, आत्मार्थी, लुखवर्ती, महा पंडित, धर्म मंडित, सुर-वीर-धीर सम—दम—यम—उपसमवंत, अनेक तपके करनहार, अनेक आसनके साधणहार, संसार को पीठ देकर मोक्षके सन्मुख हुवे सर्व जीवों के हितार्थी, अनेका अनेक गुणके धारी, साधुजी महाराजको मेरा त्रिकाल त्रिकरण शुद्ध नमस्कार हो जो !

बत्रिश प्रकारे योग संग्रह—(१) जे कांई पाप लाग्युं होय तेनुं प्रायश्चित लेवानो संग्रह

करवो, (२) जे कोई प्रायश्चित ले तो बीजने नहि कहेवानो संग्रह करवो, (३) विपत्ति आए धर्मविषे दृढ़ रहेवानो संग्रह करवो, (४) निश्रा रहित तप करवानो संग्रह करवो, (५) सूत्रार्थ ग्रहण करवानो संग्रह करवो, (६) शुश्रूषा टालवानो संग्रह करवो, (७) अज्ञात कुलनी गौचरी करवानो संग्रह करवो, (८) निर्लोभी थवानो संग्रह करवो, (९) बावीस परिसह सहवानो संग्रह करवो, (१०) सरल निखालस स्वभाव राखवानो संग्रह करवो, (११) सत्य संयम राखवानो संग्रह करवो, (१२) सम्यक्त्व निर्मल राखवानो संग्रह करवो, (१३) समाधिथी रहेवानो संग्रह करवो (१४) पंच आचार पालवानो संग्रह करवो, (१५) विनय करवानो संग्रह करवो, (१६) धृति राखवानो संग्रह करवो, (१७) वैराग्य रखवानो संग्रह करवो, (१८) शरीरने स्थिर

राखवानो संग्रह करवो, (१९) सुविधि-सारा अनुष्ठाननो संग्रह करवो, (२०) आश्रव रोकवानो संग्रह करवो, (२१) आत्माना दोष ठालवानो संग्रह करवो (२२) सर्व विषयथी विमुख रहेवानो संग्रह करवो, (२३) प्रत्याख्यान करवानो संग्रह करवो, (२४) द्रव्यथी उपाधि त्याग, भावथी गर्वादिकनो त्याग करवो (२५) अप्रमादी थवा संग्रह करवो (२६) काले काले क्रिया करवानो संग्रह करवो, (२७) धर्मध्याननो संग्रह करवो, (२८) संवर योग नो संग्रह करवो (२९) मरण आतंक (रोग) उपज्ये मनने क्षोभ न करवानो संग्रह करवो, (३०) स्वजनादिकनो त्याग करवानो संग्रह करवो, (३१) प्रायश्चित लीधुं होय ते करवानो संग्रह करवो, (३२) आराधिक पंडितनु मृत्यु थाय तेम आराधना करवानो संग्रह करवो।

पाठान्तर।

१ जो दोष लगा होय सो तुर्त गुरुके आगे कहदे, २ शिष्यका दोष गुरु दूसरेके आगे प्रकाशे नहीं, ३ कष्ट पड़े धर्ममें दृढ़ रहे, ४ तपस्या करके इस लोकके (यश महिमादिक) और परलोकके (देवपद राज्यपदादिक) सुखकी वाञ्छा करे नहीं, ५ असेवन (ज्ञानाभ्यास संबन्धी) ग्रहना (आचार गोचार संबन्धी) शिक्षा (शिखामण) कोई देवे तो हितकारी माने, ६ शरीरकी शोभा विभूषा नहीं करे, ७ गुप्त तप करे (गृहस्थको मालम न पड़ने देवे) तथा लोभ नहीं करे, ८ जिन जिन कुलमें भिक्षा लेनेकी भगवानकी आज्ञा है उन सब कुलोंमें गोचरी (भिक्षा लेने) जावे, ९ परिसह उत्पन्न हुए चड़ते प्रणामसे सहन करे, क्रोध न करे, १० सदा सरल-निष्कपटपणे प्रवर्ते ११ संयम

(आत्मदमन) करता रहै, १२ समकित (शुद्ध श्रद्धा) युक्त रहे, १३ चित्तको स्थिर रखे, १४ ज्ञानाचार—दर्शनाचार—चारित्राचार--तपाचार --विर्याचार, इन पंचाचारमें प्रवर्तें, १५ विनय (नम्रता) सहित प्रवर्तें, तप--जप--क्रियानुष्टाने में-सदा वीर्य--पराक्रम फोड़ता रहे, १७ सदा वैराग्य सहित रहे, १८ आत्मगुण (ज्ञानदर्शन चारित्र) को निध्यान (द्रव्यके खजाना) जैसा बंदोबस्त करके रखे १९ पासथ्था (ढिला--शिथिल) के परिणाम न लावे, सदा वर्धमान परिणामी रहे, २० उपदेश द्वारा सदा सम्बर की पुष्टी करे, २१ अपनीआत्माके जो जो दुर्गुण दृष्टि आवे उनको टालने (निकालने) का उपाय करता रहे, २२ काम (शब्द—रूप) भोग (गंध--रस--स्पर्श) का संजोग मिले लुब्द न होवे, २३ नित्य यथाशक्ति नियम अभिग्रह त्याग वैराग्यकी वृद्धि करते रहै, २४ उपधी

(वस्त्र—पात्र—सूत्र—शिष्य इत्यादिकका) अहंकार—अभिमान नहीं, २५ पांच प्रमाद १ मद (जातिमदादि आठ मद) २ विषय (पांच इंद्रीका २३ विषय २४० या २५२ विकार) ३ कषाय (क्रोधादि कषायके ५२०० भांगे) ४ निंद्रा नींद कमी लेवे, ५ विकथा (स्त्रीकी--राजाकी—देशकी-भोजनकी ए ४ प्रकारकी कथा नहीं करे) यह पांच ही प्रमादको सदा वर्जे, २६ थोड़ा बोले और कालोकाल क्रिया करे, २७ आर्त ध्यान और रौद्र ध्यान वर्जकर, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान ध्यावे, २८ मन—वचन—काया सदा शुभ काममें प्रवर्तावे, २९ मरणांतिक वेदना प्राप्त हुए भी प्रणाम स्थिर रखे, ३० संसारसुं विरक्ति भाव आये सर्व स्वजनादिक का त्यागन करे, ३१ सदा आलोयणा—निंद-णा (गुरु आगे गुप्त पाप प्रकाशके अपनी आत्माकी निंदा करे, ३२ अंत अवसर जाण

संथारो करे, आहार और शरीरका त्याग कर समाधि भावसे देहोत्सर्ग करे,

३२ दोष टालीने गुरु महाराजने वंदणा करणी ते दोष कहे छे :—

१ उकडुं बेठो वांदे तो दोष २. नाच तो वांदे तो दोष ३ सघलाने एकठा वांदे तो दोष ४ रजो हरणो अकुंस जिम राखे वांदे तो दोष ५ ग्रही कपड़ा उंचा करीने वांदे तो दोष ६ चपल पणे वांदे तो दोष ७ माछलानी परे उलट पलट होयने वांदे तो दोष ८ मनमे गुण छांडी अवगुणी होय वांदे तो दोष ६ कपटपणो सुं वांदे तो दोष १० डर तो वांदे तो दोष ११ जे मुझने अमुको मान देसे यह कारण वांदे तो दोष १२ साख करी वांदे तो दोष १३ गर्व करी वांदे तो दोष १४ इह लोकने हितकारी वांदे तो दोष १५ चोरनी परे वांदे तो दोष १६ प्रतंग्या हेते वांदे तो दोष १७ ॥

सासतां वांदताही जाय (वे रीतीसे) तो दोष १८ विश्वास उपजावा हेते(अर्थे) वांदे तो दोष १६ बचन हिल तो वांदे तो दोष २० विकथा करतो वांदे तो दोष २१ दृष्टी तिरछी राखतो वांदे तो दोष २२ कोइ साधु देखे कोइ न देखे वांदे तो दोष २३ क्या करिये वांदिया बिना छुटतानथी एसी जाण कर वांदे तो दोष २४ एकने घाट बांदे एकने जादारीतसुं वांदे तो दोष २५ गुरु तो नीचे आसण अने बंदणा करणे वालो उंचे आसण बेठो वांदे तो दोष २६ बेठो बेठो वांदे तो दोष २७ हस्तो हस्तो वांदे तो दोष २८ रजोहरण आगो पाछो कर तो बांदे तो दोष २६ असमाधीयो होयने वांदे तो दोष ३० गुरुनेकावस्सग्गमें बेठाने वांदे तो दोष ३१ पेली समाधी साता पूछे पछे वांदे तो दोष ३२ गुरु महाराजने रसते चालता उभा राखी वांदे तो दोष ॥

———

॥ तेंत्रीसवां बोल ॥

३३ प्रकारे आशातना—(१) शिष्य, रत्नाधिक (बड़ा) गुरुनी आगल अविनयपणे चाले ते आशातना, (२) शिष्य बड़ानी (गुरुनी) बराबर चाले ते आशातना, (३) शिष्य बड़ानी पाछल अविनयपणे चालेतेआशातना, (४) (५) (६) ए प्रमाणे बड़ानी आगल, बराबर ने पाछल अविनयपणे ऊभो रहे ते आशातना, (७) (८) (९) ए प्रमाणे बड़ानी आगल बराबर ने पाछल अविनयपणे बेसे ते आशातना, (१०) शिष्य बड़ानी साथे बाहिर भूमि जाय ने बड़ा पहेलां शुचि थई आगल आवे ते आशातना (११) वडा साथे बहिर (वाहिर) भूमि जई आवी इरियापथिका पहेलां प्रतिक्रमे ते, आशातना (१२) कोई पुरुष आवे ते बड़ाने बोलाववा योग्य छे तेवुं जाणीने पहेलां पोते

बोलावे ने पछी वडा बोलावे ते आशातना (१३) रात्रिए वडा बोलावे के अहो आर्य ! कोण निद्रामां छे ने कोण जाग्रत छे ? तेवुं बोलतां सांभलीने उत्तर न आपे ते आशातना (१४) अशनादि वेहरी लावीने प्रथम अन्य शिष्यादिनी आगल कहे पछी वड़ा आगल कहे तो आशातना (१५) अशनादि लावीने प्रथम अन्य शिष्यादिने बतावे पछी वड़ाने बतावे ते आशातना (१६) अशनादि वहोरी (वेहरी) लावीने प्रथम अन्य शिष्यने आमंत्रण करे पछी वड़ा ने आमंत्रण करे ते आशातना (१७) वड़ा साथे अथवा अन्य साधु साथे अन्नादि वहोरी लावी वड़ाने के वृद्ध साधूने पूछया विना पोतानो जेना उपर प्रेम छे तेओने थोडुं थोडुं वहेंची आवे ते आशातना (१८) वड़ा साथे जमतां त्यां सारुं सारुं पत्र, शाक, रससहित मनोज्ञ,

उतावल थी जमे (जीमे) तो आशातना (१६) वड़ाना बोलाव्या छतां सांभलीने मौन रहे ते आशातना (२०) बडाना बोलाव्या छतां पोताना आसने रही हा कहे, परन्तु काम बतलावसे तेवा भय थी बडा पासे जाय नहीं ते आशातना, (२१) बडाना बोलाव्या थी आवे ने कहे के शुं कहो छो? एवुं मोटासाथे अविनय थी कहे ते, आशातना (२२) वडा कहे के आ कार्य तमे करो, तमोने लाभ थसे त्यारे शिष्य वडाप्रति कहे के तमेज करो तमोने लाभ थाशे ते आ-शातना, (२३) शिष्य वडा प्रत्य कठोर, कर्कश भाषा वापरे ते आशातना, (२४) शिष्य वडाने, जेम वडा शब्द वापरे तेवा शब्दो तेवीज रीते वापरे ते आशातना (२५) वडा धर्म व्याख्यान आपता होय त्यारे सभामां जाई बोले के तमो कहो छो ते कयां

छे? ऐम कहे ते आशातना, (२६) वडा धर्म व्याख्या कहेतां शिष्य कहे के तमो भूली गया छो ते आशातना, (२७) वडा धर्म व्याख्या आपतां शिष्य पोते सारुं न जाणी खुश न रहे ते आशातना (२८) वडा धर्म व्याख्या आपतां सभामां भेद थाय तेम अवाज करी बोली उठे के वखत थई गयो छे, आहारादि लेवा जवानुं छे विगेरे, कही भंग करे ते आशातना, (२९) वडा धर्म व्याख्या आपतां श्रोताओनां मनने नाखुशी उत्पन्न करे ते आशातना (३०) वडानुं धर्म व्याख्यान बंध थयुं न होय तेटलामां शिष्य पोते व्याख्यान शरु करे ते आशातना (३१) वडानी शय्या-पथारीने पगे करी घसे, हाथे करी आस्फालन करे ते आशातना, (३२) वडानी शय्या, पथारी उपर ऊभो रहे, बेसे, सूवे ते आशातना, (३३) वडाथी उच्च

आसने के बरावर आसने बेसवुं, उभा रहेवुं, सूवुं वगेरे करे ते आशातना, यह ३३ गुरु आसातना जाणीजे।

पाठन्तर।

३३ गुरुकी आशातना—तीन चालणेकी—गुरुके आगे चाले १, गुरुके वरोवर चाले २, गुरुके पाछे अडतो चाले ३, ऐसी तीन आशातना खड़े रहणेकी ६, ऐसी तीन वेसणेकी ९, दिशा गए गुरुसुं पहला हाथ धोवे तो आशातना १०, घडासाथ वाहारली भूंमीका जायकर आयां, गुरुके पहली इरियावही पडिकमें तो आशातना ११, गुरु प्रश्न करता होय विचमें बोले तो आशातना १२, गुरुके पास सुता होय गुरु वोलावे जागता न बोले तो आ-

शातना १३, आहार पाणी ल्यायकर गुरु थकी पहली छोटा जतिकुं देखावे तो आशातना १४, गुरु पहली छोटा जति (शिष्य) कने आलोवे तो आशातना १५, गुरु पहली छोटा शिष्य (यति) कुं आमंत्रे तो आशातना १६, गुरुकी आज्ञाविना छोटा यति तथा अनेरा साधुकुं आहार पाणी देवे तो आशातना १७, गुरु शिष्य आहार पाणी करता होय सरस सरस आपखावे निरस, निरस गुरुकुं देवे तो आशातना १८, गुरु बुलावे बोले नहीं तो आशातना १६, गुरु बुलावे आसण बेठां जबाब देवे तो आशातना २०, गुरु बुलावे तो कहे तुं क्या कहै छै तो आशातना २१, गुरुने तुंकारा देवे तो आशातना २२, गुरुने रे तुं अयोग वचन बोले तो आशातना २३, गुरुने उत्तर पडुत्तर देवे तो आशातना २४, गुरु अर्थ करता होवे तिवारे

भरी सभामें कहे इम छे इम नहीं तो आशातना २५, गुरु सूत्र पाठ कहेता हुवे तिवारे भरी सभामें कहे इम नहीं इम छे तो आशातना २६, गुरु कथा कहेता हुवे चेलो भली नहीं जाणे खुशी न हुवे तो आशातना २७, गुरु कथा कहेता परखदामें भेद पाडे तो आशातना २८, गुरु कथा कहेतां हुवे शिष्य कहे आहारकी वेला थइ छै वखान उठा दो क्युं नहीं? इम कहे तो आशातना २६, गुरु कथा कही वाही कथा बणाय बणाय कर आछीतरेसुं कहे तो आशातना ३०, गुरुके आसणसुं ऊंचा आसण बैठै तो आशातना ३१, गुरुके बरोबर आसण करे तो आशातना ३२, गुरुके आसणकुं पग लगावे तो आशातना ३३।

३३ बोल परम कल्याणका—१ तपस्या करीने नीयाणो न करे तो जीवरो परम कल्याण हुवे

किणनी परे तामलीतापसनी परे, २ समकित नीरमल पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे श्रेणिक राजानी परे, ३ मन वचन कायानो योग शुभ प्रवरतावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गजसुकमालनी परे, ४ छती सक्ती क्षमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे परदेशी राजानी परे, ५ पांच महाव्रत निरमला पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गौतमस्वामीनी परे, ६ कायरपणो छोड़े सुरपणो आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सेलक मुनीराजनी परे, ७ पांच इन्द्रियोंने वस करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे हरिकेसी मुनिराजनी परे, ८ माया कपटाई छाड़े (छोडे) तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मल्लीनाथजीना छए मित्रनी

परे, ९ खरे धर्मनी आस्ता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे वर्ण नामे नटनी परे, १० चरचा वारता करीने सरदहणा सुद्ध करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे केसीमुनी, गौतमस्वामीनी परे ११ दुखी देखीने करुणा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मेघरथ राजा मेघ कुमाररे पाछले हाथीरे भवनी परे १२ खरे वचनरी आसता राखे तो जीवरो परम कल्यान होवे किणनी परे आणंदजी कामदेव श्रावकनी परे, १३, अदत्तादान त्यागे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अमरजीरे सातसे शिष्यनी परे, १४ शुद्ध मन सील पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सुदरशण शेठनी परे, १५ ममता छोडीने समता आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे कपील

ब्राह्मण (कपिल मुनि) नी परे, १६ सुपात्रने दान देवे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे रेवतीजी गाथापतणीनी परे, १७ चलीय चितने थिर करावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे राजिमतीनी परे, १८ उत्कृष्टो तप करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे धनाजी अणगारनी परे, १६ उत्कृष्टी वैयावच करे तो जीवरो परम कल्याण होवे कीणनी परे पंथकजीनी परे, २० अनित्य भावना भावे तो जीवरो परम कल्याण हुवे किणनी परे भरतेश्वर चक्रवर्त्तीनी परे, २१ उत्कृष्टी क्षमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अरजनमालीनी परे, २२ जिन धर्मरी आशता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अरणीक-जीनी परे, २३ चार तीर्थने साता उपजावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे

तीजे देवलोकरे इन्द्ररे पाछले भवनी परे, २४ उत्कृष्टो वीनो करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे वाहुवलजीनी परे, २५ उत्कृष्टि दलाली करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे कृष्ण महाराजनी परे, २६ उत्कृष्टो अभिग्रह करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे ढंढण मुनिराजनी परे, २७ शत्रु मित्र उपर सरिषा भाव राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे उदाइ राजानी परे, २८ अनर्थरो हेतु जाणीने दया पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे धर्मरुची अणगारनी परे, २६ कष्ट पड्या शीलमें दृढ रहे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे चन्दनबाला वा उणकी मातानी परे, ३० रोग आया हायओह न करे तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे अनाथिजीनी

परे, ३१ आश्रवमें संवर निपजावे तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे संजती राजानो परे, ३२ परिसह आया समभाव वर्ते तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे मेतार्यजीनी परे, ३३ चलिये चीत्तने थीर करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे रिट्ठनेमिजीनी परे।

॥ चौतीसमां बोल ॥

३४ असज्झायरो सवैयो, तारो टुटे, रातिदिशा, अकाले मेह गाजे, बीज, कडके अपार, और भुमी कंपा भारी है, बालचन्द्र, ज़खचेन, आकाशे अगनकाय, काली धोली धुंध, और रजुघात न्यारी है, हाड, मांस, लोही, राध, ठंडले मसाण बले, चंद्र, सूर्य ग्रहण, और

राज्य मृत्यु टाली है, थानकमें मरयो पड्यो पंचेंद्री कलेवर, ए बीस-बोल टाल कर ज्ञानी आज्ञा पाली है, असाढ, भादु, आसु, काती, चैती, पुनम जाण। इणथी लगती टालीये, पडुवा पांच वखाण॥ पडवा पांच वखाण सांज सवेर मध्य न भणीये, आधी रात दोष हर, सर्व मिल चौतीस गिणिये॥ चौतीस असभाइ टालके सूत्र भणसी सोय। ऋषि लालचंद इणपरि कहे ताके विघन न व्यापे कोय ३४।

३४ असभाईके नाम १ उक्कावाय कहता तारा तुटें तो एक पोहर असभाई २दिशादाहा कहता फजर और शामको दिशा लाल रंगकी रहे वहां तककी असभाई ३ गजिया कहता गर्जना होवे तो एक मुहूर्तकी असभाई ४ विज्जुए कहता विजली होनेसे दोय पोहर (प्रहर) असभाई परंतु गाज और विजलीकी

आद्रा नक्षत्रसे स्वाति नक्षत्र तक असज्झाई नगिणना और सदा गिणना ५ निग्घाए कहता कडकेतो आठ प्रहर की असज्झाई ६ जुवे कहता बालचंद्र शुक्ल पक्षकी पडिवा द्वितीया त्रितीया ए तीन रातमें चंद्रमा रहे वहांतककी असज्झाई ७ जरकाले कहता आकाशमें मनुष्य पशु पिशाचादिक के चिन्ह दिखे वहांतक असज्झाई ८ धुम्मीए कहता काली धूंहर पड़े वहांतक असज्झाई ६ महिये कहता श्वेत धूंवर (मेगरवा) पड़े वहांतक असज्झाई १० ऊधाए कहता आकाशमें धूलका गोटा (दोटा) चढ़ा हुवा दिखे वहांतक असज्झाई ११ मंस० कहता मांस दृष्टिमें आवे वहांतक असज्झाई १२ सोणी कहता रक्त (लोही) दृष्टिमें आवे वहांतक असज्झाई १३ अठी कहता अस्थी (हडी) दृष्टि में आवे वहांतक असज्झाई १४ उच्चार कहता

भिष्टा दृष्टिमें आवे वहांतक असझाई १५ सुसाण कहता श्मशानके चारो तरफ १०० १०० हाथ असझाई १६ राय मरणे कहता राजाके मृत्युकी दूसरो राजा बैसे उठेतक हड़ताल रहैं वहांतक असझाई १७ रायवुगय कहता राजाओंका युद्ध होवे वहांतक असझाई १८ चंदवरागे कहता चंद्रग्रहण होय तो जगन ४ उत्कृष्टी ८ प्रहर खग्रास होनेसे १२ प्रहर थोड़ा ग्रहण होनेसे कमी काल समझना १६ सुरोवरागे कहता सूर्य्य ग्रहण होय तो १२ प्रहर २० उवसंतो कहता पंचेंद्रियका कलेवर निर्जीव देह पड़ा होवे तो चारो तरफ १००-१०० हाथ असझाई २१ आश्विन सुदि पूर्णीमा असझाइ २२ कार्तिक वदी प्रतिपदा (प्रथमा) असझाइ २३ कार्तिक सुदि पूर्णिमा असझाई २४ मृगशीर्ष प्रतिपदा असझाइ २५ चैत्र सुदी पूर्णीमा

असझाइ २६ वैसाख वदी प्रतिपदा असझाइ २७ आषाढ सूदी पूर्णीमा असझाइ २८ श्रावण वदि प्रतिपदा असझाइ २९ भाद्र सुदि पूर्णीमा असझाइ ३० आश्विन वदि प्रतिपदा ये १०, दिन और रात संपूर्ण असझाइ पालना ३१ प्रभात ३२ दो प्रहर (मध्यान्ह) ३३ शाम ३४ मध्य रात्री ये ४ वक्त शेषकी (छेहली) ३१-३२-३३-३४ वी, एकेक मुहूर्त असझाइ ये ३४ असझाइ टालकर सूत्र भणना ।

॥ पैंतीसमो बोल ॥

अर्हंतकी वाणी के ३५ गुण ❋।

१ संस्कारयुक्त वचन बोले, २ उच्च स्वरसे बोले, जिसको एक योजन तक बैठी हुई परिषदा अच्छी तरहसे श्रवण करती हैं, ३ सादी भाषामें परन्तु मानपूर्वक शब्दोंमें न बोले; "रे,तु! " इत्यादि तुच्छकार वाचक शब्द नहीं बोले, ४ जैसे आकाशमें महा मेघका गर्जारव होता है, ऐसे ही प्रभुकी वाणी भी गंभीर होती है; और वाणीका अर्थ भी गंभीर-गहन-उंडा होता है, अर्थात उच्चार और तत्व दोनोंमें गंभीर वाणी बोलते हैं, ५ जैसे गुफामें व शिखरबंध

नोट— ❋ प्रभुकी वाणीके ये गुणोंकी तरफ हरएक उपदेशक को ध्यान लगाना चाहिये, युरोपीयन वक्ताओं श्रोतागणपर प्रबल असर करते हैं उसका सबब यह है कि वे लोग उपदेश देनेकी रितीका अभ्यास करते हैं।

प्रसादमें जाकर बोलनेसे प्रति छंद अर्थात् प्रतिध्वनि होती है, ऐसे ही प्रभुकी वाणी भी प्रतिध्वनि करती है (Thundering tone) ६ सरस अथवा स्निग्ध बचन बोले, ७ रागयुक्त बोले-६ राग और ३० रागणीमें उपदेश देवे, जिससे श्रोतागण तल्लीन हो जावें, (Harmonious tone) जैसेकी वीणासे मृग और पुंगीसे सर्प तल्लीन हो जाता है, (यह सात अतिशय उच्चारके बारेमें कहा, अब अर्थ सम्बन्धी अतीशय):—८ थोड़े शब्दोंमें विशेष अर्थका समास करके बोले; इस लिये भगवान के वाक्योंको 'सूत्र' कहे जाते हैं, ६ परस्पर बिरोध रहित बचन बोले; एक वक्त 'अहिंसा परमो धर्म' ऐसा कह कर, धर्म निमित्त हिंसा करनेमें दोष नहीं" ऐसा विरोधवाला वाक्य प्रभु कभी नहीं बोलते हैं, १० जुदा २ अर्थ प्रकाशे, जो परमार्थ चला है उसको पूरा करके

फिर दूसरा प्रकाशे, परंतु गडबड करे नहीं, ११ संशय रहित वचन कहै, ऐसे खुलासे से फरमावे कि सुननेवालेको बिलकुल संदेह नहीं रहै, १२ दोषरहित वचन बोले, अर्थात् स्वमति-अन्यमति बडे बडे पंडित जन भी प्रभुके बचनमें किंचित् मात्र दोष नहीं निकाल सके १३ सर्व को सुहाता ❋ वचन कहे कि जिसको सुनते ही श्रोताका मन एकाग्र हो जाय, १४ देश-काल उचित बोले अर्थात् बड़े विचक्षणतासे समय विचारके बोले, १५ मिलते बचन कहै, अर्थका विस्तार तो करे, परंतु अट्टम सट्टम कहकर वख्त पूरा न करे, १६ तत्व प्रकाशे, जीवादि नव पदार्थका स्वरूपसे मिलता वचन कहे, तथा सारसार कहै असारको छोड़ दे, १७ संक्षेपसे कहै, अर्थात् पदके अगाड़ी दूसरा पद थोड़ेमें

नोट— ❋ वेद भी कहता है कि:—" सत्यं ब्रूहि, प्रियं ब्रूहि" अर्थात् सत्य ऐसा बोलो कि जो सुननेवालेको प्रिय भी लगे।

पुरा कर दे, तथा निःसार बात संसारीक क्रियादिककी थोड़ेमें पुरी करे विस्तार नहीं करे १८ बात रूप कहे-ऐसा खुला अर्थ प्रकाश करे कि छोटासा बालक भी मतलब समझ जाय, १९ स्वश्लाघा और परनिंदा रहित प्रकाशे, देशनामें अपनी स्तुती और अन्यकी निंदा नहीं करे, ('पाप'की निंदा करे परंतु 'पापी'की निंदा नहीं करे) २० मधुर वाणीसे उपदेश करे, दूध और मिश्रीसे भी अधिक मिष्टता-माधूर्यता प्रभुकी वाणीमें है, इसलिये श्रोता जन व्याख्यान छोड़कर जाना पंसद नहीं करते, २१ मर्मकारी बचन न कहे, जिससे किसीकी छानी बात खुली होवे ऐसी बात न करे, २२ योग्यता देखकर गुणकी प्रसंसा करे, खुशामद न करे, योग्यतासे अधिक गुण न कहे, २३ सार्थ धर्म प्रकाशे, जिससे उपकार होवे, तथा आत्मार्थ सिद्ध होवे ऐसा कहे, २४ अर्थका

तुच्छपणा न करे अर्थात् छिन्न भिन्न करके न फरमावे, २५ शुद्ध बचन कहे; व्याकरणके नियमानुसार शुद्ध भाषा प्रकाशे, ❋ २६ मध्य स्थपणे प्रकाशे अर्थात् बहुत जोरसे भी नहीं, बहुत जलदीसे भी नहीं, और बहुत धीरेसे भी नहीं, इस तरह बोले, २७ श्रोताजनोंको प्रभुकी वाणी चमत्कारी लगे कि "हा हा! प्रभूके फर-मानेकी क्या चतुरताई और क्या शक्ति है!" २८ हर्षयुक्त कहे, जिससे सुननेवालेको हूबहु (वैसाका वैसाही) रस प्रगमें २६ विलंब रहित कहे, बिचमें विश्राम नहीं लेवे, ३० सुननेवाला जो प्रश्न मनमें धारकर आया होवे, उसका विना पूछे ही खुलासा हो जावे इस तरह प्रकाशे, ३१

नोट— ❋ व्याकरणका कितनी जरूरत है सो इस परसे ध्यानमें लेना चाहिये, अशुद्ध वाणीमें अर्थ हितकारक होनेपर भी श्रोतागणके हृदयमें बात जचती नहीं है, इस लिये उपदेशक वर्ग को लाजिम है कि भगवानके गुणोंका अनुकरण करना और गुरुकी आज्ञानुसार व्याकरण भी पढ़ना।

अपेक्षा बचन कहे; एक बचनकी अपेक्षासे दूसरा बचन कहे, और जो फरमावे वो श्रोताके हृदयमें ठसता जावे, ३२ अर्थ—पद-वर्ण-वाक्य सर्व जुदे जुदे फरमावे, ३३ सात्विक बचन प्रकाशे इंद्रादिक बड तेजस्वी प्रतापी आ जावे तो भी डरे नहीं, ३४ जो अर्थ फरमाते हैं, उसकी सिद्धी जहांतक न होवे वहांतक दूसरा अर्थ निकाले नहीं, एक बात दृढ़ करके दूसरी बात पकड़े, ३५ चाहे कितना लंबा समय उपदेशमें चला जावे तो भी थके नहीं, उत्साह बढ़ता ही रहे ।

॥ छत्तीशमां बोल ॥

३६ आचार्यके छत्तीस गुण—पांच महाव्रत पालें ५, पांच इन्द्रि जिते १०, च्यार कषाय निवारे

१४, पांच आचार पाले १६, आठ प्रवचन माताको आराधे २७, नव वाड़ि ब्रह्मचर्य पाले एवं ३६।

३६ गुण छत्तीस आचार्य—१ जाइ संपन्ने कहता जाति (माताका पक्ष) निर्मल कलंकरहित, २ कुलसंपन्ने कहता पिताका पक्ष निर्मल, ३ बलसंपन्ने कहता कालप्रमाणे उत्तम संघेण पराक्रमके धणी, ४ रुपसंपन्ने कहता समच तुर्सादि उत्तम संस्थान शरीरका आकारके धणी, ५, विनय संपन्ने कहता अति कोमलता नम्रता वन्त, ६ नाणसंपन्ने कहता मती श्रुति आदि निर्मल ज्ञानवन्त षटमतके जाण, ७ दंसण संपन्ने कहता शुद्ध श्रधावंत ८ चारित्र संपन्ने कहता निर्मल चारित्र वंत, ९ लज्जा संपन्ने कहता अपवाद निन्दासे डरे, १० लाघव संपन्ने कहता लाघव (हलका

पणा) दो प्रकारका, १ द्रव्यसे तो उपधी-
भंड उपगरण थोडी रखे और भावे कषाय
कम करे, ११ उयंसी कहता उपसर्ग उत्पन्न
हुये धीर्य धरे, १२ तेयंस कहता महातेजस्वी
१३ वर्चसी कहता चतुराइसे बोले किसीके
छलमें आवे नहीं, १४ जसंसी कहता यश-
वन्त आचार्यके यह च्यार बोल स्वभाविक
पाते हैं, १५ जिये कोहे, १६ जिय माणे,
१७ जीये माये, १८ जिये लोहे, १९ जिये
इन्द्रिय अर्थात् क्रोधमान माया लोभ और
श्रोतादिक पांच इन्द्रिय रुप महासत्रुओंको
जीतते हैं, २० जिये निंदा कहता दूसरेकी
निंदा करनेसे निर्वत्तते हैं पापको निंदे
परंतु पापीको नहीं तथा निद्रा अल्प, २१
जिये परिसह कहता क्षुधादिक परिसह उत-
पन्न हुवे चलायमान न होवे, २२ जीविय
आसमरणभय विप्पमुक्का कहता बहुतकाल

जीणेकी आश नहीं और मरनेका डर नहीं, २३ वयपहाणे महा व्रतादि वृत करके प्रधान होवे, २४ गुणपहाणे कहता क्षाती आदि गुण करके प्रधान होवे, २५ कारण पहाणे कहता क्रियावन्तके ७० गुण करके प्रधान होवे, २६ चरण पहाणे कहता चारित्रके ७० गुण करके प्रधान होवे, २७ निग्गह पहाणे कहता अनाचारका निषेध करनेमें प्रधान होवे, अखलित जिनकी आज्ञा प्रवर्ते, २८ निच्छय पहाणे कहता षट् द्रव्यादिकका निश्चय करनेमें प्रधान होवे, राजादिक की सभामें क्षोभ न पामे, २९ विद्या पहाणे कहता रोहिणी प्रमुख विद्यामें प्रधान होवे, ३० मंत पहाणे कहता विष परिहार व्याधी निवार व्यंत्रोप सर्ग नाशक इत्यादि मंत्रमें प्रधान होवे, ३१ वेय पहाणे कहता यजुरादिक चारही वेदके जाण होवे, ३२ बंभ पहाणे

कहता ब्रह्मचर्यमें प्रधान होवे, ३३ णय-पहाणे कहता नेगमादि सातनय स्थापनेमें प्रधान होवे, ३४ नियम पहाणे कहता अभि-ग्रहादि नियम तथा प्रायश्चित विधि जाणने में प्रधान होवे, ३५ सच्च पहाणे कहता महा-सत्यवन्त, ३६ सोय पहाणे कहता शुची दोय प्रकारकी १ द्रव्यतो लोकमें अपवाद होय ऐसा वस्त्रादि न पहरे और भावे पाप मेल से न खरडाय ।

॥ दोहा ॥

बारबार कर जोरिकें, गुणवंतसूं अरदास ।
अल्पबुद्धि मोहि जाणकै, मति कीज्यो कोईहास्य ॥
बोल लिखी ऐसे करूं, पंडित सुं अरदास ।
अधिक हीण जो मैं, कह्यो सुध भांति प्रकाश ॥

॥ ओछो अधिको आगो पाछो लिख्यो होय तेनो मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ सेवं भंते सेवं भंते ॥

॥ तेमव सच्चम् ॥

शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!
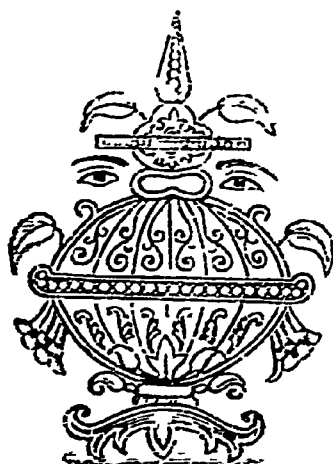
॥ श्री सर्वज्ञाय नमः ॥

अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्व साधूभ्योनमः
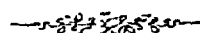
॥ दोहा ॥

पर द्रव्यन तैं प्रीति, है संसार अबोध ।
ताको फलगति चारिमें, भ्रमण कह्यो श्रुतबोध ॥
निर्मल है निज आत्मा, देह अपावन गेह ।
जानि भव्य निज भावकुं, यासुं तजो सनेह ॥
धर्म करत संसार सुख, धर्म करत निर्वान ।
धर्म पंथ साधे बिना, नर तिर्यंच समान ॥
धर्म बिना सुण जीवड़ा, तुं भम्यो भव्य अनंत ।
शुद्ध पणे भव्य तें किया, इम बोले भगवंत ॥

॥ अथ ११ गणधरोंके नाम ॥

१ श्री इन्द्रभूतिजी
२ श्री आग्नभूतिजी
(श्री अग्निभूतिजी)
३ श्री वायभूतिजी
४ श्री विगतस्वामीजी
५ श्री सुधर्मास्वामीजी
६ श्री मंडी पुत्रजी
७ श्री मोरीपुत्रजी
८ श्री अकम्पितजी
९ श्री अचलभूतीजी
१० श्री मेतारजजी
११ श्री प्रभासजी

॥ अथ १६ सतियोंके नाम ॥

१ श्री ब्राह्मीजी
२ श्री सुंदरीजी
३ श्री कौशल्याजी
४ श्री सीताजी
५ श्री कुंतीजी
६ श्री द्रोपदीजी
७ श्री राजमतिजी
८ श्री चंदनबालाजी
९ श्री सुभद्राजी
१० श्री चेलणाजी

११ श्री शिवाजी (सेवाजी) १४ श्री सुलसाजी
१२ श्री पद्मावतीजी १५ श्री दमयंतीजी
१३ श्री मृगावतीजी १६ श्री प्रभावतीजी

इति ११ गणधर ।

१६ सतीयोंके नाम समाप्तम् ।

यह ११ गणधर, १६ सतीयों उत्तम पुरुषों को हमारी त्रिकाल वारम्बार बंदणा नमस्कार होजो ॥

॥ नीतिके दोहा ॥

जो तोकूँ काँटा बोवै, ताहि बोइ तू फूल ।
तोकों फूलके फूल है, वाको हैं तिरसूल ॥
दुरबलको न सताइये, जाकी मोटी हाय ।
मुई खालके स्वांस सें, सार भसम हो जाय ॥
ऐसी बानी बोलिये, मनका आपा खोय ।
औरनको शीतल करै, आपो शीतल होय ॥

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ क्षमा तहँ आप ॥
साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप ।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप ॥
झूठ कबहुँ नहिं बोलिये, झूठ पाप को मूल ।
झूठेकी कोउ जगतमें, करैप्रतीति न भूल ॥
संगति कीजै साधु की, हरै और की व्याधि ;
ओछी संगति क्रूर की, आठों पहर उपाधि ॥
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखे कोय ।
जो दिल खोजो आपना, मुझसा बुरा न कोय ॥
दुखमें सुमिरन सब करें सुखमें करे न कोय ।
सुखमें जो सुमिरन करें, दुख काहेको होय ॥
संचय करिबो है भलो, सो आवे बहु काम ।
पाप न संचय कीजिये, जो अपयश को धाम ॥
बुरो माँगिबो जगत में, जाते हो अपमान ।
क्षमा माँगिबो ईश तें, भलो यही कर ज्ञान ॥
श्रम से विद्या पाइये, श्रम ही से धन होइ ।

श्रम ही से सुख होत है, श्रम बिन लहे न कोइ ॥
आलस कबहुँ न कीजिये, आलस अरि सम जान
आलससे विद्या घटे, सुख संपति की हान ॥
लोभ सरिस अवगुन नहीं, तप नहिँ सत्य समान।
तीरथ नहिं मन-शुद्धि सम, विद्या सम धन आन ॥
जामें गुन अवलोकिये, करिय ताहि स्वीकार ।
बाल-वचन हूँ करिय जो, होय नीति अनुसार ॥
बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछताय ।
काम बिगाड़े आपनो, जगमें होत हसाय ॥
लाख मूर्ख तजि राखिये, इक पण्डित बुधि धाम ।
सर शोभा इक हंससों, लाख काक किहि काम ॥
धन ते विद्या धन बड़ो, रहत पास सब काल ।
देय जितो बाढ़े तितो, छोर न लेइ नृपाल ॥
सब परतिय जिहि मातु सम,
सब पर-धन जिहि धूर ।
सब जीवन निज सम लखै, सो पण्डित भरपूर ॥
सत संगतमें बास सों, अवगुन हूँ छिपि जात ।

अहिर धाम मदिरा पिवे, दूध जानिये तात ॥
असत रंगके बास सों, गुन अवगुन ह्वै जात।
दूध पिवै कलवार घर, मदिरा सबहिँ बुझात ॥
विद्यावन्तहि चाहिए, पहिले धर्म बिचार।
तासों दोउ लोक को, सघत शुद्ध व्यवहार ॥
प्रातहि उठिके नित्त नित, करिये प्रभुको ध्यान।
जाते जगमें होय सुख, अरु उपजे सतज्ञान ॥
काहू तें कड़वो बचन, कहौ न कबहूँ जान।
तुरत मनुजके हृदयमें, छेदत है जिमि बान ॥
पढ़िवे में कबहूँ नहीं, नागा करिये चूक।
कुपढ़ लोग माँगत फिरहिँ, सहहिँ निरादर मूक ॥
मीठी बोली बोलिए, करके सब सों प्रीति।
करें प्रेम तासों सकल, लखि शुक सारिक रीति ॥
सुनिके दुर्जनके बचन, हो रहिये चुपचाप।
करै जौ समता तासुकी, नीच कहावै आप ॥
होय शुद्ध मिटि कलुषता, सत्संगतिको पाय।
जैसे पारसको परस, लोह कनक ह्वै जाय ॥

अपनी पहुँच विचारिके, करतब करिये दौर ।
तेते पाँव पसारिये, जेती लाँबी सौर ॥
देवो अवसर को भलो, जासों सुधरै काज ।
खेती सूखे बरसिवो, धनको कौने काम ॥
प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिलते न मिलाय
दूध दही ते जमत है, काँजी ते फटि जाय ॥
जो समझै जिहि बातको, सो तिहि कहै बिचार ।
रोग न जानै ज्योतिषी, वैद्य ग्रहनकी चार ॥
मूरख को पोथी दई, बांचन को गुन गाथ ।
जैसे निर्मल आरसी, दई अंध के हाथ ॥
बुरे लगत सिखके बचन, हिये बिचारो आप ।
कड़वी भेषज बिन पिये, मिटे न तनकी ताप ॥
करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय ।
रोपै बिरवा आक को, आम कहां ते होय ॥
"रे मन" रहिवो वा भलो, जौ लौं शील समूच ।
शील ढील जब देखिए, तुरत कीजिए कूच ॥

॥ संग्रहकर्त्ता उदेकर्ण सेठिया ॥

॥ दोहा ॥

फल कारन सेवा करे, तजे न मनसे काम ।
कहे कबीर सेवक नहीं, छै चौगुना दाम ॥
सेवक सेवा में रहे, अन्त कहीं न जाय ।
दुःख सुख सिर ऊपर सहे, कहें कबीर समझाय ॥
सेवक सेवा में रहे, सेवक कहिये सोय ।
कहे कबीर सेवा बिना, रसिक कभीन होय ॥
मेरा मुझ पर कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर ।
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागेगा मोर ॥
दुःख सुख एक समान कर, हर्ष शोक नहीं व्याप
परोपकारी नहीं कामता, उपजै शोक न ताप ॥
प्रेम भाव इक चाहिये, भेष अनेक बनाय ।
चाहे घर में वास कर, चाहे वन में जाय ॥
जोगी जंगम सेवड़ा, सन्यासी दरवेश ।
बिना प्रेम पहुंचे नहीं, दुर्लभ सतगुरु देश ॥
जहां बाज वासा करे, पंछी रहे न कोय ।

प्रेम भाव परकासीया, सब कुछ गया बगोय ॥
भक्ति ध्यान से होत है, मन दे कीजे भाव।
परमारथ परतीति में, यह तन जाय तो जाव ॥
साहेब को घर दूर है, जैसी लंबी खजूर।
चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकना चूर ॥
पढ़पढ़के कितने मूये, पण्डित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेमका, पढ़े सो पण्डित होय ॥
जब लगे मरने से डरे, तब लग प्रेमी नाँहि।
बड़ी दूर है प्रेम घर, समझ लो मन माँहि ॥
पानी मिले न आपको, औरन बखसत खीर।
आपन मन निश्चल नहीं औरन बंधावत धीर ॥
गजल—जगदीश गुण गाया नहीं,
गायक हुआ तो क्या हुआ।
पितु मात मन भाया नहीं,
लायक हुया तो क्या हुआ ॥
खाकर नमक निज सेठ का,
सेवा से जो मुँह फेरता।

चाकर नहीं वह चोर है,
खाया नमक तो क्या हुआ ॥
मात पिता की जीते जी,
जो सेवा कुछ न बन पड़ी ।
तब मूए के पीछे,
श्राद्ध औ तर्पण किया तो क्या हुआ ॥

दोहा—जिस जोबन के कारणे,
इतना करे गरूर ।
वह जीवन पल मात्र है,
अन्त धूर की धूर ॥
अन्याई राजा मिला,
जैसे पेड़ खजूर ।
प्रजाको छाया नहीं,
फल लागे अति दूर ॥
सुख दानी जग तारनी,
जापर होत सहाय ।
बड़ भागा वह जन बसे,

भवसागर तर जाय ॥
कहना था सो कह चुके
अब कुछ कहा न जाय ।
एक रहा दूजा गया,
दरिया लहर समान ॥

॥ संग्रह किया ॥
॥ जुगराज सेठिया बाल अवस्थामें ॥

॥ ३६ बोल मूर्खंरा ॥

१ विना भूख खाय सो मूरख ।

२ अजीर्णथकां खाय सो मूरख ।

३ कर्जा करके वे मुतलवी चीज खरीदे ते मूर्ख ।

४ लाभके समय आलस तथा कलहादि करे ते मूर्ख ।

५ कर्जा देती बखत इतनी बाते विचारने योग्य है हैसियत संपदा धन नफा या टोटा क्षेत्र राजाका कानून चलण संगत साख सोभा प्रकृति पक्ष संपत परिवार नियत काम करता पुरुष इत्यादिक तपास करयां विगरउधार याने कर्जा देवे ते मूर्ख ।

६ सामान्य बात करते कठिन भाषा बोले ते मूर्ख ।

७ अपणी बुद्धिका गर्व कर दुसरेकी हित शिक्षाका वचन सुनके क्रोध करे ते मूर्ख ।

८ कुलमद करि (कुलका मद करके) किसी का विनय न करे ते मूर्ख ।

९ सरीर नीरोग थकां औषध (दवा) लेवे ते मूर्ख ।

१० बुढापेमें विवाह करे सो मूर्ख ।

११ निर्बुद्धि होय बडे अधिकारकी (अधिकारी होनेकी) इच्छा करे ते मूर्ख ।

१२ अन्याय करी महत्त्व (बडपन) चाहै ते मूर्ख।

१३ अपने स्वामीकी पीठ पीछे निन्दा करे ते मूर्ख।

१४ सुखके भोगनेके समय दुख और दरिद्रताको भुल जाय ते मूर्ख।

१५ वस्तु परीक्षार्थ जहर खाय ते मूर्ख।

१६ कषायके वश आत्म घात चिंतवे ते मूर्ख।

१७ धनवानसें और पण्डितसें वाद करे ते मूर्ख।

१८ प्रमादि हो देवका आश्रय ले उद्यम न करे ते मूर्ख।

१९ पराया बल, धन, रूप, विद्या देखके हर्ष या ईर्षा करे ते मूर्ख।

२० प्रत्यक्ष दोषी मनुष्यका वखांण करे ते मूर्ख।

२१ आपणा घरका छिद्र परके अगाड़ी कहै अथवा पराया अवगुण प्रकाशे ते मूर्ख ।

२२ सत पुरुष त्यागी साधुकी संगत पायके त्याग पच्चखाण सेवा भक्ति न करे ते मूर्ख ।

२३ सुपात्रका योग मिलने पर दान नहीं देवे ते मूर्ख ।

२४ पोते कुकर्म करके दुजेके उपर दोष डाले ते मूर्ख ।

२५ स्वार्थी मनुष्यसे प्रीतिकी इच्छा रखे ते मूर्ख ।

२६ स्त्रीके भयसे याचक कुं वर्जे ते मूर्ख ।

२७ कृपणता वश अपयश उपार्जे ते मूर्ख ।

२८ धन उधार देके पाछो नहीं मांगे ते मूर्ख ।

२९ आमदानीसे अधिक खरच करे ते मूर्ख ।

३० अपणे घरका हिसाब आमदानी खरचा न देखे ते मूर्ख ।

३१ हिंसा करी धर्म माने ते मूर्ख।

३२ रोगी होय कुपथ्य करे ते मूर्ख।

३३ निर्धन और कर्जदार इनकी परीक्षा किये विगर विश्वास करे ते मूर्ख।

३४ लौकिक व्यवहार न जाणे ते मूर्ख।

३५ द्रव्य कमती होयके वडोंकी बराबरी करे ते मूर्ख।

३६ पिता, सेठ काम करे याने काम करता थकां बेटा, गुमास्ता बैठा देखे और उनकी मर्जी माफक कामकी मदद न देवै, उनकी भक्ति विनय न करे, आला टाला करे लुकता छिपता फिरे तो मूर्ख, ऐसाही बड़ेके आगे छोटा और सासुके आगे वहु जाणना।

॥ १७ बोल प्रस्ताविकका ॥

१ जो तुमकुं दुःखोंका भय होय और

सुखकी अभिलाषा होय तो धर्मरूपी कल्पवृक्ष सेवो ।

२ धर्मकी जड़ विनय और पापकी जड़ व्यसन (कुव्यसन) है, यह क्रोड ग्रंथका सार है ।

३ जिसके पास नित्य क्षमारूपी खड्ग है उसका क्रोधरूपी वैरी कुछ नहीं कर सक्ता ।

४ शोकरूपी वैरीकुं ज्यादा पास रखोगे तो तुम्हारी बुद्धि, हिम्मत और धर्म ए तीनोका जड़से नाश हो जावेगा ।

५ जैसे पुत्र विगर पालणो और वींद विगर (बिना)जान शोभती नहीं तैसे ही धर्म विगर आत्मा शोभती नहीं ।

६ जिके (जो जो) मनुष्य परस्त्रीकुं माता तथा बहनके सदृश (समान) समझता है और सर्व जीवोंकुं अपणी आत्मा समान गिणता है वह दुःखी नहीं होता यह बात शास्त्र द्वारा सिद्ध है ।

७ शास्त्रका श्रवण श्मशान (मशान) भूमि और रोग पीडा ए तीन स्थान वैराग्य उपजणेका मुख्य कारण है।

८ वेसमजका अर्थ करनेवालेकुं शास्त्र भी शस्त्रकी तरह हो जाता है।

९ बुद्धि बढ़नेका और नया तर्क उत्पन्न होणेका मुख्य कारण मनकी शुद्धि है।

१० तुमको दुःख पड़े उस वक्त चिंता त्याग कर धैर्य राखो क्युंकि चिंना कुछ दुःख हरणेकी दवाई नहीं है। चिंतासे चतुराई घटेगी और चतुराईके अभावे (नहीं रहनेसे) तप जप और नियम किसके आधार रहेंगे सम दम और समाधि किसकुं अवलम्बन करेंगे वास्ते उस वक्त धैर्य राखकर धर्म सेवण करना एहीज उत्तम है।

११ जो तुमको सब दुनियाको वशकरणा होय तो पराया औगुणमें प्रवेश न कर गुण

ग्रहण करो मीठा और हितकारी बचन बोलो और उदारता गुणकी वृद्धि करो ।

१२ अपणे हसते हसते कहते हैं कि क्या तुम्हारा हाथ टूट गया? क्या तुं अंधा हो गया? ऐसे ऐसे कटु (कड़वा) वाक्य कहकर चीकणे कर्म बांधते हैं वो जब कर्म उदय आवेंगे तब रोय रोय कर भी छूटना मुश्किल हो जायगा वास्ते वचन निकालतो वक्त खूब शोच कर बोलना क्युंकि छुरीका तथा तर-वारादि शस्त्रका घाव दवाइसे अच्छा होय जावे परंतु वचनका घाव मिलना कठिन है सो हरेक वक्त विचार पूर्वक बोलना ।

१३ सामायिक करती वखत जिसका प्रणाम स्वजनोंके उपर और परजनोंके उपर और निंदा तथा प्रशंसामें समभाव रखेगे उसी हीका सामायिक मोक्षदायक होवेगा ।

१४ जैसे राजाकी आज्ञाका भंग करणेसे

इस लोकमें मनुष्यको धन वगेरेका दंड होता है तैसें ही सर्वज्ञ भगवानकी आज्ञा भंग करने से जीवको परभवमें अनंता भवभ्रमणरूप दंड (डंड) होता है ।

१५ जो तुम, तुमारे प्रिय मित्र और सगा तथा संबंधीके साथ प्रेम रखणा चाहते हो तो जिस वखत वह क्रोध करे तब तुम क्षमा धारण करो ।

१६ जो तुमको धर्मकी जल्दी उत्पत्ति करणी होय तो शास्त्रका बहुमान करो और अछा आचरण राखो ।

१७ कडवा वचन कुमती, कृपणता और कुटिल स्वभाव ए च्यार दुर्गुण त्यागोगे तब ही निश्चय धर्मकी प्राप्ति होवेगी ।

॥ नं० १ ॥

॥ बोल शिखावणरा ॥

१ माता पिता गुरु तथा मोटा पुरुषनो विनय करवुं ।

२ क्लेशने थानके मौनपणुं धारण करवुं ।

३ इन्द्रियों सर्वथा वश राखवी ।

४ एक अक्षर शीखावानारने पण गुरु करी मानवुं ।

५ पोताना अवगुण शोधी काढवुं ।

६ महोटा पुरुष घेर (घर) आवे तो उभा थइ सन्मान देवुं ।

७ दोस्तदारी मित्राचारी पण्डितो साथे राखवी ।

८ नवांनवां शास्त्र वांचवानो अभ्यास राखवुं ।

९ जे आपणी सगी थती नथी तेनी साथे

बाइ अथवा बेहन वा माता कहीने बोलवानो रीवाज राखवुं ।

१० पुत्र पुत्रीने नानपणथीजसारी संगत राखवी सदविद्या तथा धर्मना मूलतत्व शिखाववुं ।

११ जवान अवस्थामां पांचे इन्द्रियोंने वश करवी तथा राग द्वेष विषय अने कषायादिक जीतवुं ।

१२ हुं मृत्युना मुखमां रह्यो छुं मारुं आयुष्य क्षणमात्र नथी एम जाणी धर्म आचरवुं ।

१३ सर्व वस्तुनो नाश थतो होय तो पण पोतानुं वचन (सत्त वचन) अवश्य पालवुं ।

१४ करवुं होय ते बनते प्रयत्ने ज्ञाननी अने ज्ञानीनी विनय भक्ति करवुं अने लघुनीति वडीनीति स्नान मैथुन अने भोजन करती वखते शब्द उच्चारण न करवुं ।

॥ न० २ ॥

॥ बोल शिखावणारा ॥

१ रुप क्रोध छक अंध न वहीजे ।
२ भांग तमाखुं अमल तजीजे ।
३ बुरीगार रो संग न कीजे
४ वेर बुराई कदे न लीजे ।
५ न्यात जातमें फंद न पाड़ीजे ।
६ सात कुव्यसनसुं अलगा रहीजे ।
७ चोरी जारीझूठ तजीजे ।
८ खोटा दगा रा वणज न कीजे ।
९ मोह मायामें निपट न कलिजे ।
१० अथिर संसार सुं विरक्त रहीजे ।
११ गृहस्थ धर्म बारे व्रत धारीजे ।
१२ हकमें चाल खरो जस लीजे ।
१३ निरलोभी निर्ग्रंथ गुरु कीजे ।
१४ साचा सुख मोक्षरा लीजे ।

॥ न० ३ ॥

॥ बोल शिखावणारा ॥

१ आवसग्ग करे तो पच्चक्कांण उपयोग हुवे।

२ मनमें संदेह होय सो पूंछने टाले।

३ साधर्मिकुं दोष लाग्या हुवे तो एकांत सिखामण दे।

४ सांज सवेरे व्रत पच्चाखाण चितारे (संभाले)।

५ जेसा प्राच्छित्त लागया होय तेसा दंड लेवे।

६ साधर्मिसुं चरचा करतां विचमें वाद न करे।

७ भगवंतका मार्गमें खेंचाताण नकरे।

८ पक्की (पखी) चोमासी नफो टोटो विचारे।

६ विनय सहित अक्षर पढे तथा पढावे।

१० तीर्थंकरनी आज्ञा सहित कोई सिखावण देवे तो सत्य माने ।

११ धर्मके ठिकाणे आयके संसारकी बात न करे ।

१२ धर्मी धर्मी आपसमें कलह राड़ न करे ।

१३ धर्मी धर्मके ठिकाणे छोड़के और ठिकाणे जाय नहीं ।

१४ साधर्मीकुं डिगतेकुं थिर करे ।

१५ रोगी गिलाणोको वेयावच्च करे ।

॥ न० ४ ॥

॥ बाल शिखावणारा ॥

॥ धर्मी पुरुषके योग्य ॥

१ वडोंके बीचमें न बोले ।

२ मर्मको वचन नहीं बोले ।

३ माया कपटाईरा बचन नहीं बोले ।

४ हिंसाकारक वचन छाना या उघाड़ा नहीं बोले ।

५ दुर्वचन नहीं बोले ।

६ भूंडा वचन नहीं बोले ।

७ तूंकारा देकर नहीं बोले ।

८ अणसुहातो (अणगमतो) नहीं बोले ।

९ मारकूट पड़े क्रोध नहीं करे शुभ मन वर्तावे ।

१० दुर्वचन बोले तो क्रोध न करे ।

११ कोलाहल शब्द ऊपर क्रोध न करे ।

१२ गुरुकी आज्ञामें चले आपरे छंदे नहीं चाले ।

१३, गुरुरी सेवा करतो थको गुरुरे पास रहे

१४ गुरुरी सेवा करे तेने भली प्रज्ञारो धणी भलो तपस्वी शूरवीर कहीये ।

१५ पांच इंद्रियोंके विषयपर तथा आरंभ विषे गृद्धी नहीं आणे ।

॥ नं० ५ ॥

॥ बोल शिखावनरा ॥

१ मित्रसे कपट रखणो नहीं ।

२ लोहवान स्त्रीको भी विश्वास न करनो ।

३ अन्याय मार्गसे द्रव्य पैदा न करणो ।

४ बडोंके साथे वैर करणो नहीं ।

५ नीच पुरुषके संग विवाद करणो नहीं ।

६ वैरीके ऊपर पण निर्दयी न होणो ।

७ समर्थ होकर दूसरेकी आशा भंग नहीं करणी ।

८ किसीकुं झूठो कलंक न देनो,

९ किसीकुं खराव मालूम होय ऐसो वर्त्ताव नहीं रखणो ।

१० जिस ठिकाणे दुश्मन ज्यादा होय वहां नहीं जाणो ।

११ चोरीकी चीज मोल लेणो नहीं ।

१२ कार्य तथा सत्कार विगर किसीके घर जाणो नहीं।

१३ माता पितानी आज्ञा लोपणी नहीं।

१४ सगां साथे कदापि विरोध रखणो नहीं।

१५ कपटीके आडम्बरको विश्वास न करणो।

१६ अति कष्ट पड्यां थकां भी आत्मघात करणी नहीं।

१७ हांसी करतां किसी पर क्रोध करणो नहीं।

१८ कोई क्रोधरे वश हो कर कड़वा वचन आय कर कहै तो भी न्यायमार्ग छोडणो नहीं।

१९ माता पिता गुरु सेठ स्वामी और राजा इणाका अवगुण बोलणा नहीं।

२० स्नेहराग समान दुसरो उत्कृष्टो बंधन नहीं और प्राणीकी हिंसा समान मोटा पापनहीं।

२१ माता बहन और पुत्री साथे एक आसण बेठणो नहीं।

२२ क्रोधी कृपण आलसी और व्यसनीकी संगत करणी नहीं ।

२३ धनसें बहोत प्यार होय तो भी अन्याय सुं उपार्जन करणो नहीं कारण सोनेरी छूरी कोइ पेटमें मारे नहीं ।

२४ कदापी सत्य छोडना नहीं ।

॥ नं० ६ ॥

॥ बोल शिखावणरा ॥

१ अपने किसी दूसरे पुरुषपर उपकार किया हुवे तो अपणे मुखसे उसको कभी दरसाणा नहीं बदलेमें पीछी कोई प्रकारकी ईछा न रखनी ।

२ किसी पुरुषमें कोई औगुण देखके निंदा त्याग (छोड़) जहां तक हो उसका गुण ही ग्रहण करना ।

३ पर स्त्री एकली एकांतमैं होय तो वहां न बैठना ।

४ अजाण वस्तु जिसका नाम व गुण नहीं जाणे ऐसी न खाना न खिलाना ।

५ कोई गुप्त बात अपनी या अपने ईष्ट मित्रकी या जिसको दुसरेने विश्वास जाण कर कही होवे सो कदापि जाहिर न करना ।

६ कोइ भी मनमें चिंतवी बात ओछा मनुष्यकुं मूर्खकुं स्त्रीकूं पागलकुं न कहणी ।

७ संकट आनेपर धर्म धैर्य तथा सत्य न छोडना ।

८ जिस स्थानपर क्लेश तथा पापका कारण होवे त्याग करना या वहांपर मौन रखना ।

९ जिस द्रव्य उपार्जनमें जीवकी जोखम धर्मकी हानि और इज्जतका भय होवे ऐसा कृत्य न करना ।

१० कृतघ्नी, कपटी, निर्दयी, अतिलोभी, निर्लज्ज, कुव्यसनी और मूर्ख इनके साथ प्रीति न करना ।

११ अपनी इन्द्रियां विषय रागसे हर समय वश रखणी ।

१२ अपनी शक्ति तथा लक्ष्मी बुद्धि बल विचारके कार्य करना जिसमें दूसरोंकी सहायता न लेणी पड़े ।

१३ छतें (थकां) द्रव्य कर्जा नहीं करणा ।

१४ निर्धनता अर्थात् दरिद्रतामें भी अकार्य तथा अनर्थसे धनकी इच्छा नहीं करणी ।

१५ अपने सज्जन तथा मित्रपर संकट पड़े तो अवश्य सहायता करनी ।

१६ व्रत पच्चखान लेके निर्मला पालणा ।

१७ अग्नीका ऊंडे जलका शस्त्रका सींग तथा नखवाले जानवरका विषका जोगीका कुपात्र स्त्रीका विश्वास करना नहीं इणके

नजीक रहना नहीं प्रयोजन होवे तो मध्य भावे रहणा ।

१८ दान देनेमें गुणाजनकी सेवा भक्ति करनेमें विद्या सीखनेमें धर्मकृत्य करनेमें परोपकार करनेमें आलस्य प्रमाद और कृपणता रखनी नहीं ।

१६ दुष्ट कलंकी निर्दयी लापर कुव्यसनी निर्लज्ज इत्यादिक मनुष्यके साथ मित्रता गुमास्तगीरी पांतिदारी तथा लेणा देणा वगैरहका व्यवहार करना नहीं ।

२० राजा, गुरु, माता, पिता, पंच, पंडित, इनके सामने कपट झूठ गैर अदबी करना नहीं सरलपणे सच्चा बात करना ।

२१ वल्लभ सगा से मित्र से कुटुम्बी से लेणा देणाका व्यवहार करना नहीं सुख दुःखमें सिरीहोणा भोजन, वस्त्र, आभूषणका सन्मान करणा व धर्मका उपदेश देना व सुणना ।

२२ अपने कुटुम्बके साथ विरोध करना नहीं यथायोग्य सबको राजी रखना दुःखमें साथ रहणा मिठा बचन बोलणा ।

२३ कोई सत्पुरुष अपने घरपर चला कर आवे तो आदर करना ।

२४ खोटा तोला खोटा मापा व झूठी गवाही वर्जनीय है ।

२५ मैथुन, भय, हांसी, क्रोध, लज्जा दुर्गंछा भोजनके समय वर्जनीक है ।

२६ राजा, तपस्वी, कवीश्वर, वैद्य अपणे घरका छिद्रका जाण रसोइया, मंत्रवादी और बडां पुरुषांके साथ विरोध करना नहीं ।

२७ अपने पास छती लक्ष्मी असंतोष रखना नहीं जगम लक्ष्मीका तीन भाग करना प्रथम भाग व्यापार दूसरा भाग वच्छ वखरा (घर वखरा) तीसरा भाग भंडारमें इस तरह तीन भाग करके धनका संतोष करनेसे समाधि

रहती है और अति लोभ तृष्णासे दुःख होता है।

२८ अपना पराक्रम लक्ष्मी बुद्धि पक्ष सामग्री देखे विना कोइ भी काम में विवादसे अथवा मानसे दूसरोंकी बरावरी करना नहीं।

२९ अपने इष्टके अनुकूल धर्मकृत्यका नित्य नेम अंगीकार किया हो सो हमेसा कल्प वृक्षकी तरह सेवन करना आंतरो पाड़नो नहीं।

३० कोई भी पुरुष अपणे गुणकी तथा हितकीवात सीखावन रूप कहै तो आदरसे सुनकर धारण करणा और उनका जस मानना।

३१ जिस गांवके लोगोंसे विरोध होवे तथा राजवर्गीयोंकी नाराजगी होवे तो उस गांवमें वास नहीं करना।

३२ अपनी आत्माको संसारके संयोग वियोग जन्म मरणके दुःखसे छुडानेके वास्ते मोक्ष मार्गकी खोजना करणेकी खप अवश्य करणी चाहिये ।

॥ नं० ७ ॥

॥ बोल शिखावणरा ॥

१ खोटी सलाहदे ऐसे वकीलके पास मत जावो ।

२ खोटी पक्ष मत खेंचो ।

३ मामले, मुकदमेके मार्ग मत पड़ो, जिद्द को छोड न्यायको पकड़ो जदी मोहके उदय कषाय वश काम पड़ जाय तो पंच डाल कर आपस करलो (मिटायलो) चिंता हैरानीसे बचो अटरनि (Attorney) के पास मत जावो, जावोगे तो खरचा देती वखत पछताना पड़ेगा ।

४ जिस स्थानमें (ग्राममें) चिंता दुख उपजतो होवे तथा मोह जागतो होवे उस ग्रामको छोड देना चाहिये, ज्ञान वृद्धिके स्थान (धर्म स्थान) जाइजै ।

५ न्याय मार्ग सुत्र सिद्धान्त अनुसार चले उसको मामला, मुकद्मा कभी लग नहीं सकता यह बड़ोंका कहना है सो सत्य है ।

६ पीठ पीछे कीणहीरी निन्दा न करणी जो सुणेतो वैर बंधे ।

७ क्रोधीने छेड़नो नहीं ।

८ आपरा घररा छिद्र तथा सुख दुख किणही सु न कहणो ।

९ बडांसु तथा मित्रसु विद्वानसु हेत वधाणो ।

१० पारका औगुण जाणतो हुवे तो भी किणही आगे कहना नहीं ।

११ नीच पुरुषने छेड़नो नहीं छेड़ेतो रेकारा तुंकारा बोले ।

१२ अछांयां तथा उघाड़े डील (सरीर) नगन नागा न सूईजे ।

१३ तीनकाल अशुभ बात न कीजै ।

१४ संसाररा कार्य उतावलसुं न कीजै अवसर देखीजै ।

१५ सूवतां सागारी अण सण कीजै ।

१६ बिमारी रोगचालो चलतो होवै जठे न रहीजै ।

१७ टाबरांरे वास्ते न लड़ीजै ।

१८ विन छांणया पाणी न पीजै ।

१९ सुल्या धान न खाईजै ।

२० रसका भाजन तथा चराक दीवा प्रमुख उघाड़ा न राखीजै ।

२१ घट्टी, ऊंखल चूल्हा देखकर जतनासे वापरीजै ।

२२ कर्जा देती वखत या कर्जा दियां पेहला ईतनी बात जरूर विचारनें योग है, हैसीयत संपदा-धन, पुंजी वेपार, नफा, टोटा, चेत्र, राजका कानून, चाल चलण, संगत साख सोभा संपत, परवार काम करता, प्रकृति, पच्च नियत इत्यादिक ।

२३ कुमार्ग धन खरचके न गमाईजै ।

२४ मारगमें तरूण (जवान) लुगाई रो साथ न कीजै ।

२५ वाहरे नीकलेतो गाफिल न रहीजै चोकी पेहरो दीजै ।

२६ तृषा थका घणो पाणी न पीजै ।

२७ उकड़ो घणो नहीं बैसीजै ।

२८ दिनरी घणी निन्द्रा न लीजै ।

२९ घरमें बावल रूंख न उगाईजै ।

३० आंबलीरी छांया न बैसीजै ।

३१ पाणीरो आसंगो न कीजै ।

३२ रीस करके टाबर रे माथेमें न दीजै ।

३३ पर द्रव्यकी अयोग इन्छा नहीं कीजै ।

३४ अनीतिसे धन भेला नहीं कीजै ।

३५ गुरु गमके बिना सुत्रका उपदेश देनेको तत्पर नहीं रहीजै ।

३६ सुता उठ सामायिक कीजै ।

३७ निग्रंथ साधुरो दरसण कीजै ।

३८ धर्मरी दलाली चित्तसुं कीजै ।

३६ माय बाप सासु ने दुख नहीं दीजै ।

४० वडोंसे विनय राखीजै ।

४१ पापरे काममें आगे मत धसीजै ।

४२ धर्मरे काममें आलस न कीजै ।

४३ उपगारी हुइजै, सभोंसे भलाइ कीजै ।

४४ अण परखीयारा विश्वास न कीजै ।

४५ परने पीड़ा उपजे ते न बोलीजै ।

४६ इर्या जोयां विना न चालीजै ।

४७ सुत्र सिद्धांतरो संग्रह कीजै ।

४८ निश्चय व्यवहार दोनु मानीजै ।

४९ नवां नवां शास्त्र वांचणे पढणेरो अभ्यास उद्यम राखीजै ।

५० बालकने छोटे पणेसे भली विद्या धर्म तत्व शिखाईजै ।

५१ दुःखी होवे तिणरो उपगार कीजे, उपगार करता ढील न करीजे ।

५२ रूठा ने मनाईजे ।

५३ थलीरा गांवमें वसीजे तो अग्निरो जतन कीजै ।

५४ लेखो चोखो करता ज्ञानरी बात बांचता लिखणो करता बीचमें कांइ चीज देनी नहीं कांइ बात बोलणी नहीं यदी बोले ध्यान चुकावै तो काम करता होवे उसको अणगमती लागै भूल पड़े गलती आवे फेर जैसो अवसर देखे वैसो करे ।

५५ गुरु, बडांके बीचमें नहीं बोलणो ।

५६ क्रोधकी बात, चिंताकी बात, दुखकी बात, अपणे स्वार्थकी अणागमती बात, घरका झींखणा विगेरह भोजनकी वखत या भोजन करतेको न कहणा चाहिये ।

५७ ज्ञानके उद्यम करणे वासते थोडी भी टैम निकाल लेनी ।

५८ नित्य नेम मर्यादा विधि सहित शुद्ध उपयोगसे करना ।

५९ साधु, साधवीने निर्दोष आहार चढते भावसे वेहराना ।

६० किसीका दिल मत दुखावो ।

६१ क्रोधकी वखत चुपरहणा क्षमा करणी ।

६२ अपने उपर कोई अपराध करे तब क्षमा करके अन्तः करणसे माफी देना ।

६३ जल्दी उठ कर नित्य नेम करे सो पुनवान जाणीजे, मोड़ो उठे तो भूंडो दीशे दारीद्र आवे ।

६४ चिंता से रोगऊपजे, विनाकाम गपाँ सपाँ मारनी नहीं, फजूल टैम खोनी नहीं ।

६५ सब जीवका कल्याण होवे ऐसी शुभ भावना भाणी ।

॥ सवैया ॥

राजा चंचल होय भोम पराई तके ।
पण्डित चंचल होय सभामें अमृत भखे ॥
हाथी चंचल होय सूंड फौजा में सोहे ।
घोड़ा चंचल होय मन असवारा मोहे ॥

॥ दोहा ॥

एता तो चंचल भला राजा पंडित गज तूरि ।
कवि गध कहे सुणो राव हर निश्चय चंचल नार बुरि ॥

॥ सवैया ॥

फूल घणां पण सुगंद नहीं कोण जावै उस वाड़ी में ।
थोरकी लकड़ी जीव घणां कोण लेवै उस भारीको ॥
रंग घणां पण पोत नहीं कोण लेवै उस साड़ीको ।
भरतार के कहणमें नहीं चाले धरकार है उस नारिको ॥

॥ दोहा ॥

मीठा सबसे बोलिये सुख उपजे चहुं ओर ।
वशी करण इक मंत्र है तजो बोल कठोर ॥

छपाता--गैनपाल सेठिया,
कलकत्ता ।
विक्रम संवत १९७१ वैशाख सुदी ३

॥ कुण्डलिया ॥

लीलोती छोड़ी परी लोभ छोड़ीयो नाय।
दूना तीना चौगुणा मांड्या बहियां मांय ॥
मांड्या बहियां मांय तोलता घटतो तोले।
पंसेरीमें पाव मेल दै अंगूठा रे ओले ॥
लेता देता दामकी सो सो सोगन खाय।
लीलोती छोड़ी परी लोभ छोड़ीयो नाय ॥
सुन साहाजी जीवण कहे है ऊको ऊसेर।
लेता देता पाव कों तें घाल्यो किस बिध फेर ॥
घाल्यो किस बिध फेर कसर राखी नहीं कोई।
तोबा बार हजार इसी तूं करे कमाई ॥
साहेब लेखो मांगसी देसी ऊंधो टेर।
सुण साहाजी संग्राम कहे है ऊको ऊसेर ॥

॥ कबिता ॥

रती बिन रिद्ध रती बिन सिद्ध रती बिन जोग सधै न जती को ।
रती बिन राज रती बिन पाट रती बिन मानुष लागे फीको ॥
रती बिन भाई कह्यो नहीं माने रती बिन नार गिणे ना पतीको ।
कबी गंग कहै सुण शाह अक्कबर एक रती बिन पाव रतीको ॥

बातन से देवी और देवता प्रसन्न होत ।
बातन से सिद्ध और साध पति कहलात है ॥
बातन से खान सुलतान नरेश माने ।
बातन से सेण लोक लाखों ही कमाते हैं ॥
भूत और भुजंग सब बसि होत बातन से ।
बातन से पुण्य और पाप बढ़ि जात हैं ॥
कीरती अप कीरती होती सब बातन से ।

सो मानुषके गात बीच बात करामात है ॥

गंग तरंग दरियाव बहे जिन कूप को नीर पीवो न पीवो ।

जाके हृदय हर नाम बसे जिन और को नाम लियो न लियो ॥

कर्म संजोग सुपात्र मिले जिन कुपात्र को दान दियो न दियो ।

कबी गंग कहै सुण शाह अक्कबर कपटि मित्र कियो न कियो ॥

एक को ध्यावे दूजे को रटे रस नान कटे अस लब्बर की ।

अबकी दुनियां गुनियां को ध्यावत शिर बांधत गांठ अटब्बर की ॥

जाको हरकी प्रतीत नहीं सो करत है आस अकब्बर की ।

श्रीपत एक गोपाल को ध्यावत नहीं मानत सूंक जुजब्बर की ॥

कल्पवृक्ष न पारस की परवा चिंतामणीको हम ना करिये ।

नहीं चाह हमें पट भूषणकी रस कूप मिले तो का करिये ॥

सुनि लीजिये सज्जन या जग में अपनी अपनी मत पाकर हैं ।

परवा नहीं पंख हमाउ की हम चाह की आंख के चाकर हैं ॥

तूं कुछ और बिचारत है नर तेरो बिचार धर्यो ही रहेगो ।

कोटि उपाय करे धन के हित भाग लिखो इतनो ही लहेगो ॥

भोरकी सांझ घरि पल मांझ सुं काल अचानक आन गहेगो ।

राम भज्यो न कीयो कुछ सुकृत पीछे नर पछताय रहेगो ॥

जो दस बीस पचास भये सत होय हजार तो लाख मंगेगी ।

कोटि अरब खरब असंख्य धरापति होनेकी चाह जगेगी ।

स्वर्ग पतालको राज करो तृष्णा अधकी अति आग लगेगी ।

सुन्दर एक सन्तोष बिना सठ तेरी तो भूख कभीना भगेगी ।

सुरज छीपे नहीं अदरी बदरीमें चंद छीपे नहीं बादल छाया ।

रण चढ़ीयो रजपूत छिपे नहीं प्रीत छिपे नहीं पीठ दिखायां ॥

चंचल नारी का नैन छीपे नहीं दातार छिपे नहीं घर मंगन आया ।

जोगी का भेष अनेक करो कर्म छिपे नहीं भभूत लगायां ॥

चूक जात झवरी (जौहरी) जवहार के परखबेमें ।

चूक जात चितारा कलम काम नहीं करती ॥
चूक जात बजाज नाप कपड़ेके फाड़वेमें ।
होनी बलवान अजा सिंह से न मरती है ॥
जोतिष पुरान बेद चूक जात उचारबेमें ।
मल्लाह हुसियार नाव जलहू से भरती है ॥
झूठि ना कहे उस्ताद मजा रोसके मारबेमें ।
सोच करे मूर्ख होनो हो तब टारि नाय टरती है ॥

कर्मविपाक कथाका कितनेक सामान्य कर्म बंध फलका बोल।

संग्रह करके लिखते हैं।

प्रश्नोत्तर।

१ कहो पूज्य इण जीवरे सरीरमें घणा जीवारी उत्पत्ति होवै सो कीसे पापरे उदे (उदय) सुं?

उत्तर—सुण सिष्य पूरवले भवमें घणा कच्छ मच्छरो आहार कीनो तिण पापरे उदेसुं।

२ कहो पूज्य इण जीवने भणनो गुणनो नहीं आवे सो किण पापरे उदेसुं?

उत्तर—पूर्वले भव आप भणीयो नहीं पेलेने (दूसरेने) भणतां अंतराय दीनी तिण पापरे उदेसं।

३ कहो पूज्य जीव कालो कुदरसण अशुभ वर्ण पामे सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव रूपरो अहंकार मद कीनो तिण पापरे उदेसुं ।

४ कहो पूज्य इण जीवने कुडो कलंक (आल) आवै सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे वारंवार कलह करै अठारमो पाप स्थानक वारवार सेवै तिण पापरे उदेसुं ?

५ कहो पूज्य इण जीवरो बोलीयो चालीयो सुहावे नही सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव आपरो कियो थापीयो पेलेरो कियो उथापियो तिण पापरे उदेसुं ।

६ कहो पूज्य इण जीवने शाबाशी जस मीले नहीं सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्व भव जातरो अहंकार किनो तिण पापरे उदेसुं ।

७ कहो पूज्य इण जीवने घणो क्रोध आवे सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव घणो खोभ कीनो तिण पापरे उदेसुं ।

८ कहो पूज्य इण जीवरे संसार भ्रमण मिट्यो नही सो किण पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे पोसा प्रतिकमणोमें विराधना कीनी तिण पापरे उदैसुं ।

९ कहो पज्य इण जीवने देश परदेश जावे पिण लाभ हुवे नहीं सो किण पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव पोते दान दियो नहीं पेलेने देता अंतराय दीनी तिण पापरे उदेसुं ।

१० कहो पूज्य इण जीव पांचे इंद्री हीण पाइ सो किसे पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव गाजर मूला कांदा जमिकंदरो आहार कीनो तिण पापरे उदैसुं ।

११ कहो पूज्य इण जीव पांच इंद्रिरो वियोग पायो सो किण पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे वनस्पतिनी छेदन भेदन घणी कीनी तिण पापरे उदैसुं ।

१२ कहो पुज्य इण जीवने घणी निद्रा आवे सो किण पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे दारु भांगरो नसो घणो कीनो तीव्र भावे अति मदिरा पान पीया तिण पापरे उदैसुं ।

१३ कहो पूज्य इण जीवरो शरीर निरोग नहीं रहे सो किण पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे घणा जीव मोसीया तिण पापरे उदैसुं ।

१४ कहो पूज्य आ जीव लूलो पांगलो होवै सो कीसे पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव जीवांने भागसीमे घालने कुटीया पीटीया तिण पापरे उदैसुं ।

१५ कहो पूज्य इण जीवने रोज घणो आवे सो किसे पापरे उदैसु ?

उत्तर—पूर्वले भव काची कुंपलां तोडी तिणं पापरे उदेसुं।

१६ कहो पूज्य इण जीवसुं तपस्या होवै नहीं सो किण पापरे उदै सुं ?

उत्तर—पूर्वले भव आप तपस्या किधी नहीं अने पेलेने (दुसरेने) करताने अंतराय दीनी तप जपरो मद कीनो तिण पापरे उदैसुं।

१७ कहो पूज्य इण जीवने लुगाइ बेटा घर सुहावे नहीं सो किण पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव दान शील तप भावना भावी नहीं तिण पापरे उदै सुं।

१८ कहो पूज्य इण जीवने सीख सीखावण वाहाली (अच्छी) लागे नहीं सो किण पापरे उदै सुं ?

उत्तर---पूर्व भवे आर्त्त ध्यान रुद्र ध्यान ध्यायो तिण पापरे उदै सूं ।

१९ कहो पूज्य इण जीवने भरजोबनमें दयापणो आवे नहीं सो किण पापरे उदै सुं ।

उत्तर---पूर्व भवे घणा मैला मंत्र कीना तिण पापरे उदै सुं ।

२० कहो पूज्य इण जीवने भरजोबनपणा (जवान अवस्था) में रंडापो आवे सो कोण पापरे उदय (उदै) सुं ?

उत्तर—पूर्व भवे जड़ासुं रुंख उपाड़ीया तिण पापरे उदयसुं ।

२१ कहो पूज्य इण जीवने कुटम्ब घरमें सुख देवे नहीं सो किण पापरे उदै सुं ?

उत्तर--पूर्व भवे टोगड़ा टोगड़ीने दुध छोड़ीयो नहीं अने अंतराय दीनी तिण पापरे उदै सुं ।

२२ कहो पूज्य आ जीव कांणो हुवो सो किसे पापरे उदै सुं ?

उत्तर—पूर्व भवे बोरकाचर फल फूल सूईसे बिंधीया अने माला किनी तिण पापरे उदै सुं।

२३ कहो पूज्य जीव आंधो हुवे सो किण पापरे उदै सु ?

उत्तर—पूर्वले भव दीसता जीव धानमें पीसे स्थावर क्षुद्र जीवोंको पाणीमें डवोयके मारे मच्छरको आग लगाय कर धूंवां देकर मारे तिण पापरें उदै सुं।

२४ कहो पूज्य ओ जीव दुःखीयो हुयो सो किण पापरे उदै सुं ?

उत्तर—पूर्वले भव घणी बुराई कीनी अणदिट्ठी अणसुणी वातों कीनी तिण पापरें उदै सुं।

॥ बोल कर्मविपाकरा ॥

सामान्य कर्मबंध फल कहते हैं ।

बोल प्रश्नोत्तर ।

१ प्रश्न—प्राणी निर्द्धन किस कर्मसें होवे ?

उत्तर—पराया धन हरणेसें ।

२ प्रश्न—प्राणी दरिद्री किस कर्मसें होवे ?

उत्तर—दान देतेको वर्जनेसे, दान सुपात्रने न देणेसें दया न पालनेसे ।

३ प्रश्न—प्राणी धन तो पावे परन्तु भोग नहीं सके किस कर्मसें ?

उत्तर---दान देके पछतावनेसें ।

४ प्रश्न---प्राणी अकुली-निपूतियो (अर्थात् जिस पुरुषके पुत्र पुत्री न होय) किस कर्मसे ?

उत्तर---जो वृक्ष रस्तेके ऊपर हो जिनसें अनेक पशु और मनुष्य फल फूल खावे

और छाया करके सुख पावे ऐसे वृक्षोंको कटावे तो।

५ प्रश्न—प्राणी वंध्या (स्त्री वांझड़ी) किस कर्मसे होवे?

उत्तर—गर्भ गलावे तथा गर्भ गलानेकी औषधि देवे तथा गर्भवती मुर्गीको (Hen) वध करे और फूलका अन्तर कढ़ावे तो।

६ प्रश्न—प्राणी मृत वंध्या (वांझड़ी) किस कर्मसे होवे?

उत्तर—वेंगण आदिका भूरथो करे तथा होले करे तथा कंदमूल खाय तथा मुर्गी आदिकके अंडे बच्चे मार खाय और उगती वनस्पति कुंपला तोड़े तो।

७ प्रश्न—प्राणी अधूरे गर्भ गल गल जावे सो किस कर्मसे?

उत्तर—पत्थर मार मारके वृक्षके कच्चे फल फूल पत्ते तोड़ें तथा पंखीयोंके माले तोड़े

तथा मकड़ीके जाले उतारे तो ।

८ प्रश्न—प्राणी गर्भमेंही मर मर जाय तथा योनिद्वारमें आ के मरे किस कर्मसें ?

उत्तर – महा आरंभ जीव हिंसा करे मोटा झूठ बोले, साधुको असूझतो आहार, पानी देवे तो ।

९ प्रश्न – प्राणी गूंगा किस कर्मसें होय ?

उत्तर – देवधर्मकी निंदा करे तथा निग्रंथ गुरुकी निंदा करे तथा गुरुके पुठे मुंह मचकोड़ के छिद्र देखे तो ।

१० प्रश्न – प्राणी बहरा किस कर्मसे होय ?

उत्तर – पराया भेद लेनेका लुक छिपके वात सुनने तथा निन्दा सुणानेका स्वभाव होय तो ।

११ प्रश्न – प्राणी रोगी किस कर्मसें होय ?

उत्तर – गूलर आदि फल खाय तथा चूहे पकड़नेके पिंजरे बेचे तो ।

१२ प्रश्न – प्राणी बहुत मोटी स्थूल देह पावे किस कर्मसें ?

उत्तर – शाह होके चोरी करे तथा शाहका धन चुरावे तो।

१३ प्रश्न – प्राणी कोढ़ो (कोढ़िया) किस कर्मसे होय ?

उत्तर – बनमें आग लगावे तथा सर्पको मारे तो।

१४ प्रश्न – प्राणीरे दाह ज्वर किस कर्मसें होय ?

उत्तर – ऊंट बैल गधे घोड़ेके ऊपर ज्यादा बोझ लादे तथा शीत वा गर्मीमें राखे तो।

१५ प्रश्न – प्राणी सिरसाम अर्थात् चित-भ्रम किस कर्मसें होय ?

उत्तर – ऊंची जाति व गोत्रका मान करे तथा छाने छाने अनाचार मद्यमांसादि भक्षण करके मुकरे (नटै) तो

१६ प्रश्न — प्राणीरे स्त्री पुरुष और शिष्य कुपात्र वैरी समान किस कर्मसे होय ?

उत्तर — पिछले जन्ममें उनसे निष्कारण विरोध किया होय तो ।

१७ प्रश्न — प्राणीरे पुत्र पाल्यापोसा मर जाय किस कर्मसें ?

उत्तर — धरोट मारी होय तो ।

१८ प्रश्न — प्राणीके पेटमें कोइ न कोइ रोग चला रहे (होता ही रहे) किस कर्मसे ?

उत्तर — खाय पीयके बचा खुचा असार निसार भोजन साधूको देवे तो ।

१६ प्रश्न — प्राणी बाल विधवा किस कर्मसे होय ?

उत्तर — अपने पतिका अपमान करके पर-पतिके साथ रमे तथा कुशीलनी होयके सती कहावे तो,

२० प्रश्न — प्राणी वेश्या किस कर्मसे होय ?

उत्तर — ऊत्तम कुलकी बहु बेटी विधवा हुए पीछे कुलकी लाजसे कोई अकर्त्तव्यतो न करने पावे परंतु सत्संगतके अभावसे भोगकी वांछा रखे तो।

२१ प्रश्न — प्राणीरे जो जो स्त्री व्याहे सो मरे जैसेकी पुरुषकी स्त्री न जीवे किस कर्मसे?

उत्तर — साधु कहाके स्त्री सेवे तथा त्यागी हुई वस्तुको फिर ग्रहे तथा खेतमें चरती हुइ गौ (Cow) त्रासें तो।

२२ प्रश्न — प्राणी नर्क गतिमें जाय किस कर्मसे।

उत्तर — सात कुव्यसन सेवें तो।

२३ प्रश्न-प्राणी धनाढ्य किस कर्मसे होय!

उत्तर---सुपात्रको दान देकै आनंद पावे तो

२४ प्रश्न — प्राणीने मनोवांछित भोग मिले किस कर्मसें ?

उत्तर – परोपकार करे तथा बड़ेकी टहल करे तो ।

२५ प्रश्न-प्राणी रूपवान किस कर्मसे होय ?

उत्तर – तपस्या करे तो ।

२६ प्रश्न – प्राणी स्वर्गमें किस कर्मसे जाय ?

उत्तर – क्षमा दया तप संयम करे तो ।

॥ कर्म विपाक धर्म कथारा बोल ॥

शिष्य कहे--कोई जीव आंखे जलमलो देखे ते किण कारण थी होय ?

गुरू कहे---जे पूर्वे घणा कुभावथी रूप निरख्या तेना प्रतापे,

शिष्य कहे--कुबड़ो थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे एकेंद्री जीवनो चूर्ण (घात) कीधो तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे---खोज्यो (खोजो) होयते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्व भवे बेदगिरीका काम कीधा तेना प्रतापे,

शिष्य कहे---जसकरतां अपजस पायते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वभवे सचीत द्रव्यादिकना ओखद बेखद घणा किना तेना प्रतापे,

शिष्य कहे—शरीरने विषे भगंदर रोग उपजे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे स्वहाते करी पंचेंद्रि जीवोंने हणाया तेना प्रतापे,

शिष्य कहे—कंठमाला रोग होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे घणा माछला मारिया तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—शरीरनें विषे, पाथरी (पथरी)

रोग होय ते कीसा कर्मनें उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्व भवे मैथुन घणा सेवीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---हर्ष रोग होय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे धूणी घाली घणा जीवाने सताविया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—संजोगना बीजोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे माया कपटाई तथा मित्र कपटाई कृतघ्नता कीधी तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे--शरीरने विषे, खाज फटणी चाले ते कीसा करमने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे घणा जीव ऊपर क्रोध कीधो झूठ आल दीधा तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे--कोई जीव बोलीयो अनेराने सुहावे नहीं ते किसा कर्मने उदे,

गुरू कहे---जे पूर्व भव वचनकलानो अहंकार कीधो तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—आपणे अण कीधा अपजस अपकीरत वधे ते कीसा कर्मने उदे?

गुरू कहे---जे पूर्वे स्त्री हती तेवारे सासु नणंद भोजाई देराणी जेठाणीना इरषा कीधा तेना प्रतापे॥

शिष्य कहे---पुरुषलींग छेदी स्त्रीलींग पामे ते किसा कर्मने उदे?

गुरू कहे--जे पूर्वे भव सतरमो पाप स्थानक माया मोसो सेवीयो तेना प्रतापे॥

शिष्य कहे--मन वंछित वस्तु जीव न पामे ते कीसा कर्मने उदे?

गुरू कहे---जे पूर्वे भव पंचेंद्री जीवना संयोगना बीयोग कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे---शरीर बलहीन पामे ते किसा कर्मने उदे?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कुकड़ा ना आहार कीधा तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोई जीवने घणो हांसो आवे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे भव असन्नी (असंज्ञी) पंचेंद्री जीव हणीया हणावीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोई जीव साचो बोले अनेराने प्रतीत न ऊपजे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कूड़ी साख भरी तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोई जीवने माता भाई बहन भाणेज पुत्र कुटम्बनो वियोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कुगरु, कुदेव सेवीयो हिंसामें धर्म परूपीयो तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---मनुष्य अवतार पांमे अने

हात पगनी आंगलीयां छेदन पांमे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे — जे पूर्वे भव झाड रूँख आदि काटीया तेना प्रतापे।

शिष्य कहे — मीर्गी झोलो आवे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे — जे पूर्वे भव लुहारनी धुँमण धुमाइ तेना प्रतापे।

शिष्य कहे — घणा मनुष्य सहित पाणी मांहे नाव जहाज डुबे घणा मनुष्य एकठा डुबी मरे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे — जे पूर्वे भव पेसाब मांहे पेसाब कीधो तथा घणा दिन राखीने ढोलीयो तथा ताजखाना (पायखाना) मांहे उच्चारपासवन एकठा कीधा समुधानी कर्म कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे — मनुष्य मरी प्रथ्वीकाया मांहे

थोड़े आउखे ऊपजे दुःखसहे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव झूठ घणा बोलिया तेना प्रतापे

शिष्य कहे – तरुणपणे दांत पड़े माथारा केस धोला थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव कवली वनस्पती हाते करी चुटी चुटावी कुटी कुटावी तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे – शरीरने विषे घणा गुमड़ा थाय भरीया नींगल होय ते कीसा करमने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव आखा फल चीरीने लुणसु भरीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे – दासपणो पांमे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे माखण (लुणी) एकठो करी घणा दिनासु तपावीयो तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—नासुर रोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कसाईना कर्म कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीव गर्भ मांहे ऊपजे पीछे जन्मतो वेला आडो आवे तेहने कापीने काढे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कसाईना हातसुँ दान लीधा होय तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीव गर्भ मांहे ऊपजे पछे गल तो जाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव साधुने कूड़ो आल दीधो, असूझतो आहार दीधो तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई स्त्रीने बारह बरसरो छेडो (छोड़) रहे ते कीसा कर्मने उदे।

गुरू कहे—जे पूर्वे भव घणा पेसाव एकठा

कीधा घणा काल राखीने ढोलीया जीव मरा-
वीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोई स्त्री ने तेहीज गर्भ
चवीने फेर तेहीज छेडो (छोड़) मांहे ऊपजे पछे
चोवीस वर्ष लगे रहे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वभव घणा मैथुन सेवीया
तीव्र भावे अने सेवन वालाने साज दीनो
साधारण कर्म कीधा तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोईरे डीलरे तप रोग थाय
तथा सगलो डील बलूँ बलूँ करे ते कीसा कर्मने
उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव फल फूलना पाक,
मरदन करावीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—स्त्री वांझ (वांध्या) हुवे तेकीसा
कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव फूलना अंतर करा-
वीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे--पुरुष एक अने स्त्रीयां घणी सर्व स्त्रीयां वांझ (वांध्या) होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव घणी वनस्पतिनो रस करावीयो तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – कोई जीव चोरी करे पाकेट मारे गांठ खोले ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव घणा हलालखोरना काम कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – कोई जीव जन्मतेपाण माता पितानो वियोगपामे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जेणे पूर्वे कवली वनस्पतिना अंकुर छेदीया तथा छेदन वालाने साजदीनो तथा घणा जीवांरा वियोग पाडीया तेना प्रतापे ?

शिष्य कहे--कोई जीव समदृष्टी हातसु करीने साधु मुनिराजने प्रतिलाभवानो मनोर्थ करे पिण प्रतिलाभे सके नहीं ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे — जे पूर्वे रोसकारी कर्कश कारी मर्मकारी भाषा बोली छानी बात प्रगट किनी घणाजीवाने दाना अंतराय दिनी तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---कोई जीव भलीजात कुलमें जन्म पामें, पंचेन्द्रीयाना योग संयोग पुरा पड़े अने अणकिधो अणजाणीयो माथे कुड़ो आल आवे पच्छी राजा पकड़ावीने चौरंगीयो करावे पछे राज सभा मांहे वाहालो लागे जे बोले ते मानीलेवे ते किसा कर्म उदे ?

गुरु कहे---जे पूर्वे घणी अनन्तीकाय, कंद, मुल कटावीया चुरण किधा तथा गर्भ पाड़ी छानो राख्यो तथा नारकी तथा त्रियंच भव मांहे अकाम निर्जरा कीधी तेना प्रतापे ।

॥ इति कर्म कथाना बोल समास ॥

रत्नावलि के दोहे।

जो जाको गुन जानही, सो तिहि आदर देत।
कोकिल अम्बहि लेत है, काग निबोली लेत॥
विद्या धन उद्यम बिना, कहो जु पावै कौन।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यों पंखे की पौन॥
ओछे नर की प्रीति की, दीन्ही रीति बताय।
जैसे छीलर ताल जल, घटत घटत घटि जाय॥
रहे समीप बड़ेन के, होत बड़ो हित मेल।
सब ही जानत बढ़त है, वृच्छ बराबर बेल॥
मधुर वचन से मिटत है, उत्तम जनअभिमान।
तनक शीत जल से मिटै, जैसे दूध उफान॥
समय समुझि जो कीजिये, काम वही अभिराम।
सिन्धव मांग्यो जीमते, घोड़े को कह काम॥
स्वारथ के सबही सगे, विन स्वारथ कोई नाहिँ।
सेवैं पंछी सरस तरु, निरस भये उड़ि जाहिँ॥
पर घर कबहुँ न जाइये, गये घटत है जोत।

रविमण्डलमें जात शशि, हीन कला छवि होत ॥
एक दशा निबहै नहीं, जनि पछितावहु कोय ।
रवि हू की इक दिवस में, तीन अवस्था होय ॥
होय बुराई से बुरो, यह कीन्हो निरधार ।
खाड़ खनैगो और को, ताको कूप तयार ॥
बहुत निबल मिलि बल करैं, करैं जु चाहैं सोय ।
तृनगण की डोरी करैं, हस्ति हुँ बन्धन होय ॥
सांच झूंठ निरणय करै, नीतिनिपुण जो होय ।
राजहंस बिन को करै, क्षीर नीर को दोय ॥
कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर ।
समय पाय तरुवर फलै, केतक सींचहु नीर ॥
जो पहिले कीजै यतन, सो पाछे फलदाय ।
आग लगे खोदे कुआ, कैसे आगबु झाय ॥
क्यों किजै ऐसो यतन, जासों काज न होय ।
परबत पै खोदै कुआ, कैसे निकसै तोय ॥
उद्यम से सब मिलत हैं, बिन उद्यम न मिलाहिँ ।
सीधी अंगुली घी जम्यो, कबहूँ निकसत नाहिँ ॥

कहिये बात प्रमाण की, जासों सुधरै काज ।
फीको थोड़े लवणसे, अधिकहि खारो नाज ॥
कहै रसीली बात सो, बिगड़ी लेत सुधार ।
सरस लवणकी दालमें, ज्यों नींबूरस डार ॥
बुद्धि विना विद्या कहो, कहा सिखावै कोय ।
प्रथम गाम ही नाहिं तो, सींव कहां से होय ॥
जाकी जेती पहुँच सो, उतनी करत प्रकाश ।
रविज्यों कैसे करि सकै, दीपक तम को नाश ॥
कारज ताही को सरै, करै जो समय निहार ।
कबहुँ न हारै खेल जो, खेलै दाव विचार ॥
सब देखैं गुण आपने, ऐब न देखै कोय ।
करै उजालो दीप पर, तले अँधेरो होय ॥
को सुख को दुख देत है, देत करम झकझोर ।
उरझै सुरझै आपही, धजा पवन के जोर ॥
भली करत लागे विलंब, विलंब न बुरे विचार ।
भवन बनावत दिन लगैं, ढाहत लगत न वार ॥
विनसत वार न लागही, ओछे नर की प्रीत ।

अम्बर डम्बर सांझ के, ज्यों बालू की भीत ॥
आपहि कहा बखानिये, भली बुरी के जोग ।
बूंठे घन की बात को, कहैं बटाऊ लोग ॥
जो कहिये सो कीजिये, पहिले करि निरधार ।
पानी पी घर पूँछनो, नाहिन भलो विचार ॥
पीछे कारज कीजिये, पहिले यतन विचार ।
बड़े कहत है बांधिये, पानी पहिले वार ॥
भले वंश सन्तति भली, कबहूँ नीच न होय ।
ज्यों कञ्चन की खान में, काँच न उपजै कोय ॥
शूर वीर के वंश में, शूर वीर सुत होय ।
ज्यों सिंहिनि के गर्भ में, हिरन न उपजै कोय ॥
हीन जानि न विरोधिये, वही होत दुखदाय ।
रज हू ठोकर मारिये, चढ़ै सीस पर आय ॥
दोष लगावत गुनिन को, जाको हृदय मलीन ।
धर्मी को दम्भी कहै, क्षमाशील बलहीन ॥
खाय न खरचै सूम धन, चोर सबै लै जाय ।
पीछे ज्यों मधुमक्षिका, हाथ घिसै पछिताय ॥

उत्तम विद्या लीजिये, जदपि नीच पै होय।
पड्यो अपावन ठौर में, कञ्चन तजत न कोय॥
धन अरु यौवन को गरब, कबहूँ करियै नांहि।
देखत ही मिट जात है, ज्यों बादर की छांहि॥
बड़े बड़े को विपति में, निश्चय लेत उवार।
ज्यों हाथी को कीच से, हाथी लेत निकार॥
सेवक सोई जानिये, रहे विपति में संग।
तन छाया ज्यों धूप में, रहे साथ इकरंग॥
बहुत द्रव्य संचय जहां, चोर राजभय होय।
कांसे ऊपर बीजुली, परत कहत सब कोय॥
ओछे नर के पेट में, रहै न मोटी बात।
आधसेर के पात्र में, कैसे सेर समात॥
काहू को हँसियै नहीं, हँसी कलह को मूल।
हांसि हँसे दोऊ भये, कौरव पाण्डु निमूल॥
प्रापति के दिन होत है, प्रापति वारंवार।
लाभ होत व्यापार में, आमन्त्रण अधिकार॥
अप्रापति के दिनन में, खर्च होत अविचार।

घर आवत हैं पाहुने, वणिज न लाभ लिगार ॥
कहैं वचन पलटैं नहीं, जे सतपुरुष सधीर।
कहत सबै हरिचन्द्र नृप, भर्यो नीच घर नीर ॥
प्यारी अनप्यारी लगै, समय पाय सब बात।
धूप सुहावत शीत में, ग्रीषम नाहिं सुहात ॥
जूवा खेले होत है, सुख सम्पति को नास।
राजकाज नल तें छुट्यो, पाण्डव किय वनवास ॥
देखा देखी करत सब, नांहिन तत्त्वविचार।
थाको यह उनमान है, भेड़ चाल संसार ॥
एक एक अक्षर पढ़े, जानै ग्रन्थ विचार।
पैंड पैंड हू चलत जो, पहुँचै कोस हजार ॥
वह सम्पति किहि काम की, जनि काहू के होय।
जाहि कमावै कष्ट करि, विलसै औरहि कोय ॥
विन कपास कपड़ो नहीं, दया बिना नहिं धर्म।
पाप नहीं हिंसा विना, बूझो एहिज मर्म ॥
धन बंछै इक अधम नर, उत्तम बंछै मान।
ते थानक सहु छंडिये, जिँह लहिये अपमान ॥

मेरा मेरा क्या करै, तेरा है नहिं कोय।
चिदानन्द परिवार का, मेला है दिन दोय॥
धर्म बधाये धन बधै, धन बध मन बधि जात।
मन बध सबही बधत है, बधत बधत बधि जात॥
धर्म घटाये धन घटै, धन घट मन घटि जात।
मन घट सब ही घटत है,
घटत घटत घटि जात॥
यह जोबन थिर ना रहै, दिन दिन छीजत जात।
चार दिन की चांदनी, फेर अँधेरी रात॥
क्रोधी लोभी कृपण नर, मानी अरु मदअन्ध।
चोर जुवारी चुगुल नर, आठों दीखत अन्ध॥
शील रतन सब से बड़ो, सब रतनन की खान।
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन॥
ओछी संगति स्वान की, दोनूं बातें दुक्ख।
रूठो पकड़े पांव कूँ, तूठो चाटै मुक्ख॥
सतजन मन में ना धरैं, दुरजन जन के बोल।
पथरा मारत आम को, तउ फल देत अमोल॥

शुभतिय से संसार सुख, सुगति सुगुरु से जाण ।
शुचि मन्त्री से राज नित, सुधरै सदा सुजाण ॥
प्रायः पर की भूल को, देखे सब संसार ।
पण न विचारे निजतणी, होय जु भूल हजार ॥
गुण विन रूप न काम को, जिम रोईड़ा फूल ।
दीसंता रलियामणां, पण नहिँ पामे मूल ॥
सुख पीछे दुख आत है, दुख पीछे सुख आत
आवत जावत अनुक्रमे, ज्यूं जग में दिनरात ॥
दुष्ट व्यसन दुक्खद सदा, कदी न करबो संग ।
धन जीवन यश धर्म नो, तुरत करे छे भंग ॥
जो मति पीछे ऊपजै, सो मति पहिले होय ।
काज न बिगड़े आपनो, जग में हँसे न कोय ॥

॥ बोल ॥

प्रश्न—पापरो बाप कांई, उत्तर लोभ,
" पापरी माता कांई, " हींसा,
" पापरो भाई कांई, " क्रोध,
" पापरी बहन कांई, " माया (कपटाई),
" पापरो बेटो कांई, " मान,
" पापरी स्त्री कांई, " कुमति

॥ दोहा ॥

राजा रानी छत्र पती,
हाथिनके असवार ।
मरना सबको एक दिन,
अपनी अपनी बार ॥
दल बल देई देवता,
मात पिता परिवार ।

मरती विरियां जीवको,
कोई न राखन हार ॥
दान विना निर्धन दुःखी,
तृष्णा वश धनवान ।
कहुँ न सुख संसारमें,
सब जग देख्यो छान ॥
आलस नींद कृशाणने खोवे,
चोरने खोवे खासी ।
आनो व्याज वोरने खोवे,
त्रियाने खोवे हांसी ॥

॥ कविता ॥

सङ्गसे पुष्प को चन्द्र मिले,
अरु संगसे लोहा स्वर्ण कहावे ।
सङ्गसे पण्डित मूर्ख बने,
अरु सङ्गसे शूद्र अमरपद पावे ॥

सङ्गसे काठके लोहतरे,
तनको सत सङ्ग ही पार लगावे।
सङ्गसे सन्तको स्वर्ग मिले,
अरु सङ्ग कुसङ्गसे नरकमें जावे ॥

॥ अथ श्रावकजीरा २१ गुण ॥

१ पहले गुणे श्रावकजी धर्म करणीरे नव तत्व पचीस क्रियारा जाणकार हुवे।

२ दूजे गुणे श्रावकजी धर्म करणीरे वीषे कोईको भी साहाय्य बंछे नहीं।

३ तीजे गुणे श्रावकजी देवता मनुष्य तीर्यंचरा उपसर्ग आयासु धर्म थकी डीगे नहीं।

४ चौथे गुणे श्रावकजी अनतिथी मिथ्या-त्वीरी सोबत करे नहीं और अनतीर्थीरो कष्ट

देखने उणारा गुणग्राम करे नहीं अनतीर्थीरी प्रशंसा करे नहीं ।

५ पांचमे गुणे श्रावकजी लधी अठा गरही अठा पुछीअठा वीनछी अठा भणीया गुणीया ज्ञानको बार बार नीरणो करे आलस प्रमाद करे नहीं ।

६ छठे गुणे श्रावकजीरो हृदय धर्ममें रंगायमान जीण तरह तीलमांहे तेल दुधमांहे घृत पाषाणमांहे धातु लोलीभूत हुवे जीणतरह श्रावकजीरी हाडने हाडरी मीजी धर्ममें रंगायमान हुवे

७ सातमें गुणे श्रावकजी कुटम्ब परिवार पंचायतीमें बैठे जठे यही बात कहे के श्री वीतराग केवली भगवानरो धर्म सार है, नित्य है, सुखकारी पदार्थ है, बाकी सर्व संसार देह भोग असार है अनित्य है, दुःख सहित है, आगामी भी दुःखरो कारण है ।

८ आठमेगुणे श्रावकजी रो हृदय

फटीक रतनजीसो निर्मल हुवे कूड़ कपट केलवे नहीं दगा ठगा करे नहीं ।

९ नवमे गुणे घररा वारणा खुला राखे दान देवणमें कृपण मूंज़ी कंजूस नहीं हुवे चित्त उदार होवे ।

१० दशमे गुणे महीनेमें ६ (छव) पोसा करे।

११ इगारहमें गुणे श्रावकजी अन्तेवरमें राजारे भंडारमें तथा सेठरी दुकानमें सेठरी हवेलीमें जावे जठे प्रतीत कारीया हुवे जठे अप्रतीत हुवे उठे पाउंडो भी देवे नहीं।

१२ वारमें गुणे श्रावकजी लीधा ब्रत पचखाण नीधानरी परे जापतासुं पाले (राखे) दोष अतिचार लगावे नहीं ।

१३ तेरमे गुणे श्रावकजी मुनीराजने उलट (चढ़ते) भावसुं उदार चित्तसुं दान देवै मूंजी पणो राखे नहीं कंजूस पणो राखें नहीं उदार चित्त राखे ।

१४ चौदहमे बोले श्रावकजी तीन मनोरथ नित्य प्रति चिंतवे ॥

॥ संक्षेपमे तीन मनोरथ ॥

॥ दोहा ॥

आरंभ परिग्रह तजी करी, पंच महाव्रत धार ।
अंतसमय आलोयणा, करूं संथारो सार ॥१॥
तीन मनोर्थ ए कह्या, जो ध्यावे नीत्य मन्न ।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न ॥२॥

१५ पनरमे गुणे श्रावकजी नित्य नित्य प्रत्ये नवो वीतराग केवली भगवानरो प्रकाशियो ज्ञान ध्यान सीखे आलस करे नहीं ।

१६ सोलहमे गुणे श्रावकजी आलस छोड़ने जो कोई पुरुष नवो धर्म पायो हुवे जीणने ज्ञान ध्यान नीर्जरा अर्थे सिखावे तन मन वचन आदि समस्त प्रकारे धर्मरो साहाय्य देवे ।

१७ सतरमें गुणे श्रावकजी धर्म रो उपदेश देवे, चार तीर्थ रा गुण ग्राम बोले ।

१८ अठारमे गुणे श्रावकजी छती शक्ति तपस्या करे गोपवे नहीं ।

१९ उगनीसमें गुणे श्रावकजी दो बखत कालो काल प्रतिक्रमणो करे ।

२० वीसमे गुणे श्रावकजी कोईसु खारा बोलें नहीं क्षणमात्र कोईसु भी वैर राखे नहीं ।

२१ इकवीसमे गुणे श्रावकजी रे सम्यक्तमें गुणवरतामें कोई भी अतिक्रमादिक दोष लागे जीणारो तुरत तुरत आलोवणा करे अने शुद्ध होवे अन्त समय आया फेरु आलोवणा नीन्दणाकर ने पण्डित मरण करे आराधक हुवे ।

इति श्रावकजीरा २१ गुणमें जो जिन
वचनासु अधिको ओछो वीपरीत
लिख्यो हुवे तीणारो मिच्छामी
दुक्कडं ।

॥ अथ पुनः प्रकार अन्तरसुं ॥

॥ श्रावकजीरा २१ गुणारा कबीत सवैया ॥

लज्जावन्त, दयावन्त, प्रशांत, प्रतीतवन्त, पर दोषके ढकैया परउपकारी है। सोम दृष्टि गुणग्राही गरीष्ठ सबीके इष्ट श्रेष्ठ पत्नी मिष्ट-वादी दीर्घ विचारी है॥ विशेषज्ञ रसज्ञ कृ-तज्ञ धर्मज्ञ न दीन नहीं अभिमानी मध्य व्यव-हारी है। ऐसे वीनित पाप क्रियासुं अनित पुनीत ऐसे श्रावक इकबीस गुणधारी है॥१॥

॥ श्लोक ॥

धन्या भारतवर्ष संभव जनाः
येऽद्यापि काले कलौ,
निस्तीर्थेश् निःकेवले निरवधौ
नश्यन्मनः पर्यवे ।
नोद्यत्सूत्र विशेष संपदि भव
दौर्गत्यः दुःखापदि,
श्री जैनेंद्र वचोनुराग वशतः
कुर्वंति धर्मोद्यमं ॥

॥ स्वकुलप्रकाश ॥

धर्मचन्दजी तत्पुत्र प्रतापचन्द अगरचन्द भैरोदान हजारीमल चिरू जेठमल पानमल लहरचन्द उदेकरण जुगराज गैनपाल चिरञ्जीव कुनणमल सेठीया ॥ श्रीकल्याणमस्तु ॥

॥ श्री ॥

॥ दोहा ॥

बोल संग्रह नाम है, कीना भवि उपकार ।
गुरु मुखसे धारजो, द्वितीय भाग सुजाण ॥
गुरु समीपे जायके, लीजो अर्थ विचार ।
भणी गुणीने सिखजो, सूत्र सिद्धान्त अनुसार ॥
भैरोदान अर्ज करे, मत कीजो कोई तांण ।
सूत्र अर्थ जाणु नहीं, जिन आज्ञा परमाण ॥
बहु ग्रंथे संचै कीयो, अल्प बुद्धि अनुसार ।
भूल चूक दृष्टि पड़े, लीजो सज्जन सुधार ॥
निवासी बीकानेर का, जैन श्वेताम्बर जाण ।
ओस वंशमें सेठिया, श्रावक भैरोदान ॥
शत उनिस गुणआशि शुक्ल पक्ष बैशाख मास ।
कलकत्ते मांहे छपा, सबहूके हित काज ॥

॥ पथ्यापथ्यका बिचार ॥

पाथ्यापथ्यके विषयमें इस चौपाईको सदा ध्यान में रखना चाहिये—

चैते गुड़ वैशाखे तेल । जेठे पन्थ अषाढ़े बेल ॥
सावन दूध न भादौं मही ।
क्वार करेला न कातिक दही ॥
अगहन जीरो पूसे धना ।
माहे मिश्री फागुन चना ॥
जो यह बारह देय बचाय ।
ता घर वैद्य कब हुँ न जाये ॥ १ ॥

महा भारत ग्रन्थमें लिखा है कि—

मद्यमांसाशनं रात्रौ, भोजनं कन्दभक्षणम् ॥
ये कुर्वन्ति वृथा तेषां, तीर्थयात्रा जपस्तपः ॥ १ ॥

अर्थात् जो पुरुष मद्य पीते हैं, मांस खाते

हैं, रात्रिमें भोजन करते हैं और कंद को खाते हैं उन की तीर्थयात्रा, जप और तप सब वृथा है ॥ १ ॥

मार्कण्डेयपुराण का वचन है कि—

अस्तंगते दिवानाथे, आपो रुधिरमुच्यते ॥
अन्नं मांससमं प्रोक्तं, मार्कण्डेयमहर्षिणा ॥१॥

अर्थात् दिवानाथ (सूर्य) के अस्त होने के पीछे जल रुधिर के सामान और अन्न मांस के समन कहा है, यह वचन मार्कण्डेय ऋषि का है ॥ १ ॥

इसी प्रकार महाभारत ग्रन्थमें पुनः कहा गया है कि—

चत्वारि नरकद्वारं, प्रथमं रात्रिभोजनम् ॥
परस्त्री गमनं चैव, सन्धानानन्तकायकम् ॥ १ ॥
ये रात्रौ सर्वदाहारं, वर्जयन्ति सुमेधसः ॥
तेषां पक्षोपवासस्य, फलं मासेन जायते ॥ २ ॥

नोदकमपि पातव्यं, रात्रावत्र युधिष्ठिर ॥
तपस्विनां विशेषेण, गृहिणां ज्ञानसम्पदाम् ॥३॥

अर्थात्—चार कार्य नरक के द्वार रूप हैं प्रथम-रात्रि में भोजन करना, दूसरा-पर-स्त्री में गमन करना, तीसरा-संधाना (आचार) खाना और चौथा-अनन्त काय अर्थात् अनन्त जीव-वाले कन्द मूल आदि वस्तुओं को खाना ॥१॥

जो बुद्धिमान् पुरुष एक महीनेतक निरन्तर रात्रिभोजनका त्याग करते हैं उनको एक पक्ष के उपवासका फल प्राप्त होता है ॥२॥

इस लिये हे युद्धिष्ठिर! ज्ञानी गृहस्थको और विशेष कर तपस्वी को रात्रि में पानी भी नहीं पीना चाहिये ॥ ३ ॥

इसी प्रकारसे सब शास्त्रोंमें रात्रिभोजनका निषेध किया है परन्तु ग्रन्थके विस्तारके भयसे अब विशेष प्रमाणोंको नहीं लिखते हैं, इस लिये बुद्धिमानोंको उचित है कि—सब प्रकारके

खाने पीनेके पदार्थों का कभी भी रात्रिमें उपयोग न करें यदि कभी वैद्य कठिन रोगादि में भी कोई दवा या खुराकको रात्रिमें उपयोग के लिये बतलावे तो भी यथा शक्य उसे रात्रिमें नहीं लेना चाहिये किन्तु सूर्य्य अस्त होनेके पहले ही ले लेना चाहिये, क्योंकि धन्य पुरुष वे ही हैं जो कि सूर्यकी साक्षीसे ही खान पान करके अपने व्रत का निर्वाह करते हैं ।
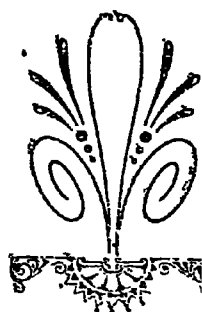
॥ चेत्य, चेइ शब्दके १०८ नाम ॥

चेत्यप्रसाद् विज्ञेय १ चेत्यहरिरुच्यते २ चेत्य चेतनानाम्स्यात् ३ चेइसुधास्मृता ४ चेतंज्ञानं समाख्यातं ५ चेइ मानस्यमानवं ६ चेत्य-यतिरुत्तमस्यात् ७ चेइमग्रउच्यते ८ चेत्यंजीव-मवाप्नोति ९ चेइ भोगस्य रंभन १० चेत्यभोग निवृतस्य ११ चेइ विनतनीचयो १२ चेत्य पूर्णिमाचन्द्र १३ चेइ गृहस्यारंभन १४ चेत्य गृहमवाछाहं १५ चेइ गृहस्यछादनं १६ चेत्य गृहस्थर्मंचापि १७ चेइच वनस्पती १८ चेत्य पर्वतेवृक्ष १९ चेइ वृक्षस्थूलयो २० चेत्य वृक्ष-सारश्च २१ चेइ चतुःकोणस्तथा २२ चेत्य विज्ञान पुरुषो २३ चेइ देहस्यउच्यते २४ चेत्य गुणज्ञोज्ञेय २५ चेइच शिवशासनं २६ चेत्य मस्तकंपूर्ण २७ चेइ अंगहीनयो २८ चेत्य अश्वामवाप्नोति २९ चेइ खर उच्यते ३० चेत्य

हस्तीविज्ञेय ३१ चेइ दूमुखीविंदूं ३२ चेइच शिवापुनः ३४ चेत्यंरंभानामोक्तं ३५ चेइ मृदंगंपुनः ३६ चेत्य सार्दूल नामस्यात् ३७ चेइच इंद्रवारणी ३८ चेत्य पुरंदर ३९ चेइ चेतनस्मृत ४० चेइ उग्रराज ४१ चेइ शास्त्र-धारणा ४२ चेत्य क्लेशहारीच ४३ चेइ गंधर्वास्त्रिय ४४ चेत्य तपस्वीनारी ४५ चेइ पात्रस्यनिर्णय ४६ चेत्य शुकनादिवार्त्ता ४७ चेइ कुमारिकाविंदू ४८ चेत्य वक्तारागस्य ४९ चेइ धातुरकुठितं ५० चेइ शांतवाणीच ५१ चेइ बृद्धावरांगणा ५२ चेत्य ब्रह्मांडमाणं ५३ चेइ मयूरप्रोच्यते ५४ चेत्य मंगलवार्त्ता च ५५ चेइ काकणीपुनः ५६ चेत्य पुत्रवतीनारी ५७ चेइ च मीनमेवच ५८ चेत्य नरेन्द्र नारी च ५९ चेइ च मृगवांनरें ६० चेत्य गुणावंती नारी ६१ चेइ च स्मरमन्दिर ६२ चेत्य वर कन्या नारी ६३ चेइच तरूणीस्तनो ६४ चेत्य सुवर्णवर्णः नरः

६५ चेइच मुकुट सागर ६६ चेत्य सुवर्ण वर्णः जटि ६७ चोइच अन्य धातुषु ६८ चोत्य चक्रवर्ती राजा ६९ चेइच तस्यस्त्रिय ७० चेत्य व्याख्यात पुरुष ७१ चेइ पुण्यवती स्त्रिय ७२ चेइ राज-मन्दिर ७३ चेत्यवराह मृगश्च ७४ चेइचयति धूर्तयो ७५ चेत्य गरुड़पन्नी च ७६ चेइच पन्न-नागणी ७७ चेत्य रक्त नेत्रस्य ७८ चेइ हीन चक्षुषि ७९ चोत्य योवन पुरुषश्च ८० चोत्य वासुकी नागं ८१ चोइ पुण्य प्रोच्यते ८२ चोत्य भाव सुधस्यात् ८३ चोइ क्षुद्र कंटिका ८४ चेत्य-द्रव्यमवाप्नोति ८५ चेइ प्रतिमास्तथा ८६ चोत्य सुभटयोर्द्धच ८७ चोइ द्विविधा क्षुधा ८८ चोत्य पूरुषोत्कृद्रश्च ८९ चेइच हारमेवच ९० चेत्य नरेंद्राभर्णं ९१ चेइ जटाजूटधारक ९२ चेत्य धर्मवार्ताच ९३ चेइ विकथापुनः ९४ चेइ चक्रवर्ती सूर्य्य ९५ चेइच श्रद्धाभ्रष्टा ९६ चेत्य राज्ञी सजनस्थानं ९७ चेइ रामस्य गर्भता ९८

चैत्य शुभवार्त्ताच ९९ चेइ इन्द्रजालकं १०० चैत्यत्यासनं प्रोक्तं १०१ चेइ पापमेवच १०२ चेइ रविरूदयकालं १०३ चैत्यंच रजनीपुन १०४ चैत्यंचन्द्र द्वितीयास्यात् १०५ चेइ लोकपालके १०६ चैत्यं रत्न अमोलकयं १०७ चेइच अनौषधिपुनः १०८ एवं सर्व चैतनानाम १०८ छे।

इति श्री अलंकरणोंदीर्घः ब्रह्माण्डे चैत्य चेइ शब्द सूरेश्वर वार्तिक वेदान्त प्रोक्तः।

शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

सेवंभंते सेवंभंते गौतम बोले सही, श्री महावीरके बचनमें कुछ सन्देह नहीं। जैसा लिखा हुआ देख्या, बांच्या या सुण्या वैसा ही अल्प बुद्धिके अनुसार लिखा है, तत्व केवली गम्य अक्षर, पद, ह्रस्व, दीर्घ, कानो, मात, मिंडी, ओछो अधिको, आगो पाछो, अशुद्ध पणे लिख्यो होय अथवा कोई तरहकी छपानेमें ज्ञानादिक की विराधना कीनी होय, जाणते अजाणते कोई दोष लाग्यो होय तो सकल श्री संघके साखसें मन बचन काया करी मिच्छामि दुक्कडं।

❀ इति छत्तीसबोल संग्रह द्वितीय भाग समाप्तम् ❀

पत्र व्यवहार नीचे लिखे हुये पतेसे करें और पता नागरी व अंग्रेजीमें साफ हरफोंमें पूरा लिखें।

पुस्तक मिलनेका पता—

बीकानेर

श्री जैन भाइयोंकी विद्यालय,

मोहल्ला—मरोटियोंका

पाठशाला अगरचन्द भैरोंदान सेठियाकी कोटड़ीमें

बीकानेर राजपुताना।

(जोधपुर-बीकानेर रेलवे)

The Jain National Seminary

SCHOOL

SETHIA BUILDINGS

MOHALLA MAROTIAN.

Bikaner Rajputana (J. B Ry)